JAINA INSCRIPTIONS.

(*Containing Index of Places, Glossary of Names of Acharyas, &c.*)

Collected & Compiled

BY

Puran Chand Nahar, M.A.,B.L., M.R.A.S.,

Vakil, High Court, Calcutta; Member, Asiatic Society of Bengal; Bihar & Orissa Research Society; Bhandarkar Institute, Poona; Jain Swetambar Education Board, Bombay; &c. &c.

PART II.

(With Plates.)

1927.

Price Rs. 5/-

PRINTED BY
Turantlal Mishra
at the
VISWAVINODE PRESS,
48, Indian Mirror Street,
Calcutta.

Published by the Compiler
48, Indian Mirror Street,
CALCUTTA.

जैन लेख संग्रह ।

कतिपय चित्र और आवश्यक तालिकायों से युक्त

द्वितीय खंड ।

संग्रह कर्त्ता

पूरण चंद नाहर, एम० ए०, बी० एल०,

वकील हाईकोर्ट, रयाल एसिआटिक सोसाइटी, एसियाटिक सोसाइटी
बंगाल, रिसार्च सोसाइटी विहार—उड़ीसा आदिके मेम्बर,
विश्वविद्यालय कलकत्ता के परीक्षक इत्यादि २

कलकत्ता ।

वीर सम्बत् २४५२

मूल्य —५)

Jalmandira at Tirtha Pāwāpuri (North view).

भूमिका
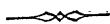
आज बड़े हर्ष के साथ "जैनलेख संग्रह" का दूसरा खंड पाठकों के सन्मुख उपस्थित करता हूं। इसका प्रथम खंड प्रकाशित होने के पश्चात् द्वितीय खंड शीघ्र ही प्रकाशित करने की इच्छा रहते हुए भी कई अनिवार्य कारणों से विलम्ब हुआ है। न तो प्रथम खंड में कोई विस्तृत भूमिका दी गई थी और न यहां ही लिख सके।

जैनियों का खास करके हमारे मूर्त्तिपूजक श्वेताम्बर भाइयों का धर्मप्राण शताब्दियों तक बराबर आचार्यों के उपदेश से देवालय और मूर्त्तिप्रतिष्ठा की ओर कहां तक अग्रसर था और वर्त्तमान समय पर्य्यंत कहां तक है यह "लेख संग्रह" से अच्छी तरह ज्ञात हो सकता है। ऐतिहासिक दृष्टि से जिस प्रकार उपयोगी समझ कर प्रथम खंड प्रकाशित किया था यह खंड भी उसी इच्छा से विद्वानों की सेवा में उपस्थित करता हूं।

सन् १९१८ में प्रथम खंड प्रकाशित होनेपर प्रसिद्ध ऐतिहासिक श्रद्धेय श्रीमान् राय बहादुर पं० गौरीशंकर ओझा जी ने पुस्तक भेजने पर उस संग्रह के उपयोगिता के विषय में जो कुछ अपना वक्तव्य प्रकट किये थे उसका कुछ अंश नीचे उद्धृत किया जाता है। उक्त महोदय अजमेर से ता० २६-१०-१९१८ के पत्र में लिखते हैं कि :—

"आपके जैनलेख संग्रह को आदि से अंत तक पढ गया हूं। आपका यह ग्रन्थ इतिहासवेत्ताओं तथा जैनसंसार के लिये रत्नाकर के समान है। अंत में दी हुई तालिकायें भी बड़े काम की बनी हैं उनसे भिन्न २ गच्छों के अनेक आचार्यों के निश्चित समय का पता लगता है, यदि इसके दूसरे भाग भी निकलेंगे तो जैन इतिहास के लिये बड़े ही काम के होंगे"।

प्रथम खंड में साधारण सूची के अतिरिक्त "प्रतिष्ठास्थान", "श्रावकों की ज्ञाति-गोत्रादि" और "आचार्यों के गच्छ और सम्वत्" की सूची दी गई थी। इस बार इन सभोंके शिवाय राजा महाराजाओं के नाम, जो इन लेखों में पाये गये हैं, उनकी तालिका भी समय २ पर आवश्यक होती है समझ कर इस खंड में दी गई है।

मैं प्रथम खंड की भूमिका में कह चुका हूं कि केवल ऐतिहासिक दृष्टि से यह संग्रह प्रकाशित हुआ है। जिस समय यह खंड छप रहा था उसी समय श्री राजगृह तीर्थ में श्वेताम्बर दिगम्बरों में मुकदमा छिड़ गया था पश्चात् केस आपस में तै हो चुका है अतएव इस विषय में अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं है। परन्तु मुझे बड़े खेद के साथ लिखना पड़ता है कि दिगम्बरी लोग मुझे ऐसे कार्यमें उत्साहित करने के बदले स्वार्थवश उक्त मुकदमे में इजहार के समय मेरे जैनलेख संग्रह पर हर तरह से हैरान किये थे।

हाल में वेलोग मुद्दई होकर श्री पावापुरी तीर्थ पर जो मुकदमा उपस्थित किये हैं उस में मेरा भी मुद्दालहों में नाम रख दिये हैं। मैं प्रथम से ही धार्म्मिक झगड़ों से अलग रहता था परन्तु जब सर पर बोझ पड़ा है तो उठाना ही पड़ेगा। दुःख इसी बात का है कि शासननायक वीर परमात्मा के परम शान्तिमय निर्वाणस्थान में मुकदमेवाजी से अशांति फैलाना अपने जैनधर्म पर धब्बा लगाना है। मैं इस समय इस संबंध में कुछ मतामत प्रकाश करना अनुचित समझता हूं। इसी वर्ष के अक्षयतृतीया के दिन मेवाड़ के अन्तर्गत श्री केशरियानाथजी तीर्थ में मंदिर के ध्वजादंड आरोपन के उपलक्ष में जो वीभत्स कांड हुआ है वह भी दूसरा दुःख का समाचार है। काल के प्रभाव से इस तरह प्रायः हमलोगों के सर्व धर्मस्थान और तीर्थों में अशांति देखने में आती है।

ई० सम्बत् १९६४।६५ से मुझे ऐतिहासिक दृष्टि से जैन लेखों के संग्रह करने की इच्छा हुई थी तबसे अद्यावधि संग्रह कर रहा हूं और उन सब लेखों को जैसे २ सुभीता समझता हूं प्रकाशित करता हूं। यद्यपि मैंने इस संग्रह-कार्य के लिये तन, मन और धन लगाने में त्रुटि नहीं रक्खी है फिर भी बहुत सी भूलें रह गई हैं। राय बहादुर पं० गौरीशंकर ओझाजी मुझे प्रथम खंड के त्रुटियों पर अपना मन्तव्य सूचित किये थे जिस कारण मैं अन्तःकरण से उनका आभारी हूं और उस पर मैंने विशेष ध्यान रखने की चेष्टा की है। यह लेख संग्रह का कार्य बहुत कठिन और समय सापेक्ष है, कई जगह समय की अल्पता हेतु और कई जगह मेरे ही भ्रम से जो कुछ पाठ में अशुद्धियां रह गई हैं उनके लिये मैं पाठकों से क्षमाप्रार्थी हूं तथा ऐसी २ त्रुटियां रहने पर भी विद्वानों की तथा अनुसंधित्सूसज्जनों को उस ओर दृष्टि आकर्षित करने की इच्छा से इन लेखों को प्रकाशित करने का साहस किया हूं।

प्रथम खंड में १००० लेखों का संग्रह प्रकाशित हुआ था। उनमें जो कुछ नंबर छूट गये थे वे पुस्तक के अंत में दे दिया था। इस खंड में १००१ से २१११ तक याने ११११ लेख प्रकाशित किये जाते हैं। इस वार भी भ्रमवश २ नंबर छूट गये हैं। नं० ११८७ पुस्तक के अंत में छप गया है और नं० १६९० यहां दिया जाता है।

श्वेताम्बरों के प्रसिद्ध स्थान जेसलमेरु दुर्ग (जेसलमेर) के मंदिर के लेखों को संग्रह करने की अभिलाषा बहुत दिनों से थी। वहां भी क्षेत्रस्पर्शना हो गई है और निकटवर्त्ती "लोद्रपुर (लोद्रवा)" नामक प्राचीन स्थान भी दर्शन किया है। आगामी खंड में वहां के लेखों को प्रकाशित करने की इच्छा रही।

नं० ४८ इण्डियन मिरर ष्ट्रीट,
कलकत्ता।
सं० १९८४—ई० सं० १९२७

निवेदक
पूरण चंद नाहर।

[1690] *

संवत् १६७१ वर्षे आगरा वास्तव्य......कल्याण सागर सूरिः......।

---

* यह लेख पटने के पास 'फतुहा' के दिगम्बर जैन मंदिर में श्वेत पाषाण की खंडित श्वेताम्बर मूर्त्ति के चरण चौकी पर है।

सूचीपत्र।

प्रतिष्ठा स्थान ।

राजाओं की सूची।

संवत्	नाम	स्थान	लेखांक
१६३३	अकबर, सुरत्राण		१७८२
१६५२	अकब्बर, पातिसाहि		१७६६
१६६१	,, ,,		१७६४
१६७०	अकबर, सुरत्राण		१६२८
१७१३	अकब्बर, पातिसाहि		१७६७
१४९१	कुंभकर्ण, राणा	मेवाड़	२००६
१४९४	कुंभकर्ण, भूपति	देवकुलपाटक	१९५८
१६६३	जगतसिंह, राणा	उदयपुर	१०२८

संवत्	नाम	स्थान	लेखांक
१८०१	जगतसिंह, महाराणा	उदयपुर	१११५
१५६६	जगमाल, महाराजाधिराज	अचलगढ	२०२७
१५४८	जशसिंघ, राजा		२०३९
१६७८	जसवंतसिंहजी, जाम,	नवानगर	१७८१
१६७१	जहांगीर, पातिसाह	आगरा दुर्ग	१५८०-८१-८२
१६७१	,, ,,	आगरा	१५८३-८४
१६७१	जहांगीर, पातिसाह सवाइ सुरत्राण		१५७८-९६
१६७१	,, ,,	उग्रसेनपुर	१४५६
१६७४	जहांगीर साह.		१४६०
१४९७	डूंगरसिंह, महाराजाधिराज	गोपाचल	१४२७
१५१०	,, ,,	गोपगिरि	१४२८
१५१०	डूंगरसिंहदेव, राजाधिराज	गोपाचल	१२३२
१५२५	डूंगरसिंह, रावधर सायर	अर्ब्बुदगिरि	२०२५
१६६६	तेजसिजी, राउल	वीरमपुर	१७१५
११५०	त्रैलोक्यमल	,,	१४२६
११५०	देवपाल	गोपाचल	१४२६
११५०	पद्मपाल	,,	१४२६
१३९२	पृथ्वीचंद्र, महाराजाधिराज	चित्रकूट	१९५५
१५४९	भीमसिंघ, रावल	मण्डासा	१०१५
११५०	भुवनपाल	,,	१४२६
१५५२	मल्लसिंहदेव, महाराजाधिराज,	गोपाचल	१४२९
११५०	महीपाल	,,	१४२६
११५०	मूलदेव	गोपाचल	१४२६
११५०	मंगलराज	,,	१४२६
१२७२	रणसिंह, मिहरराज	खिंवान	१७७७
१७९८	राघव, राजा	देवकुलपाटक	२००८
१६९७	लक्षराज, जाम	नवानगर	१७८१
१०३४	वज्रदाम, महाराजाधिराज		१४३१
११५०	वज्रदाम	,,	१४२६
१२११	वस्तुपाल, महामात्य	अणहिल्लपुर	१७८८
१५६२	वीकाजी, महाराजा राई	बीकानेर	१३५०
१६३३	शत्रसल्ल, जाम	नवीननगर	१७८२
१६७६	शत्रुसल्य, जाम,	नवानगर	१७८१
१६७१	शाहजहां		१५२०
१८६३	सहादतअलि, नवाब	लखनऊ	१५२५
१६८६	साहजांह, पादशाह		१७६५
१६८८	साहिजां, पातिसाह सवाइ	अर्गलपुर	१४५४
१६९८	साहजांह, पातिसाह		१६९७
१८५९	सुरतसिंह, महाराज	बीकानेर	१३४९
११५०	सूर्यपाल	,,	१४२६
१५२९	सोमदास, राउल	डूंगरपुर नगर	२०२६
१६९९	हठीसिंहजो, महाराज	रामगढ दुर्ग	१८९९

METAL IMAGE OF SHRI ADINATH
Dated, V. S. 1077, (A. D. 1020.)

JAIN INSCRIPTIONS.

जैन लेख संग्रह।

दूसरा खण्ड।

कलकत्ता।

श्रीआदिनाथजी का देरासर।

कुमारसिंह हाल—न० ४६, इण्डियन मिरर स्ट्रीट।

धातु की मूर्त्तियों पर।

[1001] ❋

(१) पज्जक सुत अंब

(२) देवेन ॥ सं १०७७

[386] ×

(१) व्रह्माल सत्क सं

❋ चित्र देखो। लेख पश्चात् भागमें खुदा हुआ है। यह प्राचीन मूर्त्ति भारतके उत्तर पश्चिम प्रान्त से प्राप्त हुई है। दोनों तर्फ कायोत्सर्ग की खड़ी और मध्यमें पद्मासनकी बैठी मूर्त्तियें हैं। सिंहासनके नीचे नवग्रह और उसके नीचे बृषभ युगल है, इस कारण मूल मूर्त्ति श्रीआदिनाथजी की और यक्ष यक्षिणी आदियों के साथ बहुत मनोज्ञ और प्राचीन है।

× यह लेख प्रथम खण्डमें छपा था, पुनः जोधपुर निवासी पण्डित रामकर्णजी का यह संशोधित पाठ है। इसमें भी दोनों तर्फ कायोत्सर्गकी और मध्यमें पद्मासनकी मूर्त्ति है और गुजरात प्रान्तसे मिली है।

(२) पंकः श्रिया वे सुन
(३) स्तु पुन्नक श्राद्धः सी
(४) लगल सूरि नक्तश्चन्द्र कु
(५) ले कारयामासः ॥
(६) संवतु
(७) १०७२

[1002]

संवत् १६४२ वर्षे पो० सु० १२ सोमे श्रीअजित बिंबं का० सा० नानू जुदिजाकेन प्र० श्रीहीरविजय सूरि ।

धातुकी चौविशी पर ।

[1003]

ॐ ॥ श्रीमन्निवृतगच्छे संताने चाम्रदेव सूरीणां । महणं गणि नामाद्या चेल्ली सर्व देवा गणिनी ॥ वित्तं नीतिश्रमायातं वितीर्य शुजवारया। चतुर्विंशति पट्टाकं कारयामास निर्मलं ॥

हीरालालजी गुलाबसिंहजी का देरासर—चितपुर रोड ।

धातु की चौविशी पर ।

[1004]

संवत् १५०६ वर्षे श्रीश्रीमालज्ञातीय दोसी डूंगर जार्या म्यापुरि सुत मुंजाकेन जार्या सोही सुत वीका युतेन आ० श्रेयसे श्रीसुविधिनाथादि चतुर्विंशति पट्टः कारितः आगमगच्छे श्रीअमरसिंह सूरि पट्टे श्रीहेमरत्नगुरूपदेशेन प्रतिष्ठितः ॥ गन्धार वास्तव्य ॥ शुजं जवतु ॥श्रीः॥

लाजचन्दजी सेठ का घर देरासर—पुलिस हस्पिटैल रोड ।

पाषाण की मूर्त्तियों पर ।

[1005]

संवत् १६२३ ज्येष्ठ शुक्क ५ महोपाध्याय युग प्र० विजयेन····प्रतिष्ठितं जं । यु । प्र । ज श्रीजिनरंगसूरि राज्ये ।

[1006]

संवत् १७२७ वर्षे ज्येष्ठ शुक्ल ७ रवौ खरतरगच्छीय महोपाध्याय रामविनयगणिना प्र० पार्श्वबिम्बं ।

स्फटिक के बिम्ब पर ।

[1007]

संवत् १८७७ मा । सु० १३ प्र । ख । श्रीजिनचन्द्र सूरिभिः ।

रौप्य के चरण पर ।

[1008]

जंगम युग प्रधान भट्टारक श्रीजिनदत्त सूरीश्वराणां पादुके । श्रीजिनकुशलसूरीश्वराणां पादुके। वीर संवत् २४४८ वि० १९७९ आषाढ शुक्ल १ चन्द्रे रांका गोत्रीय लाभचन्द्र शेठेन आत्मकल्याणार्थं इमे पादुके निर्मापिते, श्री बृ० ख० ग० ज० युग० भट्टारक श्रीजिनचन्द्र सूरि विजयराज्ये श्रीमद्दिङ्मण्डलाचार्य श्रीनेमिचन्द्रसूरि अन्तेवासि पं० श्रीहीराचन्द्रेण यतिना प्रतिष्ठापिते श्री शुभं भूयात् ।

इण्डियन म्युज़ियम—चौरङ्गी रोड ।

धातु की मूर्त्ति पर ।

[1009] *

संवत् १४५७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ श्रीमूलसंघे प्रतिष्ठाचार्य श्रीपद्मनन्दि देवोपदेशेन.... श्रीभीमदेव । भार्या महदे । सुत गणपति भार्या फरमू ॥............प्रणमति ।

अजिमगञ्ज-मुर्शिदाबाद ।

श्रीनेमनाथजीका मन्दिर ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[1010]

संवत् १५१७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि २ दिने सोमवारे उकेश वंशे लोढा गोत्रे सा० वीशल भार्या

* यह चौविशी हाल में यहां पर दिल्ली से आई है ।

भावलदे तत्पुत्र सा० कर्म्मा तद्भार्या करतिगदे तत्पुत्र सा० सहसमल्ल श्रावकेण सपरिवारेण आत्मश्रेयोर्थं श्रीचन्द्रप्रभ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनराजसूरि पट्टे श्रीजिनभद्रसूरिभिः ॥

[1011]

संवत् १५१७ वर्षे माघ सुदि ४ सोमे श्रीब्रह्माणगच्छे श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रेष्ठि विरूआ भार्या मुक्ति सुत हीरा भार्या हीरादे सुत भावड़ ककूआभ्यां स्वपित्रोः श्रेयोर्थं श्रीधर्म्मनाथ विंबं पञ्चतीर्थी कारापितः प्रतिष्ठितं श्रीबुद्धिसागरसूरि पट्टे श्री विमल सूरिभिः ॥ सीतापुर वास्तव्यः ॥

[1012]

सवत् १५१९ वर्षे वैशाख वदि ११ शुक्रे ऊ० ज्ञातीय विद्याधर गोत्रे। सा० सूंमण। भा० सूमलदे। पु० वेला भा० बगू नाम्ना पु० सोमा युतयां स्वभ्रातृ पुण्यार्थं श्रीआदिनाथ विंबं का० प्र० वृहद्गच्छे घोकमीयावटंके (?) श्रीधर्म्मचन्द्रसूरि पट्टे श्रीमलयचन्द्र सूरिभिः। लोद्राद्र ग्राम ॥

[1013]

॥ए०॥ संवत् १५२२ वर्षे आषाड़ सुदि ८ ऊकेशिज्ञातीय रूवेयता गोत्रे। सा० केसराज भार्या····रतनाकेन श्रेयसे श्रीसुमति विंबं प्रतिष्ठितं धर्म्मघोषगच्छे श्रीसाधु···· ॥

[1014]

संवत् १७०६ व। ज्ये। शु० श्री राजनगरवास्तव्य। प्राग्वाटज्ञातीय वृहद्शाषायां सा० रूपभदास भा० रूक्कु नाम्न्या श्रीनमिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं च तपागच्छे। भ०। श्री ५ श्रीविजयानन्दसूरिभिः ॥ आचार्य श्री ५ श्रीविजयराजसूरि परिकरितैः ॥ श्रीरस्तु। भ ॥१॥

पाषाण की मूर्त्ति पर।

[1015]*

संवत् १५४९ वर्षे वैशाख सुदि ३ श्रीमूलसंघे भट्टारक श्रीजिनचन्द्रदेवा सा०····राज पापड़ीवाल सप्रणमति का० श्रीभीमासिंघ रावल। सहर मण्डासा।

---

* धरणेन्द्र पद्मावती सहित श्रीपार्श्वनाथजीकी श्वेत पाषाणकी २ मूर्त्तियां पर एकही तरहके २ लेख हैं।

सैंतीया (वीरभूम)

श्री आदिनाथजी का मन्दिर।

धातुकी पञ्चतीर्थी पर।

[1016]

संवत् १५२३ वर्षे वैशाख वदि ४ गुरौ श्रीउएसवंशे दो० वकूआ भार्या मेघू पुत्र जईता सुश्रावकेण भा० जीवादे भ्रातृ जटा सहितेन स्वश्रेयसे॥ श्रीअंचलगछेश्वर। श्रीजयकेसरि सूरीणामुपदेशेन श्रीधर्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसंघेन श्री पत्तने॥ ठः॥

रङ्गपुर (उत्तर बङ्ग)

श्रीचन्द्रप्रभस्वामी का मन्दिर—माहीगञ्ज।

शिला लेख नं० १

[1017]*

(१) अत्यद्भुतं सज्ज्ञानसिद्धिदायकं ... मो

(२) क्षकरं निरन्तरं जिनालये रङ्गपुरे मनोहरे चन्द्रप्रभं

(३) नौमि जिनं सनातनं॥ १॥ संवत् १७९३ मि। माघ वदि १। र

(४) वौ श्रीरङ्गपुरे। भ। श्रीजिन सौभागा सूरिजी विजयी।

(५) राज्ये वा। आनन्दवल्लभगणेरुपदेशात् श्रीमक्षुदावा

(६) द बालूचर वास्तव्य दू। निहालचन्द तत्पुत्र बाबू इन्द्रच०

(७) न्द्रेण श्रीचन्द्रप्रभ जिनः प्रासादः कारापितः प्रतिष्ठापि

(८) तश्च। विधिना॥ सतां कल्याण वृद्ध्यर्थम्॥

(९) श्रीरस्तुः॥ १॥

---

* यह शिलालेख श्याम वर्णके पत्थर पर लंबाई इञ्च-१४ चौड़ाई इञ्च-६ सभामण्डप के दक्षिण तर्फ की दीवार पर लगा हुआ है।

शिला लेख नं० २

[1018]*

(१) अत्यद्भुतं सज्ज्ञानसिद्धिदायकं भव्यांगिना
(२) मोक्षकरं निरन्तरं जिनालये रङ्गपुरे मनोहरे चं
(३) द्रप्रभं नौमि जिनं सनातनं ॥ १ ॥ संवत् १९
(४) ३२ शाके १७९७ मिति आषाढ़ सुदि ९ चन्द्रवासरे
(५) रङ्गपुरे । भ । श्रीजिनहंस सूरीजी विजे राज्ये ॥ श्री
(६) हंसविलास गणि तत्शिष्य श्री कनकनिधान मुनि
(७) रुपदेशेन । श्रीमक्षुदावाद बालूचर वास्तव्य ॥
(८) डूगड़ इन्द्रचन्द्रजी जीर्णोद्धार कारापितं ॥ नाहटा मौ
(९) जीरामजी तत्पुत्र नाहटा गुलाबचन्दजी तत्पुत्र इन्द्र
(१०) चन्द्रजी मारफत श्री चन्द्रप्रभ जिन प्रासादस्य सिषरं
(११) नवीन रचिता वेदका नवीन निजद्रव्यै कारपितं ॥ प्रति
(१२) ष्ठितं विधिना सतां कल्याण वृद्ध्यर्थम् ॥ १ ॥
(१३) ॥ मिस्तरी षोलाराम सिलावट लालू मक्सूदका

मूल नायक की पाषाण की मूर्त्ति पर ।

[1019]

संवत् १८७३ वर्षे····सुदि दिने····श्रीचन्द्रप्रभ बिंबमिदं प्रतिष्ठितं भ० श्रीजिनहर्ष सूरि कारापितं····शीलचन्द्रेन । बालूचर मध्ये ।

पाषाण की मूर्त्तियों पर ।

[1020]

संवत् १९३६ मिती आ०·········शुक्रवारे यु । प्र० श्री·········जी विजयराज्ये श्री शान्ति जिन कारापितं आणन्दवल्लभजी तत् शिष्य··········प्रतिष्ठितं ।

* यह मिर्जापूरी पत्थर पर खुदा हुआ न० १ के समान साइज का बायें तर्फ दीवार पर लगा हुआ है ।

[1021]

सं० १९३६----सौभाग्यसूरिजी विजय राज्ये नाहटा मौजीरामजी तत्पुत्र गुलाबचन्दजी श्री आदिजिन कारापितं श्री आणन्द·······।

धातु की मूर्त्तियों पर।

[1022]

सं० १९२० मि० फा० कृ० २ बुधे सा० प्रतापसिंहजी डुगड़ भार्या महताब कुँवर श्री श्रेयांस जिन बिंबं कारापितं।

[1023]

सं० १९२० मिः फा० कृ० २ बुधे सा० प्रतापसिंह भार्या महताब कुँवर श्री अग्निदत्त २२ जिन बिंबं का०।

चौविशी पर।

[1024]

संवत् १७०१ मिती आषाढ़ सुदि १३ कारितं चोरबेड़ीया सा० सांवल पतिना॥ प्रतिष्ठितं उ० श्री कर्पूरप्रिय गणिभिः।

पंचतीर्थियों पर।

[1025]

सं० १५१३ व० ज्येष्ठ वदि ११ उके० ज्ञा० कोठारी गोत्रे सा० मफुणा भा० काउ पु० नेता डूंगर नेताकेन भा० नेतादे स० श्रीसुमतिनाथ बिंबं कारि० प्र० श्रीसंडेर गच्छे श्री ईश्वर सूरिभिः

[1026]

संवत् १५५७ वर्षे पोष सुदि १५ प्राग्वाट ज्ञातीय सा० सायर भा० रत्नादे पु० सा० मालाकेन भा० हांसू पुत्र गोइन्दादि कुटुम्बयुतेन निज श्रेयसे श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री हेमविमल सूरिभिः॥ श्रीः॥

दादाजी का मन्दिर—माहीगञ्ज ।

पाषाण के चरण पर ।

[1027]

संवत् १८७७ रा वर्षे जेठ मासे शुक्ल पक्षे १० तिथौ बुधवासरे श्री चन्द्रकुलाधिप । बृहत् श्री खरतरगच्छे जंगम युगप्रधान भट्टारक । श्री १०८ श्री जिनदत्त सूरिजी श्री १०८ श्री जिनकुशल सूरीणां चरण स्थापितं । उ । श्री रत्नसुन्दरजी गणि उपदेशात् साह श्री डूगड़ बुधसिंहजी तत्पुत्र । बाबू श्री प्रतापसिंहजी कारापितं ॥ श्रीसङ्घ हितार्थम् । जङ्गमयुगप्रधान भट्टारक श्री जिनहर्ष सूरिजी विजय राज्ये श्रीरस्तु ॥ श्रीकल्याणमस्तुः ॥

उदयपुर (मेवाड़)

श्री शीतलनाथस्वामी का मन्दिर ।

[1028] *

ॐ ॥ संवत् १७०३ वर्षे कार्त्तिक वदि ॥ सोमवासरे उदयपुर राणा श्री जगत्सिंह राज्ये तपागच्छे श्री जिन मन्दिरे श्री शीतलजिन बिंबं पित्तलमय परिकर कारितः आसपुर वास्तव्य वृद्धशाखा प्राग्वाट ज्ञातीय पं० कान्हा सुत पं० केसर भार्या केसर दे तत्सुत पं० दामोदर स्वकुटुम्बयुतैः ॥ भट्टारक श्री विजयदेव सूरीश्वर तत्पट्टप्रभाकर आचार्य श्री विजयसिंह सूरीश्वर निदेशात् सकलसङ्घयुतै पण्डित श्री मतिचन्द्र गणिभिः वासक्षेपः श्री सकलसङ्घस्य कल्याणं भूयात् ॥

धातु की चौविशी पर ।

[1029]

संवत् १४८९ वर्षे जे० व० ११ प्राग्वाट दो० सूरा भा० पोमी सुत दो० आसाकेन भा० रूपिणि सुत राउल माणिकलाल जोगादि कुटुम्बयुतेन स्वभ्रातृ गोला स्वसुत सारङ्ग श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ चतुर्विंशति पट्टः का० प्र० तपागच्छनायक भट्टारक प्रभु श्री सोमसुन्दर सूरिभिः ॥ श्रीरस्तु ॥ वीसलनगर वास्तव्यः ॥

---

* मूल बिंब श्वेत पाषाण का प्राचीन है, लेख मालूम नहीं होता ; पश्चात् धातु की परकर बनी है उस पर यह लेख है ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[1030]

सं० १५१७ वर्षे पोष वदि ८ रवौ प्राग्वाट ज्ञा० सा० डूंगर भा० सुहासिणि पुत्र लषम सिंहेन भा० सोनाई पुत्र नगराजादि कुटुंब युतेन स्वपितुः श्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिम्बं कारितं । प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्री रत्नशेखर सूरिभिः अहिमदाबाद वास्तव्यः ।

[1031]

सं० १५५७ वर्षे मार्गशिर सुदि ९ शुक्रे श्री नाणा वालगच्छे उस० कावू गोत्रे का० सोंगा भा० सोंगलदे पु० धूलाकेन भार्या पूजी सहितेन पूर्वज पुण्यार्थं श्री शीतलनाथ बिम्बं का० श्री महेन्द्र सूरिभिः ॥

पञ्चतीर्थी और मूर्त्तियों पर । *

[1032] ×

१ सं० ७८ गे० पमा विनिगो बाज० लगापति कारितं ।

[1033]

ॐ ॥ संवत् ११९६ माघ सुदि १२ गुरौ सहज मत्साम्बा श्री ऋषभनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्रामदेव सूरिभिः ॥

[1034]

संवत् १२५८ जेष्ठ सुदि १० रवौ । श्रे० चाएकसीहेन निज कुटुम्ब सहितेन पार्श्वनाथः कारितः प्रतिष्ठितः श्री देवभद्र सूरिभिः ।

[1035]

सं० १२६२ फागुण सुदि १० रवौ श्रे० प्रवदेव सुत वीराणसदेव श्रेयोर्थं का० प्र० श्री भावदेव सूरिभिः ।

---

* ये मूर्त्तियां श्री मन्दिर जी के प्राङ्गनके दाहिने कोठरी में रखी हुई हैं ।

× यह मूर्त्ति बहोत प्राचीन है परन्तु अक्षर घिस जाने के कारण स्पष्ट पढ़ा नहीं गया ।

[1036]

१२····आषाढ़ सुदि ८ उवएस वाधि सीहेण पु० गामा माल्हाभ्यां पितृ श्रेयोर्थं बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सर्वगुप्त सूरिभिः।

[1037]

सं० १३२३ ज्येष्ट सुदि १········श्री पार्श्वनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्री उद्योतन सूरिभिः॥

[1038]

सं० १३२५ वर्षे फागुण सुदि ४ शुक्रे। श्रे० धामदेव पुत्र रणदेव धारण भा० आसलदे श्रे० राम श्री पार्श्वनाथ बिम्बं कारितं श्री कक्क सूरिभिः।

[1039]

सं० १३२८ वर्षे वैशाष शु० ६ षण्डेरक गछे श्री यशोभद्र सूरि सन्ताने सा० सढ़ाणल भा० जरूल्ह पु० रूणरू श्री आस सिंह भा० मील्हा····काया बिम्बं कारितं प्र० श्री शान्त्य सूरिभिः।

[1040]

सं० १३२९ वैशाख वदि ९ शुक्रे कबु ऊदा भार्या ललतू श्रेयसे कर्मणेन श्री आदिनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं ····।

[1041]

संवत् १३५२ वर्षे फागुण सुदि १० बुधे श्री चैत्र गछिय धर्कट वंशे नाहर गोत्रे सा० हापु सुत सा० विजयसीहेन भातृ धारसीह श्रेयसे ····माग्यकेन श्री वासपूज्य बिम्बं कारितं प्र० श्री गुणचन्द्र ····।

[1042]

सं० १३७४ माघ व० १० गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञा० श्रे० पुन पाल सुत सोमल पितृ पुन पाल श्रे० श्री पार्श्वनाथ बिम्बं कारितं श्री रामं (?) प्रायागछे प्रतिष्ठितं श्री शीलभद्र सूरिभिः॥

[1043]

सं० १३०५ वर्षे फागुण सुदि·········श्री पार्श्वनाथ विम्वं कारिता प्रतिष्ठितं श्री कक्क सूरिभिः ॥

[1044]

सं० १३०६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १२ बुधे श्री माल ज्ञातीय पितामह श्रे० वील्हण पितृ श्रे० सोमा पितृव्य साजण भ्रातृ माहा·········श्रेयोर्थं सुत राणा धरणिकाभ्यां श्री पार्श्वनाथ पञ्च-तीर्थी का० ।

[1045]

संवत् १३०९ वर्षे माघ वदि ११ गुरौ श्री·····दाहड़ वीरम श्री चन्द्रप्रभ बिम्बं प्रतिष्ठितं ।

[1046]

सं० १३५१ भट्टारुकीय गच्छे श्रे० पादा भा० जाइल पु० कर्म सीहेन पित्रो श्रेयोर्थं श्री महावीरं श्री रत्नाकर सूरि पट्टे श्री सोमतिलक सूरिभिः ॥

[1047]

संवत् १३९९ वै० सुदि १ प्राग्वाड़ श्री अगाड़ा भार्या वाल्हु·····विम्वं प्र० श्री भावदेव सूरि ।

[1048]

सं० १४०५ वर्षे वैशाष सुदि ५ सोमे श्री श्रीमाल ज्ञातीय पितृ षेता मातृ जगतल देवि तयो श्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्री नागेन्द्र गच्छे श्री रतनागर सूरिभिः ॥

[1049]

सं० १४०६ वर्षे ज्येष्ठ सु० ९ रवौ सा०·····कुटुम्ब श्रेयोर्थं श्री आदिनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं जीरापल्लीयैः श्री रामचन्द्र सूरिभिः ॥

[1050]

सं० १४०७ वैशाख वदि ४ रवौ श्री माल ज्ञातीय पितामह उदयसीह पितृ लषणसीह श्रेयसे सुत षोषाकेन श्री आदिनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्री गुणसागर सूरि शिष्य श्री गुणप्रभ सूरिभिः ।

[1051]

सं० १४०९ वर्षे फागुण सुदि २ बुधे हुंवड़ ज्ञातीय भ्रातृ पातल श्रेयसे ठ० वीरमेन श्री आदिनाथ बिम्बं कारितं प्र० श्री सर्वानन्द सूरि सहितैः श्री सर्वदेव सूरिभिः ॥

[1052]

सं० १४२१ वर्षे माघ वदि ६ दिने नाहर गोत्रे सा० देवराज भा० रुपी पु० सा० लोला भार्या नाल्ही.........पौत्रादि सहितै आत्मश्रेयसे श्री शांतिनाथ बिम्बं कारितं श्री रुद्रपल्लीय ग० भ० श्री जिनहंस सूरि पदे श्री जिनराज सूरिभिः ॥

[1053]

सं० १४२२ वर्षे वैशाष सु० ११ बुधे प्राग्वाट ज्ञा० कम्बोली वास्तव्य श्रेष्ठि तिहुणा भा० वांहणि पितृ श्रे० श्री पार्श्वनाथ बिम्बं कारितं प्र० श्री रत्नप्रभ सूरिभिः ।

[1054]

सं० १४२३ फागु० सु० ८ सोमे प्रा० व्य० हरपाल भार्या आल्हण दे पु० विजयपालेन पित्रो श्रे० श्री पार्श्वनाथ बिम्बं का० प्र० श्री शालिभद्र सूरिभिः ॥

[1055]

सं० १४२३ फागुण सु० ९ सोमे श्रीमाल व्य० जोहण भा० माल्हण दे सुत आल्हा पाल्हाभ्यां पितृव्य आसपाल भातृभ्यां श्रेयसे श्री वासुपूज्य बिम्बं कारितं श्री अभय चन्द्र सुरिणामुपदेशेन ।

[1056]

सं० १४३६ वर्षे फा० सु० ३ दिने मंत्रि दलीय गोत्रे सा० सारङ्ग भा० सारू पु० सीधरण भा० सुहवदे पुत्र सा० मांज मैस परवतादि युतेन श्री कुन्थुनाथ बिम्बं का० प्र० श्री खरतरगच्छे श्री जिनभद्र सूरि पट्टे श्री जिनचन्द्र सूरिभिः ॥

[1057]

संवत् १४३७ वर्षे वैशाख वदि १० सोमे। श्री कारंटगच्छे श्री नन्नाचार्य सन्ताने उपकेश ज्ञा० श्रे० सोमा भा० सूमलदे पुत्र सोनाकेन पितृ मातृ श्रे० श्री आदिनाथ बिम्बं का० प्र० श्री सांवदेव सूरिभिः ।

[1058]

सं० १४५० वर्षे मगसिर बदि ६ रवौ उपकेश ज्ञातीय सा० षाषण भा० षीमसिरि तयो श्रियोर्थं सुत आल्हा ऊदा देवाकेन श्री वासुपूज्य बिम्बं पञ्चती० का० प्र० श्री नागेन्द्रगच्छे श्री रत्नसंघ सूरि पट्टे श्री देवगुप्त सूरिभिः । भारा सलषा श्रेयोर्थं ॥ श्री ॥

[1059]

सं० १४५२ वर्षे वैशाष सुदि २ हुंवड़ ज्ञा० श्रे० देवड़ भा० चामल देवि पुत्र हापाकेन हापा भा० हलू पु० सु० पातल सुत भीला हुंबड़गच्छी श्री सर्वानन्द सूरि प० श्री सिंहदत्त सूरिभिः ।

[1060]

सं० १४५५ चिणचट गोत्रे सा० तीषण भा० तिहुणश्री पु० मोषाटन आत्मपूर्वजनिमित्तं चन्द्रप्रभ बिम्बं का० प्र० धर्मघोष गच्छे श्री सर्वाणन्द सूरिभिः ।

[1061]

सं० १४५७ आषाढ सुदि ५ गुरौ प्रा० ज्ञा० व्यव० ठाहड़ भार्या मोखलो पुत्र त्रिभुवणा केन पित्रो श्रे० श्री पार्श्वनाथ बिम्बं कारितं साधु पू० प० श्री धर्मतिलक सूरि उपदे० ....

[1062]

सं० १४६७ वर्षे ज्येष्ठ वदि १३ रवौ ऊकेश वंशे गादहीया गोत्रे सा० देपाल पुत्र आना भार्या भीमिणि श्रेयोर्थं श्री शांन्तिनाथ बिम्बं कारितं प्रति० उपकेश गच्छे श्री देवगुप्त सूरिभिः ॥

[1063]

सं० १४७२ वर्षे फाल्गुन वदि २ शुक्रे श्रीमाल संघे श्री पद्मनन्दि गुरू हुंवड़ ज्ञातीय व्य० पेथड़ भार्या हीरादे सु० दूथ सारग सायर बध गोत्रे श्री आदिनाथ बिम्बं .... ।

[1064]

ॐ ॥ सं० १४७३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि २ शुक्रवारे वावेल गोत्रे नरवच पु० आल्हा पाल्हा मातृपितृ श्रेयसे श्री आदिनाथ बिम्बं कारापितं श्री धर्मघोष गच्छे श्री पद्मसिंह सूरिभिः ॥

[1065]

सं० १४७४ वर्षे माघ सुदि ७ शुक्रे रनघणा गोत्रे हुंवड़ ज्ञातीय श्रे० वरजा भा० रूपी सु० सुप सूरा ॥ पितृश्रेयोर्थं श्री मुनिसुव्रत स्वामी बिम्बं का० श्री सिंहदत्त (रत्न ?) सूरिभिः ॥

[1066]

संवत् १४७७ वर्षे प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० नरदेव भार्या गांगी पुत्र श्रे० कावटेन भा० कडू पुत्र .... पितृव्य चांपा श्रेयोर्थं श्री चन्द्रप्रभ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ॥

[1067]

सं० १४७९ प्राग्वाट व्य० कल्हा कमी सुत सूरीकेन भा० नीणू भ्रा० चांपा सुत सादा पेथा पदमादि कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री कुन्थु बिंबं का० प्र० तपा श्री सोमसुंदर सूरिभिः ॥

[1968]

सं० १४८० वर्षे फा० सु० १० बुधे उप० ज्ञा० श्रे० कपूर भार्या कुसमीरदे सु० गेहा केन पित्रो श्रेय० श्री नमिनाथ बिंबं का० प्र० मड्डा० रत्नपुरीय भ० श्री धणचन्द्र सूरि प० श्री धर्म्मचन्द्र सूरिभिः ॥

[1069]

सवंत् १४८१ वर्षे वैशाख शुदि ३ शनौ प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० काला भार्या कील्हणदे सुत सरवणेन पितृमातृ श्रेयसे श्री चन्द्रप्रभ स्वामि पंचतीर्थी बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं मडाहड़ गछे श्री उदयप्रभ सूरिभिः ॥ श्री ॥

[1070]

सं० १४८२ वर्षे वैशाष वदि ५ उपकेश ज्ञा० राका गोत्रे सा० भूणा भा० तेजलदे पु० कानू रूल्हा भा० रयणीदे पु० केल्हा हापा शाल्हा तेजा सोभीकेन कारापितं नि० पुण्यार्थं आत्म श्रे० उपकेश गछे कुकदाचार्य सं० प्र० श्रीसिद्ध सूरिभिः ॥

[1071]

सं० १४७३ वर्षे द्वि वैशाख वदि ५ गुरौ श्री प्राग्वाट ज्ञा० व्य० खीमसी भा० साहू पुत्र व्य० जेसाकेन पुत्र वीकन भासाभ्यां सहितेन श्री मुनिसुव्रत स्वामि बिंबं श्री अंचल गच्छनायक श्री जयकीर्त्ति सूरि गुरूणां उपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन ॥

[1072]

सं० १४७४ वर्षे वैशाख वदि १२ रवौ उपकेश ज्ञातीय सा० कूंता भा० कुंवरदे पुत्र भम्भा भा० भावलदे पु० सायर सहितै श्री वासुपूज्य बिंबं का० प्र० उपकेश गच्छ सिद्धाचार्य सन्ताने भेदरथ श्री देवगुप्त सूरिभिः ॥

[1073]

सं० १४७४ वर्षे ज्ये० सु० ५ बुधे श्री नागेन्द्र गच्छे उपकेश ज्ञा० सा० साल्हा भा० माल्हा पु० धांगा भा० सामी पितृमातृ श्रे० श्री संभवनाथ बिंबं का० प्र० पद्माणंद सूरिभिः ॥

[1074]

सं० १४९१ वर्षे वैशाष सु० ६ गुरौ व० धरणा भा० पूनादे सुत हीराकेन भा० हीरादे पुत्र श्री सुमतिनाथ बिंबं श्री सोमसुन्दर सूरि प्र० .... ।

[1075]

सं० १४९१ वर्षे माघ सुदि ५ बुधे ओसवंशे पंचाणेचा सा० वस्ता भार्या लीलादे पुत्र ऊमाकेन सपरिवारेण स्वपुण्यार्थं श्री अजितनाथ बिंबं का० प्र० खरतर ग० श्री जिनसागर सूरिभिः ॥

[1076]

सं० १४९२ वर्षे ज्ये० व० ११ प्राग्वाट सा० आसी भा० आल्हणदे सुत चाचाकेन भा० चाहणदे सुत तोला बाला सुहड़ा राणा षांचादि युतेन स्वसुत डोसा श्रेयसे श्री नमिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सोमसुन्दर सूरिभिः ॥ श्री ॥

[1077]

सं० १४९५ ज्येष्ठ सुदि १४ बुधे सांषुला गोत्रे सा० वीहिल पु० चांपा भा० चापलदे पु० लाषाकेन भा० लषमादे पुण्यार्थं श्री शान्तिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री धर्मघोष गच्छे श्री पद्मशेषर सूरि पट्टे भ० श्री विजयचन्द्र सूरिभिः ॥

[1078]

सं० १४९६ वर्षे फागुण वदि २ शुक्रे हुंवड़ ज्ञातीय ठ० देपाल भा० सोहग पु० ठ० राणाकेन मातृपितृ श्रेयसे श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं निवृतिगच्छे श्री सूरिभिः ॥

[1079]

सं० १५०१ वर्षे फागुण सुदि १३ गुरौ सुराणा गोत्रे सा० सोनपाल भा० तिहुणी पु० घिणराजेन गुणराज दशरथ सहसकिरण समन्वितेन स्वश्रेयसे श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री धर्म्मघोष गच्छे भ० श्री पद्मशेषर सूरि प० भ० श्री विजयचन्द्र सूरिभिः ॥

[1080]

सं० १५०३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ११ शुक्रे दहदहड़ा .... श्री अरुनाथ बिंबं का० प्र० राम सेनीया वरफे (?) श्री धर्म्मचन्द्र सूरि पट्टे श्री मलयचन्द्र सूरिभिः ।

[1081]

सं० १५०५ वर्षे वैशाष सु० ६ सोमे श्री संडेरगच्छे ऊ० ज्ञा० वासुत गोत्रे सा० गांगण पु० पैरु पु० बुलाकेन सा० गोगी पुत्र ढाड़ा कुंभा सहितेन स्वपुण्यार्थं श्री शान्तिनाथ बिंबं का० प्र० श्री .... ।

[1082]

सं० १५०६ मा० सु० ८ दिने श्री उपकेशज्ञातौ सिरहठ गोत्रे सा० सहदेव भा० सुहवदे पु० सालिगेन पित्रो निमित्तं श्री कुंथुनाथ बिंबं का० प्रति० श्री सर्व सूरिभिः ॥

[1083]

सं० १५०७ वर्षे ज्येष्ठ सु० १० उप० चिपड़ गोत्रे सा० रावा भा० जेठी पु० देल्हाकेन मातृपितृ पुण्या० आत्म श्रे० श्री शान्तिनाथ बिंबं का० उपकेश गच्छे० प्रति० श्री कक्क सूरिभिः ।

[1084]

सं० १५०८ वर्षे ज्येष्ठ शु० १३ बुधे प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० सोमा भा० धरमिणि सुत मालाकेन लाला भा० गेलू राजूं युतेन स्वश्रेयोर्थं श्री वर्द्धमान बिंबं कारितं प्र० तपा श्री सोम सुन्दर सूरि शिष्य श्री रत्नशेषर सूरिभिः ॥ कूम्भिगिरि वास्तव्य ॥

[1085]

सं० १५०९ वै० शु० ३ प्राग्वाट व्य० मेघा भार्या हीरादे पुत्र व्य० आसा सोमा भा० कैलू आल्हा पुत्र शिखरादि कुटुम्ब युताभ्यां स्वश्रेयोर्थं श्री युगादि बि० का० प्र० तपा श्री सोमसुन्दर सूरि शिष्य श्री रत्नशेषर सूरिभिः ॥

[1086]

सं० १५१० वर्षे वैशाष वदि ५ सोमे गिरिपुर वास्तव्य हुंवड़ ज्ञाति डेभिकठ गोयद (?) भा० वारू सु० जाला भा० हीसू सु० आसाकेन भा० रूपी युतेन स्व० श्री सुविधिनाथ बि० का० श्री वृ० तपापक्षे श्री रत्नसिंह सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

[1087]

सं० १५११ वर्षे माह वदि ६ गुरु दिने उप० ज्ञा० चलद (?) गोत्रे सा० ठाड़ा भा० सहवादे सा० जाड़ा भा० जसमादे .... सहितया स्वश्रेयसे श्री धर्म्मनाथ बिंब का० प्र० श्री भ० रामसेनीया अटकरा० श्री मलयचन्द्र सूरिभिः ॥

[1088]

॥ सं० १५१३ व० चै० सु० ६ गुरौ उपकेश वं० ताल गो० सा० महिराज पु० सा० काल्हा भा० कलसिरि सु० धना भा० धरण श्री पु० घोषा यु० श्री शितलनाथ बिंबं का० प्र० धर्म्मघोष ग० श्री साधुरत्न सूरिभिः ॥

[1089]

॥ सं० १५१३ पौष शुदि ७ ऊकेश वंशे विमल गोत्रे सं० नरसिंहांगज सा० ऊाऊणेन श्री कुंथु बिंबं का० प्र० ब्रह्माणी उदयप्रभ सूरि तपा भट्टारक श्री पूर्णचन्द्र सूरि पट्टे हेम हंस सूरिभिः ॥

[1090]

॥ सं० १५१५ वर्षे जे० सुदि ५ उपकेस ज्ञा० जोजा उरा सा० वीदा भा० वारू पुत्र गांगा हुदाकेन पूर्वज निमित्तं श्री कुंथनाथ बिंबं का० प्र० श्री चैत्रगच्छे भ० श्री रामदेव सूरिभिः ॥

[1091]

सं० १५१७ वर्षे फा० शु० ११ शनौ सीणुरावासि प्राग्वाट व्य० चूत्रा भा० गउरी पुत्र सा० देल्हाकेन भा० रूपिणि पुत्र गरु आदि कुटुम्ब युतेन निज श्रेयसे श्री श्री विमलनाथ मूलनायक बिंबालंकृत चतुर्विंशति पट्टः का० प्र० तपागच्छे श्री रत्नशेखर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥

[1092]

सं० १५२३ वर्षे माघ सु० ६ रवौ रेवती नक्षत्रे प्राग्वाट श्रे० घेघा भा० जमलू सुत श्रे० रीभी भार्या श्रे० सोभा भार्या बाल्हलदे पुत्रा हुलू नाम्ना स्वश्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं का० प्र० तपा श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ आगीया ग्रामे ।

[1093]

सं० १५२५ वर्षे चैत्र वदि १० गुरौ ऊस वास्तव्य हूंबड़ ज्ञातीय व्ररजा (?) गोत्रे षे० कर्मणजा भा० नांनू सुत (?) कान्हा श्रेयोर्थं श्री आदिनाथ बिंबं प्रति० श्री ज्ञान सागर सूरिभिः ॥

[1094]

सं० १५२७ वर्षे आषाढ़ सु० १३ रवौ ऊ० ज्ञातीय गूंदोचा गोत्रे सा० भांभा भा० मापुरि पु० मांभा भा० वाल्हणदे पु० मूना पाल्हा सहितेन सुता श्रेयसे श्री सुमतिनाथ बिंबं का० प्र० श्री चैत्रगच्छे श्री सोमकीर्त्ति सूरि पट्टे श्री श्री चारुचन्द्र सूरिभिः ॥

[1095]

॥ संवत् १५२९ वर्षे ज्येष्ठ सु० शुक्रे उंशवाल ज्ञा० ताहि गोत्रो सा० मूलू भा० लूणादे द्वि० सुहागदे पु० सा० भाषर भा० नीली पु० रणधीर जगा हडी रहा धोपा श्रेयोर्थं श्री सुविधिनाथ बिंबं का० प्र० खरतर गच्छे श्री जिनचन्द्र सूरिभिः ।

[1096]

संवत् १५३१ वर्षे फागुन सु० ८ शनौ उप० ज्ञा० ईटोड़भा गो० सा० गपो भा० मानू पु० माका षेढा रतना भाला ऊबू पु० भादा सहितेन आत्म श्रेयसे श्री सुमतिनाथ बिंबं का० प्रति० श्री चैत्रगच्छे श्री सोमकीर्त्ति सूरि पट्टे आ० श्री नारचन्द्र सूरिभिः ॥

[1097]

संवत् १५३३ वर्षे माघ सुदि १३ सोमे श्री प्राग्वाट ज्ञातीय सा० नाऊ भा० हांसी पुत्र सा० ठाकुरसी सा० वरसिंघ भ्रातृ सा० वीसकेन भा० सोभी पुत्र सा० जीणा सहितेन श्री अंचलगच्छेश श्री श्री श्री जयकेसरि सूरीणामुपदेशेन श्री नमिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री संघेन मांही ग्रामे ॥ श्री श्री ॥

[1098]

॥ सं० १५३५ वर्षे मार्ग वदि १२ साघुला गोत्रे साह पाल्हा भा० रहणादे पु० सा० तेजा भा० तेजलदे पु० बलिराज वीसल लोला। माणिकादि युतेन श्री पार्श्वनाथ बिंबं का० प्र० श्री धर्म्मघोषगच्छे श्री पद्मशेषर सूरि पट्टे श्री पद्माणंद सूरिभिः ॥

[1099]

सं० १५३६ वर्षे मार्गसिरि सुदि १० बुधवासरे श्री संडेर गच्छे ऊ० तेलहरा गो० सा० ध्वना पु० काल्ह पूजा भा० खलतू पु० टोहा हीरा टोडा भा० वरजू पु० .... स्वश्रे० लाला निमित्तं श्री शीतलनाथ बिंबं का० श्री जिण भद्र (?) सूरि सं० श्री सालि सूरिभिः ॥

[1100]

सं० १५४२ वर्षे फा० व० २ दिने जालउर महादुर्गे प्राग्वाट ज्ञातीय सा० पोष भा० पोमादे पुत्र सा० जेसाकेन भा० जसमादे भ्रातृ लाषादे कुटुम्ब युतेन स्वश्रेयोर्थं श्री धर्मनाथ बिंबं कारितं प्र० तप श्री सोमसुन्दर सन्ताने विजयमान श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ श्रियोस्तु ॥

[1101]

सं० १५५९ वर्षे आषाढ़ सुदि २ ऊसवाल ज्ञाती कनोज गोत्रे सा० षेढा पु० सहसमल भा० सुहिलालदे पु० ठाकुरसि ठकुर युतेन आत्मश्रेयसे माल्हण पितृपुण्यार्थं शीतलनाथ बिंबं का० ॥ प्र० श्री देवगुप्त सूरिभिः ॥

[1102]

सं० १५६६ वर्षे वै० व० १३ र० पत्तनवासि प्रा० दो० माणिक भा० रबकू सुत पासाकेन भा० ईडू सु० नाथा सोनपालादि कुटुम्बयुतेन श्रेयोर्थं श्री धर्म्मनाथ बिंबं कारितं तपागच्छे श्री हेमविमल सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

[1103]

सं० १५६६ वर्षे फा० व० ६ गुरौ प्रा० सा० तोला ना० रुषमिणि पु० गांगाकेन ना० पींबू पु० लाखा लोखा लाषादि कुटुम्बयुतेन श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्र० तपा श्री सोमसुन्दर सूरि सन्ताने श्री कमलकलस सूरि पट्टे श्री नन्दकल्याण सूरिभिः ॥ श्रीः ॥ श्री चरणसुन्दर सूरिभिः ॥

[1104]

सं० १५९६ वर्षे ज्ये० शु० २ दिने प्राग्वाट ज्ञातीय ज्याथपुर वा० सा० हापा ना० दानी पु० सुश्रावक सा० सरवण ना० मना भ्रा० सा० सामन्त ना० कम्म पु० सा० सूरा सा० सींमा षेता प्रमुख समस्त परिवार युतैः निज पुण्यार्थं श्री श्रेयांस बिंबं कारितं प्र० श्रीमत्तपा गच्छे श्री पूज्य श्री आनन्दविमल सूरि पट्टे सम्प्रति विजयमान राजा श्री विजयदान सूरिभिः ॥

[1105]

सं० १६६७ वर्षे ज्येष्ठ वदि ४ लोढा गोत्रे प । माता हर्षमदे सु० कण्ठराकेन सुत वार दास प्रमुख कुटुम्ब युतेन श्री नमिनाथ बिंबं कारितं प्र० तपागच्छे श्री विजयसेन सूरीणां निदेशात् उ० श्री सायविजय (?) गणिभिः ॥

[1106]

संवत् १६७६ वैशाष सुदि ७ उदयपुर वास्तव्य उसवाल ज्ञातीय वरडिया गोत्रे सा० पीथाकेन पुत्र पोषादि सहितेन विमलनाथ बिंबं का० प्र० त० भट्टारक श्री विजयदेव सूरिभिः। स्वाचार्य श्री विजयसिंह सूरिभिः ॥

[1107]

सं० १६९० वर्षे ज्येष्ठ सुदि ५ सोमे उकेस वंशे झांगरेचा गोत्रे सा० गोविन्द भार्या गारवदे पुत्र सा० समरथ श्री खरतरगच्छे श्री जिनकीर्त्ति सूरि श्री जिनसिंह सूरिभिः प्रतिष्ठितं।

[1108]

सवत् १६७५ वर्षे वैशाष .... श्री अनन्तनाथ बिंबं का० प्र० च तपगच्छाधिराज भट्टारक श्री विजयदेव सूरिभिः ॥ स्वोपाध्याय श्री लावण्यविजय गणि का० भ० ....

[1109]

सं० १७७२ सा० तेजसी कारिता श्री विमलनाथ बिंबं .... ।

[1110]

संवत् .... जीवा पु० सीहड़ भार्या श्रीया देवि पु० राजापाल प्रजापाल श्री श्री आदिनाथ बिंबं का० प्र० .... ० श्री वर्द्धमान सूरिभिः ॥

[1111]*

॥ सं० १४७२ श्री ज्ञानकीय गच्छे । सा० बाहड़ भा० प्रमी पु० पाल्हा लोलाभ्यां अच्छुप्ता (?) कारिता ॥

श्री वासुपूज्यजी का मन्दिर ।

धातु की पञ्चतीर्थियों पर ।

[1112]

संवत् १५०६ व० ऊकेश सा० बच्छराज सु० सा० हीरा भा० हेमादे हरसदे पु० सा० जगा भा० फदु .... श्रेयसे श्री शीतल बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा श्री रत्नशेखर सूरिभिः श्री देवकुलपाटक नगरे ।

[1113]

सं० १७५२ वर्षे ज्येष्ठ सु० ५ गुरुवार सुराणा गोत्रे सा० चेतन पु० नारायण .... सु० लीला .... गोकलदास .... श्री चन्द्रप्रभ बिंबं कारितं ।

---

* यह मूर्त्ति देवी की है और वाहन घोड़ा है ।

श्री गौड़ीपार्श्वनाथजी का मन्दिर ।

धातुकी मूर्त्तियों पर ।

[1114]

सं० १७०५ माघ सु० १३ सोमे राणा श्री ....

[1115]

सं० १८०१ ज्ये० सु० ए उदेपुर महाराणा श्री जगतसिंहजी बापणा गोत्र साह श्री ..... ।

[1116]

सं० १८०८ वर्षे शाके १६७३ .... जेठ सु० ए बुधे तपा श्री विजयदेव सूरि श्री विजय धर्म सूरि राज्ये उदयपुर वास्तव्य पोरवाड़ जण्डारी जीवनदास जार्या मटकू श्री पार्श्व बिंबं कारापितं ।

धातु की चौवीशी पर ।

[1117]

ॐ ॥ सं० १५१२ वर्षे पो० व० १ गुरौ कक्केरा वासि उकेश व्य० जेसा जा० जसमादे सुत व्य० वस्ता जार्या वीऊलदे नाम्न्या पुत्र व्य० जीम गोपाल हरदास पौत्र कर्मसी नरसिंग थावर रूपा प्रमुख कुटुम्बयुतया निजश्रेयसे श्री शान्ति बिंबं का० प्र० तपागच्छ श्री लक्ष्मी सागर सूरि श्री सोमदेव सूरिजिः । श्रेयः ॥

धातु की पञ्चतीर्थियों पर ।

[1118]

ॐ सं० १५११ वर्षे वैशाष वदि ५ शनौ श्री मोढ़ ज्ञातीय मं० जीमा जार्या मञ्जु सुत मं० गोराकेन सुत जोला महिराज युतेन स्वपितुः श्रेयोर्थं श्री धर्म्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं विद्याधरगच्छे श्री विजयप्रज सूरिजिः ॥

[1119]

सं० १५४७ वर्षे पोष वदि १० बुधे ऊ० ज्ञातीय सा० कोला जार्या षीमाई पु० दीना

भा० छाडिकि नाम्न्या देवर सा० हेमा भा० फटू पु० धरणादि युतया स्वश्रेयसे श्री शान्ति नाथ बिंबं का० प्र० पूर्णिमा पक्षे श्री जयचन्द्र सूरि शिष्याण श्रा० श्री जयरत्न सूरि उपदेशेन वरूली ग्रामे ।

धातु के यंत्र पर ।

[1120]

सं० १५३४ श्री मूलसंघे भ० श्री भूवनकीर्त्ति श्री भ० श्री ज्ञानभूषण हूं० दो० लाषा भा० अमरा भातृ दो० हीरा भा० अरघू सु० जूठा भगिणि सु० माणिक .... ।

भण्डार की धातु की पञ्चतीर्थियों पर ।

[1121]

सं० १३३८ वर्षे चैत्र वदि ७ शुक्रे महं० हीरा श्रेया महं० सुत देवसिंहेन श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ॥

[1122]

सं० १३६१ ज्येष्ठ सु० ९ बुधे श्रे० आसपाल सुत अजयसिंह तद्भार्या श्री लहणदेवि तयोः सुत कान्हड़ पूनाभ्यां पितृव्य लूणा श्रेयसे श्री शान्तिनाथ कारितः । प्र० श्री यशो भद्र सूरि शिष्यः श्री विबुधप्रभ सूरिभिः ॥

[1123]

सं० १४३७ वर्षे द्वि (?) वैशाष व० ११ सोमे ओश० व्य० नरा भा० मेघी पु० भीम सिंहेन पित्रो श्रेयसे श्री विमलनाथ बिंबं का० प्र० ब्रह्माणीय श्री रत्नाकर सूरि पट्टे श्री हेमतिलक सूरिभिः ।

[1124]

सं० १४४९ वर्षे वैशाष शुदि ३ सोमे श्री श्रीमाल ज्ञा० पितृ षीमा मातृ षेतलदे श्रेयोर्थं सुत बाळाकेन श्री संभवनाथ बिंबं कारितं प्रति० श्री नागेन्द्र गच्छे श्री उदयदेव सूरिभिः ।

[1125]

सं० १४७७ ज्येष्ठ व० १ प्राग्वाट ठ० ठक्कुसीकेन पित्रो ठ० पूनसीह भा० पूमलदे ···· श्री चन्द्रप्रभ बिंबं का० प्र० मलधारि श्री मुनिशेखर सूरिभिः।

[1126]

सं० १५०१ माघ वदि ५ गुरौ प्राग्वाट व्य० धणसी भा० प्रीमलदे सुत व्य० लाषा भा० लाषणदे सुत व्य० षीमाकेन निज श्रेयसे श्री सुमति बिंबं कारि० प्र० तपा श्री मुनि सुन्दर सूरिभिः।

[1127]

सं० १५१६ वर्षे वै० व० १२ शुक्रे ऊकेश ज्ञाती व्य० नारद भा० घरघति पुत्र बाघाकेन भा० वल्हादे भ्रा० पहिराजादि कुटुम्ब युतेन स्वपितु श्रेयोर्थं श्री विमलनाथ बिंबं का० प्र० श्री सूरिभिः॥ महिसाणो वास्तव्य॥

[1128]

सं० १५२० वर्षे वैशाष सु० ३ सोमे उपकेश ज्ञा० मह० काल्हू भा० आघू पुत्र ३ जावड़ रतना करमसी स्वमातृनिमित्तं श्री चन्द्र प्रभ स्वामि बिंबं करापितं उपकेश गच्छे श्री कक्क सूरिभिः सत्यपुर वास्तव्यः॥

[1129]

सं० १५२४ वर्षे ज्ये० सु० ९ श्री श्री वंशे स० समधर भार्या जीविणि सुता वाल्ही पि० हेमा युतया पितृ मातृ श्रेयसे श्री अंचल गच्छ श्री जयकेशरी सूरिणामुपदेशेन श्री सुविधिनाथ बिंबं का० प्र० श्री संघेन।

[1130]

सं० १५५७ वर्षे ज्येष्ठ शुदि १० दिने प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० साजण भा० माल्हू पुत्र डगड़ा देवराज भा० देवलदे स्वपुण्यार्थं श्री श्री विमलनाथ बिंबं का० प्र० मडाहड़ गच्छ रत्नपुरीय भ० गुणचन्द्र सूरिभिः। उ० आणंदनंद सूरि तेन उपरिकेन।

[1131]

संवत् १५६० वर्षे आषाढ़ शुदि २ मेडतवाल गोत्र सा० इला भा० मील्हा पुत्र ताल्हा भार्या तिलसिरि स्वपितृश्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री मलधारि गच्छे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः।

[1132]

सं० १६५२ माह सुदि १० श्री मूलसंघे भ० श्री प्रभचन्द्र देवा तत्पट्टे भ० श्री चन्द्र कीर्त्ति तदाम्नाये चंदवाड़ गोत्रे सं० चाहा पुत्र तेजपाल पुत्र केसै। सुरताण श्रीवंत नित्य प्रणमंति मालपुर वास्तव्य ॥

जयपुर।

श्री सुपार्श्वनाथजी का पञ्चायती बड़ा मन्दिर।

पंचतीर्थियों पर।

[1133]

सं० १३३२ वर्षे ज्येष्ठ वदि १ गुरौ व्य० महीधर सुत झांझणेन आत्मश्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं सूरिभिः।

[1134]

ॐ सं० १३४० वर्षे ज्येष्ठ सु० १३ रवौ गूर्जर ज्ञातीय ठ० राजड़ सुत महं देल्हणेन पितृव्य वीरम श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री चैत्रगच्छिय श्री देवप्रभ सूरि सन्ताने श्री अमरचन्द्र सूरि शिष्यैः श्री अजितदेव सूरिभिः।

[1135]

सं० १३५० वर्षे माघ सुदि १३ सोमे श्री काष्ठासंघे श्री लाडवा गगणे श्रीमत्

आचार्य श्री तिहुणकीर्ति गुरूपदेशेन हुंवड़ ज्ञातीय व्य० बाहड़ भार्या लाछी सु० व्य० षीमा भार्या राजूल देवि श्रेयोर्थं सु० का० देवा भार्या राजुल देवि नित्यं प्रणमन्ति।

[1136]

सं० १४३७ वर्षे वैशाष वदि ११ सोमे प्राग्वाट ज्ञातीय श्रेष्ठि गोहा भार्या ललतादि सुत मूजाकेन। पितृभ्रातृश्रेयसे श्रीपार्श्वनाथ का० प्र० श्री रत्नप्रभ सूरीणामुपदेशेन।

[1137]

सं० १४३९ वर्षे पौष वदि ९ सोमे श्री ब्रह्माण गच्छे श्री श्री मा० पितृ माषसी भा० मोषलदे प्र० सुत सोमलेन श्री शान्तिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री बुद्धिसागर सूरिभिः॥ श्रीः॥

[1138]

सं० १४६५ वर्षे .... आत्मार्थं श्री शान्तिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री .... ।

[1139]

सं० १४६९ वर्षे ऊकेशवंशे नवलषा गोत्रे सा० सायर आत्मश्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रति० खरतर ग०। जिनचन्द्रेण .... स्तव्य।

[1140]

संवत् १४८९ वर्षे पोस सुदि १२ शुक्रे श्री हुंवड़ ज्ञातीय धावेमा गलनयोः पुत्रेण धा० हापाकेन स्वभ्रातृ धावड़ा मुलासी श्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री बृहत्तपागच्छे श्री रत्नसिंह सूरिभिः॥ शुभं भवतु॥ श्री॥ छ॥

[1141]

सं० १४९४ माह सु० ११ गुरौ श्री संडेरगच्छे ऊ० ज्ञा० संवाडि गौष्ठिक सा० सुरताण पु० धर्मा भा० धर्मसिरि पु० वासलेन भा० कानू पु० नाथा नाल्हा स० पित्रोः श्रेयसे श्री श्रेयंस तु० का० प्र० श्री शान्ति सूरिभिः शुभं।

[1142]

सं० १५०१ वर्षे माह सुदि १० सोमे श्री संडेरगच्छे उपकेश ज्ञा० साह कालू भार्या वाल्ही पुत्र कान्हा भार्या सारू पितृमातृश्रेयोर्थं श्री नमिनाथ बिंबं कारापितं प्रति० प० श्री सांति सूरिभिः।

[1143]

सं० १५०१ माह सुदि १० सोमे श्री ज्ञानकापगच्छे उपकेश० लोलस गोत्रे साह कान्हा भार्या कर्म्म सिरि पुत्र आला भार्या जाकु पुत्र धाना रामा काना भार्या अरपू आत्म श्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारा० प्रति० श्री शान्ति सूरिभिः।

[1144]

सं० १५०१ माह सुदि १० सोमे षिरुत गोत्र सा० माल्हा पु० अरजुण भार्या साल्ह पुत्र कान्हाकेन भा० हूंदी .... पु० दफस्या श्री पद्मप्रभः का० प्र० श्री धर्म्मघोषगच्छे श्री महीतिलक सूरिभिः आ० विजयप्रभ सूरि सहितैः॥

[1145]

संवत् १५०१ वर्षे फागुण सुदि १३ शनौ ऊ० ज्ञा० जाजा उटाणा सा० कर्म्मा भा० सागू पु० षेता जइताषेण भा० राणी पु० पंचायण जयता भा० मूंतो पित्रोः श्रे० श्री शान्ति-नाथ बिंबं का० श्री चैत्रगच्छे प्र० श्री मुनितिलक सूरिभिः।

[1146]

सं० १५०२ वै० व० ५ प्रा० व्य० लाषा लाषणदे पु० सामन्तेन सिंगारदे पु० पाल्हा रतना कीम्हादि युतेन श्री कुंथु बिंबं का० प्र० तपा रत्नशेखर सूरिभिः।

[1147]

सं० १५०४ फागुण शुदि ११ फूंगटिया श्रीमाल सा० साधारण पुत्रेण सा० समुधरेण श्री पार्श्वनाथ प्रतिमा कारिता प्रतिष्ठितं श्री तपाभट्टारक श्री पूर्णचन्द्र सूरि पट्टे श्री हेमहंस सूरिभिः॥

[1148]

सं० १५०५ आषाढ सुदि ९ श्री उप० सुचिंतित गोत्रे सा० सीहा भा० झबटही पु० सा० सोलाकेन पुत्र पौत्र युतेन आत्म पु० .... श्री चन्द्रप्रभ बिंबं का० प्र० श्री उपकेशगच्छे श्री कक्क सूरिभिः।

[1149]

सं० १५०६ फा० ब० ९ श्री उ० ग० श्री ककुदाचा० .... गो० सा० समधर सु० श्रीपाल भा० परवाई पु० मुद .... भव ससदा रंगाभ्यां पितु श्रे० श्री सम्भवनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री कक्क सूरिभिः।

[1150]

ॐ सं० १५०७ वर्षे मार्गशिर सुदि ३ शुक्रे उपकेश ज्ञातीय जढरू गोत्रे संदणसीह भार्या दादाह वीसल भाती महिपाल पु० मगराज साधी आत्मपुण्यार्थं श्री विमलनाथ बिंबं का० प्र० श्री वृहद्गच्छे श्री सागर सूरिभिः।

[1151]

सं० १५०७ वर्षे चैत्र वदि ५ शनौ लोढा गोत्रे। श्रे० गुणा भार्या गुणश्री पुत्र श्रे० पूजा कचरौभ्यां पितृव्य धन्ना पुण्यार्थं श्री धर्म्मनाथ बिं० का० प्र० खरतर श्री जिनभद्र सूरि श्री जिनसागर सूरि।

[1152]

सं० १५१० वर्षे चैत्र वदि ४ तिथौ शनौ हिंगड़ गोत्रे गौरन्द पुत्रेण सा० सिंघकेन निज श्रेयो निमित्तं श्री सुविधिनाथ बिंबं कारितं प्रति० तपा० भ० श्री हेमहंस सूरिभिः।

[1153]

सं० १५१२ माघ सुदि ७ बुधे श्री ओसवाल ज्ञातौ आदित्यनाग गोत्रे सा० सिंघा पु० ज्येल्हा भा० देवाही पु० दशरथेन भ्रातृपितृश्रेयसे श्री अनन्तनाथ बिंबं कारितं श्री उपकेश गच्छे श्री कुकदाचार्य सन्ताने प्रतिष्ठितं श्री कक्क सूरिभिः॥

[1154]

सं० १५१५ वर्षे फागुण शुदि ४ शुक्रवारे ओसवाल ज्ञातीय बब्बश गोत्रे सा० धीना भा० फाई पु० देवा पद्मा मना वाला हरपाल धर्मसी आत्मपुण्यार्थं श्री धर्म्मनाथ बि० का० प्र० श्री मलधार गच्छे ···· सूरिभिः ।

[1155]

सं० १५१६ वर्षे वैशाख सुदि २ बुधे श्री श्री मा० श्रे० जइता भा० लाबू तयो० पु० माधव निमित्तं लालू आत्मश्रेयोऽर्थं श्री शान्तिनाथ बिंबं का० पिप्पल ग० भ० श्री विजयदेव सू० मु० प्र० श्री शालिभद्र सूरिभिः ।

[1156]

सं० १५२३ वर्षे वैशाख सुदि ४ बुधे जालह राज्ञा० मंचूणा भा० देऊ सुत पितृ पांचा मातृ तेजू श्रेयसे सुत गोयंदेन श्री नमिनाथ बिंबं कारितं पूनिम गच्छे श्री साधुसुन्दर सूरि उपदेशेन प्रतिष्ठितं ।

[1157]

। सं० १५२३ वर्षे वैशाख सुदि १३ दिने मंत्रिदलीय ज्ञातीय मुंरूगोत्रे सा० रतनसी भार्या बाकुं पुत्र सा० देवराज भार्या रामाति पुत्र सा० मेघराज युतेन स्वपुण्यार्थं श्री विमलनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री खरतरगछ श्री जिनहर्ष सूरिभिः ॥

[1158]

सं० १५२७ वर्षे विदि १ सोम दिन श्रीमाल वंशे जूनीवाल गोत्रे सा० दासा पुत्र सा० षिउराजकेन समस्तं परिवारेण आत्मश्रेयसे श्री श्रेयांसनाथ बिंबं का० श्री षरतर गछे श्री जिनप्रभ सूरि अभिप्रतिष्ठितं श्री जिनतिलक सूरिभिः। शुभं भवतु ॥ छ ॥

[1159]

सं० १५२९ वर्षे आषाढ सु० २ रवौ श्री ओसवाल ज्ञा० चांणाचाल गच्छे षांमलेचा गोत्रे सा० साडूल भार्या मेघादे पु० भाषर भार्या भावलदे पु० मोहण हरता युतेन मातृ मेघू निमित्तं श्री पद्मप्रभ बिंबं कारितं प्र० भ० श्री वज्रेश्वर सूरिभिः ।

[1160]

सं० १५३० वर्षे माघ वदि २ शु० पालणपुर वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० नरसिंग भा० नामलदे पु० कांहा भा० सांवल पु० षीमा प्रमु माषी भा० सीचू श्रेयोर्थं श्री नमिनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे भ० श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ।

[1161]

सं० १५३० वर्षे मा० व० १० बुधे प्राग्वाट सा० सिवा भा० संपूरी पुत्र सा० पाल्हा भा० पाल्हणदे सुत सा० नाथाकेन भ्रातृ ठाकुरसी युतेन स्वश्रेयसे श्री मुनिसुव्रत बिम्बं का० प्र० तपा श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः धार नगरे ।

[1162]

सं० १५३३ वर्षे वै० सुदि ६ दिने श्रीमाल वंशे स० जईता पु० स० मारूण भा० लीलादे पु० षीमा जातड़ युतेन श्री सुपार्श्व बिंबं का० प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिनचन्द्र सूरि पट्टे श्री जिनभद्र सूरिभिः ।

[1163]

सं० १५३४ वर्षे कार्त्तिक शुदि १३ रवौ श्री श्रीमाल ज्ञा० गोत्रजा अम्बिका श्रेष्ठि चांद्रसाव भा० ऊमकु सुत वानर भा० ताकू सुत जागा भा० नाथी सहितेन स्वपूर्वजश्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिंबं का० प्र० श्री चैत्रगच्छे श्री मलयचन्द्र सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ।

[1164]

सं० १५३४ फा० शु० २ वासावासि प्राग्वाट व्य० आल्हा भा० देसू पुत्र परवतेन भा० भरमी प्रमुख कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री शीतलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छे श्री रत्नशेषर पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ।

[1165]

॥ सं० १५३७ फा० व० ८ बुधे ऊ० षांटड़ गो० म० पूना भा० अचू पु० राणाकेन भा० रयणादे पु० हरपति गुणवति तेज । हरपति भा० हमीरदे प्रमुख कुटुम्ब सहितेन स्वश्रेयसे

श्री सुमति बिंबं का० प्रतिष्ठितं भावरुद्दरा गछे श्री भावदेव सूरिभिः ॥ खिरहालू वास्तव्येन ॥

[1166]

संवत् १५४५ वर्षे माघ शु० १३ बु० लघुशाखा श्रीमाली वंशे मं० घोघल भा० अकाई सुत मं० जीवा भा० रमाई पु० सहसकिरणेन भा० ललनादे वृद्ध भा० इसर काका सूरदास सहितेन मातु श्रेयसे श्री अंचलगछेश श्री सिद्धान्तसागर सूरीणामुपदेशेन श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन श्री स्तम्भतीर्थे।

[1167]

सं० १५४९ वर्षे वैशाष सुदि ५ रवौ उपकेशज अचोवल० दढागोत्रे सा० साज भा० तेजसर पु० कुंप कोन्हा सहिसा सीधरा अरष युतेन स्वपुण्यार्थं श्री नमिनाथ बिं० का० प्र० श्री मलयचन्द्र सूरि पट्टे श्री मणिचन्द्र सूरिभिः।

[1168]

संवत् १५५७ वर्षे शाके १४२२ वैशाष सुदि ५ गुरौ चण्डाल्या गोत्रे सा० तेजा भा० रूपी पु० अचला भा० देमी आत्मश्रेयसे श्री धर्म्मनाथ बिंबं कारापितं श्री मलयधार गछपति श्री गुणवषान सूरिभिः।

[1169]

सं० १५६२ व० माघ सु० १५ गु० ऊ० वोक० गोत्र० सा० जेसा भा० जिसमादे पुत्र राणा भा० पूणदे पु० अरुबाल तेजा आ० श्रे० श्रेयांस बिं० का० बोकड़ी० श्री मलयचन्द्र पट्टे मुणिचन्द्र सूरिभिः।

[1170]

संवत् १५६६ वर्षे फागुण सुदि ३ सोमे विश्वलनगरे प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० जीवा भार्या रंगी पुत्र रत्न श्रे० काहीआ भ्रातृ श्रीवन्त। केन भार्या श्री रत्नादे द्वि० दाडिमदे सुत षीमा भामादि कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागछ भट्टारक श्री हेमविमल सूरिभिः॥ कल्याणमस्तु॥

[1171]

संवत् १५७१ वर्षे माघ सुदि ५ रवौ उप० सा० धरमा भा० काउ सु० सोता मांडण सु० रूपा सोता भा० सुहड़ादे सु० नरसिंघ आल्हा नापा माला मारूण भार्या माणिकदे पु० गांगा मोका पद्म रूपा भार्या हासू सु० सेटा नोमा सुकुटुम्बेन रूपा नापा निमित्तं श्री शान्तिनाथ बिंबं का० प्र० श्री देवरत्न सूरिभिः ॥

[1172]

सं० १५७७ वर्षे पोस वदि ६ रवौ प्राग्वाट ज्ञातीय प० काका भा० वाक सुत प० पहिराज भा० वरबागं आत्मश्रेयोर्थं श्री चन्द्रप्रभ स्वामी बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः श्रीरस्तुः ॥

[1173]

सं० १६७७ वर्षे ज्येष्ठ सु० १ दिने सुजाउलपुर वास्तव्य श्री० तिलका श्री सुविधिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री विजयदेव सूरिभिः।

धातु की चौवीशी पर।

[1174]

सं० १५०९ वर्षे आषाढ सुदि २ सोमे उसिवाल ज्ञातीय सूराणा गोत्रे सा० लषणा भा० सषण श्री पु० सा० सकर्म्मण सा० सिवराजेन श्री कुन्थुनाथ चतुर्विंशति पट्ट कारितं प्रतिष्ठितं श्री राजगच्छे भट्टारक श्री पद्माणंद सूरिभिः ॥ श्री ॥

[1175]

संवत् १५२१ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ गुरौ रणासण वासि श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० धर्म्मा भा० धर्म्मादे सुत भोजाकेन भा० भली प्रमुखकुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री शान्तिनाथ चतुर्विंशतिः पट्टः कारितः प्रतिष्ठितं श्री सुविहित सूरिभिः। श्रीरस्तु ॥

धातु की मूर्त्तियों पर।

[1176]

संवत् १६०१ वर्षे श्री आदिकरण बोटा बा० रंजा श्री श्रीमाली न्यात श्री धर्म्मनाथ श्री विजयदान सूरि।

[1177]

संवत् १५४४ वर्षे फागुण सुदि १ तिथौ बुधवासरे तपागच्छाधिराज भट्टारक श्री विजय प्रभ सूरि निदेशात् श्री पार्श्वनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं बा० मुक्तिचन्द्र गणिभिः कारितः।

धातु के यंत्र पर।

[1178]

सं० १८५२ पोस सुदि ४ बृहस्पतिवासरे श्री सिद्धचक्र यंत्रमिदम् प्रतिष्ठितं बा० लालचन्द्र गणिना कारितं सवाई जैनगर वास्तव्य से० वषतमल तत् पुत्र सुषलालेन श्रेयोर्थं। ठ।

[1179]

सं० १८५६ माघ मासे शुक्लपक्षे तिथौ ५ गुरौ श्री सिद्धचक्र यंत्रं प्र० श्रीमद् बृहत् खरतरगच्छे भ० श्री जिनचन्द्र सूरिभिः जयनगर वास्तव्य श्रीमालान्वय फोफलिया गोत्रीय अनन्दराम त० पूबचन्द तत् पुत्र बहादुरसिंघ सपरिकरेण कारितं स्वश्रेयोर्थं।

श्री सुमतिनाथजी का मन्दिर।

पञ्चतीर्थियों पर।

[1180]

ॐ संवत् १४७६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ सोमवासरे जाईलवाल पवित्र गोत्रे संघवी ठीहल पुत्र सं० जेजा भि० जस .... पु० वाहड सहितेन आत्मश्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री धर्म्मघोषगच्छे श्री महीतिलक सूरिभिः॥

[1181]

सं० १४९१ आषा० वदि ७ श्री श्रीमालवंशे वडली वास्तव्य सं० सांडा जा० कामलदे पुत्र स० मना जा० रशदे पुत्राभ्यां सं० समधर सं० सालिग अभ्यो जा० राजू साधू सुत मिघा माणिक रत्ना प्रमुख कुकुम्ब सहिताभ्यां श्री सुपार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागछाधिराजैः श्री सोमसुन्दर सूरिभिः शुभं भवतु कल्याणमस्तु ॥

[1182]

सं० १४९३ वैशाष सुदि ५ उप ज्ञा० आदित्यनाग गोत्रे। सा० पदमा पु० षेढा जा० पूजी पुत्र षीमाकेन श्री श्रेयांसनाथ बिंबं का० श्री उपकेशगछे कुक० प्र० श्री सिद्ध सूरिभिः ॥

[1183]

सं० १५०६ वर्षे माह वदि ९ श्री कोरंटकीयगछे श्री नन्नाचार्य सन्ताने। ऊ० ती० सुचन्ती गोत्रे जा० आभरमुणया पु० हाता जा० हुती पु० मांरूण जा० माणिक पु० षेतादि श्री वासपूज्य बिंबं कारापितं प्र० श्री सांबदेव सूरिभिः।

[1184]

सं० १५१३ ओसवाल मं० भारमल्ल भावलदे पुत्र रत्नाकेन जा० अपू भ्रा० टील्हा शिवादि कुटुम्बयुतेन श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा श्री सोमसुन्दर सूरि श्री मुनिसुन्दर सूरि श्री जयचन्द्र सूरि शिष्य श्री रत्नशेषर सूरिभिः।

[1185]

संव० १५१७ वर्षे चैत्र शु० १३ गु० प्राग्वाट ज्ञा० सा० लषमण जा० साधू पुत्र साह गोवले जा० राजू युतेन स्वश्रेयसे श्री पार्श्व बिंबं का० प्र० तपागछेश श्री मुनिसुन्दर सूरि तत् पट्टे श्री रत्नशेषर सूरिभिः ॥

[1186]

सं० १५४९ फा० सु० ११ भौ० श्री मू० त्रिभुवनकीर्ति देवा० तत् पट्टान्व सा० पची। जा० वरम्हा पु० सा० जनु। जा० चादंगदे पु० वहू जा० नूपा। त्रि० पु० सा० भेदा जा० दानसिरि व० पु० अजितू जा० नैना कके (?) विजसी ....।

[1188]

सं० १५५ए वर्षे वैशाख सुदि १३ सोमे श्री ब्रह्माण गच्छे श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रेष्ठि मंईआ भार्या माणिक सुत सामल भार्या सारू सु० धर्मण धाराकेन स्वपित्र पूर्विज श्रेयोर्थं श्री धर्म्मनाथ बिंबं कारापितं प्र० श्री विमल सूरि पट्टे श्री बुद्धिसागर सूरिभिः वणड वास्तव्य: ॥

[1189]

ॐ सं० १५५ए वर्षे आषाढ सुदि १० बुधे ओसवाल ज्ञातौ तातहड़ गोत्रे सा० आढ भा० गोपाही पु० सुलखित । भा० सांगर दे स्वकुटुंबयुतेन श्री कुन्थुनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं कक्कुदाचार्य सन्ताने उपकेश गच्छे भ० श्री देवगुप्ति सूरिभिः ।

[1190]

सं० १५६३ माह सु० १५ गुरु श्री संडेर गच्छे उसवाल पूगलिया गोत्रे स० काजा भा० रानू पु० नरवद भा० राणी पु० तिहुण करमा कुवाला सहसा प्र० आतम पु० श्री मुनिसुव्रतस्वामि बिंबं कारापितं प्रति० श्री शान्ति सूरिभिः ॥

[1191]

सं० १५६ए वर्षे वैशाष सुदि ६ दिने सूराणा गोत्रे सं० चांपा सन्ताने । सं० सचारू सु० सं० गांडा भा० धणपालही पु० सं० सहसमल्ल भ्रातृ आढा पु० सोमदत्त युतेन मातृ पुण्यार्थं श्री शान्तिनाथ बिंबं का० श्री धर्म्मघोष गच्छे प्र० भ० श्री नन्दिवर्द्धन सूरिभिः ॥

[1192]

सं० १५७४ वैशाष वदि ५ ओसवंशे वरहडिया गोत्रे सा० लाषा पुत्र सा० हर्षा भार्या हीरा दे पुत्र सा० टोडर श्रावकेण स्वश्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं च अञ्चल गच्छे श्रावकेण श्रेयोस्तु ॥

[1193]

संवत् १५७७ वर्षे पोस वदि ५ सकरे सहूआला वास्तव्य प्राग्वाट वृद्ध शाखायां दो० वीरा भा० भाणा भा० भरमा दे तेन स्वश्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री जिन साधु सूरिभिः ॥

[1194]

सं० १६१२ वर्षे फागुण शुदि २ तिथौ श्री ओसवाल वंशे सा० आढत भा० रेणमा सुणो सा० चतुह धर्मते कारापितं श्री वृहितेरा गछे भ० श्री भावसागर सूरि त० श्री धर्म्म-मूर्त्ति सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्री अनन्तनाथ।

[1195]

॥ संवत् १६२४ वर्षे माहा शुदि ६ सोमे ओसवाल ज्ञातीय दोसी भामा संत दोसी पू० । ज । भार्या बाई मेलाई सुत वानरा श्री धर्म्मनाथ बिंबं कारापितं ॥ तपागछ श्री ७ श्री हीर विजय सूरि प्रति० सावलटन नगरे।

[1196]

सं० १६५३ वर्षे अलाई ४२ संवत् ॥ माघ सुदि १० दिने सोमवारे ऊकेश वंशे शंख-वाल गौत्रीय सा० रायपाल भार्या रूपा दे पुत्र सा० पूना भार्या पूना दे पुत्र मं० पाता मं० देहाभ्यां पुत्र जिणदास म० चांपा मूला दे मू। सामल सपरिकराभ्यां श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं च श्री वृहत् खरतर गछाधीश्वर श्री अकबरसाहिप्रतिबोधक श्री जिन-माणिक्य सूरि पट्टालङ्कार युगप्रधान श्री जिनचन्द्र सूरिभिः।

[1197]

सं० १७०३ वर्षे मार्गशिर्षे सित १ दिने मेडता नगरे वास्तव्य शंखवालेचा गोत्रे सा० डूंगर पुत्र सा० माईदासकेन श्री मुनिसुव्रत बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं च तपागछाधिराज सुवि-हित भट्टारक श्री विजयदेव सूरि पट्टे आचार्य श्री विजयसिंह सूरिभिः ॥ कृष्णगढ नगरे मुदपत्त भयचन्द्र(?) प्रतिष्ठायां ॥

धातु की चौवीशी पर।

[1198]

॥ संवत् १५३२ वर्षे वैशाख वदि २ शुक्रे प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० मामल भा० कांई सु० पाता भा० वाऊं सु० देवाकेन भा० देवलदे प्र० भ्रातृ सामंत भा० लाछी सु० समधर भा० अजी सु० मांकण भोजा राणा द्वि० भ्रा० ऊदा भा० बाई पु० साईआ भा० सहिज्यादि कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री संभवनाथ चतुर्विंशति पट्टः जीवितस्वामी पूर्णिमापक्षे श्री पुण्यरत्न सूरीणामुपदेशेन का० प्र० सुविधिना साकरग्रामे।

धातु की मूर्त्तियों पर।

[1199]

सं० १६३२ श्री संभवनाथ बिंबं पास०।

[1200]

सं० १७७४ माघ तिन २३२ वासा गुलालचन्द श्री सुमति बिंबं कारितं।

[1201]

सं० १८३१ वर्षे मार्गशिर वदि १ शनौ रोहिणी नक्षत्रे भ० श्री विजयधर्म्म सूरीश्वरराज्ये मुनि श्री ऋद्धिविजय गणि प्रतिष्ठितं पं० विद्याविजय गणि श्री वृषभनाथ बिंबं कारापितं स्वश्रेयसे।

[1202]

श्री ऋषभदेवजी मीती माग श्री सु० ३ सं० १९०६।

[1203]

श्री हंसराज श्रेयोर्थं श्री अभिनन्दन बिंबं।

धातु के यंत्र पर ।

[1204]

संवत् १०४० आश्विन शुक्क १५ दिने तपागछाधिराज श्री विजैजिनेन्द्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं सिद्धचक्र यंत्रमिदं कारापितं पटणी बाहादुरसिंहेन स्वश्रेयसे पं० पुन्यविजै गणीनामुपदेशात् ॥

[1205]

संवत् १०५२ पोस सुदि ४ दिने वृहस्पति वासरे श्री सिद्धचक्र यंत्रमिदं प्रतिष्ठितं जैनगरमध्ये वा० लालचन्द्र गणिना वृहत् खरतरगछे कारितं बीकानेर वास्तव्य जै० मधेन श्रेयोर्थ ॥ श्री ॥

श्री आदिनाथजी का (नया) मन्दिर ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[1206]

संवत् १४३६ वर्षे माघ वदि ११ तिथौ श्री मालान्वये ढोर गोत्रे सा० तोल्हा तद्भार्या श्रा० माणी तत् पुत्र सा० महराज श्री शान्तिनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री खरतरगछे भ० श्री जिनचन्द्र सूरिभिः ॥ शुभं भवतु ॥

[1207]

सं० १४एए फागुण वदि २ गुरौ श्री उपकेश ज्ञातौ श्री धरकट गोत्रे सा० हरिराज प्रसिद्धनाम सा० बगुला पुत्रेण सा० लाषा श्रावकेन भार्या गजसीही पुत्र बलिराज युतेन श्री संभवनाथ बिंब का० प्र० श्री वृहद्गछे श्री रत्नप्रभ सूरिभिः ।

[1208]

॥ सं० १५२४ वर्षे ज्येष्ठ शुदि ५ ऊ० सा० लाषा भा० लषमादे सा० गुणराज धर्म्म

पुत्री श्रा० धारू नाम्न्या श्री सुविधिनाथ बिंबं कारितं प्र० तपागछनायक श्री सोमसुन्दर सूरि संताने श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ सा० गुणराज सुत सा० काल्हू सुत सा० सदराज ॥

[1209]

सं० १५३१ वर्षे चैत्र वदि ७ बुधे चंदेरा वास्तव्य ओसवाल सा० दापा भा० हरषमदे सुत समराकेन भार्या शीतादे सु० वेला मेघराज हंसराज प्रमुख कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री अनंत बिंबं का० प्र० श्री षरतरगछे भ० श्री जिनचंद्र सूरिभिः ॥

[1210]

सं० १५३६ ज्येष्ठ शु० ५ रवौ उप० सीसोदिया गोत्रे सा० देवायत भार्या देवलदे पु० षेता भार्या षेतलदे पुत्र भाषर युतेन स्वपुण्यार्थं श्री नमिनाथ बिंबं कारापितं प्रति० संडेर-वालगछे श्री सालि सूरिभिः ।

[1211]

॥ सं० १५४२ वर्षे वैशाष सुदि ए शुक्रे ऊकेश ज्ञा० सिंघाडिया गोत्रे सं० रेडा सं० सा० कदा भार्या जदतदे पु० सा० लाडू श्रीमल्ल जिणदत्त । पारस युतेन आ० पु० श्री मुनिसुव्रत बिंबं का० श्री मेरुप्रभ सूरिभिः ॥ श्री ॥

[1212]

संवत् १५५ए वर्षे मागस (मार्गशीर्ष) शु० १५ सोमे श्री श्रीमाल भ० वरसिंग भा० देमी० सु० हेमा सु० हराज सु० जयता पोमा सु० पांचाकेन आत्मश्रेयसे श्री संभवनाथ बिंबं कारितं श्री पूर्णिमा पक्षे श्री मनसिंह सूरिभिः प्रतिष्ठितं मारबीआ (ग्रामे ?) ।

[1213]

॥ संवत् १५७० वर्षे माघ सुदि १२ भूमे श्री प्राग्वाट० सा शिवा भा० सहजलदे पुत्र हरषा रूपा हरषा भा० लाडकि पुत्र मातृपितृभ्रातृ भृ० श्रेयोर्थं श्री श्री श्री आदिनाथ बिंबं कारापितं । प्रतिष्ठितं श्री नागेन्द्रगछे भट्टा० श्री हेमसिंघ सूरिभिः ।

[1214]

॥ संवत् १६२० वर्षे फाल्गुन शुदि ७ बुधे कुमरगिरि वासि प्राग्वाट ज्ञातीय वृद्ध शाखायां अंबाई गोत्रे व्यवहा० खीमा भा० कनकादि पुत्र व्य० ठाकरसी भा० सोभागदे पुत्र देवर्ण परिवारयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्री धर्म्मनाथ बिंबं कारितं। प्रतिष्ठितं श्री वृहत्तपागच्छे श्री पूज्याराध्य श्री विजयदान सूरि पट्टे श्री पूज्य श्री श्री श्री हीरविजय सूरिभिः आचं-द्रार्कं नन्द्यात् श्रीः ॥

[1215]

संवत् १६३० वर्षे माघ शुदि १३ सोमे श्रीस्तम्भतीर्थ वास्तव्य श्री श्रीमाल ज्ञातीय सा० वस्ता भा० विमलादे सुत सा० थावरवच्छी .... भ्या श्री शान्तिनाथ बिंबं कारापितं श्रीमत्तपागच्छे भट्टारक श्री हीरविजय सूरिभिः प्रतिष्ठितं शुभं भवतु ॥

धातु की चौवीशी पर।

[1216]

संवत् १५६९ वर्षे वैशाष शुदि ९ शुक्रे श्री बायड़ा ज्ञातीय म० मांण्यक भा० गोमति स० वेलाकेन भा० वनादे सु० लहूंआ लाखण लहूंआ भा० लालू सकुटुम्ब श्रेयोर्थं श्री श्रादिनाथ चतुर्विंशति पट्टः कारापितं श्री आगमगच्छे श्री सोमरत्न सूरि प्रतिष्ठितं विधिना श्रीरस्तु।

धातु की मूर्त्तियों पर।

[1217]

सं० १९१० ज्येष्ठ सुदि ६ सा० कपूरचन्द। चन्द्रप्रभ भ। तपागच्छे प्रतिष्ठितं।

[1218]

सं० १८२७ वर्षे॥ घाइ। सावर। शेन। श्री ऋषभनाथ बिंबं श्री तपागच्छे।

धातु के यंत्र पर।

[1219]

संवत् १८५२ वर्षे ७ पोष सुदि ४ दिने सिद्धचक्र यंत्रमिदं प्रतिष्ठितं वा० लालचन्द्र गणिना कारितं सवाई जयनगरमध्ये समस्त श्रीसंघेन वृहत् षरतरगच्छे। शुभमस्तु॥

श्री पार्श्वनाथजी का मन्दिर—श्रीमालोंका महल्ला।

पञ्चतीर्थियों पर।

[1220]

सं० १४६५ वर्षे वैशाष सुदि ३ सापुगा गोत्रे सा० वेला भार्या स० वील्हणदे पु० साधु षिमराज पेमाभ्यां पितृ मातृ श्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं॥ प्र० श्री धर्म्मघोषगच्छे श्री सोमचन्द्र सूरि पट्टे श्रीमलचन्द्र सूरिभिः॥

[1221]

सं० १५११ वर्षे माघ शु० ५ गुरू श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० मकुणसी भार्या नाऊ सुत कीयाकेन पितृमातृनिमित्तं आत्मश्रेयोर्थं श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्रीब्रह्माणगच्छे श्री मुनिचन्द्र सूरिभिः मेहूणा वास्तव्य। श्री।

[1222]

संवत् १५३० वर्षे पोष वदि ६ रवौ श्री श्रीमाल ज्ञा० मंत्रि समधर भा० श्रीयादे सुत बीकाकेन आत्मश्रेयोर्थं श्री विमलनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री पिप्पलगच्छे श्री गुणदेव सूरि पट्टे श्री चन्द्रप्रभ सूरिभिः रालजग्रामे।

[1223]

सं० १५३१ वर्षे वै० शु० १० सोमे उसवंशे लोढा गोत्रे सा० चाहड़ भा० देल्ह सु०

नीव्हा भा० सोनी करमी सु० सा० हासकेन भ्रातृ सा० नाऊ सा० षेऊ हासा भार्या रतनी सु० सा० ठाकुर सा० ईलटला० ऊधादि प्रमुखयुतेन स्वश्रेयसे श्री अजितनाथ बिंबं का० प्रति० श्री वृहद्गच्छ श्री सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

[1224]

॥ संवत् १५५५ वर्षे फागुण सुदि ए बुधे सीधुरु गोत्रे ठधरि गरूपाल भा० गोरादे सुत वस्तुपाल भ्रातृ पोमदत्त वस्तपाल भा० वल्हादे पुत्र त्रैलोक्यचंद्र श्रेयोर्थं श्री संभवनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं खरतरगच्छे भ० श्री जिनसमुद्र सूरिभिः ॥

[1225]

संवत् १६२४ वर्षे वै० शुदि १ शुक्रवासरे तपगच्छे नायक भ० प्रभ श्री हीरविजय सूरि मनराजो श्री पद्मप्रभ बिंबं प्रतिष्ठितं प्रतिष्ठापितं नागपर [illegible] गोत्र सा० अमीपाल भा० अमूलकदे पु० कूअरपाल भा० कुरादे प्रतिष्ठितं शुभं भवति ॥

धातु की मूर्त्ति पर।

[1226]

सं० १८७७ माघ शुक्ल १३ बुधे श्री पार्श्वनाथ जिन बिंबं कारितं। प्र० वृ० त ख० श्री जिनचन्द्र सूरिभिः।

धातु के यंत्र पर।

[1227]

संवत् १८५६ वर्षे वैशाष मासे शुक्ल पक्ष तिथौ ३ बुधे श्री सिद्धचक्र यंत्रं प्रतिष्ठितं भ० जिनअक्षय सूरि पट्टालङ्कार श्री जिनचन्द्र सूरिभिः जयनगर वास्तव्य श्रीमालान्वये सींघरु गोत्रीय किसनचन्द्र तत्पुत्र उदयचंद्र सपरिकरेण कारितं स्वश्रेयोर्थं ॥

[1228]

सं० १९०२ वर्षे आश्विन मासे शुक्ले पक्षे पूर्णमासी तिथौ बुधे जयनगर वास्तव्य

श्रीमालवंशे फोफलिया गोत्रीय चुनीलाल तत् पुत्र हीरालालेन श्री सिद्धचक्र यंत्र कारितं चारित्रउदय उपदेशात् प्र० भ० खरतरगच्छीय श्री जिननन्दीवर्द्धन सूरिभिः पूजकानां .... ती भूयात् ।

आम्बेर । *

श्री चन्द्रप्रभ स्वामी का मंदिर ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1229]

सं० १३९० वर्षे पोष सुदि १२ सोमे श्री काष्ठासंघे .... सुत ताहड़ श्रेयोर्थं श्री सुमतिनाथ प्रतिष्ठितं ।

[1230]

सं० १५२५ वर्षे मार्गसिरि वदि १२ शुक्रे उपके० बावेल गोत्रे सा० अह पुत्र लोला भार्या लाछिमदे .... स्वश्रेयसे पितृमातृपुण्यार्थं श्री चंद्रप्रभ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री मलधार गच्छे श्री गुणसुन्दर सूरिभिः ।

[1231]

॥ सं० १५४२ वर्षे फागु० व० २ दिने सीतोरेचा गो० ओस० सा० सूरा भा० सूरमादे पु० परवत भा० सहजादे तथा परवत देलू समधर वीजा सहस भा० पगमलदे सहित भा० सहजा पुण्यार्थं श्री संभवनाथ बिंबं का० प्र० श्री नाणकीयगच्छे श्री धनेश्वर सूरिभिः ॥छ॥

---

* जयपुर शहरसे ५ मैल पर यह स्थान है और यहांका विशाल प्राचीन दूर्ग प्रसिद्ध है ।

अलवर ।

पाषाण के मूर्त्ति पर ।

[1232] *

(१) ॥ सिद्धि ॥ संवत् १५१० वर्षे ज्येष्ठ वदि ११ दिने शुक्रवासरे श्री गोपाचल नगरे राजाधिराज श्री डूंगर-सिंह-देवराज्ये ऊकेश विं (वं) शे ।

(२) [पं] चलउट गोत्रे जण्डारी देवराज जार्या देल्हणदे तत्पुत्र जं० नाथा जार्या रूपाई स्वश्रेयोर्थं श्री संजवनाथ बिंबं कारितं प्रति-

(३) ष्ठितं श्री षरतरगछे श्री जिनचन्द्र सूरि शिष्य श्री जिनसागर सूरिजिः ॥ ॥ श्रीरस्तु ॥ ७ ॥

नागौर ।

श्री ऋषजदेवजी का बड़ा मंदिर—हीरावाडी ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[1233]

१ । ॐ संवत् सु० १०६६ फाल्गुन विदि २

२ । मा मुलक व सतो पाहूरि सा-

३ । वकेणं सन्तरसुतेन नित्य-

४ । श्रेयोर्थं कारिताः ॥

[1234]

संवत् १३६१ वर्षे .... सुदि २ सोमे श्रेष्ठि धणपाल जार्या पाल्हू पुत्रेण कुमरसिंह श्रावकेण आत्मश्रेयोर्थं श्री महावीर बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री .... ।

* यह लेख राय गौरीशङ्करजी बहादुर से मिला है उनके विचार से इस लेख का राजाधिराज डूंगरसिंह देव ग्वालिअर का तंवर (तोमर) वंशी-राजा डूंगरसिंह ही हैं । इस मूर्त्ति की मूल प्रतिष्ठा ग्वालिअर में हुई थी, यहां से किसी प्रकार अलवर पहुंची है ।

[1235]

संवत् १४३० वर्षे चैत्र सुदि १५ सोमे रावगणे वोवे (?) नेपाल भा० पूरी पु० सा० पेथा स्वपितृमातृश्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिंबं कारापितं श्री धर्म्मघोषगछे श्री मलयचन्द्र सूरि पट्टे प्रतिष्ठितं श्री पद्मशेषर सूरिभिः ॥

[1236]

संवत् १४५० वर्षे वैशाख वदि २ बुधे उपकेश ज्ञातीय केकडिया गोत्र .... भा० रूदी ७ जेस भा० जसमादे पित्रोः श्रे० श्री चन्द्रप्रभस्वामि बिंबं का० रामसेनीय श्री धनदेव सूरि पट्टे श्री धर्म्मदेव सूरिभिः ॥

[1237]

संवत् १४५० वर्षे फाल्गुण वदि १ शुक्रे उपकेशीय हट्टचायि जो० सा० पानात्मज सा० सजना भा० श्रीयादे पुत्र मह्णकेन श्री सुमति बिंबं कारितं प्रति० श्री पल्लिगछे श्री शान्ति सूरिभिः ॥

[1238]

संवत् १४५२ वर्षे वैशाख वदि १ उपकेशवंशे श्रे० ठाडा पुत्र श्रे० केल्हाकेन कुमरपाल देपालादियुतेन श्री शान्तिनाथ बिंबं स्वपुण्यार्थं कारितं प्रतिष्ठितं खरतरगछे श्री जिनवर्द्धन सूरिभिः ॥

[1239]

संवत् १४३४ वर्षे फाल्गुन वदि २ सूराणा गोत्रे सं० हेमराज भा० हीमादे पुत्र सं० पेल्हाकेन श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रति० श्री धर्म्मघोषगच्छे श्री मलयचन्द्र सूरि पट्टे श्री पद्मशेखर सूरिभिः ॥

[1240]

संवत् १४३५ वर्षे मागसिर वदि ४ दिने वभाहडा गोत्रे सा० डुंगर पुत्रेण सा० शिखर केन निजश्रेयसे श्री आदिनाथ प्रतिमा कारिता प्र० तपा श्री पूर्णचन्द्र सूरि पट्टे भट्टारक श्री हेमहंस सूरिभिः ॥

[1241]

संवत् १४७५ वर्षे ज्येष्ठ शुक्ल ७ जौमे प्राग्वाट् ज्ञातीय व० साढा श्री नादी पु० सहसा ना० सीतादे पु० पाल्हा स० आत्मश्रेयसे श्री संजवनाथ बिंबं कारितं प्रति० पूर्णिमा पक्षे श्री सर्वानन्द सूरिनिः ॥

[1242]

संवत् १४ए० वर्षे माह सुदि ···· पक्षे श्री ओसवंशे कछग ज्ञातीय सा० अजीआ सुत सा० जेसा नार्या जासू पुत्र पोमालाषादिनिः अञ्चलगच्छेश श्री जयकीर्त्ति सूरीणामुपदेशेन श्री चन्द्रप्रन बिंब कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिनिः ॥

[1243]

संवत् १४ए२ वर्षे वैशाख सुदी ३ सोमे उपकेश ज्ञातीय सा० टाहा ना० कर्म्मादे पुत्र मेघा ना० अणुपमदे सहितेनात्मश्रेयसे श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं प्रति० श्री अमरचन्द्र सूरिनिः ॥

[1244]

सवत् १४ए२ वर्षे फाल्गुन विदि १ दिने श्रीवीर बिंबं प्रतिष्ठितं श्री जिनचन्द्र सूरिनिः उपकेशवंशे सा० वाहरू पुत्र पूजाकेन कारितम् ॥

[1245]

संवत् १४ए५ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १४ बुध उपकेश वंशे लघुशाखा मएरूण सा० मन्दलिक नार्या फदकू सुत सा० मूंगरसी नार्या दल्हादे पुत्र सा० सोना जीवा थीनेन मातृपुण्यार्थं श्री मुनिसुव्रत बिंबं कारितं प्रति० श्री खरतरगच्छे श्री जिनवर्द्धन सूरि पट्टे श्री जिनचन्द्र सूरि तत् पट्टे श्री जिनसागर सूरिनिः ॥

[1246]

संवत् १४ए६ वर्षे फाल्गुण सुदि ए बुधे उपकेश ज्ञातीय व्यव० शाखा ना० चांपू पुत्र ऊधरणकेन नार्या देपू सहितेन आत्मश्रेयसे श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं प्रति० बोकडियागच्छे नट्टा० श्री धर्म्मतिलक सूरिनिः ॥

[1247]

संवत् १४९८ वर्षे फाल्गुण विदि २ फांफटिया गोत्रे सा० मोहण भार्या कुमरी पुत्र सा० मेहाकाहाभ्यां स्वश्रेयसे श्री वासुपूज्यं कारितं प्रतिष्ठितं श्री धर्म्मघोषगछे श्री पद्मशेखर सूरि पट्टे श्री विजयचन्द्र सूरिभिः ॥

[1248]

संवत् १५०१ वर्षे आषाढ सुदि ए दिने उपकेशवंशे करमदिया गोत्रे सा० वील्हा तत् पुत्र सा० धना पुत्र भाषा वाल्हा बाठा प्रमुख परिवारेण श्री सुविधिनाथ बिंबं कारितं प्रति० श्री खरतरगछे श्रीमत् श्री जिनसागर सूरि शिरोमणिभिः ॥ शुभम् ॥

[1249]

संवत् १५०४ व्य० (वर्षे) गवल्हो रत्नदे पुत्र लक्ष्मण जाल्हणदे पुत्र नाथू भा० दोया भ्रातृ चीढा युतया सूल्ही नाम्ना कारितः श्री सुपार्श्वः । प्रति० तपा श्री सोमसुन्दर सूरि शिष्य श्री रत्नशेखर सूरिभिः ॥

[1250]

संवत् १५०३ वर्षे कार्त्तिक सुदि ११ शुक्रे प्राग्वाट कोठा० लाषा भा० लाषणदे पुत्र को० परवत .... भोला माहा नाना कुंगर युतेन श्री संभवनाथ बिंबं कारितं उएस गछे श्री सिद्धाचार्य सन्ताने प्रति० श्री कक्क सूरिभिः ॥

[1251]

सं० १५०३ वर्षे माह सुदि १३ शुक्रे पटवड़ गोत्रे सा० लाल्हा भार्या सोना पुत्र सा कुसमाकेन भा० कमलश्री पुत्र धानादियुतेन श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री धर्म्मघोषगच्छे पद्मानन्द सूरिभिः ···· श्री हेमचन्द्र सूरीणामुपदेशेन ॥

[1252]

संवत् १५०९ वर्षे चैत्र सुदि १२ श्री काष्ठासंघे श्री मलयकीर्त्ति श्री राल्ह भार्या चील्ह

पुत्र राजा जार्या साल्ही द्वितीय पुत्र एहराणो राजा सुता हरूरु पञमदरा रतन्न एतेषां प्रणमति ॥

[1253]

संवत् १५०ए वर्षे वैशाख सुदि ३ उपकेश ज्ञातीय आईरी गोत्रे सा० लूणा पुत्र सा गिरिराज जा० सुगुणादे पु० सोनाकेन ठाकुर देवात् श्री चन्द्रप्रजस्वामि बिंबं का० उपकेश गछे ककुदा० प्र० श्री कक्क सूरिजिः ॥

[1254]

संवत् १५०ए वर्षे वैशाख सुदि ए बुधे श्री ओसवंशे वृद्धशाखीय सा० हता जा० रंगादे पुत्र सा० माका श्री सुमतिनाथ बिंबं कारापितं श्री साधु सूरिजिः प्रतिष्ठितं श्रीरस्तु श्री अमदाबाद वास्तव्य ॥

[1255]

संवत् १५०ए वर्षे मार्गशिर सुदि ७ दिने उपकेशवंशे साधुशाखायां सा० लखमण सुत सा० महिपाल सा० वील्हाख्यौ तत्र सा० महिपाल जार्या रूपी पुत्र ए० तेजा सा० वस्ताज्यां पुत्रादि परिवारयुताज्यां स्वश्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं श्री खरतर श्री जिनराज सूरि पट्टे श्री जिनजद्र सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥ श्रीः ॥

[1256]

संवत् १५०ए वर्षे माह सुदि ५ सोमे उपकेश ज्ञातौ श्रेष्ठि गोत्रे सा० कूरसी पु० पासड़ जा० जइनलदे पु० पारस जा० पाल्हणदे पु० पदा परवतयुतेन पितृश्रेयसे श्री संजवनाथ बिंबं कारितं उ० श्री ककुदाचार्य सन्ताने प्रतिष्ठितं श्री कक्क सूरिजिः ।

[1257]

संवत् १५०ए वर्षे माघ सुदि १० शनौ श्रीमान् जा० मुठीया गोत्रे सा० षिउंपाल पु० सोनाकेन आत्मश्रेयसे आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतरगच्छे श्री जिनतिलक सूरिजिः ॥

[1258]

संवत् १५१० वर्षे चैत्र सुदि १३ गु० प्राग्वाट सा० गोगन भार्या सहू पुत्र सा० जेसाकेन भा० राणी ..... भ्रातृ जामा भा० हीरू प्रमुखकुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री धर्म्मनाथ बिंबं कारापितं प्रति० तपागच्छेश श्री रत्नसागर सूरिभिः ॥

[1259]

संवत् १५११ वर्षे मार्गशिर सुदि ५ रवौ उपकेश ज्ञातीय शाह आसा भा० अहविदे सु० शाह ठाकुरसी भा० जानू स्वहितन पितृ भ्रातृ श्रेयोर्थं श्री आदिनाथ बिंबं कारापितं श्री कोरण्टगच्छे प्रति० श्री सावदेव सूरिभिः ॥

[1260]

संवत् १५१२ मार्ग० शुदि १५ .... वारे प्राग्वाट श्रेष्ठि गोधा भा० फसी सुत नरदे सहसा भाटा भा० धीराकेन भा० तारू सुत खीमादिकुटुम्बयुतेन निजश्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं का० प्र० तपा श्री सोमसुन्दर सूरि शिष्य श्री रत्नशेखर सूरिभिः ।

[1261]

संवत् १५१२ माघ विदि ७ बुधे उपकेश ज्ञातौ आदित्यनाग गोत्रे सा० तेजा पुत्र सुहगा भा० सोना पु० सादावछा हंसा पासादेवादिभिः पित्रोः श्रेयसे श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं उपकेश गच्छे ककुदाचार्य सन्ताने श्रीकक्क सूरिभिः ।

[1262]

संवत् १५१२ वर्षे फाल्गुन सुदि ९ शनौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय व्य० तरसी सुत काला सुतवर्द्धमान सुत दो० बालाकेन भा० कूअरि सुत सा० अरण प्रमुखकुटुम्बयुतेन स्वभ्रातृ जयारामा तौ श्रेयोर्थं श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्री श्री रत्नशेखर सूरिभिः ।

[1263]

संवत् १५१२ वर्षे फाल्गुन सुदि १२ श्री उपकेशगच्छे श्री कक्कुदाचार्य सन्ताने श्री उपकेश ज्ञातौ श्री आदित्यनाग गोत्रे सा० आसा भा० नीबू पुत्र गनू भा० गाजलदे पितृमातृश्रेयोर्थं श्री आदिनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं श्री कक्क सूरिभिः ॥

[1264]

संवत् १५१३ वर्षे वैशाख सुदि ५ शुक्रे गूंदोचा गोत्रे सा० धीरा भार्या धारलदे पु० देता भा० सहजलदे पाल्हा भा० पोमादे० स्वश्रेयोर्थं संभवनाथ बिंबं का० प्र० श्री चित्रावालगच्छे श्री मुनितिलक सूरि पट्टे श्री गुणाकर सूरिभिः।

[1265]

संवत् १५१३ वर्षे आषाढ सुदि २ गुरू दिने उपकेश ज्ञातीये मणूलेचा गोत्रे सा० वुहथ भा० वाहणदे पुत्र रणमल भार्या रतनादे पु० माहायुतेन श्री आत्मश्रेयसे श्री सुविधिनाथ बिंबं कारापितं प्रति० श्री वृहद्गच्छे जानोरावटंके भट्टा० श्री हेमचन्द्र सूरि पट्टे श्री कमलप्रभ सूरिभिः ॥

[1266]

सवत् १५१३ पोस सुदि ७ उपकेश वंशे लोढा गोत्रे सा० भूणा पुत्रेण सा० साल्हाकेन निज भार्या निमित्तं श्री सुविधिनाथ बिंबं कारितं प्रति० तपा भट्टारक श्री पूर्णचन्द्र सूरि पट्टे श्री हेमहंस सूरिभिः ॥

[1267]

संवत् १५१७ वर्षे माघ वदि ५ दिने श्री उपकेश ज्ञातौ डूगरू गोत्रे सा० सुहका भा० गुणपाल ही पु० नगराज भा० नावलदे पु० नानिगमूला सोढद वीरदे हमीरदे सहितेन श्री श्रेयांस बिंबं कारितं श्री रुद्रपल्ली गच्छे श्री देवसुन्दर सूरि पट्टे श्री सोमसुन्दर सूरिभिः ॥

[1268]

संवत् १५१९ वर्षे वैशाख विदि ११ टौबाची वासि प्राग्वाट ज्ञातीय ए० केसव जा० जोली सुत सा० लाखणेन जा० मरगादे सुत जसवीर प्रमुखकुटुम्बयुतेन निजश्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिंबं कारितं प्र० तपागछाधिराज श्री श्री रत्नशेखर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ श्री ॥

[1269]

संवत् १५१९ वर्षे माघ सुदि ५ सोमे श्री ब्रह्माणगछे श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रेष्ठि देवा जा० हरषू सुत चाम्पाकेन जार्या जईती करणकुंजायुतेन पित्रो श्रेयसः श्री धर्म्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री बुद्धिसागर सूरि पट्टे श्री विमल सूरिभिः ॥ सुडीयाणा वास्तव्य ।

[1270]

संवत् १५१९ वर्षे माघ सुदि १० उपकेशवंशे थुजगोत्रे सा० गूजरेण जा० गउटपे पुत्र पेदा अजाणडू जा० कुसजगदे पाटेवाट (?) सहितेन श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री खरतरगछे श्री जिनचन्द्र सूरिभिः ॥

[1271]

संवत् १५२० वर्षे मार्गशीर्ष वदि १२ उपकेश० ज्ञातौ श्रेष्ठि गोत्रे वैद्य शा० सांगण पुत्र स० सोनाकेन जार्या लाछलदे पुत्र समस्त स० बृद्धपुत्र संसारचन्द्रनिमित्तं श्री चन्द्रप्रज स्वामि बिंबं का० प्र० उपकेश गछे ककुदाचार्य सन्ताने श्री कक्क सूरिभिः ॥ श्रीः ॥

[1272]

संवत् १५२१ माघ सुदि १३ गुरौ प्रा० ज्ञातीय व्यव० नींबा पुत्र खीमा जार्या फूली पुत्र जांघा हेमा पाल्हा सहितेन श्री नेमिनाथ बिंबं कारितं प्र० तपागच्छे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥

[1273]

संवत् १५२४ वर्षे वैशाख सुदि ३ सोमे दिने प्रा० वंशे सा० आका भार्या ललतादे तयोः पुत्र धारा भार्या वीजलदे श्री अञ्चलगच्छे श्री श्री केशरि सूरीणामुपदेशेन निज श्रे० श्री शीतलप्रभ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ॥ भयतल्लकोट वास्तव्यः ॥

[1274]

संवत् १५२४ वर्षे मार्गशीर्ष सुदि ११ शुक्रे उपकेश ज्ञातौ आदित्यनाग गोत्रे सा० सीधर पुत्र संसारचन्द्र भार्या सारही पुत्र श्रीवन्त शिवरताभ्यां मातृपुण्यार्थं श्री शीतलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री उपकेश गच्छे श्री ककुदाचार्य सन्ताने श्रीकक्क सुरिभिः ॥ नागपुरे ॥ श्रीः ॥

[1275]

संवत् १५२५ वर्षे ज्येष्ठ विदि १ गुरौ उपकेश ज्ञातीय खावही गोत्रे साह भूणी भा० लूणादे पुत्री बाई कर्पूरी आत्मपुण्यार्थं श्री नेमिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री कृष्णऋषि गच्छे तपा शाखायां भट्टारक श्री कमलचन्द्र सूरिभिः शुभम् श्रीरस्तु ॥

[1276]

संवत् १५२७ वर्षे वैशाख सुदि ३ सोमे उप० ज्ञा० सा० आना भा० पूरी० पु० देपाकेन भा० देवलदे पु० वच्छा हर्षा नयणा युतेन श्री शीतलनाथ बिंबं कारापितं प्रति० मलाह० भ० श्री नयचन्द्र सूरिभिः ॥

[1277]

संवत् १५२७ वर्षे पौष विदि १ सोमे इन्द्रीयवासि उपकेश मं० कान्हा भार्या उमी सुत मं० कुम्पाकेन भा० सावित्री सुत तेजादि कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री मुनिसुव्रतस्वामि बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ॥ श्री ॥

[1278]

संवत् १५२७ वर्षे पौष विदि ६ शुक्रे उप० गहिलड़ा गो० सा० षेढा भा० दाडिमदे प्रभृति पुत्रादियुतेन स्वश्रेयसे श्री सुविधिनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री मलधारि गच्छे श्री विद्यासागर सूरि पट्टे श्री गुणशेखर सूरिभिः ॥ खीमसा वास्तव्य ॥

[1279]

संवत् १५२७ वर्षे प्राग्वाट् सा० प्रथमा भा० पाल्हणदे सुत सं० परवत भा० चाम्पू सुत सा० नीसलेन भा० नांई श्रेयोर्थं सुत जगपालादि कुटुम्बयुतेन श्री श्रेयांसनाथ बिंबं कारितं प्रति० तपा लक्ष्मीसागर सूरिभिः।

[1280]

संवत् १५२९ वर्षे वैशाख विदि ६ चंद्रे उपकेश ज्ञातौ डूगड़ गोत्रे सा० सिखा भा० थली पुत्र धनपालेन भा० मारू पु० नागिन सोनपाल प्रमुख सहितेन स्वश्रेयसे श्री शीतल-नाथ बिंबं कारितं प्रति० श्री वृहद्गच्छे श्री मेरुप्रभ सूरिभिः।

[1281]

संवत् १५२९ माघ सुदि ६ सोमे श्रीमाल ज्ञातीय पिप्हवेलापट (?) नामलदे सु० ताजा भा० राजलदे सु० कर्म्मसी तेजा सा० श्री श्रेयांसनाथ बिंबं कारितं श्री पूर्णिमापक्षीय श्री साधुसुन्दर सूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं। जूहारुद्र वास्तव्यः ॥ श्री ॥

[1282]

संवत् १५३० वर्षे वैशाख सु० ३ उपकेश ज्ञातीय सा० रणसिंह भा० तेजलदे पुत्र सा० कीताकेन भा० कुनिगदे प्रमुख कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री मुनिसुव्रत स्वामि बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छनायक श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ लूद्रामा वास्तव्य ॥ शुभं भवतु ॥ श्रीः ॥

[1283]

संवत् १५३० वर्षे माघ सुदि ४ प्रा० ज्ञा० रादा भा० आघू पु० सिरोही बासी सा० मांकणेन भा० माणिकदे पु० लषमादियुतेन श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं तपा श्री सोमसुंदर सूरि सन्ताने श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥

[1284]

सं० १५३० वर्षे फाल्गुण सुदि ७ बुधे श्रीमाल ज्ञातीय सा० राना भा० राजलदे भागेयर स्वश्रेयोर्थं श्री अंचलगच्छे श्री जयकेसरि सूरीणामुपदेशेन श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन ॥

[1285]

संवत् १५३२ वर्षे वैशाख सुदि १० शुक्रे श्री उएसवंशे चण्डालिया गोत्रे सा० नेमा भा० नींकी पुत्र सा० सोहिल भार्या माईंठी पुत्र सा० पहिराज भार्या पाल्हणदे पुत्र सा० रत्नपाल सुश्रावकेण पितृव्य शाह भोपाल प्रमुख कुटुम्ब सहितेन पितुः श्रेयसे श्री सुविधिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री मलधारि गच्छे श्री पुण्यनिधान सूरिभिः ॥ पहिराज पुण्यार्थं ॥

[1286]

संवत् १५३३ वर्षे चैत्र सुदि ४ शुक्रे ओसवंशे बाबेल गोत्रे सा घेल्हा पुत्र शा० खेता भा० खेतश्री पुत्र शा० देदाकेन स्वपिता श्रेयसे श्री अभिनन्दन नाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री मलधारि गच्छे श्री गुणसुन्दर सूरि पट्टे श्री गुणानिधान सूरिभिः ॥

[1287]

संवत् १५३४ वर्षे ज्येष्ट शित १० दिने सोमे उपकेशवंशे कटारीय गोत्रे भापचा भार्या पाल्हणदे पुत्र सामरसिंह श्रीरकेण श्री श्रेयांस बिंबं कारितं प्रति० श्री षरतरगच्छे श्री जिनचन्द्र सूरि पट्टे श्री जिनचन्द्र सूरिभिः ॥ श्रेयसे ॥

[1288]

सं० १५३४ वर्षे आषाढ सुदि १ गुरौ उप० कयणआ गोत्रे सा० लखमा भार्या लषमादे पु० टिला साजा भा० कील्हणदे स्वश्रेयसे श्री शीतलनाथ बिंबं कारितं प्र० जापड़ाण गच्छे श्री कमलचन्द्र सूरिभिः ॥

[1289]

सं० १५३४ वर्षे आषाढ सुदि १ गुरौ ऊकेश वंशे जहड गोत्रे सा० उगच पुत्र सा० खरहकेन भा० नीविणि पुत्र माला वला पासड सहितेन धर्म्मनाथ बिंबं निज श्रेयोर्थं कारापितं श्री खरतरगच्छे भट्टा० श्री जिनचन्द्र सूरिभिः ॥

[1290]

संवत् १५३४ वर्षे माह वदि ५ तिथौ सोमे उपकेश ज्ञाती धरावही गोत्रे लखण वीपा म० कान्हा भार्या हीमादे पुत्र सतपाक तिलुआभ्यां पित्रोः पुण्यार्थं श्री शीतलनाथ बिंबं कारितं श्री कन्हरसा तपागच्छे श्री पुण्यरत्न सूरि पट्टे श्री पुण्यवर्द्धन सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

[1291]

सं० १५३४ मा० शु० १० डा० व्य० नरसिंह भार्या नमलदे पुत्र मेलाकेन भा० वीराणि सुत रातादि कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ पालणपुरे ॥

[1292]

संवत १५३५ वर्षे आषाढ द्वितीया दिने उपकेश ज्ञातीय आयार गोत्रे लूणाउत शाखायां सा० झांझा पु० चउत्थ० भा० मयलहदे पु० मूलाकेन आत्मश्रेयसे श्री पद्मप्रभ बिंबं कारितं ककुदाचार्य सन्ताने प्रतिष्ठितं श्री देवगुप्त सूरिभिः ॥

[1293]

संवत १५४६ वर्षे आषाढ विदि २ ओसवाल ज्ञातौ श्रेष्ठि गोत्रे वैद्य शाखायां सा०

सिंघा जा० सिंगारदे पु० वींजा बाजू ताभ्यां पुत्र पौत्र युताभ्यां श्री चन्द्रप्रभ बिंबं सा० सिंधा पुण्यार्थं कारापितं प्र० श्री देवगुप्त सूरिभिः ॥

[1294]

संवत् १५५२ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ ओसवाल ज्ञातीय म० साइजा भा० केल्ही सु० ठाकुरसीकेन भार्या गिरसू सहितेन आत्मश्रेयोर्थं श्री आदिनाथ बिंबं कारितं श्री वृद्धतपापक्षे भ० श्री जिनसुन्दर सूरिभिः प्रतिष्ठितं च विधिना ॥

[1295]

संवत् १५५५ वर्षे चैत्र सुदि ११ सोमे ऊपकेश वंशे मेडतावाल गोत्रे शा० पगारसीह सन्ताने शा० सहसा सु० हा० श्रवण भा० सालिगसुतेन श्री अजितनाथ बिंबं कारितं प्र० हर्षपुरीय गच्छे भट्टारक श्री गुणसुन्दर सूरि पट्टे ॥ श्री ॥

[1296]

संवत् १५५६ वैशाख सुदि ३ शनौ श्री सण्डेरगच्छे ऊ० बढाला गोत्रे सा० लूसा लीला पु० लाला हरा लोला भार्या तारू पु० हरालजइ (?) तू पु० पु० सु० श्रे० श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री शान्ति सूरि ···· ।

[1297]

संवत् १५५९ आषाढ सुदी १० बुधे श्री पल्हुवरू गोत्रे शा० तोला सन्ताने कुँअरपाल पुत्र साधू ···· वेत भा० देवल० पु० गए रूपचंद युतेनात्मश्रेयसे श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं प्र० वृहद्गच्छे भ० श्री मेरुप्रभ सूरि पट्टे श्री मुनिदेव सूरिभिः ॥

[1298]

संवत् १५५९ वर्षे माह सुदि १० दिने शनिवारे ऊपकेशवंशे सखवाल गोत्रे सा गुणदत्त भार्या भंगादे पुत्र सा० धणदत्त भार्या धन श्री पुत्र सा० हीरादे परिवारयुतेन श्री शीतल

नाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतरगच्छे श्री जिनसमुद्र सूरि पट्टे श्री जिनहंस सूरिभिः ॥ कल्याणमस्तु ॥ श्रीः ॥

[1299]

संवत् १५६३ वर्षे माह सुदि १५ उ० उच्छितवालगोत्रे संघवी देवा भा० देवलदे सा० वील्हा भार्या वील्हणदे पुत्र तेजा वस्ता धन्ना आत्मपुण्यार्थं श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री धर्म्मघोषगच्छे श्री श्री श्रुतसागर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥

[1300]

संवत् १५६६ वर्षे फाल्गुन सुदी ३ सोमवासरे उपकेशवंशे रांका गोत्रे शा० श्रीरंग भा० देऊ पु० करमा भा० रूपादे स्वश्रेयसे आत्मपुण्यार्थं नमिनाथ बिंबं कारितं प्र० उपकेश गच्छे भ० श्री सिद्ध सूरिभिः ॥

[1301]

संत्व १५७२ वर्षे वैशाख सुदि ५ सोमे श्री श्रीवंशे मं० सिंघा भा० रहा पु० मं० करण भा० रमादे पु० मं० अजा सुश्रावकेण भा० आहवदे पु० राणा तथा पितृव्य पु० मा० गोगद प्रमुखसहितेन मातृ साधुपुण्यार्थं नागेन्द्रगच्छे सुगुरूणामुपदेशेन श्री वासुपूज्य बिंब कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन वीवलापुरे ॥

[1302]

संवत् १५७६ वर्षे चैत्र सुदि ५ शनौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय मं० राजा भा० रमादे पुत्र खीमाकेन भा० हीरादे पुत्र धनादि समस्त कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्री मुनिसुव्रतस्वामी बिंबं कारितं श्री पूर्णिमा पक्षे भीमपल्लीय भ० श्री चारित्रचन्द्र सूरि पट्टे श्री मुनिचन्द्र सूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं ॥ नेवीआए मगम वास्तव्य ॥

[1303]

ॐ संवत् १५७६ वर्षे ज्येष्ठ सुदी ९ उ० सुराणा गोत्रे शा० हेमराज भार्या स० हेमश्री

पुत्र शा० देवदत्तेन स्वपितृपुन्यार्थेन कारितं श्री आदिनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं श्री धर्म्मघोष गच्छे भट्टारक श्री पद्माणंद सूरि पट्टे श्री नन्दिवर्द्धन सूरिभिः ॥

[1304]

सं० १५७६ वर्षे माघ सुदि ५ रवौ उप० ज्ञा० टप गोत्रे छे० सदा भा० सक्तादे पु० थिरपाल भा० षेमलदे पु० सहसमल्ल हापा जगा सहितेन पितृ नि० श्री मुनिसुव्रत बिंबं कारितं प्र० श्री सण्डेरगच्छे श्री शांतिसुन्दर ॥

[1305]

संवत् १५९२ वर्षे आषाढ सुदि ९ दिने आदित्यनागगोत्रे तेजाणी शाखायां शा० मुहणा पु० हासा पुत्र सखारण दा० नरपाल सधारण भार्या सूहवदे पुत्र ४ श्री करणरंगा समरथ अमीपाला सखारण स्वपुण्याय कारितं । श्री उपकेश गच्छे भट्टा० श्री सिद्ध सूरिभिः श्री अभिनन्दन बिंबं प्रतिष्ठितं स्वपुत्रपौत्रीय श्रेये मातु ॥

[1306]

संवत् १५९९ वर्षे वैशाख विदि १३ सोमे श्री सण्डेरगच्छे ऊ० भण्डारी गोत्रे भा० ईसर पु० वीसल भा० कील्हूपत्ते निमित्तं श्री नेमिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री शांति सूरिभिः॥

[1307]

संवत् १६१५ वर्षे वैशाख वदि १० भोमे जवाठ वास्तव्य हूंबड़ ज्ञातीय मंत्रीश्वर मोत्रे दोसी श्रीपाल भार्या सिरीआदे सुत दोसी रूढाकेन भा० राणी युतै श्री पद्मप्रभ बिंबं तपा० श्री तेजरत्न सूरिभिः प्रति० ॥

[1308]

संवत् १६४३ वर्षे फाल्गुन सित ११ अहमदावाद वास्तव्य बाई कोडकीसञ्ज्ञया प्राग्वाट सेठि मूला भा० राजलदे पुत्री श्री आदिनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं श्री विजयसेन सूरिभिः श्री तपागच्छे ॥

[1309]

संवत् १६९६ वर्षे मिगसिर सुदि १० रवौ उपकेश ज्ञातीय लघु शाखायां बुरा गोत्रे फुमण गोत्रे बाइ गेलमादि पुत्र ठाकुरसी टाइसिंघ श्री कुन्थुनाथ बिंबं कारापितं श्री तपागछे गुरु श्री विजयदेव सूरि तत्पटे विजयशिव सूरिः प्रतिष्ठितं ॥

[1310]

संवत् १६९९ वर्षे वैशाख शुक्ल ९ दिने .... श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्र० तपागच्छे श्री विजयसिंह सूरिभिः ॥

[1311]

संवत् १६९९ वर्षे फाल्गुन विदि २ तिथौ सा० पुरुषाकेन शीतल बिंब कारितं प्रतिष्ठितं .... गच्छे आचार्य श्री विजयसिंह सूरिभिः ॥

[1312]

संवत् १७१५ श्री श्रीमाल ज्ञातौ शाह आसा भार्या अणुपमदे पुत्र थिर पालेन भ्रातृ लूणसिंह .... निज भार्या .... निमित्तं श्री पञ्चतीर्थी का० प्र० श्री नागेन्द्र गछे श्री पद्मचन्द्र सूरि पट्टे श्री रत्नाकर सूरिभिः ॥

चौवीसी पर ।

[1313]

संवत् १५२० वर्षे पौष विदि ५ शुक्रे श्रीमोढ ज्ञातीय मे० काल्हा भार्या काचू सु० भूराकेन भा० मांई सु० अजनरामा सहितेन पितृभ्रातृश्रेयसे स्वपूर्वजनिमित्तं श्री कुन्थुनाथ चतुर्विंशति पट्टः कारितः प्रति० श्री विद्याधरगच्छे श्री विजयप्रभ सूरि पट्टे श्री हेमप्रभ सूरिभिः ॥ वर्द्धमान नगरे ॥

[1314]

संवत् १५२१ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ४ मरूपदुर्गे प्राग्वाट सं० अजन भा० टबकू सुत सं० वस्ता भा० रामा पुत्र सं० चाहाकेन भा० जीविणि पुत्र संभाग आसादिकुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री चन्द्रप्रभ २४ पट्ट का० प्र० तपा पक्षे श्री रत्नशेखर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥

श्री आदिनाथजी का मन्दिर—दफ्तरियों का महल्ला ।

[1315]

संवत् १५१२ माघ शुक्ल ७ बुधे श्री उसवाल ज्ञातौ लोढा गोत्रे सा० भूचर भा० सरू पु० हंसू भा० सहमाई पु० नरहूकेन पितृ श्रेयसे श्री विमलनाथ बिंबं कारितं श्री रुद्रपल्लीय गच्छे श्री देवसुन्दर सूरि पट्टे प्रतिष्ठितं श्री सोमसुन्दर सूरिभिः ॥

[1316]

संवत् १५२७ वर्षे आषाढ सुदी २ गुरौ उपकेश ज्ञातीय तावअजा भार्या आहलदे पुत्र नीबा भा० मानू सहितेन आत्मश्रेयोर्थं श्री मुनिसुव्रत बिंबं कारितं। प्रतिष्ठितं अञ्चलगच्छे श्री जयकेसर सूरिभिः ॥

[1317]

संवत् १५३४ वर्षे आषाढ सुदि २ दिने उपकेशवंशे बोथरागोत्रे शा० जेसा पु० थाहा सुश्रावकेण भा० सुहागदे पुत्र देल्हा मानी वाकि युतेन माता लखी पुण्यार्थं श्री श्रेयांस बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतरगच्छे श्री जिनचन्द्र सूरि पट्टे श्री जिनचन्द्र सूरिभिः ॥

[1318]

संवत् १५३४ वर्षे मिगसिर वदि ५ उपकेश ज्ञातीय नाहर गोत्रे शा० चाहरू भार्या हरखू पुत्र वीझाकेन भा० वींझलदे पुत्र केशवयुतेन स्वश्रेयसे श्री विमलनाथ बिंबं कारितं प्रति० श्री धर्म्मघोषगच्छे श्री धर्म्मसुन्दर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥

[1319]

संवत् १५३४ वर्षे प्राग्वाट ज्ञा० श्रे० सोमा भा० देऊसु भोटाकेन भा० वानरि भ्रातृ भोजा प्रमुखकुटुम्बेन युतेन श्री संभवनाथ बिंबं का० प्र० तपापक्षे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ वीसनगरे ॥

[1320]

सवत् १५६० वर्षे वैशाख सुदि ३ दिने सोजात वास्तव्य उपकेश ज्ञातीय शा० भाणा भा० भावलदे पु० आशाकेन भा० कीइ सुत वाघा वीदा प्रमुखकुटुम्बयुतेन श्रेयोर्थं श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छनायक श्री हेमविमल सूरिभिः ॥

[1321]

सवत् १५७७ वर्षे वैशाख सुदि ६ सोमवार पुष्य नक्षत्रे नाहर गोत्रे सं० पटा तत् पुत्र से० पासा भार्या पालभदे तत् पुत्र सं० लाखणाख्येन तद् भार्या भाषणदे तत् पुत्र सं० नानिग सं० खीमसिंह .... सहितेनात्मश्रेयसे बिंबं कारितं श्री शांतिनाथस्य श्री धर्म्मघोष गछे भट्टारक श्री नन्दिवर्द्धन सूरिभिः प्रतिष्ठितः भद्रं भवतात् ॥

श्री सुमतिनाथजी का मन्दिर ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[1322]

संवत् १५२७ वर्षे पौष विदि ५ शुक्रे प्राग्वाट श्रे० हरराज भा० अमरी पु० समधरेण भा० नाई प्रमुखकुटुम्बसहितेन स्वश्रेयसे श्री कुन्थुनाथ बिंबं कारितं प्रति० श्री उपकेश गछे सिद्धाचार्य सन्ताने श्री देवगुप्त सूरि पट्टे श्री सिद्ध सूरिभिः ॥

चौवीसी पर।

[1323]

संवत् १५३२ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ श्री वायरू ज्ञातीय मं० माहव जा० हलू सु० म(हा)देवदास जा० जीवि सु० सिंहराज भ्रातृ हरदास माही आसुरा पञ्चायण अमीपाल श्रेयसे श्री पार्श्वनाथादि चतुर्विंशति पट्टः कारितः आगमगच्छे श्री अमररत्न सूरि गुरूपदेशेन प्रतिष्ठितश्च विधिना ॥ देकावाडा वास्तव्य ॥

श्री शान्तिनाथजी का मन्दिर—(घोड़ावतों की पोल)

पंचतीर्थियों पर।

[1324]

संवत् १३१६ वर्षे चैत्र वदि ६ भौमे श्री बृहद्गच्छीय श्री उद्योतन सूरि शिष्यैः श्री हीरचन्द्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं। श्रे० शुभंकर भार्या देवइ तयोः पुत्रेण श्रे० सोमदेवेन भार्या पूनदेवि पुत्र श्रीवच्छ नागदेवादियुतेन आत्मश्रेयोर्थं श्री वीरजिन बिंबं कारितं ॥

[1325]

संवत् १५०३ वर्षे माल्हू गोत्रे सा० भाखर भरमी श्राविकायाः पुण्यार्थं सा० खन्नाकेन जीवा खीदा भीदा भादा पुत्र युतेन कारितं स्वपुण्यार्थं श्री अजितनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं श्री जिनभद्र सूरिभिः ॥ श्रीखरतरगच्छे ॥

[1326]

संवत् १५४९ वर्षे वैशाख वदि ५ ओसवाल ज्ञातौ सूराणा गौत्रे सा० सखर सहस वीरेण भार्या भोजी पु० भीमा करता रंगू रत्नू युक्तेन स्वभार्या पुण्यार्थं श्री धर्म्मनाथ बिंबं कारितः प्रति० श्री धर्म्मघोषगच्छे श्री पद्माणन्द सूरिभिः ॥

[1327]

संवत् १५४५ वर्षे ज्ये० विदि ११ दिने वीरवाडा वासि प्राग्० ज्ञाति सा० रत्ना भा० माघू पु० सा० भीमाकेन भा० हेमी कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं श्री श्री श्री सूरिभिः ॥ श्रिये ॥

[1328]

संवत् १५६६ वर्षे फाल्गुण सुदि ३ सोमे श्री नाणावालगच्छे उसभ गोत्रे को० वुहथ भा० चाहिणदे पुत्र वीवावणा वधा दोहावणी पुण्यार्थं श्री विमलनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री शांति सूरिभिः ॥ मेरूता नगरे ॥

चौवीसी पर।

[1329]

संवत् १४ए० वर्षे फाल्गुन शुक्ल ए जाइलंवाल गोत्रे सा० शिखर पुत्राभ्यां शा० संग्राम सिंह धनाभ्यां निज मातृ साल्हीं श्रेयो निमित्तं श्री सुविधिनाथ चतुर्विंशति पट्टं कारितः प्रतिष्ठितं। तपा भट्टारक श्री पूर्णचन्द्र सूरि पट्टे भट्टारक श्री हेमहंस सूरिभिः ॥

बीकानेर।

श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथजी का मन्दिर।

आसानियों का महल्ला—बांठियों के उपासरे के पास।

पंचतीर्थियों पर।

[1330]

सं० १४एद फागुण वदि ६ बुधे ऊकेश ज्ञातीय सा० जगसी भा० ऊवकू पुत्र्या श्रा०

रोहिणी नाम्न्या क० जिणंद वासा स्वभर्तृनिमित्तं श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं श्री कोरंटगच्छे श्री कक्क सूरि पट्टे श्री सावदेव सूरिः ॥

[1331]

सं० १४९७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि २ सोमे प्राग्वाट व्य० जइता भार्या वरजू पु० लुठा स० आत्मश्रेयोर्थं श्री श्रेयांसनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री मं .... श्री मुनिप्रभ सूरिभिः ॥

[1332]

सं० १५०७ वर्षे वै० सु० ५ दिने सोमे ओसवाल ज्ञातीय सुचिंती गोत्रे सा० धन्ना भार्या अमरी पु० तोलूकेन स्वपूर्वज रीजा पुण्यार्थं श्री वासुपूज्य बिंबं का० प्र० श्री कक्क सूरिभिः ॥

[1333]

सं० १५०९ वर्षे माघ सु० ७ ऊकेशवंशे माल्हू शाखायां सा० पूना सुत सा० सहसाकेन पुत्र ईसर महिरावण गिरराज माला पांचा महिपा प्रमुख परिवारेण स्वश्रेयोर्थं श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं श्री खरतरगच्छे श्री जिनराज सूरि पट्टे श्री जिनभद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

[1334]

संवत् १५१० वर्षे माघ सुदि ५ दिने श्री उपकेशगच्छे ककुदाचार्य संताने भाद्रगोत्रे सा० साधा सा० सारंग भा० तल्ही पु० षीमधर भा० जेठी पु० षेता षेभायुतेन आत्मश्रेयसे श्री संभवनाथ बिंबं का० प्रति० श्री कक्क सूरिभिः ।

[1335]

सवत् १५१६ वर्षे ज्येष्ठ सु० १० दिने ऊकेशवंशे दोसी सा० भादा पुत्र सा० धणदत्त तथा ठकण पुत्र सा० वच्छराज प्रमुखपरिवारयुतेन श्री शीतल बिंबं मातृ अपू पुण्यार्थं कारितं प्र० खरतर श्री जिनचन्द्र सूरिभिः

[1336]

सं० १५१० वर्षे माघ सु० ५ बुधे ऊकेश शुन्न गोत्रे श्रे० आसधर पुत्र श्रे० पूनड़ न्नार्या फती पुत्र सा० करमणेन न्नार्या कर्मादे धर्म्म पुत्र सा० समरा न्नार्या सहजलदे सुत तेजादि कुटुम्बयुतेन श्री प्रथम तीर्थंकर बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिन्निः। श्री सिद्धपुर वास्तव्य ॥

[1337]

सं० १५३२ फा० सुदि .... श्री .... संन्नवनाथ बिंबं श्री संडेरगछे न्नट्टारक श्री .... ।

[1338]

सं० १५३४ वर्षे मा० सुदि ५ सोमे श्री ऊपकेश बांन्न गोत्रे। सा० वन्ना न्ना० वोरिणि पु० सा० सच्चू न्ना० लषमादे मातृपितृ पु० आत्म पु० श्री कुंथुनाथ बिंबं कारापितं श्री मलधर ग० प्र० श्री गुणविमल सूरिन्निः ॥

[1339]

सं० १५३६ वर्षे फागु० सु० २ रवौ ओसवाल धामी गोत्रे सा० पदमा न्नार्या प्रेमलदे पु० न्नोला न्ना० न्नावलदे पु० देवराज युतेन स्वपुण्यार्थं श्री विमलनाथ बिंबं कारापितं प्र० ज्ञानकीय गछे श्री धनेश्वर सूरिन्निः ॥ सोरो .... ।

[1340]

संवत् १५३६ वर्षे फागुण सु० ३ तइट गोत्रे सा० सीधर पुत्र गुरपतिना न्ना० गरलदे पु० सहसा पुनि न्नार्या रासारदे पुत्र करमसी पहराज युतेन श्री कुंथुनाथ बिंबं निज पुण्यार्थं कारितं प्र० नमदाल गछे श्री देवगुप्त सूरिन्निः।

[1341]

सं० १५३६ वर्षे फा० सु० ३ दिने ऊकेश .... रा गोत्रे सा० डूल्हा पुण्यार्थं पुत्र सा० अषयराज तद् न्रातृ ली .... युतेन श्री नमिनाथ बिंबं का० प्र० श्री खरतरगछे श्री जिनन्नद्र सूरि पट्टे श्री जिनचन्द्र सूरिन्निः ॥ श्री ॥

[1342]

सं० १५३९ वर्षे वैशाष सुदि ४ शुक्र उ० ज्ञातीय प्राह्मचा गोत्रे व्य० चांदा ना० धर्म्मिणि पु० गांगा ना० स्यापुरि सहितन श्री पार्श्वनाथ बिंबं का० प्र० नावड़ गछे श्री नावदेव सूरिभिः ।

[1343]

संवत् १५४९ वैशाष सु० ५ बुध काष्ठासंघ भट्टारक श्री .... तस्याम्नाये .... ।

[1344]

सं० १५५२ वर्षे फा० शु० ६ शनौ ओस० ज्ञातीय सा० मुंज भा० मुजादे पु० सा० परवत भा० अमरादे सा० पर्वत श्रेयोर्थं श्री विमलनाथ बिंबं कारितं प्र० तपागछे श्री हेमविमल सूरि ।

[1345]

संवत् १५६१ वर्षे माह सुदि ५ दिने शुक्रे हुंबड़ ज्ञातीय श्रे० विजपाल भा० हीरू सु० श्रे० पद्माकेन भा० चांपू सु० षेना भा० रषी सु० कर्मसी प्रमुखपरिवारपरिवृत्तेन स्वश्रेयोर्थं श्री विमलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागछाधिराज श्री लक्ष्मीसागर सूरि तत्पट्टे श्री सुमतिसाधु सूरि तत् पट्टे साम्प्रत विद्यमान परमगुरु श्री हेमविमल सूरिभिः ॥ वीचावेडा वास्तव्य ॥

[1346]

सं० १५७७ वर्षे वैशाष वदि ७ श्री ओसवंशे बजलाणी गोत्रे । पीरोजपुर स्थाने । सा० धनू भार्या .... सुत सा० वीरम भार्या वीरमदे सुत दीपचंद उधरणादि कुटुम्बयुतेन श्री संभवनाथ बिंबं कारितं । प्रतिष्ठितं .... ।

[1347]

संवत् १५९६ वर्षे वैशाख सुदि ३ सोमवारे श्री आदित्यनाग गोत्रे चोरवेड्या शाखायां

सा० पासा पुत्र रूदा भा० पक्रमादे पु० कामा रायमल देवदत्त रूदा पुण्यार्थं शांतिनाथ बिंबं कारापितं उपपल सिद्ध सूरिभिः प्रति .... ।

[1348]

संवत् १६२७ वर्षे पोष वदि ३ दिने साह काजड़ गोत्र साह चापसी भार्या नारंगदे पु० श्री वासपु श्री वासुपूज्य बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री हीरविजय सूरिभिः ।

जैन उपासरा का शिला लेख ।

[1349]

(१) पृथवी तल मांहे प्रगटः बड़ो नगर बीकांण ।
(२) सुरतसींह महाराजजुः राज करै सुविहाण ॥ १ ॥
(३) गुणी क्षमामाणिक्य गणिः पाठक पुन्य प्रधान ।
(४) वाचक विद्या हेमगणिः सुप्रत सुख संस्थान ॥ २ ॥
(५) सय अढार गुणसठ में महिरवान महाराज ।
(६) नव्य बनाय उपासरो दियो सदा थित काज ॥ ३ ॥

श्री चिंतामणि पार्श्वनाथजी का मन्दिर—बाजार में ।

शिलालेख ।

[1350]

॥ संवत् १५६२ वर्षे आषाढ़ सुदि ए दिने वार रवि । श्री बीकानेर मध्ये महाराजा राई श्री श्री श्री बीकाजी विजयराज्ये । देहरो करायो श्री संघ ॥ संवत् १३८१ वर्षे श्री जिनकुशल सूरि प्रतिष्ठितः ॥ श्री मंडोवर मूलनायक ॥ श्री श्री आदिनाथ चतुर्विंशति

पट्टं ॥ नवलक्खक रासल पुत्र नवलक्खक राजपाल पुत्र श्री नवलक्खक सा० नेमिचंद्र [illegible] साह वीरम डुसाक देवचंद कान्हरू महं ॥ संवत् १५९१ वर्षे श्री श्री श्री चउवीस इन्द्रजी रो परघो महं वछावते करायो छे ॥

चौवीस जिनमाता के पट्ट पर ।

[1351]

॥ संवत् १६०६ वर्षे फागुण वदि ७ दिने श्री वृहत् खरतरगच्छे । श्री जिनचन्द्र सूरि सन्ताने । श्री जिनचन्द्र सूरि श्री जिनसमुद्र सूरि पट्टे ॥ श्री जिनहंस सूरि तत् पट्टालंकार श्री जिनमाणिक्य सूरिभिः प्रतिष्ठिता श्री चतुर्विंशति श्री जिनमातृणां पट्टिका कारिता । श्री विक्रमनगर संघेन ॥

चरण पर ।

[1352]

संवत् १९०५ वर्षे शाके १७७० प्रमिते माधव मासे शुक्ल पक्षे पौर्णिमास्यां तिथौ गुरुवारे वृहत् खरतर गणाधीश्वर भ० । जं० । युग प्र० श्री १०८ श्री हर्ष सूरि जित्पादुके श्री संघेन कारापितं प्रतिष्ठितं च भ० । जं० । यु० । प्र० । श्री जिनसौभाग्य सूरिभिः श्री विक्रमपुर वरे ॥ श्री ॥

श्रीमन्दिर स्वामी का मन्दिर—भांडासर ।

[1353]

सं० १५३७ वर्षे मार्ग सुदि १२ ऊकेश ज्ञातीय बांहटिया गोत्रे सा० समुधर पुत्रेण सा० भालु .... युतेन श्री पद्मप्रभ बिंबं कारितं तपा भ० श्री हेमसमुद्र सूरि पट्टे श्री हेमरत्न सूरिभिः ।

[1354]

सं० १५७९ वर्षे प्राग्वाट श्रे० गोगेन भा० राणी सुत वरसिंग भा० वीबू नाम्न्या भ्रातृ

श्रमा नरसिंह लोलादि कुटुम्बयुतया श्री संभव बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्री इन्द्रनन्दि सूरिभिः पत्तने ॥ श्री ॥

कुंड और नहर पर की शिलालेख ।

[1355]

॥ श्री नेमिनाथाय नमः ॥

श्री बीकानेर तथा पूरब बंगाला तथा कामरू देस आसाम का श्री संघ के पास प्रेरणा करके रुपया भेला करके कुंड तथा आगोर की नहर बनाया सुश्रावक पुण्य प्रभावक देवगुरुभक्तिकारक गुरुदेव को भक्त चोरडिया गोत्रे सीपानी चुन्निलाल शवतमलाणि सिरदारमल का पोता सिंघिया की गवाड़ में वसता मायसिंघ मेघराज कोठारी चोपड़ा मकसुदाबाद अजिमगंजवाले का गुमास्ता और कुंड के ऊपर दारईकेलाव (?) बकतावर चंद सेठिया बनाया संवत् १९५४ शाके १७९० प्रवर्त्तमाने मासोत्तममासे भाद्रवामासे शुक्ल पक्षे पञ्चम्यां तिथौ भौमवासरे ।

मोरखानो—बीकानेर ।

[1356] *

१. ॥ ॐ ॥ श्री सुसाणं कुलदेव्यै नमः ॥ मूलाधारनिरोधबुद्धफणिनीकंदादिमंदानिले । (ऽ) नाक्रम्य ग्रहराज मंरु

---

* यह स्थान "देशनोक" से दक्षिण-पूर्व कोण १२ मील पर है। यहां के देवी मंदिर में काले पाषाण पर यह लेख खुदा हुआ है और टेसिटोरी साहब ने अपने ई० सं० १९१६ की रीपोर्ट में छापी है। See J & P of the A. S. of Bengal' Vol XIII. pp. 214-215.

२. ...धिया प्रागूपश्चिमांतं गता। तत्राप्युज्वलचंद्रमंडलगलत्पीयूषपानोल्लसत्कैव-
ल्यानुजव्या सदास्तु जगदानं

३. दाय योगेश्वरी ॥ १ या देवेंद्रनरेंद्रवंदितपदा या नद्रतादायिनी। या देवी किल
कल्पवृक्षसमतां नृणां दधा-

४. .... लौ। या रूपं सुरचित्तहारि नितरां देहे सदा बिभ्रती। सा सूराणासवंश
सौख्यजननी भूयात्प्रवृद्धिं क-

५. री ॥ २ तंत्रैः किं किल किं सुमंत्रजपनैः किं भेषजैर्वा वरैः। किं देवेंद्रनरेंद्र-
सेवनतया किं साधुभिः किं धनैः। ए-

६. का या भुवि सर्वकारणमयी ज्ञात्वेति भो ईश्वरी। तस्याध्यायत पादपंकजयुगं
तद्ध्यानलीनाशयाः ॥ ३ ॥ श्री भूरिर्द्धर्म-

७. सूरी रसमयसमयांभोनिधेः पारदृश्वा। विश्वेषां शश्वदाशा सुरतरुसदृशस्त्या-
जितप्राणिहिंसां। सम्यग्दृष्टि ....

८. मनणु गुणगणां गोत्रदेवीं गरिष्ठां। कृत्वा सूराणवंशे जिनमतनिरतां यां चका-
रात्मशक्त्या ॥ ४ तद्यात्रां महता महेन

९. विधिवद्भिज्ञो विधायाखिले निर्गे मार्गणचातकपृणगुणः सन्नारटंकठटः। जातः
क्षेत्रफले ग्रहिर्मरुधरा धारा-

१०. धरः ख्यातिमान् संघेशः शिवराज इत्ययमहो चित्रं न गर्जिध्वजः ॥ ५ तत्पुत्रः
सच्चरित्रे वचनरचनया भूमिराजः

११. समाजालंकारः स्फारसारो विहित निजहितो हेमराजो महौजाः। चंगप्रोत्तुंग-
श्रृगं भुवि भवनमिदं देवयानोप-

१२. मानं। गोत्राधिष्ठातृदेव्याः प्रसृमरकिरणं कारयामास भक्त्या ॥ ६ संवत् १५७२
वर्षे ज्येष्ठमासे सितपक्षे पूर्णिमा-

१३. स्यां शुक्रे ऽनुराधायां षीमकर्णे श्री सूराणवंशे सं० गोसल तत्पुत्र सं० शिवराज तत्पुत्र सं० हेमराज तद्भार्या सं० हेमश्री त-

१४. त्पुत्र सं० धजा सं० काजा सं० नाल्हा सं० नरदेव सं० पूजा भार्या प्रतापदे पुत्र सं० चाहड़ भा० पाटमदे पुत्र सं० रणधीर

१५. सं० नाथू सं० देवा सं० रणधीर पुत्र देवीदास सं० काजा भार्या कउतिगदे पुत्र सं० सहसमल्ल सं० रणमल

१६. सहसमल पुत्र मांरूण। रणमल पुत्र षेता षीमा। सं० नाल्हा पुत्र सं० सीहमल्ल पुत्र पीथा सं० नरदेव पुत्र मोकला·

१७. दिसहितेन। सं० चाहडेन प्रतिष्ठा कारिता सपरिकरेण श्रीपद्मानंद सूरि तत्पट्टे भ० श्री नंदिवर्द्धन सूरीश्वरेभ्यः॥

चुरू-बीकानेर।

श्री शांतिनाथजी का मंदिर।

पंचतीर्थियों पर।

[1357]

सवत् १३०४ .... गछे .... कारितं श्री पार्श्वनाथ बिंबं।

[1358]

॥ सं० १३०० ज्येष्ठ सु० १४ श्री उएसगछे श्रे० म .... ला भा० मोषलदे पु० देहा कमा पितृ मातृ श्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री ककुदाचार्य सं० श्री कक्क सूरिभिः।

[1359]

सं० १४६९ वर्षे फा० वदि २ शनौ नागर ज्ञातीय अलियाण गोत्र श्रे० कर्म्मा भार्या धाणू सुत रूग भ्रातृ सांगा श्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्र० अंचलगच्छ ना० श्री मेरुतुंग सूरिभिः ॥

[1360]

सं० १५०७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० ओसवंशे नाहरे गोत्रे सा० हेमा भा० हेमसिरि पु० तेजपालह आत्मश्रेयसे श्री सुविधिनाथ बिंबं का० प्र० धर्म्मघोषगच्छे .... ।

[1361]

सं० १५३० वर्षे फा० व० २ रवौ प्राग्वाट ज्ञा० साह करमा भा० कुनिगदे पु० सा० दोला भा० देल्हा चोला भ्रातृ भुणा स्वश्रेयसे श्री धर्म्मनाथ बिंबं का० प्र० पूर्णि० कछोली-वालगच्छे भ० श्री विद्यासागर सूरीणामुपदेशेन ।

[1362]

॥ सं० १५४५ वर्षे माह सु ३ गुरौ उपकेश ज्ञा० श्रेष्ठि गोत्रे साह आसा भा० ईसरदे पु० जईता भा० जीवादे पुत्र चाहा युतेन पित्रो श्रेयसे श्री श्रेयांसनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं मड्डाहरउ गच्छे .... भ० श्री कमलचंद्र सूरिभिः ॥

गवालियर (लस्कर) ।

पंचायती मंदिर — सराफा बजार ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[1363]

ॐ सं० ११९० ज्येष्ठ सु० १२ देवम सुतया वीटिकया कारितेयं प्रतिमा ।

[1364]

सं० १३४० वै० सुदि २ गुरौ श्रीमाल ज्ञातीय .... श्री प्रद्युम्न सूरिभिः।

[1365]

संवत् १३७६ वर्षे वैशाख सु० ३ .... प्रणमंति।

[1366]

सं० १४९१ माघ सुदि ६ बुधे उप० वोहड़ वर्धमान गोत्रे सा० राणा भा० सूहवदे पु० महिपा मोकल श्रेयोर्थं श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं खरतरगच्छे श्री जिनचंद्र सूरि पट्टे श्री जिनसागर सूरि प्रति० ॥

[1367]

सं० १४९७ फागुण वदि १० चंमेजरिया गोत्रे। सा० धर्मा पुत्रेण जीणाभूणाभ्यां निजपितृनिमित्तं श्रीपद्मप्रभ बिंबं कारितं प्र० तपागच्छे भट्टारक श्री हेमहंस सूरिभिः।

[1368]

संवत् १५०० वर्षे वैशाख सुदि ३ भाज श्रीमाल ज्ञातीय। श्रे० सादा भा० मनूं सुत माईआ भा० अघू सुत देवराजेन पितानिमित्तं श्री शीतलनाथ पंचतीर्थी बिंबं कारापितं प्रति० श्री ब्रह्माणगच्छे प्र० भ० श्री विमल सूरिभिः।

[1369]

संवत् १५०१ वर्षे मा० सु० ५ श्री श्रीमाल ज्ञातीय मं० भांषर सुत भट्टसा भा० जामि पु० सायकरणा परनारायभिः पित्रो श्रे० चंद्रप्रभ स्वामि बिंबं प्र० श्री वृहत् सा .... गच्छे प्र० श्री मंगलचंद्र सूरिभिः।

[1370]

सं० १५०५ वर्षे चै० सु० १३ शान्ति बिंबं का० प्र० तपापक्षे श्री जयचंद्र सूरिभिः।

[1371]

सं० १५०७ वैशाष सु० ए जूका बेबिकान्यां स्वश्रेयसे कारिता ····।

[1372]

सं० १५०ए वर्षे माघ सु० १० शनौ ऊकेशवंशे माल्हू गोत्रे मं० जोजराज जा० ऊमाद पुत्र सं० देवोकेन ञ्रा० मं० सोनार संग्रामादि सहितेन सू(?) जा० देवलदे श्रेयोर्थं श्री अजित बिं का० प्र० श्री खरतरगच्छे श्री जिनसागर सूरिन्निः ॥

[1373]

सं० १५१२ माघ सु० १ बुधे श्री ओसवाल ज्ञातौ सुहणाणी सुचिंती गो० सा० सारग जा० नयणी पु० श्रीमालेन जा० षीमी पु० श्रीवंत युतेन मातृश्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं उपकेशगच्छे ककुदाचार्य सं० प्र० श्री कक्क सूरिन्निः ॥

[1374]

सं० १५१२ पोष सु० ७ ऊकेशवंशे वि ···· क गोत्र सं० नरसिंहांगज सा० मार पुत्रेण सा० कील्हाकेन निजमातृपुण्यार्थं श्री नमि बिंबं का० प्र० ब्रह्माण तपागच्छे उदयप्रज सूरि जट्टारक श्री पूर्णचंद्र सूरि पट्टे श्री हेमहंस सूरिन्निः।

[1375]

सं १५१३ वर्षे माह सु० १ ऊकेश षीथपरिया गो० सा० षिथपाल जार्या षेमथी ····· पु० जापू सेषू जा० सोम श्री ····· माथी ····· प्ररपोध (?) आ० श्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं का० प्र० श्री बृहज्ञच्छे श्री सागरचंद्र सूरिन्निः।

[1376]

संवत् १५१५ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ५ सोमे गूर्जर ज्ञातीय दो० अमरसी जा० रूपिणि सुत

कुंसाकेन भा० वइजीयुतेन पितुरादेशेन आत्मश्रेयसे जीवितस्वामी श्री धर्मनाथ बिंबं कारितं पूर्णिमापक्षे भीमपल्लीय भट्टारक श्री जयचंद्र सूरीणमुपदेशेन प्रतिष्ठितं ॥ ७ ॥

[1377]

सं० १५२० वर्षे वैशाष सुदि ए सोमे श्रीमाल ज्ञातीय रूवड़ा (?) गोत्रे सा० बछराज पु० सा० जाटा भार्या गउवदे पु० सा० ठाजू भार्या हर्षमदे पु० सा० रत्नपाल सीधर समदा सायराभ्यः स्वपितॄणां श्रेयसे श्री श्री सुविधिनाथ बिंबं का० प्र० श्री धर्म्मघोषगछे श्री विजयचंद्र सूरि पट्टे श्री साधुरत्न सूरिभिः ॥

[1378]

॥ संवत् १५२१ वर्षे वैशाष वदि ७ शुक्रे प्राग्वाट ज्ञातीय सा० देवसीह भार्या पाल्हणदे पुत्र सा० भामवेन भा० माकू सहितेन आत्मश्रेयोर्थं श्री पद्मप्रभ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री साधपूर्णिमापक्षे ५ । श्रीरामचंद्र सूरि पट्टे पूज्य । श्री पुज्य चंद्र सूरीणामुपदेशेन विधिना श्राचष्टे ।

[1379]

सं० १५२६ वर्षे वैशाष वदि ७ भौमवारे प्राभेचा गोत्रे सा० जाटा भा० जइतो पुरषी माता जाटी पु० भइरवदास ...... भा० डुल्हादे सहितेन लाभि निमित्ते श्री धर्म्मनाथ बिंबं कारितं खरतरगछे प्रतिष्ठितं श्री जिनचंद्र सूरिभिः । शुभं भवतु ।

[1380]

सं० १५३२ वर्षे वैशाष सुदि ६ सोमे श्री कोरंटगछे श्री नन्नआय संताने उप० पोमालेचा गोत्रे सा० जगमाल भा० जासहदे पु० सा० सारंग भा० संसारदे पु० सा० मेहा नरसि सहितेन श्रेयसे श्री सुमतिनाथ बिंबं प्र० श्री सांवदेव सूरिभिः ॥

1381:]

संवत् १५३३ वर्षे माघ सुदि १३ सोमवासरे प्राग्वाट ज्ञातीय सा० हेमा भा० मानू पुत्र

स० बकूआ ना० काही ···· पु० स० वता ना० मउकूं पुत्र डूंगर आत्मश्रेयसे श्री विमलनाथ बिंबं कारितं साधुपूर्णिमापक्षे प्रतिष्ठितं श्री जयशेखर सूरिभिः ।

[1382]

सं० १५३४ वर्षे फागुण सुदि ए बुधवारे प्रा० ज्ञा० सा० मोकल ना० मोहणदे पु० मेहाके० ना० कुंती पु० रो० ना० लषमण आसर वीसल सहितेन आ० श्री वासुपूज्य बिंबं का० प्र० पू० द्वि० कच्छोली वा० न० श्री विजयप्रज सूरीणामुपदेशेन ।

[1383]

संवत् १५४ए वर्षे ज्येष्ठ सु० ५ सोमे ओसवाल ज्ञातीय सा० मूला ना० माणिकदे सं० माणिक ना० गंगादे सु० नूनं च ना० लाठी बिंबं कारितं मूला श्रेयोर्थं श्री वासुपूज्य बिंबं का० प्रतिष्ठितं । श्री संडेरगछे श्री सुमति सूरिभिः ॥

[1384]

सं० १५६३ वर्षे माह सुदि ५ गुरौ उपकेश ज्ञा० नूरि गोत्रे सा० वांपा चउहथ चां० ना० चांपले पु० कान्हा ना० चंगी पु० देवा शिवा सुकुटुम्बयुतेन चउहथ श्रियोर्थं श्री सुविधिनाथ बिंबं श्री धर्मघोषगछे न० श्री श्रुतसागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं । शुभं नवतु ॥

[1385]

सं० १५६७ वर्षे वैशाष सुदि १० बुधे गूंदेचा गोत्रे ऊकेशवंशे सा० ठाकुर नार्या टहन पु० ऊधा सुत कचा वर्जू ना० २ जसा गुणा प्रमुख कुटुंबसहितैः श्री अंचलगछे नावसागर सूरीणामुपदेशेन ।

[1386]

सं० १५७२ वर्षे वैशाष सुदि ५ सोमे ऊ० ज्ञा० फूलपगर गोत्रे सा० दधीरथ पु० सा० धर्मा ना० २ पाबू सादही पाबू ····· पु० ऊांऊा ना० पूरी ···· पुत्र मोकल प्रमुख समस्त

कुटुम्बेन स्वश्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री वडगच्छे श्री श्री चंद्रप्रभ सूरिभिः ॥ ॥ श्री ॥ जावर वास्तव्य ॥

[1387]

सं० १५७९ वर्षे वैशाष सु० ६ सोमे कूकर वाड़ा वा० नागर ज्ञातीय श्रे० कान्हा भा० धनी सु० श्रे० हरपतिलदणकेन भा० लषमादे प्र० क० सुतेन नपा सीपा पदमा श्रे० श्री श्रेयांसनाथ बिंबं का० श्री बृहत्तपा प० श्री धनरत्न सूरि श्री सौभाग्यसागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

[1388]

संवत् १६२७ वर्षे वैशाष शुदि ३ शुक्रे ऊकेशवंशे गोठ १ गोत्रे सोप श्रीवच्छ सोप भोला पुत्र सो० उदयकरण भार्या अछबोदे पुत्र सो० जसवीर। सो० नका सो० धवजी प्रमुख परिवारयुतैः श्री धर्म्मनाथ बिंबं कारितं श्री बृहत्खरतरगच्छे श्री जिनसिंह सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥ श्रीः ॥

चौवीसी पर।

[1389]

सं० १५२१ वर्षे वैशाष सुदि १० श्री उपकेश ज्ञातीय बापणा गोत्रे सा० देहड़ पु० देल्हा भार्या धाइ पुत्र सा० लूला भीमा कान्हा स० भीमाकेन भा० वीराणि पुत्र श्रवणा माकू जाकू सहितेन श्री शांतिनाथ मूलनायक प्रभृति चतुर्विंशति जिनपट्टः का० श्री उपकेशगच्छे ककुदाचार्य संताने प्र० श्रीसिद्ध सूरि पट्टे श्री कक्क सूरिभिः ॥ शुभं ॥

[1390]

सं० १५४१ वर्षे आषाढ सु० ३ शनौ उप० श्रेष्ठि गोत्रे सा० रामा भा० रत्नू पु० राजा भाजा शिवा राजा भा० टहकू पु० वना सांगा मांगा गीईआ आसा सहदेव भार्या जटी सा० सांगाकेन भा० करमी द्वि० भा० रामति प्र० समस्तकुटुम्बसहितेन भ्रातृ वना

निमित्तं श्री कुंथुनाथ चतुर्विंशति पट्टकं का० श्री मडूहड़ गच्छे रत्नपुरीय भ० श्री धर्म्मचंद्र सूरि पट्टे भ० श्री कमलचंद्र सूरिभिः ॥ शाल्मलीयपुरे ।

धातु की मूर्त्ति पर ।

[1391]

सं० १६७५ वर्षे वै० सु० १५ दिने इंदलपुर वास्तव्य प्रा० वाद (प्राग्वाट) ज्ञातीय बाई वज्र का० श्री संभव बिं० प्र० श्री । विजयदेव सूरिभिः ।

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1392]

संवत् ११७३ फागुण सुदि ए सालिगदे लूण वति भा० कारिता ।

[1393]

सं० १३७६ माह वदि २ श्री वृहद्गच्छ बा० श्री देवार्य स० ऊकेश ज्ञा० श्रे० आसचंद सा० श्रे० देदारिसीहेन पितृश्रेयसे श्री वासुपूज्य बिं० का० प्र० श्री अमरचंद्र सूरि शिष्यैः श्री धर्म्मघोष सूरिभिः ॥

[1394]

॥ सं० १४६६ वर्षे वैशाष सुदि ३ सोमे श्री श्रीमाल ज्ञातौ म० साद्दा सुत पितृ म०मूलू मातृ मूफी सुत ठकुरसिंहेन पितृमातृश्रेयसे श्री संभवनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री ब्रह्माणगच्छे श्रीवीर सूरिभिः ॥ श्री ॥

[1395]

सं० १४६ए वर्षे माह सुदि ६ पंप्नेरकीयगच्छे ऊ० सा० अजा भा० कपूरदे सु० तिहुअणा

भा० माल्हणदे पु० तेजाकेन पितृ घरसमेठी सहितेन पित्रोः श्रेयसे श्रीशांति बिंबं का०
प्रति० श्रीसुमति सूरिभिः ॥

[1396]

सं० १४७० वर्षे माघ सु० १२ गुरुवारे आदित्यनाग गोत्रे सा० सलषण पुत्र कम्मण
भा० सांवत दीर तेजाकेन श्री शांतिनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्रीदेव सूरिभिः ॥ ० ॥

[1397]

सं० १४८९ माघ सुदि १० शनौ श्रीमाल ज्ञातीय मं० षेता संताने मं० डाड़ा भा०
नाऊ नाम्ना पु० कान्हा सोना सहितया भर्तु श्रेयसे श्री श्रेयांस बिंबं का० प्र० श्री पूर्णिमा
पक्षे श्री विद्याशेखर सूरीणामुपदेशेन विधिना श्राद्धैः ॥

1398]

संवत् १४९९ माह सुदि ५ गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय वीटवल व्य० पाता सुत वयरसी
भार्या राही .... पितृमातृश्रेयोर्थं सुत मेलाकेन आत्मश्रेयसे श्री सुविधिनाथ बिंबं कारापितं
श्री नागेन्द्र गच्छे श्री गुणसागर सूरिः शिष्यैः प्रतिष्ठितं श्री श्री गुणसमुद्र सूरिभिः ॥ श्री
सांतपुरे पितृव्य देवलवणीली ।

[1399]

सं० १५०४ वर्षे फागण शु० ११ गुरौ दिने नाहर गोत्रे सा० जाहड़ भा० भोलाही
सा० राजा भा० लाबू .... पु० झाझू सहितं निजपूण्यार्थं श्री वासुपूज्य बिंबं का० प्र०
श्री धर्म० गच्छे श्री विजयचंद्र सूरिभिः ।

[1400]

सं० १५०७ ज्येष्ठ सुदि २ दिने ऊकेशवंशे सा० भोणसी भार्या कपूरदे श्राविकया निज
भर्तृ भोणतीपुण्यार्थं श्री आदिनाथ बिंबं कारि० प्रति० खरतरगच्छाधिराज श्री जिनराज
सूरि पट्टालङ्कार प्रति० श्री जिनभद्र सूरि राजैः ॥

[1401]

ॐ ॥ सं० १५११ वर्षे माघ वदि ए गोहरिया गोत्रे सा० दातु पूरेण ······ श्री विमलनाथ बिंबं कारितं प्र० तपा नट्टारक श्री पूर्णचंद्र सूरि पट्टे श्री हेमहंस सूरिनिः ॥

[1402]

सं० १५११ फा० शु० ए रवौ प्राग्वाट० सा० पेषा नार्या राजू सुत वीढाकेन नार्या कमा सुत दरपाल टाहा नरकीता नरमा कगतादि कुटुम्बयुतेन श्री संनवनाथ बिंबं स्वश्रेयसे कारितं प्रतिष्ठितं तपागछ नायक नट्टारक श्री सोमसुंदर सूरि प्रांषज श्री रत्नशेषर सूरिनिः।

[1403]

सं १५१३ वर्षे मा० व० ५ प्राग्वाट व्य० तिहुणा ना० कर्मा पुत्र झासा नगिन्या व्य० दन्ना पत्या श्रा० मनी नाम्न्या श्री वासुपूज्य बिंबं स्वश्रेयसे का० प्र० तपा श्री रत्नशेषर सूरिनिः ॥

[1404]

संवत् १५१७ वर्षे माह सुदि १० बुधे श्री कोरंटगच्छे उपकेश ज्ञा० काला पमार शाखायां सा० सोना ना० सहजलदे पु० सादाकेन भ्रातृ चउड़ा नादा नेमा सादा पु० रणवीर वणवीर सहितेन स्वश्रेयसे श्री चंद्रप्रन बिंबं कारि० श्री कक्क सूरि पट्टे श्रीपाद ··················।

[1405]

संवत् १५१७ वर्षे वैशाष सुदि ३ गुरु श्री श्रीमाल ज्ञातीय वनोला नार्या देमाइ सुत व्यव० कुरुपालेन नार्या कमलादे सुत व्यव० विद्याधर वीरपाल प्रमुखकुटुम्बयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्री मुनिसुव्रत स्वामी बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छनायक नट्टारक श्री सूरसुंदर सूरिनिः। श्रीपत्तन वास्तव्य शुनं नवतु ॥ श्री ॥

[1406]

॥ संवत् १५१७ वर्षे माह सुदि १० दिने श्रीमालवंशे । पल्हवड़ गोत्रे सा० मेया नार्या

मेलाही पु० सा० वीरमेन जार्या षीमा पु० सा० समरा सहसू श्रे० श्री शांतिनाथ बिं० प्र० श्री वृहद्गच्छे श्री रत्नाकर सूरि प० श्री मुनिनिधान सूरि श्री मेरुप्रज सूरिजिः ॥

[1407]

सं० १५२१ वर्षे वैशाष सु० १० सोमे ओसवाल ज्ञा० सा० ठाकुरसी जा० वीसलदे सुत सा० धनाकेन जार्या सोनाई पुत्र सा० हांसादियुतेन सुता बाबू श्रेयसे श्री शीतलनाथ बिंबं कारितं प्रति० श्री वृहत्तपापक्षे श्री उदयवल्लज सूरिजिः ।

[1408]

संवत् १५३३ वर्षे वैशाष वदि ५ श्री संडेरगच्छे ओसवाल ज्ञा० राणु ड्राथेच (?) गोत्रे केड्रादेन जणा आल्हू पु० गोकाला डुदेल्ह .... जयनादर्पदयुतेन आत्मपुण्यार्थं श्री चंद्रप्रज स्वामि बिंबं का० प्र० श्री .... सूरि संताने श्री शांति सूरिजिः ।

[1409]

सं० १५३३ माघ सुदि ५ श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री जयशेषर सूरिजिः।

[1410]

सं० १५३६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ७ जौमे श्री श्री माल ज्ञा० महाजन । सदा जा० सूहवदे सुत बीका आका महा० बीका जा० कपूर सुत ताल्हा कान्हा जनासहितेन मातृपितृश्रेयसे श्री विमलनाथ बिंबं का० प्रति० श्री चैत्रगच्छे श्री लक्ष्मीसागर सूरि० चांद्रसमीया असारि गोयं वासर (?) वा० ।

[1411]

॥ सं० १५३६ वर्षे माघ सुदि ९ सोमे प्रा० । ज्ञाति सा० सरवण जा० सहजलदे सुत सा० सूरा पाल्ह सा० जोगा जार्या कमी सुत डुसल प्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीधर्म्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं प्र० .... सूरिजिः ॥ ७ ॥ श्री ॥

[1412]

सं० १५५४ वर्षे वरडउद वास्तव्य ऊकेश ज्ञातीय गांधी गोत्रे सा० सारंग भार्या जाल्ही पुत्र सा० फेरू भार्या सूहवदेकेन भाराऊयुतेन श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री अंचलपक्षे श्री सिद्धान्तसागर सूरिभिः।

[1413]

सं० १५५७ वर्षे वैशाष सु० ६ शुक्रे ऊकेशवंशे भणसाली गोत्रे भ० गुणराज पु० भ० सहदे पु० भ० हासा भ० राजी .... पु० भ० वसुपाल भा० लीला पु० भ० सालिग सुश्रावकेण भा० भीमी प्रमुखपरिवारयुतेन पितृश्रेयोर्थं स्वपुण्यार्थं श्री सुविधिनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं श्री।

[1414]

सं० १५५९ वर्षे वैशाष शु० ८ बुधे उपकेश ज्ञा० श्रे० सालिग सुत श्रे० नरवद भा० षेतू पुत्र राणाकेन पितुः पुण्यार्थं श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री वृहद्गच्छे बोकडिआ बंटुकेन श्री श्री श्री मलयचंद्र सूरि पट्टे श्री मणिचंद्र सूरिभिः॥

[1415]

सं० १५६७ वर्षे माघ सु० ५ दि० श्रीमाल धांधीया गोत्रे सा० सारंग पु० सा० दोदा भा० संपूरी पु० सा० कालण सा० ऊदा सा० ठाला सा० कालण पु० गोपचंद्र श्रीचंद्र इत्यादिपरिवृत्ताभ्यां सा० ऊदा० सा० टालाभ्यां श्री सुविधिनाथ बिं० का० स्वपितृव्य दोदा श्री संसरी पुण्यार्थं प्रतिष्ठितं श्री जिनराज सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिभिः॥

[1416]

सं० १५८१ वर्षे पोस सुदि ५ शुक्र दिने उ० शीसोद्या गोत्रे गोत्रजा वायण सा० पद्मा भा० चांगू पु० दासा भा० करमा पु० कमा अषाई लावेता पातिः स्वश्रेयसे श्री अजितनाथ बिंबं का० प्र० श्री संडेर गच्छे कवि श्री ईश्वर सूरिभिः॥ श्री॥ श्री चित्रकूटदुर्गे।

धातु के यंत्र पर।

[1417]

॥ संवत् १८५५ वर्षे आश्विन शुक्ल १५ दिने सिद्धचक्रं यंत्रमिदं। प्रतिष्ठितं वा। लावण्य कमल गणिना। कारितं श्री नागोर नगर वास्तव्य लोढा गोत्रे ज्ञानचंद्रेण श्रेयार्थं ॥ श्रीरस्तु॥

[1418]

ॐ ॥ श्रीमन्वि ··· गच्छे संगनद्र (?) देव सूरीणां महप्प गणिना व०········ ।

श्री शान्तिनाथजी का मन्दिर—दादावाड़ी।

पञ्चतीर्थियों पर।

[1419]

॥ सं० १३७१ माघ शुक्ल ५ कुशल पु ············ श्री शांतिनाथ बिंबं।

[1420]

संवत् १४४३ वर्षे वै० सु० १३ श्री मूलसंघे ···· ।

[1421]

सं० १४७२ वर्षे फा० सुदि ३ श्रीमाल ज्ञा० श्रे० सादा भा० मटकू सुत श्रे० देवराज हरपति भ्रातृयुत श्रे० वरसिंह भार्या कपूरादे सुत पर्वतेन भार्या वरणू निज पितृमातृश्रेयसे श्री मुनिसुव्रत बिंबं कारितं प्र० श्री तपागछ नायक श्री श्री श्री सोमसुंदर सूरिभिः।

[1422]

॥ सं० १४९६ वर्षे वैशाष सु० ५ बुधे श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० माका भा० शाणी

युतौ सालगगदा श्री सुविधिनाथ बिंबं कारापितं श्री मुनिसिंह सूरीणामुपदेशेन प्र० श्री शीलरत्न सूरिभिः ॥ शुभं ॥

[1423]

॥ सं० १५३६ वर्षे माह सुदि ५ ओसवालान्वय सूराणा गोत्रे स० नाल्हा भा० नावलदे पु० । यग पलषु सनषन कारापित वासुपूज्य बि० धर्म्मघोष गच्छे श्री ···· सूरि प्रतिष्ठितः ।

मुरार ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[1424]

सं० १४९६ वर्षे फा० व० २ हुंबड़ ज्ञातीय ठ० चाकम भा० वाल्हणदे सुत करमसी देवसीहाभ्यां निज पितृश्रेयोर्थं श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ॥ मङ्गलं भवतु ॥ छ ॥

चरण पर—दादावाड़ी ।

[1425]

सं० १९२१ शा० १७८६ माघ मासे शुक्लपक्षे षष्ठ्यां - ६ पूर्वं तु मरुदेशे मेड़तेति नाम नगरस्थोऽभूत् अधुना च मुरारि छावण्यां वास्तव्य धाड़ीवाल गोत्रीय शंभुमल्ल सुजान-मल्लाभ्यां युगप्रधान दादा श्री जिनदत्त सूरीणां श्री जिनकुशल सूरीणां च पादन्यासौ कारापितौ प्रतिष्ठितौ च वृ । भ । खरतरगच्छीय श्री जिनकल्याण सूरिभिः उ० माणिक्यचंद तच्छिष्य पं० हुकुमचंद्रोपदेशात् ।

ग्वालियर (गोपाद्रि) दुर्ग ।

शिलालेख । *

[1426] †

पहला पत्थर ।

(१) ॐ नमः पद्मनाथाय । हर्षोत्फुल्लविलोचनैर्द्दिशि दिशि प्रोद्गीयमानं जनैर्मेदिन्यां विततन्ततो हरिहरब्रह्मास्पदानि क्रमात् । श्वेतीकृत्य यदात्मना परिणतं श्री पद्मभूभृद्यशः पायादेष जगन्ति निर्म्मलवपुः श्वेतानि रुद्रश्चिरम् ॥ १ ॥ मौलिन्य-स्तमहानीलशकलः पातु वो हरिः । दर्शयन्निव केशस्थ नवजीमूत कर्णिकाम् ॥२॥ मुक्ताशैलस्थलेन क्षितिति

(२) लकयशो राशिना निर्म्मितोऽयन्देवः पायाद्रुपायाः पतिरतिधवलस्वच्छकान्तिर्जगन्ति । मन्वानः सर्व्वथैव त्रिभुवनविदितं श्यामता पह्नवं यः शङ्के स्वं वर्णचिह्नं मुकुटतट-मिलन्नीलकान्त्या बिभर्ति ॥ ३ ॥ इदं मौलिन्यस्तं न भवति महानीलशकलं न मुक्ताशैलेन स्फुरति घटितश्चैष

(३) भगवान् । उषाकर्णोत्तंसीकरणसुभगं नीलनलिनं वहत्यद्याप्यस्याश्चिरविरहपाण्डू-कृततनुः ॥ ४ ॥ आसीद्वीर्यलघुकृतेन्द्रतनयो निःशेषभूमीभृतां वन्द्यः कच्छपघात-वंशतिलकः क्षौणीपतिर्लक्ष्मणः । यः कोदण्डधरः प्रजाहितकरश्चक्रे स्वचित्तानु-गाङ्गामेकःपृथुवत्पृथूनपि हठाद्रुत्साद्यपृथ्वीभृतः ॥ ५ ॥ तस्माद्वज्रधरोपमः क्षिति

(४) पतिः श्रीवज्रदामाभवद् दुर्व्वारोर्जितबाहुदण्डविजिते गोपाद्रिदुर्गे युधा । निर्व्याजंपरि भूय वैरिनगराधीशप्रतापोदयं यद्वीरव्रतसूचकः समभवत् प्रोद्घोषणाडिंडिमः ॥ ६ ॥

---

* ग्वालियर किले के लेख डाः राजेन्द्रलाल मित्र के "इंडुएरियनस्" में छपे थे । वह पुस्तक अब दुष्प्राप्य होने के कारण वे भी यहां प्रकाशित किये गये ।

† Indo-Aryans, Vol. II pp. 370-373.

न तुलितः किल केनचिदप्यभूज्जगति भूमिभृतेति कुतूहलात् । तुलयतिस्म तुला पुरुषः स्वयं खमिह वर्ष्म विशुद्धहिरण्मयैः ॥ ७ ॥ ततो रिपुध्वान्तसहस्रधामा नृपोऽभव-

(५) न्मङ्गलराजनामा । यङ्केश्वरैकप्रणति प्रभावान् महेश्वराणाम्प्रणतः सहस्रैः ॥ ८ ॥ श्री कीर्तिराजो नृपतिस्ततोऽभूद्यस्य प्रयाणेषु चमूसमुत्थैः । धूलीवितानैः सममेव चित्रं मित्रस्य वैवर्ण्यमभूद् द्विषश्च ॥ ९ ॥ किं ब्रूमोस्य कथामृतं नरपतेरेतेन शौर्याब्धिना धत्ते मालवभूमिपस्य समरे सङ्ग्रामतीतोर्जितः यस्मिन् रङ्गमुपागते दिशि दिशि त्रासा-

(६) त्कराग्रच्युतैर्ग्रामीणाः स्वगृहाणि कुन्दनिकरैः सञ्छादयाञ्चक्रिरे ॥ १० ॥ अद्भुतः सिंहपानीयनगरे येन कारितः । कीर्तिस्तम्भ इवाभाति प्रासादः पार्वतीपतेः ॥ ११ ॥ तस्मादजायत महामतिमूलदेवः पृथ्वीपतिर्भुवनपाल इति प्रसिद्धः । श्री नन्ददण्ड-गदनिन्दितचक्रवर्तिचिह्नैरलंकृततनुर्मनुतुल्यकीर्त्तिः ॥ १२ ॥ यस्य ध्वस्तारि भूपालां सर्वाम्पालयतः

(७) प्रभोः । भुवन् त्रैलोक्यमल्लस्य निःसपत्नमभूज्जगत् ॥ १३ ॥ पत्नी देवव्रता तस्य हरेर्लक्ष्मीरिवाभवत् । तस्यां श्री देवपालोऽभूत्तनयस्तस्य भूपतेः । दानेन कर्णमजयत् पार्थं कोदण्डविद्यया । धर्मराजञ्च सत्येन स युवा विनयाश्रयः ॥ १४ ॥ सुनुस्तस्य विशुद्धबुद्धिविभवः पुण्यैः प्रजानामभून्मान्धातेव स चक्रवर्तितिलकः श्रीपद्मपालः प्रभुः यत्स्वाम्येपि क-

(८) रप्रवृत्तिरपरस्येतीव यश्चिन्तयन्दिग्यात्रासु मुहुः खरांशुमरुणं सान्द्रैश्चमूरेणुभिः ॥ १५ ॥ कृत्वान्याः स्ववशे दिशः क्रमवशात्सक्ष्मापतिर्दक्षिणानुत्खिताचलसन्निभानविरत ···· वाजिव्रजैः । उद्भूतान् पततः प ·····: संप्रेक्ष्य रेणूत्करान् भूयोप्युत्कटसेतुबन्धन-धिया त्रस्यन्ति ···· ॥ १६ ॥ तस्येन्दुद्युतिसुंदरेण यशसा नाके सुराणांगणे सौवर्ण्यभ्रमशीलखंडन-

(९) ...... प्रियान् । नूनं ...... सुरासुरवधू...... श्रिये साम्प्रतं ······ र्यंति ये प्रथमतः सर्वा वपुः संश्रिते ॥ कैर्दृप्ता ···· पादपां गावःकामदुघा ····· कैश्चिन्तितार्थप्रदाः । पूर्णाः कस्य मनोरथा इह न कैः ···· मुना पूरिता वीरो यानि तदस्ति तद्गुणवतः कस्य द्रुमादीन्यपि । श्रुत्वा न पद्मनृपतिं परिरक्षितारं प्रासादयोपि यदसौ वत नभ्रजाय: ।

(१०) योद्धापि ···· तनुर्विपिनेष्वयशो ···· ॥ भ्रमः कुलालचक्रे च लाजः पुण्यार्जनेषु च । काठिन्यं कुम्भेषु क ···· शासविमर्द्दिनीम् ॥ ...... ····· पीडा साधुर्न निस्त्रिंशपरि ···· तोपि इ ···· ...... धनुर्न चासिं तथापि या वैरिगणं जिगाय । सय ····

(११) ···· पाधिप शिरोमणि जि ···· । लोकानुरागयशसापि ···· प्रतापं विस्तारयां यदसि ···· ॥ वलयानीव नारीणां हिमानीव नजःश्रियः । ···· स विमृश्य नदीपूरचलत्वरे ...... पूर्वधर्म्मे मतिं चक्रे जिघृक्षुरनयोः फलम् ॥ प्रजा ···· त्वते

(१२) न क्षितितिलकभूतं न जवनं ···· कारितमदः । ···· मिव गिरा यस्य शिखरं समारूढसिंहो मृगमिव नृ ···· मशितुम् ॥ ···· सश्च ···· वरशिखरस्पर्द्धिनो हिममएरू ···· त्यावतीयं शशिकरधवला वैजयन्ती पतन्ती । निर्व्वातं जाति जूतिस्फुरितनिजतनोर्देवदेवस्य शम्भोः सर्गाङ्गेव पिङ्गस्फुटबि-

(१३) कटजटाजूटमध्यं विशन्ती ॥ तदेतद्ब्रह्माण्डं स इह जविता पङ्कजभुवः पुनर्वयं बोढ़ास्मो वयमिह ···· वियति ···· । ···· तदिदमुररीकृत्य सकलं ध्रुवं संसेवन्ते हरिपदन ···· तममी ॥ ···· कनकाचलः शुजविद्यावन्तः स्थितः श्रीपतिर्विप्राणोद्विजसत्तमानुदधि-जावासो नृसिंहान्वितः । निर्म्माता सवृतः समस्तविबुधैर्लब्धप्रतिष्ठेरयं प्रासादश्च

(१४) धरातले सममहो कल्पं हरेः कल्पताम् । ···· द्विजपुङ्गवेषु प्रतिष्ठितेष्वष्ठसु पद्मपालः युवैव दैवप्रतिकूलजावा ···· बभूव ॥ तस्य भ्राता नृपतिरजवत् सूर्यपालस्य सूनुः श्री

गोपाद्रैः प्रकृतनिलयः श्री महीपालदेवः। यम्प्राप्यैव .... वभूतां सनाथौ सोयं त्यागो हरिरविधुनाभावदुस्थोऽचिरेण। सूक्तिर्मुक्तामालानां विप्रा-

(१५) णां स नृपस्थितिम्। प्रलयं विद्विषामासीद् ....हरात्मकः यत्र .... राज्ञि पालयत्यवनीतलम्॥ .... मुद्वहन्ति शिरसःखलु राजहंसाः .... पुनरिमाः समयावसन्नाः। नाथ प्रजा सुमनसां प्रथमो .... सि त्वं सिद्धवीररसता-

(१६) मरसोद्भवस्य॥ लक्ष्मीपतिस्त्वमसि .... पाणिद्वयं वहसि भूप भुवं विभर्षि। श्यामं वपुः प्रथयसि स्थितिहेतुरेकस्त्वं कोपि नीतिविजितो .... सम्पालयस्य निश-मर्थिजनस्य कार्यं रामश्रिया त्वमसि नाथ मु ....। ....सि विद्विषदायुधस्त्वं त्वं कोसि सच्चरितहालहलायुधस्य॥ .... रूपं तवातिश ....

(१७) यविस्मयकारिदेव। त्वं मी............ कस्त्वं क्षितीशवरशंकर सूदनस्य॥ भूभृत्सुता पतिरसि द्विषतां पुराणि नेत्ता त्वमीश .... म्। भूतिं दधास्य मलचन्द्रविभूषिताङ्गः कस्त्वं सदम्बुजदिवाकर शङ्करस्य॥ त्वं तेजसा शिखिन मिरूमधः करोषि शक्तिं दधासि ....। त्वन्तारकं रिपुबलं

(१८) .... बलान्निहंसि कस्त्वं नवीनलनी............जन्मा (?)॥ त्वं वज्रभृत्त्वमसि पक्षभिदप्य-शेषं भूमीभृतां विबुधबन्धगुरुप्रियोसि ....दुर्गाचरणोसि कोसि त्वं भीमसाहससहस्र-विलोचनस्य। ख्यातं तवेश बहु पुण्यजनाधिपत्यं कान्तालकाव............ः सुगुप्ता॥ त्वामामनन्ति परमेश्वरबद्धसख्यं त्वं कोसि सद्गुणनिधानधरा-

(१९) धिपस्य। तेजोनिधिस्त्वमसि भूमिभृतः समग्राः क्रान्ताः करैः प्रयतमुन्नतैस्तवेश। प्रातोदयः सततमर्थिजनस्य कोसि त्वं कल्पभूधरसरोरुहबान्धवस्य॥ आनन्ददोसि जनतान............नोत्पलानामाप्यायिताखिलजनः करमार्दवेन। त्वं शश्वदी............ पादस्त्वं कोसि मर्त्यभुवनेश निशाकरस्य॥ त्वामंशमीश नि-

(२०) गदन्ति मधुद्विषोमी श्यामाभिरामतनुरस्य मलप्रबोधः पुण्यं .... रतमिदं विहितं त्वयैव

त्वं कोसि सत्यधनसत्यवती सुतस्य। .... न्ति सुरसिन्धुरियं समुद्रप्रान्तन्त्वयो-
न्ननिममौ गमित: स्ववंश:। पूर्वे पवित्रवनके विहिताश्च कोसि वंश........परता
.... ॥ एतत्त्वया कृतमताङ्कमासुधिस्त्वं ठ्याता महीह

(२१) .. रीश मनोजवैस्ते .... दुर्दशास्वस्त्वं कोसि हन्त .... राघवस्त्वम्।
.... सत्यधरस्त्वमेकस्त्वं वासुदेवचरणार्चनदत्तचित्त:। त्वं कोसि विप्र-
जनसेवितशेषभूति: संग्रामनिष्ठुर युधिष्ठिरपार्थिवस्य॥ त्वं भूरिकुञ्जरबलो भुवनैक-
मल्ल .... भूषित तनुर्नृपपावनोसि। प्रच्छन्न

दूसरा पत्थर। *

(१) .... : कस्त्वं कवीन्द्रकृतमाद् .... कादरस्य। पकस्त्वमीश्च भुवि धर्मभृतां वरिष्ठ:
सस्वामिकारिगुणदर्पहरस्त्वमाजौ। त्वं सर्वराजपृतनाविजयाप्तकीर्तिस्त्वं कोसि
सुन्दर पुरन्दरनन्दनस्य। दुर्योधनारिबलदर्पहृतस्ववेश यत्न: पराजनयश: प्रसरे
निरोद्धुम्। त्वं कोसि भूजनित .... कर्त्तन विकर्त्तनसम्भवस्य।

(२) .... यस्त्वमसि कर्म गम्भीरतायास्त्वं पासि पार्थसमभूमिभृत: प्रविष्टान्। अन्त:
स्थितस्तव हरि: सततं नरेश कस्त्वं विदीर्णरिपुजागरसागरस्य॥ .... क्रमसमा-
गतसत्त्ववृत्तिस्त्वं राजकुञ्जरशिर: प्रवितीर्णपाद:। दीतारिभास्करतिरस्कृति-
सिंहिकाभू: कस्त्वं महीपतिमृगाङ्कमृगाधिपस्य। दानं ददासि विकटो वत वंश-
शोजस्त्वं दन्तपालिकरवा-

(३) लहृतारिदर्प: द्रोणीभृतो जयसि तुङ्गतया नरेन्द्र त्वं कोसि वैरिबलदारण वारणस्य॥
सद्म श्रियस्त्वमसि मित्रकृतप्रमोदस्त्वं राजहंससमलंकृतपादमूल:। स्वामिन्नध:
कृतजडोसि जनाभिराम: कस्त्वं स्मिताद्यमुखपङ्कज पङ्कजस्य॥ सत्पत्रभूषिततनु:
सुविशुद्धकोश स्त्वं चन्द्रकीर्त्तिसमलंकृतकान्तमूर्त्ति: ख्यातं तवैव कविवर्ण ....
व वुहिक ....

* Indo-Aryans, Vol. II, pp. 373-377.

(४) समरन्नैरवकैरवस्य ॥ त्वं पश्यतां हरसि देव मनांसि ... निर्मलतान्निरामः । कोसि प्रसीद बहु ... रिकुलभूषण भूषणस्य ॥ धात्रा परोपकरणाय ... । ब्रूहि ···· भवनीश्वरवन्दनीयस्त्वं कोसि ... चन्दनस्य ···· ॥ नत्वाशु शुद्धहृदय प्रथितो·

(५) प्रमाथस्त्वं जानुना कृतवृषो न जडीकृताहस्तेनास्तु नाथ हरिणोपमितिः कथं ते ॥ नित्यं सन्निहिते कृपाणतमसा ... स त्वन्नासाद् भुवनैकनाथ हरिणा· स्तस्योदरे ... । मूर्त्तिस्ते च कलङ्किता सजडतां धत्ते ···· : शङ्खस्थैर्विदित स्तथापि नृपते राजा त्व····द्भुतः····विमुखतां पार्थेन नीताः परे व्यसनिनस्तु तिरर्ज्जुन·

(६) स्याविहिते व्यज्ञायि पूर्वं किल तत्सम्यक् प्रतिजाति सम्प्रति पुनः श्रीमन्महीपालवत् त्वामालोक्य सहस्रशो रिपुबलं निघ्नन्तमेकं रणे ॥ किं ब्रूमोपि ···· त्वं नीतिपात्रं परं वृत्तान्तं जगतीपतेरनिस्तृणात्मप्रियायां शृणु । कीर्त्ति... दिहु ···· किं चित्रं भुवनैकमल्ल यदि

(७) मन्दाकिनोपद्मभूलोकादुद्धरता ... निम्नां महीम् । आश्चर्यं पुनरेतदीश यदि ते निम्नान्महीमण्डलादूर्द्धं कीर्त्ति····णीकमलभूलोकं त्वया प्रापिता । चित्रं नात्र फल ···· सर्वात्मना विद्विषो विशिखैः संमूर्छितस्याहवे । ···· मध्ये

(८) न्नताश्चर्यकृत् ॥ अत्यंवुधिभवद्भैमत्यादित्यभवन्महः । अतिसिंहभवत्शौर्यमतः केनोपमीयते ॥ केयूरं बलभूपालभुजदण्डे विराजते किरीटमिव ···· न्निधासि विजय· श्रियः । ···· भुवनगुरोस्तोत्रमकृथास्तदेष

(९) वैतालिकैरित्थमभिष्टुतेन संपूजितामर्त्यगुरुद्विजेन । विमुक्तकारागृहसंयतेन विदीर्ण· भूतामयदक्षिणेन । तेनाभिषिक्तमात्रेण प्रतिजज्ञे द्वयं स्वयम् । पद्मनाथस्य भूसिद्धिः कन्यायाः ···· ॥ ···· यशः शरीरम् ॥ स·

(१०) सर्पिता ब्रह्मपुरी च तेन शेषान् विधायावनिदेवसुख्यान्। प्रवर्ति ··· भ्रमतन्द्रितेन मृष्टान्नपानैरतिधार्मिकेण ॥ श्री पद्मनाथस्य सलोकनाथ ··· नैवेद्यपाका ··· विला

(११) सिनीवा ·· नादिर्यथार्हतः पादकुलस्य मूर्त्तिम्। स पद्मनाथस्य पुरः समग्राम-कल्पयत्प्रेक्षकाय नृपः ॥ पापापल्लीं प्रविभज्य सम्यग् देवाय ··· । सम्पाद-यामास तथा द्विजेभ्यः ·· ।

(१२) गतो योगीश्वरांगोद्भवः ख्यातः सूरिसलक्षणः क्षितिपतेः सर्वत्र विश्वासभूः। आधारो विनयस्य शीलभवनं भूमिः श्रुतस्याकरः स्वाध्यायस्य क क वसतिः ····

(१३) हीपाले नटो विप्रास्तस्मिन् ग्रामे प्रतिष्ठिताः। तेषां नामानि लिख्यन्ते विसूरः शासनोदितः ॥ देवलब्धिः सुधीराख्यस्ततः श्रीधरदीक्षितः ॥

(१४) ··· रामेश्वरो द्विजवरस्तथा दामोदरो द्विजः। अष्टादशैते विप्राश्च ···· द्विजः। पादोनपदिका ···· णेकौसुरार्चकौ। द्वावर्द्धपदिनावेष विप्राणां संग्रहः कृतः। ···दर्द्धपदं नृपः। विधाय ··कायस्य सूरये देवाय दत्तः सौवर्णो राज्ञा दत्तैः समाचितम्। ··· हरिणमणिमयं भूप—

(१५) ··· कं ददौ। रत्नैर्विचित्रं निष्कश्च निष्क ····: स भूपतिः ॥ प्रा—केयूरयुगलं रत्नैर्बहुभिराचितम्। कङ्कणानां चतुष्कश्च महार्हमणिभूषितम्। ···· द्वितीय मनि ···· स्य सौवर्णं केवलं यथा। कङ्कणानां चतुष्कश्च नीलपट्टद्वयं तथा। ···· लैः पंचभिर्युता। ···· धारापात्रश्च कां।

(१६) ··· चतुष्टयम्। सुवर्णाण्डत्रयं देवपरिवारविभूषणम्। ···· परिहेमाब्जमातपत्रीकृतं विभोः ॥ निवेश्य ताम्रपट्टे च तन्मयेनैवम ····। प्रतिमा नित्यं मणि ···· राजती ··· प्रतिमा ···· का द्वितीया ···· द्युती। राज ···· मयी चान्या ···। ताः प्रयत्नेन तिस्रोपि पूज्यते ····वेश्मनि। तत्र ताम्रमयं देवं दीपार्थं मण्डिकाकृतम्।

(१७) ....क। ताम्रार्थपात्रद्वितयं तथा दत्तं महीभुजा। सधूपदहनाः सप्त घण्टाश्च ....। दत्ताः शङ्खाश्च सप्तैव ....चतुष्टयम्। स कांस्यभाजनं प्रादान्नृपतिः ....चामरं दण्ड.... वृहच्चतुष्टयम् ताम्रमयं तास्ता ....। दत्ताश्च दशतन्मयाः॥ ....देवोपकरणद्रव्याणां संग्रहः कृतः।

(१८) ....वापीकूपतडागादि ....षु च। दशमासं तथा विंशच्चूर्द्ध सर्वत्र मण्डले। ददौ राजा नि ....यते सर्वं प्रवर्तते। अयं देवालयो नाम ....स्फटिकामल .... भारद्वाजेन मीमांसान्यायसंस्कृतबुद्धिना। कवीन्द्र.... गोविन्दकविसूनुना। कविता मणिकर्णेन सुभाषितसरस्वती। प्रशस्ति

(१९) ....लङ्केश्वरवान् द्वितीयां विभ्रत्सुहृतां मणिकण्ठसूरेः। पञ्चासे चाश्विने मासे कृष्णपक्षे नृपाज्ञया। रचिता मणिकर्णेन प्रशस्तिरियमुज्ज्वला॥ अङ्कतोपि ११५० ॥ आश्विनबहुलपञ्च।

(२०) .... खिलां महीम्। यस्य गीर्वाणमन्त्री च मन्त्री गौरो भव। ....र्णा सद्वर्णा पद्मशिल्पिना।

(२१) • • • • •

मूर्त्तियों के चरणचौकी पर।

[1427] *

श्री आदिनाथाय नमः॥ संवत् १४९७ वर्षे वैशाख .... ७ शुक्रे पुनर्वसुनक्षत्र श्रीगोपाचलदुर्गे महाराजाधिराज राजा श्रीडुंग ....संवर्त्तमानो श्रीकाञ्चीसंघे माथूरान्वयो पुष्करगणभट्टारक श्रीगणकीर्तिदेव तत्पदे यत्यः कीर्त्तिदेवा प्रतिष्ठाचार्य श्रीपंडितरघूतेपं

* श्री आदिनाथजी की बड़ी मूर्ति पर यह लेख है। Indo-Aryans, Vol. II, p. 382.

आम्नाये अग्रोतवंशे मोद्गलगोत्रा सा ॥ धुरात्मा तस्य पुत्रः साधु भोपा तस्य भार्या नाह्नी । पुत्र प्रथम साधुक्षेमसी द्वितीय साधुमहाराजा तृतीय असराज चतुर्थ धनपाल पञ्चम साधुपाल्हका। साधुक्षेमसी भार्या नोगदेवी पुत्र ज्येष्ठ पुत्र भधार्ये पतिकौल ॥ भ—भार्य, च ज्येष्ठ स्त्री सुग्सुनी पुत्र मल्लिदास द्वितीय भार्या साध्वीसरा पुत्र चन्द्रपाल । क्षेमसी पुत्र द्वितीय साधु श्रीभोजराजा भार्या देवस्य पुत्र पूर्णपाल ॥ एतेषां मध्ये श्री ॥ त्यादिजिनसंघा-धिपति काला सदा प्रणमति ॥

[1428] *

(१) सिद्धि संवत् १५१० वर्षे माघसुदि ८ अष्टम्यां श्रीगोपगिरौ महाराजाधिराज रा

(२) जा श्रीडंगरेन्द्रदेवराज्यप्र .... श्रीकाष्ठासंघे मायूरान्वये भट्टारक श्री ।

(३) क्षेमकीर्त्तिदेवस्तत्पदे श्रीहेमकीर्तिदेवास्तत्पदे श्रीविमलकीर्त्तिदेवाः ....

(४) डिता .... सदाम्नाये अग्रोतवंशे गर्गगोत्रेसा .... त

(५) योः पुत्राः ये दशाय श्रीचंद भार्या मालाही तस्य प्रवसा० षेषार रा .... जीसा .... डु

(६) तीयसा० हरिचंदभार्या जसोधर हितये .... णसी सा० सधा सा० तृती

(७) य हेमा चतुर्थ सा० रतीपुत्र सा० सह सापं .... मु सा० धं....सा० सल्हापुत्र एसेवं..ए

(८) तेषां मध्ये साधु श्रीचंद्रपुत्र शेषा तथा हरिचंद्र देवकी भार्या ....

(९) दीप्रमुखा नित्यं श्रीमहावीर प्रतिमा प्रतिष्ठाप्य सूरिभक्त्या प्रणमंति ॥

(१०) अङ्गुष्ठमात्रां प्रतिमां जिनस्य भक्त्या प्रतिष्ठापयतो महत्या । फलं बलं राज्य

(११) मनन्त सौख्यं भवस्य विच्छित्तिरथो विमुक्ति ॥ शुभं भवंतु सर्वेषां ॥

[1429]

(१) श्रीमद्गोपाचलगढदुर्गे ॥ महाराजाधिराज श्री मल्लसिंह देवराज्ये प्रवर्त्तमाने । सवंत् १५५२ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ।

* Indo Aryans. Vol, II. pp. 383—84.

(२) ९ सोमवासरे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये । भ० श्रीपद्म नन्दिदेव तत् पट्टालंकार श्री ।

(३) शुभचंद्र देव । तत्पट्टे भ० मणिचंद्र देव । तत्पट्टे पं मुनि ... गणि कचरदेव तदन्वये वारह जेणीवंशे सालम भार्या व ---

(४) युक पु ४ तेषां मध्ये आणंद भार्या उदैसिरि । पुत्र ६ लोहंगराम मुनिसिंघ अरजुन उधरण मल्हू नल्हू । मल्हू भार्या ।

(५) पियौसिरि पुत्र पारसराम भार्यां नव । द्वुती पुत्र रामसि भार्या नागसिरी । तृतीय पुत्र लिभ । चतुर्थ पुत्र रोपाण ॥ सां मल्हु ।

(६) .. तीर्थंकर बिंबं निर्मापितं प्रणमति प्रीत्यर्थं ॥

सुहानीय।

पाषाण की मूर्त्तियों के चरणचौकी पर ।

[1430] *

संवत १०१३ माधवसुतेन महिन्द्रचन्द्रकेन कला खोदिता ।

[1431] †

संवत १०३४ श्रीवज्रदाम महाराजाधिराज वइसाख वदि पाचमी ✻ ✻ ✻

---

* Indo Aryans, Vol. II, p. 369.

† Do. p. do.

[1432] *

६ः ॥ सिद्धि । सन्तु १४९३ वर्षे बैशाख सुदि १५ दि — नमो ... मथावे वे र ... करा ब्रह्मभूता सर ... गत्या र ... आदि अखंड ढा ... औस्व ... क...सुत ... रिता मु ठेढ ... व ...

[1433] †

· ११६० कातिक सुदि १३ गुरू दिने रतन लिषितं राजन ताढ ... तधार दिवसम्मि पंञ ... चंद्राना पसावे आदेसू संवतु १५२१ वर्षे चैत सुदी १० बुधे ।

मथुरा ।

श्रीपार्श्वनाथजी का मंदिर—घीयामंडि ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1434]

॥ सं १३७५ । श्र० फूससीह भार्या मालू पुत्री लषमिणि मातापितृ श्रयसे श्री शांतिनाथ का० प्र० ब्रह्माणेत्य श्रीमदनप्रभ सूरि पट्टे श्रीविजयसेन सूरिभिः ॥

[1435]

ॐ सं० १३०० वर्षे माघसुदि ५ उस० सुचिंती गोत्रे सा० बीमा पुत्र सा० भूणा जोजा... श्रीजिनभद्र सूरि शिष्य श्रीजगत्तिलक सूरिभिः । ... श्रीपद्मानंद सूरिभिः ॥

[1436]

सं० १४६१ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० शुक्रे उपकेश ज्ञा० व्य० जइता पु० जगपाल भा० पूजलदे पु० लोलाकेन पितृमातृ श्र० श्रीशांतिनाथ बिंबं का० प्र० बृहद्गच्छे श्रीरामदेव सूरिभिः ।

---

* Indo-Aryans, Vol. II, p. 381.

† किले पर "सास बहु" के मंदिर की मूर्त्ति पर यह लेख है ।

[1437]

सं० १५२३ व० वै० सु० ६ प्राग्वाट श्रे० वस्ता भा० फदू सुत श्रे० सारंगेण भा० मरगादे पुत्र श्रे० वीकादि कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्रीकुंथुनाथ बिम्बं का० प्र० तपागच्छे श्री रत्नशेखर सूरि पट्टे श्रीलक्ष्मीसागर सूरिभि : ॥ जइतपुर ॥

[1438]

सं० १५२० वर्षे फागुण - - श्रीमालज्ञातीय टाक गोत्रे स० भाविनो पुत्र श्रीभागू श्रावक श्रीआदिनाथ बिंबं का० प्र० श्री खरतरगच्छे श्री जिनसागर सूरि तत्प० श्री सुंदर सूरि पट्टे श्री हर्ष सूरिभिः ।

[1439]

सं० १५७९ वर्षे माघसुदि ६ शुक्रे बैशाष वदि ५ उसवंशे लाषाणी गांधी गोत्रे सा० तेजपाल पुत्र सा० कुयरपाल भार्या सालिगदे पुत्र रायमल्ल श्रावकेण स्वश्रेयसे श्रीपार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री अंचलगच्छे श्रावकेण श्री गुणनिधानसूरि उपदेशात् ।

धातुकी मूर्त्ति पर

[1440]

सं० १६०७ फाग० सु० १० क्षेमकीर्त्ति .... ।

धातुके यंत्र पर ।

[1441]

सं० १७५२ पोष सुदी ४ दिने । बृहस्पति वासरे श्रीसिद्धचक्र यंत्रमिदं प्रतिष्ठितं सवाई जैनगर मध्ये वा० लालचंद्र गणिना कारितं वीकानेर वास्तव्य कोठारी अनोप चंद तत्पुत्र जेठमल्लेन श्रेयोर्थं शुभं भवतु ॥

आगरा ।

श्री चिंतामणि पार्श्वनाथजी का मंदिर—रोशन मोहल्ला ।

पंचतीर्थियों पर

[1442]

॥ संवत् १३८९ वर्षे वैशाख सुदी ६ बुधे श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० अरसीह भा० पामना-पुत्र ... वाल्हाकेन श्री पार्श्वनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ॥

[1443]

॥ संवत् १५२४ वर्षे मार्गशिर बदी ४ रवौ उपकेश ज्ञातीय लिंगा गोत्रे सा० पीघा भा० ऊदी....पु० सा० चेडन भा० सूहवादे पु० शेषा सरूजन अरजन अमरासहितेन स्वपु० श्रीकुन्थुनाथ बिम्बं का० प्र० श्रीउपकेशगच्छे ककुदाचार्यसन्ताने श्री सिद्ध सूरि पट्टे श्री कक्क सूरिभिः ॥

[1444]

॥ सं० १५३३ वर्षे पोस सुदि १५ सोमे सिद्धपुर वास्तव्य ओसवाल ज्ञातीय सा० नासण भा० वानू सु० बडाकेन भा० माई भुसूरा प्र० कुटुम्बयुतेन श्री सुमतिनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीवृद्धतपागच्छे श्री ज्ञानसागर सूरि पट्टे श्री उदयसागर सूरिभिः ॥

[1445]

॥ संवत् १५३६ व० ज्येष्ठ वदि ४ सोमे श्रीश्रीमाली दोसा रगना उपरिसन प्रावरू भा० हपारा सुत भैरवदासेन स्वश्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बि० का० प्रति० बृहत्तपा श्री उदयसागर-सूरिभिः ॥

[1446]

॥ संवत् १५७२ सा० लीबा भा० का० .... सं० गांडण रणधीर र... देवाति प्रणमन्ति

[1447]

॥ संवत् १५९२ माघ सुदी ५ बुधवासरे श्री मूलसंघे भ० श्री जिनचन्द्र तदाम्ना जसवाल इल्हा ... कुवेसल श्री हेमणे ....

[1448]

॥ संवत् १६२७ वर्षे ज्येष्ठ वदी २ .... श्री सुपार्श्वनाथ बिम्बं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री-बृहत् खरतरगछे भ० श्री जिनचन्द्र सूरिभिः ॥

[1449]

॥ स० १९३१ वर्षे आगरा वास्तव्य लोढा गोत्रे प्रतापसिंहस्य भा० मूल श्रीनवपद कारितं प्रतिष्ठितं श्री (?) विजयसूरी.... ।

धातु की चौविशी पर।

[1450]

॥ संवत् १५७४ वर्षे वैशाख सुदी दशमी शुक्र ओसवाल ज्ञातीय राका शाखायां वलह गोत्रे सं० रत्नापुत्र स० राजा पु० सं० नाथू भा० बल्हा पुत्र सं० चूहरु भा० हीसू पु० स० महाराज भा० संभा पुत्र सोहिल लघुभ्रातृ महपति भा० माणिकदे सु० नरहपाल भा० मलूही पु० धनपाल स० हेमराज भा० उदयराजी पु० संघागोराज भ्रातृ सेन्यरत्न भा० श्रीपासी पु० संघराज समस्तकुटुम्बसहितेन सुश्रावकेन हेमराजेन श्री धर्मनाथ बिम्बं कारापितं श्रीउपकेश गछे ककुदाचार्यसन्ताने प्रतिष्ठितं भ० श्री सिद्ध सूरिभिः ॥ श्रीरस्तु ॥

पाषाण की मूर्त्तियों पर।

[1451]

ॐ सिद्धिः ॥ संवत् १६६७ ज्यैष्ठ सुदि १५ तिथौ गुरुवासरे अनुराधा नक्षत्रे। ओस-वाल ज्ञातीय अरडक सोनी गोत्रे साह पूना संताने सा० कान्हड़ भा०भामनी वहु पुत्र सा०

हीरानंदेन बिम्बं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री खरतरगच्छे श्री जिनवर्धन सूरि संताने ···· श्री लब्धिवर्द्धन शिष्येन ।

[1452]

श्रीमत्संवत १६२१ वर्षे वैशाख सुदी ३ श्री आगरावासी ओसवाल ज्ञातीय चोरड़िया गोत्रे साह ···· पुत्र सा० हीरानंद भार्या हीरादे पुत्र सा० जेठमल श्रीमदंचलगच्छे पूज्य श्रीमद्धर्म्ममूर्त्ति सूरि तत्पट्टे ····

पाषाण के चौविशी के चरण पर ।

[1453]

संवत १८६२ ज्येष्ठ शुक्ल १३ गुरुवारः श्री सिंघाड़ो बाई ने बनाया । श्री आगरा वास्तव्य व्य० संघपति श्री श्री चंद्रपालेन प्रतिष्ठा कारिता ।

शिलालेख ।

[1454]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ संवत् १६७७ वर्षे आसोज सुदी १५ श्री अर्ग्गलपुरे जलालूदीन पातिसाह श्री अकब्बर सुत जहांगीर सुत सवाई साहिजां विजयराज्ये ···· राजद्वार शोभक सोनी ···· श्री हीरानंद ···· श्री जहांगीरस्य गृहे ···· कृतं । तत्र तस्य नंदनवनोद्यानसमवाटिकायां ···निज धनस्य ···· भार्या सोना सुत निहालचंद भार्या मृगां स्वांङ्ग पुत्र चिरं सहसमल्ल सना श्री गंगाजल वारि पूरपूरित निर्मल कूपः कारापितः ॥ आचंद्रार्कं यावत्तिष्ठतु ॥

[1455] *

१। ॥ श्री सद्गुरुभ्यो नमः ॥ सत्पट्टोत्तुंगश्रृंगोदयं शिखरि शिखा भानु बिंबोपमाना जैनोपज्ञाः स

* बड़े मंदिर के बगल में जो जड़ाई काम की नई वेदी और सभामंडप बने हैं उसके दाहिने तर्फ उपर में यह शिलालेख लगाया हुवा है। इसकी लंबाई अंदाज २ फिट और चौड़ाई १॥ फिट है और मामूली पत्थर है। शिलालेख के निचे ४ यंत्र है (१) २० का (२) १५ का (३) ३४ का और (४) १७० का खुदा हुवा है।

२। मं चब्बरित चित तपस्तेजसा तप्यमानाः नूनं नंद्या सुरैरेते भुवि यशविमला राज राजीव हंसा॥

३। श्रेयः श्री हीरनामा विजयपदयुता सूरिवंशावतंसाः १ भट्टारक श्री विजयेण युक्तः श्री

४। धर्मं सूरी जगति प्रसिद्धः तत् प्राज्यराज्ये प्रगुणी कृतो यः श्री संघमानन्द विकास-हेतु २ श्री

५। हीरवंशे भुवि कीर्त्तिविश्रुतं यशोत्तरं यस्य समीक्ष्य मानवाः पश्यंति ने[illegible] सुधाकरं वरं श्री पा

६। ठकश्रेणिपुरन्दरप्रभुः ३ श्रीमेघनामा भुवि पाठक प्रभु प्रसह्य पापं दहतेस्म कामदः महादवं

७। वन्हिरिव स्फुरद्युतिः ज्वलत्प्रतापावलि कीर्त्तिमंफलं ४ तत्पट्टे विबुधार्चितो विजय. प्राक् श्री

८। मेरुनामा मुनी तच्छिष्यो मणिसदृशौ शुभमति माणिक्य भानू जयौ ताभ्यां शिष्य कुशाग्रधीति कु

९। शलो जैनागमे यन्मति तद्वाक्यं श्रवणेन निर्मलधीयां निर्मापितोयं गृहं ५ श्री अकब्बरावादपुरे

१०। श्रीसंघमेरुसदृशो धर्मे निर्मापय जिनभवनं करोति बहुभक्तिः वात्सल्यं ६ दिगष्टैक मिते

११। वर्षे माघशुक्के चतुर्दशी बुधवारे च पुष्यर्क्षे स्थापितोयं जिनेश्वरान् ७ श्रेयः कल्याणं जयं

१२। ॥सवैया ३१ प्रथम वसंत सिरी सीतल जू देवहु की प्रतिमा नगन गुन दस दोय भरी है आग

१३। रे सुजन साचे अगारैसै दस आठे माह सुदी दस च्यार बुद्ध पुष धरी है देहरा नवीन कीन्यौ संग

AGRA TEMPLE PRASHASTI
Dated, V. S. 1818 (A. D. 1761)

१४। जिनराय चिन्यौ कुशलविजय पुन्यास तपगछ धरी है देख श्रीवछ विचार सम्यक् गुन सुधार

१५। चरम की रज टार पूजा जिन करी है १ कुंडलिया चोमुष की प्रतिमा चतुर धरम विमल जिन नेम

१६। मुनिसोव्रत उर आनिकै करत जवानी पेम करत जवानी पेम नेम जिन संष सुजानौ विमल लष

१७। न वाराह धरम जिन व (ज) र पिछानौ मुनिसोव्रत जिन कूर्म लषन लष होत सबै सुष प्रति

१८। मा चारौं जांन आंन सुज धरीसु चौमुष २ ॥

११	१	८
४	७	९
५	१२	३

६	७	२
१	५	९
८	३	४

१५	४	५	१०
६	९	१६	३
१२	७	२	१३
१	१४	११	८

२५	८०	क्षि	१५	५०
२०	४५	प	३०	७५
क्षि	प	ॐ	स्वा	हा
७०	३५	स्वा	६०	५
५५	१०	हा	६५	४०

[1456] *

पातिसाहि श्री जहांगी (र) ।

१। ॥ ए० ॥ श्री सिद्धेभ्यो नमः ॥ स्वस्ति श्री विष्णुपुत्रो निखिल गुणयुतः पारगो वीतरागः । पायाद्वः क्षीणकर्म्मा सुरशिखरि समः [कल्प]

२। तीर्थप्रदाने ॥ श्री श्रेयान् धर्म्ममूर्तिर्जविकजनमनः पंकजे बिंबभानुः कल्याणांभोधिचंद्रः सुरनरनिकरैः सेव्यमा

३। नः कृपालुः ॥ १ ॥ ऋषभप्रमुखाः सर्वे गौतमाद्या मुनीश्वराः । पापकर्म्म विनिर्मुक्ताः क्षेमं कुर्वंतु सर्वदा ॥ २ ॥ कुंर ।

* यह लेख प्रफेसर बनारसीदासजी ने " जैन साहित्य संशोधक " खंड २ अंक १ पृ० २५-३४ में विस्तृत टिप्पणी के साथ प्रकाशित किया है ।

४। पाल स्वर्णपालौ। धर्म्मकृत्य परायणौ। स्ववंशकुजमार्त्तंडौ। प्रशस्तिर्लिख्यते तयोः
।३। श्रीमति हायने रम्ये चन्द्रर्षि रस

५। न्नूमिते। १६७१ षट् त्रिंशत्तिथौ शाके। १५३६। विक्रमादित्यभूपतेः।४। राधमासे बसततौं शुक्लायां तृतीया तिथौ। युक्ते तु

६। रोहिणी तेन। निर्दोषगुरुवासरे।५। श्रीमदंचलगच्छाख्ये सर्वगच्छावतंसके। सिद्धान्ताख्यातमार्ग्गेण। राजिते विश्वविस्तृते।६। उग्रसे

७। नपुरे रम्ये। निरातंके रमाश्रये प्रासादमंदिराकीर्ण्णे। सद्ज्ञातौ ह्युपकेशके।७। लोढागोत्रे विवस्वांस्त्रिजगति सुयशा ब्रह्मवी

८। र्यादियुक्तः श्री श्रंगाख्यातनामा गुरुवचनयुतः कामदेवादि तुल्यः। जीवाजीवादितत्वे पररुचिरमतिर्लोकवर्गेषु यावज्जीया

९। श्चंद्रार्कबिंबं परिकरभृतकैः सेवितस्त्वं मुदाहि।८। लोढा सन्तानविज्ञातो। धनराजो गुणान्वितः। द्वादशव्रतधारी च। शुभ्र।

१०। कर्म्मणि तत्परः।९। तत्पुत्रो वेसराजश्च। दयावान सुजनप्रियः। तुर्यव्रतधरः श्री मान् चातुर्यादिगुणैर्युतः।१०। तत्पुत्रौ द्वा।

११। वन्नूतां च सुरागावर्थिनां सदा। जेतू श्रीरंगगोत्रौ च। जिनाज्ञा पालनोच्चुकौ।१। तौ जीण। सीह मल्लाख्यौ। जेतूवात्मजौ बन्नूवतु

१२। :।धर्म्मविदौ तु दक्षौ च। महापूज्यौ यशो धनौ। १२ ।आसीच्छ्रीरंगजो नूनं। जिनपदार्चने रतः। मनीषी सुमना जठ्यो राजपा-

१३। ल उदारधीः।१३। आर्या। धनदौ चर्षजदास। षेमाख्यौ विविध सौख्य धनयुक्तौ। आस्तां प्राज्ञौ द्वौ च। तत्वज्ञौ तौ तु तत्पु

१४। त्रौ।१४। रेषाजिधस्तयोर्ज्येष्ठः। कल्पद्रुरिव सर्वदः। राजमान्यः कुलाधारो। दयालुर्धर्म्मकर्म्मठः।१५। रेषश्रीस्तत्प्रिया

१५। जठ्या। शीलालंकारधारिणी। पतिव्रता पतौ रक्ता। सुलक्षा रेवती निजा।१६। श्री पद्मप्रभबिंबस्य नवीनस्य जिनालय।

१६। ये । प्रतिष्ठा कारिता येन सत्श्राद्धगुणशालिना । १७ । सलो तुर्यवृतं यस्तु । श्रुत्वा कल्याणदेशनां । राजश्रीनंदन :

१७। श्रेष्ठ । आणंदश्रावकोपम : । १८ । तत् सूनुः कुंरपालः किल विमलमतिः स्वर्णपालो द्वितीय । भ्रातुर्यौदार्यधैर्यप्रमु- ।

१८। खगुणनिधिर्भाग्यसौभाग्यशाली । तौ द्वौ रूपाभिरामौ त्रिविधजिनवृषध्यानकृत्यैक-निष्ठौ । त्यागैः कर्णावतारौ निज-

१९। कुलतिलकौ वस्तुपालोपमाहौं । १९ । श्रीजहांगीरभूपालमान्यौ धर्मधुरंधरौ । धनिनौ पुण्यकर्तारौ विख्यातौ भ्रा-

२०। तरौ भुवि । २० । याभ्यामुप्तं नव क्षेत्रे । वित्तबीजमनुत्तरं । तौ धन्यौ कामदौ लोके। लोढा गोत्रावतंसकौ । २१ । अवा

२१। प्य शासनं चारू । जहांगीरपतेर्ननुः कारयामास तुर्धर्म्म । कृत्यं सर्व सहोदरौ । २२ । शालापौषधपूर्वावै । यकाभ्यां सा

२२। विनिर्मिता । अधित्यका त्रिकं यत्र राजते चित्तरंजकं । २३ । समेतशिखरे भव्ये शत्रुंजयेर्बुदाचले । अन्येष्वपि च तीर्थेषु । गि

२३। रिनारिगिरौ तथा । २४ । संघाधिपत्यमासाद्य । ताभ्यां यात्रा कृता मुदा । महद्धर्या सर्वसामग्र्या । शुद्धसम्यक्त्वहेतवे । २५ । तुरंगा

२४। णां शतं कांतं । पंचविंशति पूर्वकं । दत्तं तु तीर्थयात्रायां गजानां पंचविंशतिः । २६ । अन्यदपि धनं । वित्तं । प्रत्तं संख्यातिगं खलु

२५। अर्जयामासतुः कीर्त्ति । मित्थं तौ वसुधातले । २७ । उत्तुंगं गगनालंबि । सच्चित्रं सध्वजं परं । नेत्रासेचनकं ताभ्यां । युग्मं चैत्य

२६। स्य कारितं । २८ । अथ गद्यं श्रीअंचलगच्छे । श्रीवीरादष्टचत्वारिंशत्तमे पट्टे । श्रीपावक गिरौ श्री सीमंधरजिनवचसा । श्रीचक्रे (श्वरीद)

२७। त्तवराः । सिद्धांतोक्तमार्गप्ररूपकाः । श्री विधिपक्षगच्छसंस्थापकाः । श्री आर्यरक्षित सूरय । १ । स्तत्पट्टे श्री जयसिंह सूरि २ श्रीधर्म्मघो

२८ ष सूरि ३ श्रीमहेन्द्रसिंह सूरि ४ श्रीसिंहप्रजसूरि ५ श्रीअजितसिंह सूरि ६ श्री देवेंद्रसिंह सूरि ७ श्रीधर्मप्रज सूरि ८ श्री (सिंहतिलक सू)

२९। रि ए श्रीमहेंद्रप्रजसूरि १० श्रीमेरुतुंगसूरि ११ श्रीजयकीर्त्ति सूरि १२ श्री जयकेशरि सूरि १३ श्री सिद्धांतसागर सूरि १४ (श्री जावसा)

३०। गर सूरि १५ श्री गुणनिधान सूरि १६ श्रीधर्म्ममूर्त्ति सूरय १७स्तत्पट्टे संप्रति विराजमानाः श्रीजट्टारकपुरंदराः स ······

३१। णय : श्रीयुगप्रधानाः । पूज्य जट्टारक श्री ५ श्रीकल्याणसागरसूरय १९ स्तेषामुपदेशेन श्रीश्रेयांसजिनबिंबादीनां ···

३२। कुंरपालसोनपालाज्यां प्रतिष्ठा कारापिता। पुनः श्लोकाः। श्री श्रेयांसजिनेशस्य बिंबं स्थापितमुत्तमं। प्रतिष्ठितं ···· गुरू

३३। णामुपदेशतः। २९। चत्वारिंशत् मानानि सार्धान्युपरि तत् क्षणे। प्रतिष्ठितानि बिंबानि जिनानां सौख्यकारिणां। ३०। ····

३४। तु लेजाते प्राज्य पुण्यप्रजावतः देवगुर्वोः सदाजक्तौ। शश्वतौ नंदतां चिरं। ३१। अथ तयोः परिवारः संघराजो पु ·····

३५। ····· ३२। सूनवः स्वर्णपाल ···· श्चतुर्ज्जुज ··· पुत्री युगलमुत्तमं। ३३। प्रेमनस्य त्रयः पु (त्राः ····)

३६। षेतसी तथा। नेतसी विद्यमानस्तु सच्छीलेन सुदर्शन। ३४। धीमतः संघराजस्य। तेजस्विनो यशस्विनः। चत्वारस्तनुजन्मानः ······ मताः। ३५। कुंरपालस्य स ····

३७। ज्ञार्या ···· पत्नीतु स ··· पतिप्रिया। ३६। तदंगजास्ति गंजीरा जादो नाम्नी स ···· दानी महाप्राज्ञो ज्येष्ठमल्लो गुणाश्रयः। ३७।

३८। संघश्रीसुलषश्रीवा दुर्ग्गश्रीप्रमुखैर्निजैः। वधूजनैर्युतौ जातां। रेषश्री नंदनौ सदा। ३८। जूमंडलं सन्नारंगर्मिद्वर्कयुक्त संव ······।

卐

श्री श्रीमंदिर स्वामी जी का मंदिर—रोशन महल्ला ।

पाषाण की मूर्ति पर ।

[1457] *

(१) ॥ सं० १६६७ ज्यैष्ठ सुदि १५ गुरौ ॥ ओसवा
(२) ल ज्ञाति श्रृंगार । अरडक सोनी गोत्रे
(३) सा० हीरानंद पुत्र सा निहालचंद
(४) न श्री पार्श्वनाथ कारितः सर्परूपाकार
(५) श्री खरतरगच्छे श्री जिनसिंह सूरि पट्टे श्री
(६) जिनचन्द्र सूरिणा । श्री आगरा नगरे

धातुकी मूर्त्तियों पर ।

[1458]

॥ सं० १५३४ वर्षे माघ सुदी ५ श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये श्री जिनवरदेवाः तत् शिष्य मुनिरत्नकीर्त्ति उपदेशात् खण्डेलवालान्वये पहाड्या गोत्रे सा० तेजा भार्या रोहिणी पुत्रौ सा० पूना पाल्हा नित्यं प्रणमन्ति ॥

[1459]

॥ सं० १६४१ श्री सुपार्श्वनाथ बि० का० प्र० श्री हीरविजय सूरिभिः ॥

[1460]

॥ संवत् १६७४ वर्षे माघ वदी १ दिने गुरूवारे पुष्यनक्षत्रे साह श्रीजहांगीर विजयमानराज्ये ओसवालज्ञातीय नाहर गोत्रे। सं० हीरा तत्पुत्र स० अमरसी भा० अन्तरङ्गदे तत्पुत्र सा० साडूला भा० सोभागदे सुतेन श्री मुनिसुव्रतस्वामी बिम्बं कारापितं प्रतिष्ठितं जहांगीर महातपाविरूद्धधारक भट्टारक श्री ५ श्री विजयदेवसूरिभिः ॥ शुभं भवतु ॥

---

* यह लेख श्री पारश्र्वनाथ स्वामी की श्वेत पाषाण की कायोत्सर्ग मुद्रा की मनोज्ञ मूर्ति के चरणचौकी पर खुदा हुआ है।

पंचतीर्थियों पर

[1461]

॥ सवत् १५०० वर्षे वै० शु० ५ उपकेशज्ञातीय सा० नानिग जा० मल्हाड सुत सा० लाखा जा० लाखणदे सुत सा० चाहडेन मातृ हासा सिधराज जा० चापलदेवी सुत वसुपालादिकुटुम्बयुतेन पितृ श्रेयसे श्रीचन्द्रप्रभबिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीतपागच्छनायक श्री श्री मुनिसुन्दर सूरिभिः ॥

[1462]

॥ संवत् १५३६ वर्षे आषाढ सुदी नवम्यां तिथौ उप० वीरोलिया गोत्रे सा० मूमा जा० केल्ही पु० दशरथ नाम सा० दशरथ जा० दत्तसिरी पु० जिणदत्त श्री संभवनाथ बिम्बं का० प्र० श्री पल्लीवालगच्छेश भ० श्री उजोअण सूरिभिः ॥

[1463]

संवत् १५५९ वर्षे महा सुदी १० श्रीमालवंशे वहकटा गोत्रे सा० तेजा पुत्र सा० जोगाकेन पुत्रादियुतेन श्रा० अमरसहितेन श्री सुविधिनाथ बिम्बं कारितं प्र० श्री खरतरगछे श्री जिनहंस सूरिभिः ॥ श्रेयसे ॥

[1464]

॥ संवत् १५७७ वर्षे ज्येष्ठ वदी० सोमे श्री अलवर वास्तव्य उपकेश ज्ञातीय वृद्धशाखायां आयत्रिणयगोत्रे चोरवेडिया शाखायां सं० साहणपाल जा० सहलालदे पु० सं० रत्नदास जा० सूरमदे श्रेयोऽर्थं श्री उकेशगछे कुकदाचार्यसन्ताने श्री सुमतिनाथ कारापितं बिम्बं प्रतिष्ठितं श्री सिद्ध सूरिभिः ॥

चौविशी पर।

[1465]

॥ संवत् १५३६ ज्येष्ठ शु० ५ श्रा० ज्ञातीय सं० पूजा जा० कर्मादे पुत्र स० नरजम जा०

नायकदे पुत्र स० खीमाकेन ना० हरषमदे पुत्र परवत सुरताण प्रमुखकुटुम्बयुतेन श्री आदिनाथ चतुर्विंशतिपट्टः कारितः प्र० लक्ष्मीसागर सूरिभिः सीरोही नगरे

धातु के यंत्रों पर।

[1466]

॥ सं० १६०४ वर्षे शाके १४७० प्रवर्त्तमाने आश्विनमासे वदिपक्षे १४ दिने रविवासरे दीपालिकादिने श्री श्रीमालगोत्रीय साह श्री जयपाल सुत साह सोरंगकेन सुखशांति श्री हर्षरत्न सदुपदेशेन श्री पार्श्वनाथ यंत्रं कारापितं प्रतिष्ठितम् शुभं भवतु ॥ श्रीरस्तु ॥ ब ॥

[1467]

॥ संवत् १७०५ वर्षे माघशुक्ल ५ गुरौ श्री गूर्जरदेशीय पाटण वास्तव्य श्री खरतरगच्छीय कावड़ीया गोत्रे सेठ वेलजी पुत्र सेठ हेमचन्द्रेण स्वात्मार्थे श्री सिद्धचक्र नवपदशुद्धकर्म क्षयार्थं करापितं श्री आगरा नगरमध्ये श्रीतपागच्छीय पं० कुशलविजय गणि उपदेशात् ॥ ह्रीँ ॥

[1468]

॥ सं० १७०९ वर्षे आश्विन शुक्ल १० भौमे डूगड़ गोत्रीय सा० कपूरचन्द्र पुत्र सिताव सिंह गृहे तरसन्नित(?) सुखदे नाम्नी स्वात्मार्थे श्री सिद्धचक्रयंत्रं कारितं श्र तपागच्छीय भट्टारक श्री विजयदेव सूरीश्वरराज्ये पं० कुशलविजय गणि उपदेशात् कृतम् ॥ श्रीः ॥

[1469]

सं० १९३१ वर्षे आगरा वास्तव्य लोढ़ा गोत्रे प्रतापसिंहस्य भार्या मूलो श्री नवपद कारितं प्रतिष्ठितं श्री धरणेन्द्रविजय सूरिराज्ये तपा।

卐

श्री सूर्यप्रभस्वामी जी का मंदिर–मोती कटरा

पञ्चतीर्थियों पर ।

[1470]

॥ संवत् १५३३ मार्ग सुदि ६ शुक्रे ओसवाल ज्ञातीय बड़गोत्रे सा० भीमदे भा० रूल्ही पुत्र सा० भोजा भा० जेठी नाम्न्या पुत्र सा० महीपति मेघादि कुटुम्बयुतया स्वश्रेयसे श्री शांतिनाथ बिम्बं का० प्र० श्रीसूरिभिः ॥

[1471]

॥ संवत् १५४६ वर्षे पौष वदी ५ सोमे राजाधिराज श्री श्री श्री नाभिनरेश्वरराज्ञी श्री श्री श्री मरुदेवी तनया पुत्र श्री श्री श्री श्री श्री आदिनाथदेवस्य बिम्बं सुप्रतिष्ठितम् ॥

[1472]

॥ सं १५०७ वर्षे माघ सु० १३ रवौ श्री मंरूपे श्रीमाल ज्ञातीय सं ऊदा भा० हर्षू सा० खीमा भा पूंजी पु० सा० जेगसी भा० माऊ पु० सा० गोल्हा भा० सापा पु० मेघा पु० कार्णा लघुभ्रातृ सं० राजा भार्या सागू पु० सं० जावडेन भा० धनाई जीवादे सुहागदे सत्तादे धनाई पुत्र सं० हीरा भा० रमाई सं० लालादिकुटुम्बयुतेन बिम्बं कारापितं निज श्रेयसे श्री कुन्थुनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं तपागछे श्री सोमसुन्दर सूरिसन्ताने लक्ष्मी सागर सूरिपट्टे श्री सुमतिसाधु सूरिभिः ॥

चौवीसी पर ।

[1473]

॥ सं० १५१३ वर्षे वैशाखमासे ऊकेश ज्ञातीय सं० पेथड भा० प्रथमसिरी पुत्र सं० हेमाकेन भार्या हीमादे द्वितीया लाछि पुत्र देल्हा राणा पासादि कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयोऽर्थं श्री कुन्थुनाथादि चतुर्विंशतिपट्टः कारितः श्री अञ्चलगछेश श्री जयकेशरी सूरिभिः प्रतिष्ठितः ॥ शुभं भवतु ॥ श्रीः ॥

श्री गोड़ीपार्श्वनाथजी का मंदिर — मोती कटरा।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[1474]

॥ सं० १५१३ वर्षे ज्येष्ठ वदी ११ सूराणा गोत्रे सा० धन्ना भा० धानी पुत्र सा० फलहूकेन आत्मपुण्यार्थं श्री पार्श्वनाथ बिम्बं का० प्र० श्री धर्मघोष गच्छे श्री पद्मशेखर सूरि पट्टे श्री पद्माणक सूरिभिः ॥ श्रीः ॥

[1475]

॥ सं० १५२० वर्षे वैशाख शुदी १२ बुधे श्री श्रीमाली ज्ञातीय श्रे० हीरा भा० जीविणि सु० कान्हाकेन भा० पदमाई सु० रत्नायुतेन भ्रातृ हांसा मना निमित्तं श्री अरनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ॥ अहमदाबाद वास्तव्य ॥

[1476]

॥ संवत् १५३६ वर्षे कार्त्तिक शु० १५ गूजर श्रीमाल ज्ञातीय वहरा गोत्रे सं० धन्ना भा० धारलदे यु० सा० माडा पुत्र देवाराजादि श्री शान्तिनाथ बिम्बं कारितम् ॥ प्रतिष्ठितम् ॥ श्री सूरिभिः ॥

[1477]

॥ संवत् १५५४ वर्षे मा० व० २ सीहा वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० अमा भार्या लखमादे पुत्र व्य० माल्हण भा० माल्हणदे सुत नरवद प्रमुखसमस्तकुटुम्बयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्री सुविधिनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं तपापक्षे श्री हेमविमल सूरिभिः ॥

[1478]

॥ ॐ ॥ सं० १५४० वर्षे वैशाखसुदी ५ भृगुवारे अर्गलपुरे ओसवाल वंशोद्भवे ज्ञातौ वैद मोता गोत्रे साह० हंसराज चन्द्रपालस्य कारितं नेमनाथस्य बिम्बं प्रतिष्ठितम् ॥ कमला गच्छे श्री सिद्ध सूरिभिः ॥ उपकेश गच्छे ॥ ॥ श्री ॥ श्रेयम् ॥

चौवीसी पर।

[1479]

॥ संवत् १५०५ वर्षे वैशाख सुदी ६ श्री उपकेश ज्ञातीय आदित्यनाग गोत्रे सा० ठाकुर पु० सा० धणसीह भा० धणश्री पु० सा० साधू भा० मोहणश्री पु० श्रीवंत सोनपाल भिखू एतैः पित्रोः श्रेयसे श्रीअजितनाथ चतुर्विंशतिपट्टः कारापितः। श्री उपकेशगच्छे श्री ककुदाचार्य संताने प्रतिष्ठितः। भट्टारक श्री सिद्ध सूरिः तत्पट्टालंकारहार भट्टारक श्री कक्क सूरिभिः॥ छः॥

[1480]

॥ सं० १५११ वर्षे माघे शुदी ५ गुरू श्री श्रीमाल ज्ञातीय व्यवहीता सुत व्यव० कर्मसीह भार्या कस्मीरदे सुत सायरकेन भार्या मेथू सहितेन पितृमातृआत्मश्रेयसे श्री कुंथु नाथ चतुर्विशतिपट्टः कारितः श्री पूर्णिमापक्षे भट्टारक श्री राजतिलक सूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितम् ॥

श्री वासुपूज्यजी का मंदिर — मोती कटरा।

पञ्चतीर्थी पर।

[1481]

॥ संवत् १४९६ वर्षे वैशाख सु० १२ गुरु डाहखा गोत्रे सं० घेल्हा पुत्र स० दया डीडा पुत्र स० भादा सादा भार्या रू० डीडानिमित्तं श्री सुविधिनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितम् तपागछे भट्टा (रक) श्री पूर्णचंद सूरि पट्टे श्री हेमहंस सूरिभिः॥

चौवीसी पर।

[1482]

॥ ॐ ॥ सं० १५०१ वर्षे ... व० ६ बुधे लोढ़ा गोत्रे सा० हरिचन्दसन्ताने। सा० गोगा पु० सं० गोरा। पुत्र। स० आसपाल तत्पुत्रेण सा० लाखाकेन। भ्रातृ स० वस्तुपाल तेजपाल

पूनपाल। पुत्र सोनपाल पासवीर। सं। हंसवीर भ्रातृ पुत्र। कुमरपाल पर्वतादियुतेन निजमाता मूर्णी पुण्यार्थं श्री संभवनाथ बिम्बं चतुर्विंशति देवपट्टे। का० प्र० तपागच्छे श्री पूर्णचन्द्र सूरि पट्टे श्री हेमहंस सूरिभिः॥

धातु के यन्त्र पर

[1483]

॥ ॐ ॥ स्वस्ति संवत् १४९७ वर्षे माघ सुदी ५ गुरुवासरे श्रीमत् योगिनीपुरे राज्य श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक श्री श्री क्षेमकीर्त्तिदेवानुस्तत्पट्टे भट्टारक श्री हेमकीर्त्तिदेवाँस्तत् शिष्य श्री धर्मचन्द्रदेवान् श्री महेन्द्रकीर्त्तिदेवान् श्री जिनचन्द्र देवान् जिनचन्द्र शिष्यिणी बाई सहजाई एतेन श्री कलिकुण्डयंत्रस्वकर्मक्षयार्थं कारापितं ॥ शुभं भवतु ॥

श्री केशरियानाथजी का मंदिर — मोतीकटरा।

पञ्चतीर्थी पर।

[1484]

संवत् १५७१ वर्षे सुदी ६ शुक्रे ऊकेशवंशे घांघ गोत्रे सा० डीतर भा० लखमाई पुत्र सा० सांगा आसा० सिया हीरा तन्मध्ये सांगाकेन भा० सिंगारदे पु० राजसी रामसी…युतेन श्री शान्तिनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं मलधारि गच्छे श्री गुणसागर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः॥

श्री नेमनाथजी का मंदिर — हींगमंडी।

पञ्चतीर्थियों पर।

[1485]

॥ संवत् १५२५ वर्षे महारणावासी मुडरख गोत्रे श्रीमाल ज्ञातीय सा० भोधू भा० देल्हू पु० मडमथेन भा० माल्ही भ्रातृ हरिगण भा० पूरा पुत्र० सरजन प्रमुखकुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री सुमतिनाथ बिम्बं का० प्र० तपागच्छे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः॥

[1486]

॥ संवत् १९२१ शा० १७८६ प्र० माघ शु० ७ गुरुवारे अञ्चलगच्छे कच्छ देशे कोठारा वास्तव्य ऊसवाल शा० गांधी मोहता गोत्र श्री केशवजी नायकेन श्री सिद्धक्षेत्रे श्री नेमिनाथ जिन बिम्बं कारापितं प्र० भ० श्रीरत्नशेखर सूरिभिः ॥

श्री शान्तिनाथजी का मंदिर — नमकमंडी ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[1487]

॥ सं० १४०५ वर्षे फा० सु ए शुक्रे श्री ज्ञानकीय गच्छे ऊसभ गोत्रे ऊ० ज्ञातीय सा० शिवा भा० कांऊं पुत्र केल्हा भा० कील्हणदे सन्ततिवृद्ध्यर्थं पितृमातृनिमित्तं श्री कुंथुनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं। श्री शान्ति सूरिभिः ॥ शुभं भवतु ॥

[1488]

॥ संवत् १४२५ माघ वदि ७ सोमे श्री संडेरगच्छे श्री ऊपकेशज्ञाति सा० महीपाल भा० मल्हणदे पु० वैला भा० सहजादे पु० सरवणनैक (?) भ्रातृ कसामलस्य श्रेयसे श्री आदि नाथ पञ्चतीर्थी कारिता। प्र० श्री ईश्वर सूरिभिः ॥

[1489]

॥ सं० १४५३ ... शु० ३ शनौ श्रीमाल माथलपुरा गोत्रे सा० केला पुत्रेण सा० तोलाकेन नरपाल श्री पालेत्यादि पुत्रयुतेन श्री धर्मनाथ बिम्बं कारितं प्र० तपागच्छे श्री पूर्णचन्द्र सूरिपट्टे श्री हेमहंस सूरिभिः

[1490]

॥ सं० १४५७ वर्षे वै० शु० ३ शनौ ऊपकेश गच्छे धेधड भा० केली प्रा० भूपणा भा० णेमी पु० सीगकेन (?) पितृमातृ श्रेयसे श्री आदिनाथ बि० का० प्र० श्री श्रीमाले श्री रामदेव सूरिभिः ॥

[1491]

॥ सं० १४०५ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ उसवाल खांटड गोत्रे सा० जाहजू जा० अहवदे पु० पूना पितृश्रेयसे श्री संजवनाथ बिम्बं का० प्र० श्री धर्मघोष गछ श्री मलयचन्द्र सूरि पट्टे श्री पद्मशेखर सूरिजिः ॥

[1492]

॥ सं० १५०३ मार्ग सुदि ५ उ० ज्ञा० उडितवाल गोत्र सा० मेघा पुत्र सा० खेताकेन जा० हर्षमदे सह पूर्वपुरषमेलानिमित्तं शान्तिनाथ बिम्बं का० प्र० श्री धर्मघोषगछे श्री महीतिलक सूरिजिः ॥

[1493]

॥ सं० १५०ए वर्षे उएश वंशे सा० पेथड़ जा० षीथाही पु० खेला सरवण साजण कै श्री अंचलगछेश श्री जयकेशरी सूरि उपदेशेन श्री विमलनाथ बिम्बं स्वश्रेयसे कारितं प्र०॥

[1494]

॥ सं० १५०ए वर्षे वैशाख सुदि ७ रवौ उपकेश सुचिन्ति गोत्रे सा० नरपति पु० सा० साल्हा पु० फमण जा० केल्हाही पु० सुधारण जा० संसारदे युतेन पित्रोः श्रेयसे श्री आदि नाथ बिम्बं कारापितं उपकेश० ककुदाचार्य प्र० श्री कक्क सूरिजिः ॥

[1495]

॥ सं० १५२४ वर्षे मागसिर वदि ५ सोमे उपकेश ज्ञातीय महं केल्हा जार्या कील्हण पुत्र सुरजणकेन जा० राणी सहितेन श्री कुन्थुनाथ बिम्बं का० प्रतिष्ठितं श्री ब्रह्माणीयगछे ज० श्री उदयप्रज सूरिजिः ॥ श्रीः ॥

[1496]

॥ संवत् १५५४ वर्षे माह वदि २ गुरौ प्राग्वाट ज्ञातीय शृङ्गारसंघवी सिद्धराज सुश्राव केन जार्या रणकू पुत्र सा० कूपा जार्या रम्मदे मुख्यकुटुम्बसहितेन श्री सुपार्श्वनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः ॥

२९

श्री दादावाडी – साहगंज ।

श्री महावीरस्वामी के वेदी पर ।

[1497]

संवत् १९७५ मिति वैशाख सुदि ३ सोमवारे डुलीचन्द के पुत्र प्यारेलाल चोरडिया की बहूने वेदी बनाई ॥

चरणों पर ।

[1498]

॥ सं० १९४४ मिति आषाढ़ सुदि १० श्री गौतमस्वामीजी प्रतिष्ठितं । पं० संवेगी श्री रणधीर विजय कारापितं ।

[1499]

श्री अर्गलपुरे साहगञ्जे प्रथम प्रतिष्ठा संवत् १७७९ मिति ज्येष्ठ सुदि १५ खरतरगच्छे श्री १०८ श्री जिनकुशल सूरिजी के पादुके संवत् १९६४ मिति जेठ सुदी २ गुरुवार प्रतिष्ठा समय विद्यमान श्री तपागच्छ उपाध्याय श्री वीरविजयजी ॥

[1500]

॥ सकल भट्टारक पुरन्दर भट्टारक श्री १०८ श्री हीरविजय सूरीश्वरकस्य चरण प्रतिष्ठापितं तपागच्छे ।

[1501]

॥ संवत् १९६४ वर्षे ज्येष्ठ शुक्ल २ दिने गुरुवारे श्री आगरा नगरे सकलसंघेन श्री लौंकागच्छे श्रीमद् आचार्य खेमकरणस्य पादुका श्री तपागच्छीय श्रीमद् वीरविजयेन प्रतिष्ठा कारिता ॥

लखनउ।

श्री शान्तिनाथजी का मंदिर – बोहरन टोला।

पंचतीर्थियों पर।

[1502]

सं० १३७६ वर्षे वैशाष सु० १३ सा० करमण भा० ... लसिरि पु० गोसाकेन मातृपितृ श्रेयोर्थं श्री बिंबं का० प्र० च धर्म्मप्रभ सूरि ...।

[1503]

संवत् १४७२ वर्षे फा० सु० ३ ऊकेस वंशीय सा० जेसिंग सुत सामल भार्या सह- जलदे सुत सा० जसा भा० जासलदे भ्रातृ देधर भार्या श्रा० संगाई स्वश्रेयोर्थं श्री अजित नाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गछे श्री जिनभद्र सूरिभिः॥

[1504]

सं० १५१२ वर्षे वैशाष वदि ११ शुक्रे श्रीमाली ज्ञातीय मं० अर्ज्जुन भा० स्वसु पु० टोइ आमाइ .... हदाकेन भा० लखी सहितेन निजश्रेयसे श्री अजितनाथ बिंबं का० ऊकेशगछे श्री सिद्धाचार्य संताने श्री कक्क सूरिभिः प्रतिष्ठितमिति।

[1505]

संवत् १५१७ वर्षे वैशाष सुदि ३ सोमे श्री श्रीमाल ज्ञाती श्रे० ठाकुरसी सुत श्रे० घंगाकेन भार्या होमी सु० धना वना मिला राजी युतेन श्री शीतलनाथादि पंचतीर्थी आगमगछे श्री हेमरत्न सूरीणामुपदेशात् कारिता प्रतिष्ठिता च माडलि वास्तव्य।

[1506]

सं० १५२७ वर्षे माघ वदि ७ रवौ उप० ज्ञा० मं० कूपा भा० सोषल पुत्र रूपा भार्या रतू सुत जिंदा जुणा मिला आत्मश्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री

जिरायपल्लीय गच्छे भट्टारक श्री सालिभद्र सूरि पट्टे श्री भ० श्री उदयचंद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्री ॥ ७४ ॥

[1507]

संवत् १५८६ वर्षे वैशाष सुदि ६ सोमे सा० भचू भार्या सवीराई। पुत्र अका श्री विजयदान सूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

[1508]

संवत् १६१६ वर्षे वैशाष शुदि १० रवौ श्रीमाली ज्ञातीय सा० सता श्रेयोर्थं श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री विजयदान सूरिभिः ।

[1509]

सं० १६१६ वर्षे वै० शु० १० रवौ श्रे० ककुश्रेयोर्थं श्री संभवनाथ बिंबं कारितं तपा गच्छें प्रतिष्ठितं श्री विजयदान सूरिभिः ।

[1510]

संवत् १६८७ व० फागुण सुदि ८ .... ।

मूर्त्तियों पर ।

[1511]

॥ सं १८२४ मा० शु० १३ गुरौ श्री महावीर जिन बिंबं कारितं च उस वंशे गजेड़ गोत्रे । लाला जीवनदास पुत्रेण दुर्गाप्रसादेन कारितं भट्टारक श्री शांतिसागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं विजयगच्छे ।

[1512]

॥ सं० १८२४ मा० शु० १३ सुमतिजिन बिंबं का० उस वंशे वैद मुहता बालचंद तद्भार्या महतावो बीबी प्र । विजयगच्छे श्री शांतिसागर सूरिभिः श्रेयोर्थं ।

[1513]

सं० १९२४ मा० शु० १३ गुरौ मुनिसुव्रत जिन बिंबं कारितं ऊस वंशे बाजेड़ गोत्रे लाला हरप्रसाद तत् पुत्र जीवनदास भार्या नन्ही बीबी श्रेयोर्थं भ० श्री शांतिसागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं विजय गच्छे ।

[1514]

सं० १९२४ मा० शु० १३ गुरौ सुमतिनाथ जिन बिंबं वैद मुहता गोत्रे लाला धर्मचंद्र पुत्र शिवरचंद तद् भा० सांदन बीबी श्रेयोर्थं । भ० श्री पूज्य श्री शांतिसागर सूरिभिः प्रति० विजय गच्छे

[1515]

॥ सं० १९२४ मा० शु० १३ महावीर जिन । वैद धर्मचंदजी विजय गच्छे भ० शांति-सागर सूरिभिः ।

[1516]

सं० १९२४ मा० शु० १३ श्री सुमति जिन बिंबं का० ऊस वंशे मालकस गोत्रीय धर्म चंद तत् पुत्री मंगल बीबी प्र० । विजयगच्छे भ० । श्री शांतिसागर सूरिभिः श्रेयोर्थे प्रतिष्ठितं हीरा बीबी ।

[1517]

सं० १९२४ मा० शु० १३ संभव जिन । मालकस गो० धर्मचंद्र तत् पुत्र हीरा बीबी । प्र० । शांतिसागर सूरिभिः विजयगच्छे ।

[1518]

सं० १९२४ मा० शु० १३ गुरौ श्री धर्मनाथ बिंबं का० ऊस वंशे सुचिंति गोत्रे ला० नोवतराय पु० रेवा प्रसादेन कारितं प्र० विजयगच्छे शांतिसागर सूरिभिः ।

[1519]

सं १८९२ माघ सुदि १० बुधवारे राजनगरे ऊंसवाल ज्ञाति वृद्ध शा० सा० नीचंद रूपा श्रेयोर्थ शांतिनाथ बिंबं करावी प्रतिष्ठाया प्रतिष्ठितं तपागछे ।

[1520]

शाहजहां विजय राज्ये । श्री विक्रमार्क समयातीत संवत् १६७१ वर्षे शाके १५३६ प्रवर्त्तमाने आगरा वास्तव्य ऊंसवाल ज्ञातीय लोढा गोत्रे अग्राणी वंशे सं० शाषनदास तत्पुत्र सं० श्री कुंरपाल सोनपाल संघाधिराज्यां श्री अनंतनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं श्रीमदंचल गछे पूज्य श्री ५० श्री धर्म्ममूर्त्ति सूरि पदाम्बुज हंस श्री श्री कल्याणसागर सूरीणा मुदेशेन ।

श्याम पाषाणके मूर्त्तियों पर

[1521]

॥ सं० १८७९ फा० सु० ९ शनौ ऊंश वंशे लोढा गोत्रे हरषचंद्रस्य ... श्री सुपार्श्व बिंबं ... ।

[1522]

॥ सं० १८७९ फा० सु० ९ शनौ ऊंस वंशे मयाचंदजी तत्पुत्र धनसुख ... ।

[1523]

सं० १८७९ फा० सु० ९ शनौ श्रीमाल षाड़ड़ मन्नुलाल ... ।

[1524]

॥ सं १८७९ फा० सु० ९ शनौ चोरडिया गोत्रे दयाचंद .... ।

श्वेत पाषाणके चरणों पर ।

[1525]

सं १८६२ मि० माघ सु० ५ दिने श्री अतीत चौविसी भगवान जी की ऊंसवाल वंशे

नाहटा गोत्रे राजा बच्छराज बाबू विशेश्वरदास बाबू भैरुनाथ बाबू बैजनाथ बाबू जगन्नाथ बाबू लछमणदास ने चरण कराया बृहत्खरतर गच्छे भट्टारक श्री जिनहर्ष सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्रेयोर्थं शासन देवो अस्य मंदिरस्य रक्षां कुर्वंतु ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री लखनउ नगरमध्ये नबाब साहब सहादतअलि विजय राज्ये।

[1526]

सं० १८६४ मि० वै० सु० ३ दिने वर्त्तमान चौविशी २४ भगवान जी के ओसवाल वंशे कांकरिया गोत्रे खुस्यालराय। बखतावरसिंह। गोकलचंद। माणकचंद। स्वरुपचंद। रतनचंद। ताराचंद। सपरिवारेण चरण बनवाया श्री बृहत्खरतर गच्छे भट्टारक श्री जिनहर्ष सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्री लखनउ नगरे।

[1527]

सं० १८६४ मि० वै० सु० ३ दिने अनागतचोविसी ओसवाल वंशे नाहटा गोत्रे राजा बच्छराज तत्पुत्र बाबू जगन्नाथस्य भार्या स्वरुपनें इदं चरणं कारापितं श्रेयोर्थं श्री बृहत्खरतर गच्छे भट्टारक श्री जिनहर्ष सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्री लखनउ नगरे।

[1528]

सं० १८६४ मि० वै० सु० ३ दिने २० विहरमान ४ शास्वतानि भगवानजी के ओसवाल वंशे कांकरिया गोत्रे जेठमल गुजरमल बहादुरसिंह स्वरुपचंद सपरिवारेण चरण बनवाया श्री बृहत्खरतर गच्छे भ० श्री जिनहर्ष सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्री लखनउ नगरे।

सहस्त्रकूट पर।

[1529]

॥ सं० १९१० वर्षे शाके १७७५ प्रवर्त्तमाने माघ शुक्ल २ तिथौ सोमवासरे सहस्त्रकूट बिंबानि प्रतिष्ठितानि बृहत्खरतर भट्टारक गच्छे श्री जिनहर्ष सूरीणां पट्टप्रभाकर भट्टारक श्री जिनमहेंद्र सूरिभिः सपरिकरैः कारितं श्री लक्ष्मणपुर वास्तव्य प्रह्लादत गो०। श्री जेठमल तत्पुत्र कालकादास तत्पुत्र बलदेवदासेन श्रेयोर्थमानंदपुरे

[1530]

॥ १९१० वर्षे शाके १७७५ प्रवर्त्तमाने माघशुक्ल २ तिथौ सोमवासरे सहस्त्रकूट बिंबानि प्रतिष्ठितानि बृहत्खरतर भट्टारक गच्छे श्री जिनहर्ष सूरीणां पट्टप्रभाकर भट्टारक श्री जिन महेंद्र सूरिभिः सपरिकरैः कारितं श्री लक्ष्मणपुर वास्तव्य चो० । गो० । श्री हंसराज तद्भार्या सोना बिबि तया श्रेयोर्थमानंदपुरे ॥ पं० । प्र० । कनकविजय मुण्युपदेशात् ।

[1531]

॥ सं १९१० वर्षे शाके १७७५ प्रवर्त्तमाने माघ शुक्ल २ तिथौ सोमवासरे सहस्त्रकूट बिंबानि प्रतिष्ठितानि बृहत्खरतर भट्टारक गच्छे श्री जिनहर्ष सूरीणां पट्टप्रभाकर भट्टारक श्री जिनमहेंद्र सूरिभिः सपरिकरैः कारितं श्री लक्ष्मणपुर वास्तव्य ओ० । गो० । सा० उमेदचंद तत्पुत्र हरप्रसाद रामप्रसाद तत्पुत्र जीवनदास धनपतराय तत्पुत्र दुर्गाप्रसादेन सपरिकरैः श्रेयोर्थमानंदपुरे ।

[1532]

॥ सं० १९१० शाके १७७५ प्रवर्त्तमाने माघ शुक्ल २ तिथौ सोमवासरे सहस्त्रकूट बिंबानि प्रतिष्ठितानि बृहत्खरतर भट्टारक गच्छे श्री जिनहर्ष सूरीणां पट्टप्रभाकर भट्टारक श्री जिनमहेंद्र सूरिभिः सपरिकरैः कारितं श्री लखनउ समस्त श्री संघेन श्रेयोर्थमानंदपुरे ।

[1533]

संवत् १९१३ शाके १७७८ तिथौ माघ शुक्ल पंचम्यां परमार्हत श्रीमत् शांति जिन मोक्ष कल्याणक पादुका लक्ष्मणपुर वास्तव्य समस्त श्री संघेन कारितं प्र० च बृहत्खरतर गच्छीय भं । यु । प्र । श्री जिनचंद्र सूरि पट्टजभृत् श्री जिन जयशेखर सूरिभिः ।

श्वेतपाषाण के पंचमुष्टिलोच के भाव पर ।

[1534]

संवत १९१३ शाके १७७८ तिथौ माघ शुक्ल पंचम्यां .... दीक्षा कल्याणक पादुका .... ओस वंशे महता गोत्रे .... ।

श्री ऋषभदेवजी का मंदिर – चोहटनटोला ।

शिलालेख । *

[1535]

॥ ए० ॥ ॐ नमः सिद्धं । संवत् १९२४ माघ शुक्ल १३ गुरौ ॥ श्लोकाः ॥ विजयगच्छाधिपो सूरि । विहरन् सन् महीतलं ॥ शांति सूरीति नामेन । संप्राप्तो लक्षणपुरे ॥ १ ॥ भगवान् देशनारब्धा । जिनभक्तिसमुच्छिका ॥ कादंबनीव संजाता । भव्यानां बोधहेतवे ॥ २ ॥ तदा तस्योपदेशेन । श्री संघो भक्तिवत्सल ॥ कारयनिस्म जिनं चैत्यं । ऋषभस्वामिमंदिरं ॥ ३ ॥ सूरिस्तु विचरन् भूम्यां । स्वशिष्यं स्थापितं मुदा ॥ धर्मचंद्राभिधानं च । संस्थिति धर्महेतवे ॥ ४ ॥ तत्रैव धर्मं दिसैतिस्म । शिष्यान् पाठयति सदा ॥ स्वशिष्यं गुणचंद्राह्वं । गुरुभक्तिपरायणं ॥ ५ ॥ मंदिरोपरि भूम्यां च । त्रिद्वारं भमरिकायुतं ॥ मंदिरं कारयेत् संघः । जातः सधर्मवत्सलः ॥ ६ ॥ माघमासे शुक्लपक्षे । त्रयोदश्यां गुरौ दिने ॥ भट्टारक शांति सूरिः । प्रतिष्ठां चक्रिरे मुदा ॥ ७ ॥ तस्मिन् जिनमंदिरे । श्री चतुर्मुख बिंबानां चतुर्णां मध्ये । श्रीआदिजिनस्य बिंबं । ओसवंशे बरड्या गोत्रे लाला छोटेलाल पुत्रेण स्वरूप-चंद्रेण कारितं । तथा द्वितीयं श्री वासुपूज्य जिनबिंबं । फूलबाणा गोत्री लाला सीलागाम तद्भार्या भांडिया गोत्री तया कारितं । तृतीयं श्री शांतिनाथ जिनबिंबं । श्री शांतिसागर सूरि शिष्येण । ऋषिणा धर्मचंद्रेण कारितं । चतुर्थं श्री महावीर स्वामि जिनबिंबं । सुचिंती गोत्रे । लाला षेरातीमल्ल पुत्रेण गोविंदरायेण रूपचंद्र पुत्र सहितेन कारितं । श्री विजयगच्छाधीश्वर सार्वभौम जंगमयुगप्रधान भट्टारक श्री जिनचंद्रसागर सूरि पट्टप्रभालंकार श्री पूज्य श्री शांतिसागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं । ऋषिणा चतुर्भुजनाथ । गोकुलचंद्रेण संयुता ॥ इयं कृति लिषिताभ्यां । गुरुभक्तिपरायणौ ॥ १ ॥ श्रीरस्तुः ॥ श्रीः ॥ पद्मावती लब्धवर प्रसादात् । यो मेदपाटाधिपतिं स्वरूपं । राणापदे संस्थित शत्रु सिंह रोगात् प्रमुच्येत स शांति सूरिः ॥ २ ॥

---

* इस लेखके अन्तमें चार यंत्र हैं; दाहिने २० का और बांये १६ का है, उनके निचे दाहिने ६ खाने का और बांये ११ खाने का यंत्र है, इनके जोड़ मिलते नहीं हैं।

१०	२	८
४	७	९
६	११	३

७	२	१०
९	६	४
३	११	५

३१	३०	३५	२२	२१	२६	६७	६६	७१
३६	३२	२९	२७	२३	१९	७२	६९	६४
२९	३४	३३	२०	२५	२४	६५	७०	६९
७६	८५	८०	४०	३९	४४	४३	३	८
८२	७७	७३	४५	४१	३७	९	५	१
७४	७९	७८	३८	४३	४२	२	७	६
१३	१२	१७	५८	५७	६२	४९	४८	५२
१८	१४	१०	६३	५९	५५	५४	५०	४६
११	१६	१५	५६	६१	६०	४७	५२	५१

६६	५३	४०	२७	१४	१	१२०	१०७	९४	८१	६०
६७	६५	५२	३९	२६	१३	११	११९	१०६	९३	८०
७९	७७	६४	५१	३८	२५	१२	१०	११८	१०५	९०
९१	७८	७६	६३	५०	३७	२४	२२	९	११७	१०४
१०३	९०	८८	७५	६२	४९	३६	२३	२१	८	११६
११५	१०२	८९	८७	७४	६१	४८	३५	३३	२०	७
६	११४	१०१	९९	८६	७३	६०	४७	३४	३२	१९
१८	५	११३	१००	९८	८५	७२	५९	४६	४४	३१
३०	१७	४	११२	११०	९७	८४	७१	५८	४५	४३
४२	२९	१६	३	१११	१०९	९६	८३	७०	५७	५५
५४	४१	२८	१५	२	१२१	१०८	९५	८२	६९	५६

धातु की मूर्त्ति पर।

[1536]

सं०। १५७३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ साधु साखायां नेवड़िया वंशे सा० वत्सा पुत्र सा० लखमसी पुत्र सा० वर्धमान सा० रीडा श्री पार्श्वनाथ प्रतिष्ठा कृता श्री साधु वचनात्।

पंचतीर्थियों पर।

[1537]

सं० १५०७ वर्षे मार्गशिर वदि २ बुधे सामलिया गोत्रे सा० चोला पु० सा० काकल

भ्रातृ उसीह ... भिः पितुः पु० श्री आदिनाथ बिंबं का० प्र० बृहद्गच्छे श्री महेंद्र सूरिभिः ॥ श्री शुभं ॥

[1538]

सं० १५११ वर्षे माघ वदि ५ उसवाल ज्ञाती जाइलवाल गोत्रे भोजा पुत्र धडिया पु० मोहण पुत्र षेताकेन स्वभार्या श्रेयोर्थं श्री शांतिनाथ बिंबं श्री धर्मघोष गच्छे भ० श्री महीतिलक सूरिभिः ॥

चौवीशी पर।

[1539]

सं० १५१० माघ शुदि ५ दिने पत्तन वासी श्रीमाली श्रे० ठाकरसी भा० धारी सुत श्रे० गोधा साका भाणा भगिन्या श्रे० नरसिंग भार्या वैरामति नाम्न्या श्री वासुपूज्य चतुर्विंशति पट्टः का० प्र० श्री सोमसुंदर सूरि पट्टे श्री रत्नशेखर सूरिभिः ॥ श्री श्री तपगच्छे ॥

[1540]

सं०। १६१६ वर्षे शाके १४०२ प्रवर्त्तमाने वैशाख सुदि १० दिने रवौ अहमदावाद वास्तव्य उकेस वंशीय सा० आंबा० भा० अमरा तत्पुत्र सा० गकर भा० संपू तत्पुत्र सा० मेलाख्येन भा० मेलादे पुत्र पुत्री परिवारयुतेन आत्मश्रेयोर्थं श्री अजितनाथ बिंबं कारितं तपागच्छे भट्टारक श्री आनंदविमल सूरि तत्पट्टे विजयदान सूरिभिः प्रतिष्ठितं।

पाषाण के चरण पर।

[1541]

सं० १९२४। भूरा वंशे पहलावत गोत्रे लालु तत् पुत्र किसनचंद कारितं।

श्री महावीर स्वामीजी का मंदिर – बोहरनटोला।

मूलनायकजी पर।

[1542]

॥ सं० १९ ... श्री वर्द्धमान जिन बिंबं ऊसवंशे बहुरा गोत्रे लाला कीर्त्तिचंद तद्भार्या थुलीया बिबि तयो पुत्र मोतीचंदेन कारितं बृहत् विजय गच्छे भ० श्री सार्वभौम श्री पूज्य श्री जिनचंद्रसागर सूरि पट्टप्रभाकर जं। यु। प्र। शांतिसागर सूरिभिः।

मूर्त्ति पर।

[1543]

सं० १९ ... श्री पार्श्वजिन बिंबं ऊसवंशे बड़ड़िया गोत्रे लाला दयाचंद तत्पुत्र छोट-मल्लेन तत्पुत्र सरुपचंदेन सहितैः कारितं प्र० विजय गच्छे ...... सूरिभिः।

पंचतीर्थी पर।

[1544]

सं० १५१८ वर्षे माघ वदी ८ रवौ सं० फाला भा० लखी सा० हर्षा भा० वारू सा० राजा भा० माजी सं० वसा भा० वाल्ही सं० जोगा श्री शांतिनाथ बिंबं तपा श्री हेमविमल सूरि। चंकिनी ग्रामे।

श्री पद्मप्रभ स्वामीजी का मंदिर – चूडिवाली गली।

पंचतीर्थियों पर।

[1545]

सं०। १३९९ भ० श्री जिनचंद्र सूरि शिष्यैः श्री जिनकुशल सूरिभिः श्री पार्श्वनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं कारितं च सा० केसव पुत्र रत्न सा० जेहड सुश्रावकेन पुण्यार्थं।

[1546]

सं० १४९१ वर्षे माह शुदि ५ बुधदिने गादहिया गोत्रे सा० सिवराज सुत सा० सहजाकेन माता पदमाईनिमित्तं श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं श्री उपकेस गछे प्र० श्री सिद्ध सूरिभिः ।

[1547]

सं० १५०३ वर्षे ज्येष्ठ शुक्र ११ ओसवाल ज्ञातीय अजमेरा गोत्रे सा० सुरजन भा० सहजलदे पु० सा० सहजाकेन आत्मपुण्यार्थं श्री आदिनाथ बिं० का० प्रतिष्ठितं श्री धर्मघोष गछे भ० श्री विजयचंद्र सूरिभिः ।

[1548]

सं १५०८ वर्षे वैशाष वदि ४ शनौ श्री संडेर गछे पद्मनेवी गोष्टीगानान्वये सा० कुरपाल पु० धांधा भा० वारू पु० जुणाकेन भा० कोआ पुत्र स्वश्रेयसे श्री शितलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री शांति सूरिभिः ।

[1549]

सं० १५१० वर्षे वै० व० ५ प्रा० सा० ... भा० राजू पुत्र सा० सरमाकेन भा० चांपू पुत्रेन स्वश्रेयसे श्री सुविधि बिंबं का० प्र० तपा श्री रत्नशेषर सूरिभिः ॥ श्री ॥

[1550]

॥ सं० १५११ वर्षे माघ सुदि ५ गुरौ श्री उकेस वंशे दोसी गोत्रे मं० डूडा पु० सा० नरचंद्र भा० सीतू तत्पुत्रेण सा० धाराकेन भार्या मणकाई पुत्र उदयसिंहयुतेन श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री खरतर गछे श्री जिनचंद्र सूरिभिः

[1551]

सं० १५१६ वैशाख वदि ११ शुक्रे श्री श्रीमाल ज्ञातीय पितृ मांडण मातृयुक्तं श्रेयोर्थं सुत सांगाकेन श्री संभवनाथ बिंबं कारितं श्री ब्रह्माण गछे श्री मुनिचंद्र सूरि पट्टे प्रतिष्ठितं श्री वीर सूरिभिः गुंडलि वास्तव्यः ॥

[1552]

सं० १५१६ वर्षे वैशाख सु० ५ श्री ज्ञानकीय गच्छे उप० किलासीया गोत्रे श्रे० रेखण भा० माल्हणदे पुत्र कर्मा भा० कर्मादे पु० घडसीसहितेन कर्मा पद्मा ह्यान्यां आत्म-पुण्यार्थं श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सिद्धसेन सूरि पट्टे श्री धनेश्वर सूरिभिः ॥ श्री ॥

[1553]

॥ संवत् १६१७ वर्षे माघ वदि १ गुरौ मं० आना भार्या अरलादे पु० मं० नींबाकेन भ्रातृ मं० कान्हाई सा० वस्था आजीवा भार्या जइवंत तत् पुत्र मं० कर्मसी राजसी ने तया कुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्री कुंथुनाथ बिंबं का० प्र० श्री तपागच्छे श्री दानविजय सूरिभिः श्री हीरविजय सूरि प्रमुखैः परिवारपरिवृतैः ॥

[1554]

सं० १५२७ वर्षे आषाढ़ शुदि ३ शुक्रे ऊसवाल ज्ञा० सा० लेषा भा० लषमादे पु० सा० राउलकेन भा० रत्नादे पु० सा० कोल्हा भा० शाल्हणदे पु० सा० गांगा सकुटुंबयुतेन स्वपुण्य र्थं श्री कुंथुनाथ बिंबं का० प्र० संडेरक गच्छे श्री शांति सूरिभिः ॥

[1555]

सं० १५३६ वर्षे वै० ए चंडे ... भाईलेवा गोत्रे सा० पानल भा० वाचा पु० बीका भा० मदना नाम्नी पु० राजू स्वपितृ श्रे० श्री चंद्रप्रभ बिंबं कारितं प्र० श्री पल्लीवाल गच्छे श्री नन्न सूरि पट्टे भ० उद्योतन सूरिभिः ।

[1556]

संवत् १५६४ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ५ शुक्रे काकरेचा गो० पूर्वं सा० ढोटा पु० चुंडा पु० षेता भा० भाउ तत्पुत्र कान्हा भा० कस्मीरदे सकुटुंबेन श्रे० पि० श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ बिंबं का० प्र० श्री यशोभद्र सूरि संताने श्री शांति सूरिभिः ॥ श्री ॥

[1557]

सं० १९३३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि पूर्णिमा तिथौ गुरुवारे मूलनायक श्री पार्श्वनाथ जिनं पंचतीर्थी जिनैः प्रतिष्ठितं श्री वृहत् परम भट्टारक श्री जिनसुख सूरि वराणां उपाध्याय श्री केशराम गणिभिः ॥ श्रीरस्तु ॥ कारितं चैतत् गणधर चौपड़ा गोत्रे शाह श्री लाल चंदजी पुत्ररत्न श्री कपूरचंदजीकेन स्वपुन्यविवृद्ध्यर्थं ॥ शुभं भवतु ॥ श्री आदि जिन बिंबं ॥ श्री नेमिनाथ जिन बिंबं ॥ श्री शांति जिन बिंबं ॥ श्री महावीरस्वामी बिंबं ॥

श्री पार्श्वनाथजी की प्रतिमा पर

[1558]

संवत् १९२५ शाके १५०१ वैशाख सुदि ५ आदित्यवारे ....।

श्री आदिनाथजी का मंदिर — चुड़ीवाली गली।

मूर्त्ति पर।

[1559]

सं० १९२४ माघ सुदी ३ चंद्रप्रभ बिंबं कारितं। मालकोस गो० परमसुख करमचंद प्रति०। विजय गच्छे भ०। श्री शांतिसागर सूरिभिः ॥

पंचतीर्थियों पर।

[1560]

॥ सं० १५२४ वर्षे मार्ग सु० दसमी ऊकेस चउथ गोत्रे शा। षेढा भा०। देउ सुत म। षिमा। भा० धनी लाषाकेन भा० अमरी पुत्र नाथू प्रमुखकुटुंबयुतेन निजपितृव्य श्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं। प्र०। तपा श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः श्रीरस्तुः ॥

[1561]

सं० १५३३ वर्षे माघ शु० ५ बुधे प्राग०। ज्ञा०। श्रे० कडुआ भा० वानू सु० मूगा राला शागा लवरद भा० जीविणी विरु मानू सु० घावर तेजा सहिजादि कुटुंबयुतेन पितृमातृ

श्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं का०। प्र०। श्री पार्श्वचंद्र सूरिभिः ॥

वीसस्थानक यंत्र पर ।

[1562]

सं० १८६१ वर्षे आश्विन शु० १५। गुरौ श्री सिद्धचक्रराज यंत्र प्रतिष्ठापितं श्री श्रीमाल पटणीय बहादुरसिंहजी तत्पुत्र लाला बखतावरसिंहजी श्रेयोर्थं तपागच्छीय जं। यु। प्र। भ। श्री १०८ श्री श्री विजयजिनेंद्र सूरिभिः विजयराज्ये वाणारस्यां।

श्री महावीर स्वामीजी का मंदिर - सुंधि टोला।

पंचतीर्थियों पर।

[1563]

सं० १४३९ वर्षे पोष वदि ९ ....।

[1564]

॥ सं० १४८२ वर्षे चैत्र वदि ५ शुक्रौ श्रीमाली ज्ञातीय फोफलिया नरसिंघ भा० नामलदे सुत बाछा पितामह पितृश्रेयसे माता वईजलदे युतेन सुतेन योगाकेन श्री नमिनाथ मुख्य पंचतीर्थी का० पूर्णिमा पक्षे भीमपल्ली श्री पासचंद्र सूरि पट्टे श्री जयचंद्र सूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं ॥ श्रीः ॥

[1565]

॥ सं० १५०१ वर्षे ज्येष्ठ वदि ९ रवौ श्री श्रीमालज्ञातीय श्रे० सरवण भा० वारू पु० श्रे० गोवल भा० झूसी पु० सहसाकेन स्वपितृमातृश्रेयसे श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं पूर्णिमापक्षे श्री गुणसमुद्र सूरीणामुपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं च विधिना ॥ ८॥ महिसाणा स्थाने ॥ श्री ॥

[1566]

सं० १५०५ वर्षे माघ सुदि १० रवौ श्री श्रीमाल० सं० सामल जा० लाखणदे सुत देवा जा० मेघू नाम्न्या देल्हा कुटुंबसहितया अंचल गछे श्री जयकेशर सूरीणामुपदेशेन स्वश्रेयोर्थं श्री विमलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसंघेन ॥

[1567]

सं० १५१ए वर्षे वैशाख वदि ११ शुक्रे श्री श्रीमाल ज्ञातीय सा० जांटा जा० जासू सुत सा० सामंत जार्या काईसु छदाकेन भ्रातृ वहा पाशवीर प्रभृतिकुटुंबयुतेन मातृपितृ श्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं पूर्णिमा । श्री पुण्यरत्न सूरीणामुपदेशेन का० प्र० विधिना ।

[1568]

सं० १५२३ वर्षे माघ सुदि ६ रवौ उपकेश ज्ञातीय सा० जेमा जार्या पोईणी सुत राजाकेन जार्या राजलदे भ्रातृ मोयंद जा० मारू प्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्री श्री श्री सुमति बिंबं का० प्र० कनकरत्न सूरिजिः ।

[1569]

सं० १५२४ वै० सु० १० प्राग्वाट सा० धन्ना जा० रांनू सुत सं० वेचा जा० जीविणी सुत सं० समधर संग्रामाज्यां स्वश्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं । तपागछे श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः । जीर्णधारा वासिनः ॥ श्रीरस्तु ॥

[1570]

सं० १५२५ वर्षे माघ वदि ६ प्राग्वाट व्य० देवसी जार्या देल्हणदे पुत्र विंजाकेन जा० वीझलदे पुत्र सांडादिकुटुंबयुतेन श्री सम्जवनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा श्री रत्नशेखर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः । श्री जेवग्रामे ॥

[1571]

सं० १५२७ वर्षे वैशाख वदि ६ सोमदिने । उपकेश ज्ञातौ बलही गोत्रे रांका सा० गोयंद पु० साल्हिग जा० वाल्हदे पु० दोल्हू नाम्ना जा० ललतादे पुत्रादियुतेन पित्रोः

पुण्यार्थं स्वश्रेयसे च श्री नमिनाथ बिंबं का० प्र० उपकेश गच्छीय श्री ककुदा० सं० श्री देवगुप्त सूरिभिः ।

[1572]

सं० १५२९ वर्षे वैशाष सुदि ३ प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० नरसिंग भा० संपूू सुत वकूआ-केन भार्या रही प्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्री विमलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छनायक श्री रत्नशेषर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः । मूंडहटा वास्तव्यः ॥

[1573]

सं० १५५४ वर्षे पोष सुदि १५ सोमे उपकेश ज्ञातीय सं० मेहा भा० सरूपदे पु० सं० रिणमलेन भा० रत्नादे पु० लाषा दासा जिणदास पंचायणकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री अंचल गच्छे श्री सिद्धांतसागर सूरिभिः ॥

[1574]

सं० १५७१ वर्षे फागुण शुदि ३ शुक्रे उसवाल ज्ञातीय आदित्यनाग गोत्रे साह सहदे पुत्र साह नयणाकेन कलत्रपुत्रादिपरिवारयुतेन पुण्यार्थं श्री मुनिसुव्रत स्वामि बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री उपकेश गच्छे ककुदाचार्य संताने भट्टारक श्री श्री सिंह सूरिभिः ॥ अल्लावलपुरे ॥ श्रीरस्तु ॥

[1575]

सं० १७०१ वर्षे मार्ग शिर कृष्णैकादश्यां रूढा वाई नाम्ना कारितं श्री नमिनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्री विजयदेव सूरि पट्टे प्रभाकर आचार्य श्री विजयसिंह सूरिभिः ।

[1576]

सं० ... ७२ वर्षे चैत्र वदि ३ बुधे उसवाल ज्ञातीय चोरवेडिया गोत्रे सं० सोहिल तत्पुत्र सघवा सिंघराज तस्य पुण्यार्थं सं० सिद्धपालेन श्री शांतिनाथ बिंबं कारापितं श्री ऊपवाल गच्छे श्री सिद्ध सूरि प्रतिष्ठितं । पूजक श्रेयसे ॥ श्रीः ॥

चौवीशी पर।

[1577]

संवत् १५७१ वर्षे चैत्र वदि ७ गुरौ श्री वायड़ ज्ञातीय मं० नरसिंघ भा० चमकू सुत समधर द्वितीया भा० हीरू नाम्न्या देकावडा वास्तव्यः सुत मं० धनराज नगराज संघादि स्वकुटुंबयुतया स्वश्रेयसे श्री अभिनंदन स्वाम्यादि चतुर्विंशति पट्ट श्री आगम गच्छे श्री अमररत्न सूरि तत्पट्टे सोमरत्न सूरि गुरूपदेशेन कारिता प्रतिष्ठिता च विधिना॥

श्री चिंतामणि पार्श्वनाथजी का मंदिर — सुंधिटोला।

मूलनायकजी के चरणचौकी पर।

[1578] *

(१) ॥ श्री विक्रम समयात् सं० १६७१ वर्षे वैशाष सुदि ३ शनौ ॥ श्रीमत्क्षीराब्धि
लोलक-
(२) ल्लोलडिंडीरपिंडप्रसरसरसशारदशशांककिरणसुयुक्तिमौक्तिकहारनिकरधवलय-
(३) शोभिः पूरितदिङ्मंडलसकलधर्म्मकर्म्मनीतिप्रवृत्तिकरणप्रासाशेषभुवनप्र-
(४) सिद्धिनानाशास्त्रोत्पन्नप्रबलबुद्धिप्राग्भारभावितांतःकरणाश्वपतिगजपतिछत्रपति-
(५) प्रणतपादारविंदद्वंद्वप्रथिततनुभवभव्यभुजादंडचंडप्रचंडकोदंडखंडितानेकका-
(६) ठिन्यतमकुशितारिप्रकरतरवशीकृताखिलखंरूभूपालमौलिसंधृतनिर्देशाधिशेषधर्म्म-
(७) शर्म्माधिकावासतत्कीर्त्तिनिःशेषसार्वभौमशार्दूलसमस्तमनुजाधिपत्यपदवीपौ-

* दिल्ली सम्राट जहांगीर के समय ये मूर्त्तियां की प्रतिष्ठा हुई थी, उस समय पातसाह को कई लोगोंने कह दिया कि सेवड़ोंने (जैनी लोगोंने) मूर्त्तियां बन वाई हैं और हजूरके नामको अपने बुतोंके (मूर्त्तियों के) पैरों के निचे लिख दिया है। फिर क्या था। पातिसाहके क्रोधका पार न रहा। श्री संघने पातिसाह का क्रोध शांति तथा राज्यके तर्फसे सर्व प्रकार अनिष्ट दूर करनेको ये मूर्त्तियों (नं० १५७८ - १५८४) के मस्तक पर पातिसाह का नाम खुदवा दिया था ऐसा प्रवाद है ।

(८) लोमीपरिरंजमुनाशीरविजयराज्ये । उसवाल ज्ञातीय लोढा गोत्रे आंगाणी संघवी
(९) रेषा तद्भार्या श्रा० रेषश्री तत्पुत्र श्री कुंरपालसोनपालाख्याः । तेषां प्रागुक्तमालीयुत
(१०) प्रतिष्ठाया ॥ स्तन्नाम्ना प्रतिमा द्वय प्रतिष्ठा गतः संघेशैः स्वपितृणाम् धर्म्म चिंतामणि
(११) पार्श्वनाथ बिंबं प्रतिष्ठापितं । अचलगच्छश श्री धर्म्ममूर्त्ति सूरि पट्टालंकार पूज्य
(१२) श्री ५ कल्याणसागर सूरीणामुपदेशेन ॥
(मस्तकपर) पातिसाह सवाई श्री जहांगीर सुरत्रा ॥

[1579]

(१) संवत् १६७१ वर्षे वैशाष सुदि ३ शनौ उसवाल ज्ञाती-
(२) य लोढा गोत्रे आंगाणी सं० ऋषभदास तद्भार्या श्रा०
(३) रेषश्री तत्पुत्रप्रवरैः श्री कुंरपाल सोनपाल सं-
(४) घाधिपैः सुत सं० संघराज रूपचंद चतुर्भुज धन-
(५) पालादियुतैः श्री अंचल गच्छे पूज्य श्री ५ श्री धर्म्ममूर्त्ति
(६) सूरि पट्टे श्री कल्याणसागर सूरीणामुपदेशेन
(७) विद्यमान श्री अजितनाथ बिंबं प्रतिष्ठापितं ॥ श्रीरस्तु ॥
(मस्तकपर) पातिसाह श्री जहांगीर विजय राज्ये ।

[1580]

(१) ॥ स्वस्ति श्रीमन्नृपविक्रमादित्य संवत्सर समयातीत संवत् १६७१ वर्षे
(२) शाके १५३६ प्रवर्त्तमाने वैशाख सुदि ३ शनौ श्रीमदागरा दुर्ग वास्तव्योपकेश
(३) ज्ञातीय लोढा गोत्रे गावंशे साह जठमल तत्पुत्र सा० राजपाल तद्भार्या श्रा० रा
(४) जश्री तत्पुत्र श्री विमलाद्यादि संघकारक सं० ऋषभदास तद्भार्योजयकुमा-
(५) रानंददायिनी रेषश्री तत्पुत्राभ्यां श्री शत्रुंजय समेतगिरि संघ महन्महन्निर्वा-
(६) ह प्राप्तसत्कीर्त्तिभ्यां श्री कुंरपाल सोनपाल संघाधिपाभ्यां ॥ सुत सं० संघराज
रूपचंद पौत्र

(७) सं० भूधरदास सूरदास सिवदास पदमश्री। प्रपौत्र साधारणादि परिवारयु-
(८) ताभ्यां श्री अंचल गच्छे पूज्य श्री ५ धर्म्ममूर्त्ति सूरि पट्टांभोजभास्वराणां पूज्य श्री ५
(९) श्री कल्याणसागर सूरीणामुपदेशेन श्री संभवनाथ बिंबं प्रतिष्ठापितं भव्यैः
पूज्यमानं चिरं नंद्यादिति श्रेयस्तुः ॥
(मस्तक पर) पातिसाह श्री ५ श्री जहांगीर विजयराज्ये

[1581]

(१) ॥ स्वस्ति श्रीमन्नृप विक्रमादित्य समयात् संवत् १६७१ वर्षे शा-
(२) के १५३६ प्रवर्त्तमाने श्री आगरादुर्ग वास्तव्य उपकेश ज्ञा-
(३) तीय लोढा गोत्रे ... सा० राजपाल तद्भार्या श्रा० राजश्री त-
(४) त्पुत्र संघपतिपदोपार्ज्जनदक्ष सं० ऋषभदास तद्भा-
(५) र्या श्रा० रेषश्री तत्पुत्राभ्यां श्री कुंरपाल सोनपाल संघाधिपाभ्यां श्री अंचल-
(६) गच्छे पूज्य श्री ५ धर्म्ममूर्त्ति सूरि पट्टे श्री ५ कल्याणसागर सूरीणामुपदे-
(७) शेन श्री अभिनंदन स्वामि बिंबं प्रतिष्ठापितं ॥ पूज्यमानं चिरं नंद्यात्
(मस्तकपर) पातिसाह अकबर जलालुदीन सुरत्राणात्मज पातिसाह श्री जहांगीर
विजयराज्ये

[1582]

(१) ॥ संवत् १६७१ वर्षे वैशाष सुदि ३ शनौ उसवाल ज्ञा-
(२) तीय लोढा गोत्रे आंगाणी वंशे सं० ऋषभदास त-
(३) द्भार्या श्रा० रेषश्री तत्पुत्राभ्यां सं० श्री कुंरपाल सं० सोन-
(४) पाल संघाधिपैः तत्पुत्र सं० संघराज सं० रूपचंद चतुर्भुज
(५) धनपालादिसहितैः श्रीमदंचलगच्छे पूज्य श्री ५ धर्म्ममूर्त्ति सूरि तत्प-
(६) ट्टे श्री कल्याणसागर सूरिरुपदेशेन विद्यमान श्री ऋषभानन जिन
(७) बिंबं प्रतिष्ठापितं ॥ श्रीरस्तु ॥
(मस्तकपर) पातिसाह श्री जहांगीर विजयराज्ये

[1583]

(१) ॥ संवत् १६७१ वर्षे वैशाष शुदि ३ शनौ रोहिणी नक्षत्रे श्री आ-
(२) गरा वास्तव्योपकेश ज्ञातीय लोढा गोत्रे गावंशे सं० ऋषभदास
(३) भार्या रेषश्री तत्पुत्र संघाधिप सं० श्री कुंरपाल सं० श्री सोनपा-
(४) ल तत्सुत सं० संघराज सं० रूपचंद चतुरभुज धनपालादियुतैः
(५) श्रीमदंचल गच्छे पूज्य श्री ५ श्री धर्म्ममूर्त्ति सूरि तत्पट्टे पूज्य
(६) श्री ५ कल्याणसागर सूरीणामुपदेशेन विहरमान श्री ईश्वर
(७) जिन बिंबं प्रतिष्ठापितं सं० श्रीकान्ह ... ।

(मस्तकपर) पातिसाह श्री जहांगीर विजयराज्ये

[1584]

(१) ॥ श्रीमत्संवत् १६७१ वैशाष शुदि ३ शनौ रोहिणी नक्षत्रे आगरा वा-
(२) स्तव्योसवाल ज्ञाती लोढा गोत्र गावंशे सा० राजपाल भार्या राजश्री
(३) तत्पुत्र सं० ऋषभदास भा० रेषश्री तत्सुत संघाधिप सं० कुंरपाल सं०
(४) श्री सोनपाल तत्सुत सं० संघराज सं० रूपचंद सं० चतुर्भुज सं० धन -
(५) पाल पौत्र जुधरदास युतैः श्री अंचल गच्छे पूज्य श्री
(६) ५ श्रीधर्म्म सूरि पट्टालंकार श्री कल्याणसागर सूरीणामुपदेशेन
(७) श्री पद्मानन जिन बिंबं प्रतिष्ठापितं ॥ श्री ॥

(मस्तकपर) पातिसाह श्री जहांगीर विजयराज्ये

[1585]

(१) ॥ एं० ॥ स्वस्ति श्री संवत् १६६७ वर्षे ॥ ज्येष्ठ शुदि १५ तिथौ गुरूवासरे
(२) अनुराधा नक्षत्रे ऊसवाल ज्ञातीय अगड़कबोली गोत्रे सा० कूना
(३) ॥ संताने सा० कान्हड़ । भा० भामनी ... पुत्र सा० पहीराज ...
(४) भा० इंद्राणी । भा० सोनो पुत्र सा० निहालचंद । तेन श्री चंद्रानन शास्वतजि-
(५) न बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं । श्री खरतरगच्छे श्री जिनवर्द्धन सूरि संताने

(६) श्री जिनसिंह सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिभिः ॥ श्री आगरा नगरे ॥ शुभं भवतु ॥

[1586]

सं० १७७७ मा० शु० ५ श्री वर्द्धमान जिन बिंबं कारितं ऊसवंशे चोरडिया गोत्रे हरी-मल भार्या ननी तया । प्र । बृ । भ । खरतर ग । श्री जिनाकय सूरि पङ्कजप्रबोध स्वपितृ-सम श्री जिनचंद्र सूरिभिः कारितं पूजकयोः श्रेयोर्थं । लखनऊ नगरे ।

पंचतीर्थियों पर

[1587]

सं० १५१५ वर्षे माह व० ६ बुधे श्री ऊएस वंशे सा० जिणदास भा० मूल्ही पु० सा० लाषा भा० लाषणदे पु० सा० काह्ना भा० लषमादे पुत्र सा० बाबा सुश्रावकेण पुहती पुत्र नरपाल पितृव्य सा० पूंजा सा० सामंत सा० नासण प्रमुख समस्तकुटुंबसहितेन श्री अंचल गछ गुरु श्री जयकेशरी सूरीणां उपदेशेन मातुः श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं श्री संघेन ॥

[1588]

सं० १५१७ व० माघ शिति १ ओस षावली गोत्रे सा० ईसर भा० गोपालदे पु० धीरा भा० दूमइलदे पु० जावड़ासा निज भ्रातृ श्रेयोर्थे श्री नेमिनाथ बिंबं का० तपापक्षे श्री जयशेषर सूरि पट्टे प्र० कमलवज्र सूरिभिः ॥ शुभं ॥

[1589]

॥ सं० १५३५ वर्षे माघ व० ए शनौ ज्ञा० व्य० समा भा० गुरा सुत धना भा० रूपाई नाम्ना पितृ व्य० जाणा भ्रातृ धर्मा कर्मादिकुटुंबयुतया स्वश्रेयोर्थं श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्र० तपागछेश श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः । कुतवपुर वास्तव्य ॥ श्रीः ॥

चौवीशी पर

[1590]

सं० १५२७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ए रवौ आजुलि वास्तव्य श्री श्रीमाली मं० सिंधा भार्या

वीरू सुत अर्जुन सहिदे वरदे पुत्री आजु नाम्न्या स्वश्रेयसे श्री कुंथुनाथ चतुर्विंशति पट्ट कारितः प्रतिष्ठितो वृद्ध तपापक्षे भट्टा० श्री ज्ञानसागर सूरिभिः ॥

[1591]

। संवत् १५५२ वर्षे फाल्गुन शुदि तृतीया ३ तिथौ बुधे ॥ श्री पटोलिया गोत्रे । सा० पोल । तत्पुत्र षेता । तत्पुत्र रूवा । तत्पुत्र गईपाल । तत्पुत्र मोहण । तत्पुत्र एडा पुत्रौ द्वौ । चांपा पाहा । चांपा स्वनिजपुण्यार्थं । स्वयशसे च । श्री चतुर्विंशति पट्टं कारितवान् प्रतिष्ठितः श्री राजगच्छीय श्री पुण्यवर्द्धन सूरिभिः ॥ श्रेयसे ॥

श्री संभवनाथजी का मंदिर — फूलवाली गली ।

श्याम पाषाण के मूर्तियों पर ।

[1592]

सं० १७७७ माघ सुदि ५ सोमे श्री गौड़ी पार्श्वनाथ बिंबं का० । ऊंस वंशे सखलेचा गोत्रे महताव .... ।

[1593]

सं० १७७७ माघ सुदि ५ सोमे श्री चंद्रानन शास्वतजिन बिंबं कारितं ऊंस वंशे कुचेरा गोत्रे वसंतलालस्य भार्या .... ।

धातु की मूर्त्तियों पर ।

[1594]

श्री मूलसंघे बघेरवालान्वये बांझा मेला प्रणमति ।

[1595]

सं १७७१ माघ सु० १३ बु । ऊ । वंशे डागा गोत्रे सेढमल तद्भार्या गिलहरी ताभ्यां श्री पार्श्वनाथ जिन बिंबं का० । बृ० भ । खर । ग । श्री जिनचंद्र सूरिभिः ।

[1596]

सं० १९२१ शाके १७७६। मा। शु। पक्षे ६। बुधे श्री महावीरजी जिन बिं० प्र० श्री शांतिसागर सूरिभिः का० सुचिंती गोत्रे रूपचंद तत्पुत्र धर्म्मचंद्र श्रेयोर्थं।

[1597]

सं० १९२१ शाके १७७६। मा। शु० ६ बुधे श्री महावीर जिन बिंब प्र० श्री शांतिसागर सूरिभिः का० सुचिंती गोत्रे बाबू रूपचंद तद्भार्या मनि बिबि श्रेयोर्थं।

[1598]

सं० १९२४ माघ शुक्ल १३ गुरौ श्री अजित जिन बिंबं ओस वंशे सुचिंती गोत्रे लाला रूपचंद पुत्र धर्मचंद तद्भार्या गुलाबो बिबि श्रेयोर्थं प्र० श्रीशांतिसागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

[1599]

सं० १९२४ माघ शुक्ल १३ गुरौ श्री महावीर जिन बिंबं ओस वंशे सूराणा गोत्रे लाला खैरातीमल पुत्र रूपचंद तद्भार्या छोटीबिबि का० प्र० श्रीशांतिसागर सूरिभिः बिजयगच्छे।

[1600]

सं० १९२४ माघ शुक्ल १३ गुरौ श्री पार्श्वनाथ जिन बिंबं ओस वंशे चोरडिया गोत्रे ला। रजूमल तत्पुत्र इंद्रचंद्रेण का० प्र० श्री शांतिसागर सूरिभिः विजय गच्छे।

[1601]

सं० १९२४ माघ शुक्ल १३ गुरौ श्री पार्श्वनाथ जिन बिंबं ओस वंशे सुचिंती गोत्रे लाला रूपचंद पुत्र धर्म्मचंद्रेण का० प्र० श्री शांतिसागर सूरिभिः विजय गच्छे।

पंचतीर्थियों पर।

[1602]

सं० १३१३ फा० शु० ६ प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० बोचा भार्या सहज मननयी (?) पूर्वज

श्रेयोर्थं सुत सांगणेन श्री शांतिनाथ बिंबं कारापितं।

[1603]

॥ संवत् १५४४ वर्षे आषाढ़ वदि ८ गुरौ उपकेश ज्ञातौ हुंडोयूरा गोत्रे सं० गांगा पु० पद्मसी पु० पासा भा० मोहणदेव्या पु० पाल्हा श्रीवंतसहितया स्वपुण्यार्थं श्री आदिनाथ बिंबं का० प्र० उपकेश गच्छे श्री देवगुप्त सूरिभिः॥

[1604]

संवत् १५५२ वर्षे ज्येष्ठ शु० १३ दिने ऊ० ज्ञा० बलदउठ ग्रामवासि व्य० वेल. भा० सारू पु० व्य० येसाकेन भा० कील्हु सहितेन स्वश्रेयोर्थं श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्री हेमविमल सूरिभिः॥ श्रीरस्तु।

[1605]

संवत् १५५८ वर्षे कार्तिक वदि ५ रवौ श्री श्रीमाल ज्ञा० श्रे० मोकल भा० वरजू पु० पांचा भा० जासू पु० वच्छासहितेन स्वपूर्वजश्रेयोर्थं शीतलनाथ बिंबं का० नागेंद्र गच्छे भ० श्री कमलचंद्र सूरि पट्टे श्री हेमरत्न सूरि प्रतिष्ठितः॥

[1606]

... श्री नागपुरीय गच्छे श्री हेमसमुद्र सूरि पट्टावतंसैः श्री हेमरत्न सूरिभिः॥ शुभं॥

लाला माणिकचंदजी और राय साहब का देरासर।

मूर्त्तियों पर।

[1607]

सं० १९२० मि० फा० कृष्ण २ बुध सा। प्र। भा० महताब कुंवर श्री अधिष्टायक जिन बिंबं का० श्री अमृतचंद्र सूरिभिः।

[1608]

सं० १९२४ माघ शुक्ल १३ गुरौ श्री ऋषभदेव जिन बिंबं कारितं ओस वंशे चोरडिया

गोत्रे लाला प्रतापचंद्र तत्पुत्र शिखरचंद्रेण । प्रतिष्ठितं । भ० श्री शांतिसागर सूरिभिः ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1609]

सं० १५२७ आषाढ़ सुदि १० बुधे श्री वीर वंशे ॥ सं० पोपा भा० करणूं पुत्र सं० नरसिंघ सुश्रावकेण भा० लपू भ्रातृ जयसिंघ राजा पुत्र सं० वरदे कान्हा पौत्र सं० पदमसी सहितेन निज श्रेयोर्थं श्री अंचलगच्छेश श्री जयकेशर सूरीणां उपदेशेन श्री श्रेयांसनाथ बिंबं कारितं प्र० संघेन पत्तन नगरे ।

[1610]

॥ संवत् १५६३ वर्षे आषाढ़ सुदि ७ गुरौ पत्तन वास्तव्य । मोढ ज्ञातीय श्रे० जीवा भा० होल्ह पुत्र श्रे० अमराकेन भा० पुहुति सुत हांसादिकुटुंबयुतेन श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं । प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छनायक । श्री निगमाविर्भाविका । परमगुरु । श्री श्री श्री इंद्रनंदि सूरिभिः ॥

लाला खेमचंदजी का देरासर ।

[1611]

सं० १९०४ माघ शुक्ल ९ बुधे श्री । वज्रजातीय गोत्रे ला० रोसनलाल तत्पुत्र सोभाग्यचंद्रेण भा० नति बिबि तथा श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं पांचाल देशे कंपिलपुर प्र० च श्रीमद् भट्टारक ... सूरिभिः ।

लाला हीरालालजी चुन्निलालजी का देरासर ।

मूलनायकजी पर ।

[1612]

संवत् १९२५ वर्षे चैत वदि १ सुत दुलसुख जगमल । श्री ऋषभदेवजी ... ।

मूर्त्ति और पंचतीर्थियों पर ।

[1613]

सं० १७०५ व० वै० व० २ उवकेश ज्ञा० सा० कान्हजी सुत वीरचंद नाम्ना श्री विमलनाथ कारि० प्रति० तप० श्री विजयदेव सूरिभिः । जय ।

[1614]

सं० १७१० व० जै० सु० ६ मि० प्राग्वाट लघुशाखायां श्री व्य० सं० मनजीकेन सुपार्श्व बिंबं कारितं । प्रतिष्ठितं तपा विजयराज सूरिभिः ।

[1615]

सं० १९२४ माघ शुक्ल १३ गुरौ श्री सुविधिनाथ जिन बिंबं श्रीमाल सांडिया कन्है-यालाल तद्भार्या फूनु श्रेयोर्थे भ० श्री शांतिसागर सूरिभिः प्रति० विजय गच्छे ।

[1616]

सं० १९२४ माघ शुक्ल १३ गुरौ श्री अनंतनाथ जिन बिंबं श्रीमाल टांक गोत्रे हुस-मतरायजी तत्पुत्र हजारीमलेन कारितं प्र० श्री विजय गच्छे भ० श्री शांतिसागर सूरिभिः।

[1617]

सं० १९२४ माघ शुक्ल १३ गुरौ श्री आदिनाथ बिंबं .... निहालचंदेण कारितं प्रतिष्ठितं विजय गच्छे श्री शांतिसागर सूरिभिः श्रेयोर्थं।

[1618]

सं० १९२४ माघ शुदि १३ गुरौ श्री पार्श्वनाथ बिंबं श्रीमाल पारड़ गोत्रे षड़चंद [?] तत्पुत्र श्री कपूरचंदेण कारितं । प्र० भ० श्री पूज्य शांतिसागर सूरिभिः । विजय गच्छे ।

[1619]

सं० १५२७ चैत्र व० १० गुरौ श्री ओएस व० मिठडीआ सो० जावड़ भ० जसमादे

पु० सो० गुणराज सुश्रावकेण भा० मेघाई पु० पूनां महिपाल भ्रातृ हरषा श्री राजसिंह राज सोनपालसहितेन श्री अंचल गछे श्री जयकेशरि सूरि उ० पत्निपुण्यार्थं श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं। प्र० श्रीसंघेन चिरं नंदतु ।

[1620]

॥ ॐ सं० १५७० वर्षे आ० सुदि ५ बुधे सूराणा गोत्रे सं० शिवराज पु० सं० हेमराज भार्या हेमसिरि पुत्र संघवी नाल्हा भा० नारिगदे संघवी सिंहमल्ल भार्या संघवीणि चापश्री पुत्र पृथ्वीमल्ल प्रमुखपुत्रपौत्रसहितैः श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं। पितृमातृपुन्यार्थं। आत्मश्रेयसे श्री धर्मघोष गछे श्री पद्मानंद सूरि पट्टे श्री नंदिवर्द्धन सूरि प्रतिष्ठितं ।

चौवीसी और पाषाण के चरणों पर ।

[1621]

॥ ॐ संवत् १५३८ वर्षे जेठ सुदि १ मंगलवारे उपकेश ज्ञातीय सोनी गोत्री स० तिणाया पुत्र सा० संसारचंद्र पुण्यार्थं श्री चतुर्विंशति कारापितं। प्र। रुद्रपल्लीय गछे भट्टारक श्री जिनदत्त सूरि पट्टे भ० श्री देवसुंदर सूरिभिः ॥

[1622]

॥ सं० १९१४ व० ज्ये। द्वि। ति। चं। श्री जिनकुशल सूरि पादौ भ। श्री जिनमहेंद्र सूरिभिः का। श्री गो। कन्हैयालालेन मुद्रार्थं।

[1623]

सं० १९२४ मा० शु० १३ गुरौ श्री गौतमस्वामी पादुका कारिता ओ० वं० नाहर गोत्रे लाला चंगामल पुत्र जवाहिरलालेन प्रतिष्ठितं। श्री विजय गछ श्री जिनचंद्रसागर सूरि पट्टोदयाद्रिदिनमणि पूज्य श्री शांतिसागर सूरिभिः ॥

श्रीमंदिर स्वामीजी का मंदिर – सहादतगंज ।

[1624]

॥ संवत् १५१८ वर्षे माघ सूदि ७ शुक्रे श्री मोढ ज्ञा० मं० गोरा भा० राजू सुत भोला

महिराज .... भ्रातृ नागानिमित्तं श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्र० श्री विद्याधर गच्छे भ० श्री हेमप्रभ सूरिभिः ॥ मांडलि वास्तव्यः ॥ १ ॥

श्री वासुपूज्यजी का मंदिर – सहादतगंज ।

पंचतीर्थी पर ।

[1625]

सं० १५७६ वर्षे वैशा० सुदि ६ सोमे डूगड़ गोत्रे सा० वील्हा भा० पूना पु० ४ सा० मेहा भा० रेडाही सा० कामी भा० दूला सा० पूला भा० मूलाही सा० ऊदा० भा० षीमाही सा० सधारण श्री सुविधिनाथ बिंबं कारितं रद्रपल्ल गच्छे श्री सूरि प्रतिष्ठितं ॥

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर – सहादतगंज ।

मूलनायकजी पर ।

[1626]

॥ संवत् ११७१.. ।

पचतीर्थियों पर ।

[1627]

संवत् १५६७ वर्षे वैशाष सुदि ३ दिने श्री श्रीमालज्ञातीय श्रेष्ठि राउल भार्या लाछि सुत जोगा भार्या रूपी जसमादे सुत करमण काल्हा करमण भार्या रत्नादेसहितेन श्री शांतिनाथ बिंबं कारापितं श्री .... गच्छे शांति सूरि पट्टेश सर्वदेव सूरिभिः । कंथरावी वास्तव्यः ॥

[1628]

संवत् १६७० वर्षे वैशाष शित पंचम्यां तिथौ सोमे मेड़तानगर वास्तव्य समदड़ीया गोत्रीय । उकेश ज्ञातीय वृद्धशाषीय सा० माना भा० मनरमदे सुत रामसिंह नाम्ना भ्रातृ रामसिंह प्रमखकुटुंबयुतेन श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्र० तपा गच्छे श्री अकबर सुरत्राण-

दत्तबहुमान भ० श्री हीरविजय सूरि पट्टालंकार श्री अकबरछत्रते(?) परिषतप्राप्तवाद-जयकार भ० श्री विजयसेन सूरिभिः ॥

श्री ऋषभदेवजी का मंदिर – सहादतगंज।

मूर्त्तियों पर।

[1629]

सं० १८८८ मा। सु। ५। श्री आदि जिन बिंबं कारितं ओस वंशे पहलावत गो। सदानंद पुत्र गुलाबराय भार्या फूलाख्या का० प्र। वृ। भ। खरतर। ग। श्री जिनाक्षय सूरि तत् पंङ्कजभृंगैः श्री जिनचंद्र सूरिभिः।

[1630]

सं० १९१७ फागुण शीत २ बुधे श्री श्री आदि जिन परिकरं कारितं पांचालदेशे कांपिलपुर प्रतिष्ठितं। श्रीमद्भट्टारक बृहत् खरतर गच्छाधिराज श्री जिनअक्षय सूरि पट्टस्थित श्री जिनचंद्र सूरि पदकजक्षयलीन विनेय श्री जिननंदिवर्द्धन सूरिभिः ओस वंशे पहलावत गोत्रे लालाजी श्री सहानंदजी तत्पुत्र लाला श्री सदानंदजी तत्पुत्र लाला गुलाबरायजी तद्भार्या फून्नु बिबि तेन कारितं महता प्रमोदेन।

पंचतीर्थी पर।

[1631]

सं० १५१८ वर्षे माघ वदि २ बुधे भदेउरा ज्ञा० सा० कमलसी भा० तेजू सुत सा० खेताकेन भा० वीरणिश्रेयोर्थं पुत्र गोविंदादियुतेन श्री संभवनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं श्री संडेर गच्छे श्री शांति सूरि[भिः] ॥

श्री शांतिनाथजी का मंदिर – सहादतगंज।

चौकी पर।

[1632]

॥ संवत् १९८३ का मिति जेष्ठ सूदि १० म्यां श्रीमाल वंशे टांटेसाजन फूसपाणां गोत्रे

लाला विसनचंद जी तत्पुत्र काशीनाथजी तत्पुत्र देवीप्रसाद तद् भ्रातृवधुः ननकु ॥ श्रेयार्थं ॥ १ ॥

पंचतीर्थियों पर

[1633]

संवत् १५२३ वर्षे माह सुदि ६ नासणुली वासि मं० जलाकेन भार्या भावलदे सुत मांडण भा० जेअरि प्रमुखकुटुंबयुतेन भ्रातृ बलराज श्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छेश श्री श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ श्रीः ॥

[1634]

सं० १५५८ वर्षे वैशाष सुदि ११ गुरौ श्री ऊसवाल ज्ञातौ करउतिया गोत्रे। सं० पदमसी भा० पदमलदे पु० पासा भा० मोहणदे। पु० पाल्हा श्रोवंत तत्र सा० पाल्हाकेन स्वभार्या इंद्रादेपुण्यार्थं श्री श्रेयांस बिंबं कारितं। प्रतिष्ठितं। ककुदाचार्य संताने उपकेश गच्छे भट्टारक श्री देवगुप्त सूरिभिः ॥

[1635]

सं० १६७२ वर्षे ज्येष्ठ वदि ९ गुरौ श्री अहमदावाद वास्तव्य ऊसवाल ज्ञातीय वृद्ध-शाषायां श्री शांतिदास भा० बाई रूपाई सुत सा० पनजी कारितं श्री शांतिनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं श्री तपा गच्छे भ० श्री विजयदेव सूरि वरैकि (?) महोपाध्याय श्री श्री श्री मुनिसागर गणिभिः श्रेयोस्तु ॥

चौवासी पर।

[1636]

सं० १६१९ वर्षे वैशाष वदि ५ शु० श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्री सकलकीर्त्ति देवास्त० भ० श्री भुवनकीर्त्ति देवास्त० भ० श्री ज्ञानभूषण देवास्त० भ० श्री विजयकीर्त्ति देवास्त० भ० श्री शुभचंद्र देवास्तत्पट्टे

श्री अजितनाथजी का मंदिर – महल्ला कटड़ा।

पाषाण की मूर्त्तियों पर।

[1638]

मूलनायकजी।

संवत् १७७१ माघ सुदि ३ वृहत् खरतर गच्छे श्री जिनलाभ सूरि शिष्य पाठक श्री हीरधर्मगणयुपदेशेन श्रीमाल टांक जांवतराय सुतेन चुन्निलालेन सुत बहादुरसिंहयुतेन श्री अजितनाथ बिंबं कारितं। श्री बाराणस्यां प्रतिष्ठितं। श्री जिनहर्ष सूरिणा श्री खरतर गच्छे।

[1639]

सं० १९५९ मि० फा० सु० ५ इदं श्री ऋषभदेवजी आदिनाथ बिंबं कारितं श्री उसवाल वंशज ताराचंद लखमीचंद प्रतिष्ठितं वृहद् भट्टारक श्री जिनचंद सूरिभिः।

[1640]

सं० १९५९ मि० फा० सु० ५ इदं श्री महावीर बिंबं काराधितं सेठ सराचंद प्र० भट्टारक जिनचंद्र सूरिभिः।

पंचतीर्थियों पर।

[1641]

सं० १४९५ वर्षे मार्ग० वदि ४ गुरौ उपकेश ज्ञातौ सुचिंती गोत्रे साह भिकु भार्या जयतादे पु० सा० नान्हा भोजाकेन मातृपितृश्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिंबं कारितं श्री उपकेश गच्छे ककुदाचार्य संताने प्रतिष्ठितं भ० श्री श्री श्री सर्व सूरिभिः॥

[1642]

संवत् १५६७ वर्षे वैशाष सुदि १० ऊ० सुचिंती गोत्रे सा० जेसा भार्या जस्मादे पु० मीडा भार्या हर्षु आत्मपुण्यार्थं श्री आदिनाथ बिंबं कारितं। को० श्री नन्ह सूरिभिः प्रतिष्ठितं॥ श्री॥

[1643]

सं० १५७५ वर्षे फा० व० ४ दिने प्रा० सा० आल्हा नार्या आल्हणदे पुत्र सा० विसा० केन ना० विल्हणदे पुत्रीपुत्र जयवंतप्रमुखयुतेन श्री संनवनाथ बिंबं का० प्र० तपा गच्छे श्री जयकल्याण सूरिनिः।

धातु की मूर्ति पर।

[1644]

सं० १७७६ फा० व० ५ श्री पार्श्वनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं श्री जिनमहेंद्र सूरिणा। फो० गो० सेवाराम।

धातु के यंत्र पर।

[1645]

श्री। संवत् १९०ए आ० सु० ३ श्री सिद्धचक्र यंत्रं का० गांधी गुलाबचंद्रस्य नार्या कली नाम्ना प्र० श्री जिनमहेंद्र सूरिणा श्री वृहत् खरतर गच्छे।

[1646]

सं० १९१० वर्षे शाके १७७५ प्रवर्त्तमाने माघ शुक्ल द्वितीया तिथौ श्री सिद्धचक्र यंत्र प्र० न० श्री महेंद्र सूरिनिः का० गो० नाहटा उसवाल लछमणदास तद् नार्या मुन्नि बिबि तत्पुत्र हजारीमल श्रेयोर्थमानंदपुरे।

पाषाण के चरण पर।

[1647]

॥ सं० १७७७ रा धराकायां पाठक हीरधर्मोपदेशेन जयपुर वास्तव्य ओसवाल सेठ हुकुमचंदजेन उदयचंदेन अयोध्यायां श्री मरुदेव १ विजया २ सिद्धार्था ४ सुमंगला ५ सुयशा १४ गर्नरत्नानां परमेष्ठिनां चरणन्यासाः कारिताः प्र० श्री जिनहर्ष सूरिणा।

समवसरणजी के चरणों पर।

[1648]

॥ सं १८७७ रा धराकायां बृहत् खरतर भट्टारक गणीय पाठक हीरधर्मोपदेशेन जयनगर वासिना ओसवाल ज्ञातौ सेठ गोत्रीय हुकुमचंदजेन। उदयचंदेन अयोध्यायां श्री अजित सर्वज्ञस्य पादन्यासः कारितः। प्र। श्री जिनहर्ष सूरिणा॥

[1649]

॥ सं० १८७७ रा धराकायां श्री जिनलाभ सूरि शिष्योपाध्याय श्री हीरधर्मोपदेशेन अयोध्यायां श्री वृषभनाथानां पादन्यासः कारितः ओसवाल। मिरगा जाति सामंतसिंहेन बडेर गोत्रीयेन बीकानेरस्थ पदार्थमल्लेन। प्रतिष्ठितः श्री जिनहर्ष सूरिणा।

[1650]

॥ सं० १८७७ रा धराकायां खरतर गणीय पाठक हीरधर्मोपदेशेन ओसवाल ज्ञातौ सेठ गोत्रीय हुकुमचंदजेन। उदयचंदेन जयनगरस्थेन। अवधौ सर्वज्ञाभिनंदन पादाः कारिताः। प्र। जिनहर्ष सूरिणा।

[1651]

॥ सं० १८७७ रा धराकायां खरतर गणीय पाठक हीरधर्मोपदेशेन जयनगर वासिना ओसवाल ज्ञातौ सेठ गोत्रीय हुकुमचंदजेन। उदयचंदेन। अयोध्यायां श्री सुमति सर्वज्ञ पादाः कारिताः प्र। श्री जिनहर्ष सूरिणां।

[1652]

॥ सं० १८७७ रा धराकायां श्री बृहत् खरतर गणेश श्री जिनलाभ सूरि शिष्योपाध्याय श्री हीरधर्मोपदेशेन अवधौ सर्वज्ञानंत पादन्यासः कारितः सेठ उदयचंद प्र। श्री जिनहर्ष सूरिणा॥ १४॥

[1653]

॥ सं० १८७७ रा धराकायां खरतर गणीय पाठक हीरधर्मोपदेशेन अयोध्यायां श्री अजिताभिनंदन सुमत्यनंतनाथानां चरणन्यासः कारितः जयनगर वासिना। ओसवाल सेठ गोत्रीय हुकुमचंद सुतेन। उदयचंदेन प्रतिष्ठितः खरतर भट्टारक गणेश श्री जिनहर्ष सूरिणा।

[1654]

॥ सं० १८७५ रा धराकायां खरतरगणेश श्री जिनलाभ सूरि शिष्य पाठक हीरधर्मोपदेशेन। अयोध्यायां श्री नाभि १ जितशत्रु २ संवर ४ मेघ ५ सिंहसेन १४ जानामार्हतां क्रमन्यासः कारितः जयनगरस्थेन ओसवाल सेठ हुकुमचंद सुतेन। उदयचंदेन प्रतिष्ठितः श्री जिनहर्ष सूरिणा।

[1655]

॥ सं० १८७७ रा धराकायां श्री जिनलाभ सूरि शिष्योपाध्याय हीरधर्मोपदेशेन जयनगरस्थेन ओसवाल सेठ हुकुमचंद सुतेन। उदयचंदेन। अयोध्यायां २।४।५।१४। जिनाद्यो गणधराणां श्री सिंहसेन। वज्रनाभ। चमरगणि। यशसां पादाः कारिताः। प्रतिष्ठिताः श्री जिनहर्ष सूरिणा।

दादाजी के चरण पर।

[1656]

॥ सं० १८७७ रा धराकायां पितामहानां श्री जिनकुशल सूरीणामयोध्यायां चरणन्यासः प्र। श्री जिनहर्ष सूरिणा खरतर भट्टारक श्री जिनलाभ सूरि शिष्योपाध्याय श्री हीरधर्मोपदेशेन कारिताः। जयनगर वासिना अधुना मिरजापुरस्थेन सेठ हुकुमचंदजेन। उदयचंदेन श्रेयोर्थं।

यक्ष और देवियों के पाषाण की मूर्त्तियों पर।

[1657]

॥ श्री गोमुख यक्ष मूर्त्तिः ॥ १ ॥ ॥ सं० १ए३ए फाल्गुन कृष्ण ७ गुरौ प्रतिष्ठितं

जं । यु । प्र । वृहत्खरतर भट्टारकेंद्र श्री जिनमुक्ति सूरि जिनामादेशात्मंडलाचार्य श्री विवेककीर्त्ति गणिना कारितं । श्री संघस्य श्रेयोर्थमयोध्यायाम् ॥ शुभम् ॥ १ ॥

नोट– ऐसेही लेख और (१) ॥ श्री महायक्षमूर्त्तिः ॥ २ ॥ (२) ॥ श्री यक्षनायक मूर्त्तिः ॥ ४ ॥ (३) ॥ श्री तुंबुरुयक्षमूर्त्तिः ॥ ५ ॥ (४) ॥ श्री पातालयक्षमूर्त्तिः ॥ १४ ॥ (५) ॥ श्री अजितबला देवी ॥ २ ॥ (६) ॥ श्री कालिदेवीमूर्त्तिः ॥ ४ ॥ (७) ॥ श्री अंकुशदेवी मूर्त्तिः ॥ १४ ये सात मूर्त्तियों पर हैं ।

नवराई ।

नवराई फैजाबाद से १० मैल और सोहावल स्टेशन से अंदाज २ मैल पर एक छोटा गांव है । यही प्राचीन तीर्थ 'रत्नपुरी' है । यहां १५ वें तीर्थंकर श्री धर्मनाथस्वामी का च्यवन, जन्म, दीक्षा और केवलज्ञान ये ४ कल्याणक हुवे हैं ।

पंचतीर्थियों पर

[1658]

संवत् १५१२ वर्षे माह शुदि ५ सोमे वाडिज वास्तव्य भावसार जयसिंह भा० फाली पु० पोचा भा० जासी पु० लीबा सरवण लाहू जमालु पोचाकेन । श्री सुविधिनाथ बिंबं कारापितं श्री विवंदणीक गच्छे श्री सिद्धाचार्य संताने प्रतिष्ठितं श्री सिद्ध सूरिभिः ।

[1659]

सं० १५६७ वर्षे वैशाष सु० १० बु० श्री उपकेश ज्ञातौ सं० साहिल सु० सं० डासा भा० छाजी नाम्न्या स्वपुण्यार्थं श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री उपकेश गच्छे ककुदाचार्य सं० भ० श्री सिद्ध सूरिभिः

[1660]

संवत् १६१७ वर्षे ज्येष्ठ शुदि ५ सोमे श्री पत्तने उसवाल ज्ञातीय सा० अमरसी सुत आणंद । सा० वीरु सुत काहाना सारंगधर बिंबं श्री पद्मप्रभनाथ । प्रतिष्ठितं । तपा गच्छे श्री विजयदान सूरिभिः ॥ श्री ॥

[1661]

॥ संवत् १६४४ वर्षे फागुण शुदि २ दिने उसवाल ज्ञातीय बंभ गोत्रीय साह कटारू भार्या टुलादे सुत सा० तारू भार्या जीवादे सुत सा० टटना प्री (?) संघनाम चिंतामणि श्री श्रेयांसनाथ बिंबं तपागच्छाधिराज श्री हीरविजय सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

पाषाण के चरणों पर ।

[1662]

संवत् १८७७ रा धराकार्यां श्री रत्नपुरे श्री धर्मनाथानां पादाः कारिताः बरढ़ीया बूलचंदज वेणीप्रसाद प्र । बृहत् खरतरगणेश श्री जिनलाभ सूरि शिष्य पाठक हीर-धर्मोपदेशेन । ओसवालेन । काशीस्थेन प्रतिष्ठिताः श्री जिनहर्ष सूरिणा ।

[1663]

संवत १८७७ रा धराकार्यां श्री रत्नपुरे श्री धर्मार्हतापादाः कारिताः बृहत् खरतर गणेश श्री जिनलाभ सूरि शिष्य पाठक हीरधर्मोपदेशेन बरढ़ीया बूलचंदज वेणीप्रसादेन च । श्री जिनहर्ष सूरिणा बृहत् खरतरगणेशेन ।

[1664]

सं । १८७७ रा धराकार्यां बृहत् खरतर गणेश श्री जिनलाभ सूरि शिष्य पाठक हीर-धर्मोपदेशेन काशीस्थ बरढ़ीया बूलचंदज । वेणीप्रसादेन श्री धर्मपरमेष्ठिनां पादाः कारिताः श्री रत्नपुरे प्र । श्री जिनहर्ष सूरिणा खरतर गणेश ।

[1665]

सं । १८७७ रा धराकार्यां श्री रत्नपुरे श्री धर्म सर्वज्ञानां पादाः कारिताः ओसवंशे

बरड़ीया बूलचंदज वेणीप्रसादेन श्री काशीस्थेन बृहत् खरतर गणनाथ श्री जिनलाभ सूरि शिष्य पाठक हीरधर्मोपदेशेन प्र । श्री जिनहर्ष सूरिणा खरतर गणेश ।

[1666]*

सं० १८७७ रा धराकायां श्री रत्नपुरे श्री धर्मनाथाद्यः गणधर श्रीमद् अरिष्टाख्यानां पादाः कारिताः ओसवाल वंशे बरड़ीया बूलचंदज वेणीप्रसादेन बृहत् खरतर गणेश श्री जिनलाभ सूरि शिष्य पाठक हीरधर्मोपदेशेन । प्र । श्री जिनहर्ष सूरिणा । बृहत खरतर गणेशेन ।

[1667]

सं० १९१० वर्षे शाके १७७५ प्रवर्त्तमाने माघ शुक्ल २ तिथौ । श्री गौतम स्वामी जी पादन्यासौ । प्र । भ । श्री जिनमहेंद्र सूरिभिः । का । गा० श्री अगरमल्ल पुत्र छोटण-लालेन आणंदपुरे ॥ श्री ॥

[1668]

सं० १९१० वर्षे शाके १७१५ प्रवर्त्तमाने माघ शुक्ल २ तिथौ सोमवासरे श्री जिनकुशल सूरीणां पादन्यासौ प्रतिष्ठितः भ । श्री जिनमहेंद्र सूरिभिः का । गां । श्री वेणीप्रसा-दांगज छोटणलालेण आणन्दपुरे ।

पाषाण की मूर्त्तियों पर ।

[1669]

सं । १६६७ का ''' अभिनंदन ''' । जं । सु । प्र । भट्टारक श्री जिनचंद्र सूरिभिः ।

[1670]

सं । १६७५ वैशाष सुदि १३ शुक्रे श्री बृहत् खरतर संघेन कारितं श्री अजितनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं श्री जिनराज सूरिभिः युगप्रधान श्री जिनसिंह सूरि शिष्यैः ।

---

* किन्नर यक्ष और कंदर्पा देवी मूर्त्तियों पर भी ऐसे ही लेख हैं ।

[1671]

॥ सं । १८९३ शाके १७५८ प्र । माघ सुदि १० बुध वासरे श्री पादलिप्त नयरे श्री अभिनंदन बिंबं कारितं श्री बृहत् खरतर गच्छे भ । जं । यु । श्रीमहेंद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

[1672]

सं । १८९३ माघ सुदि १० बुध वासरे श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं बृहत्खरतर गच्छे प्रतिष्ठितं जं० यु० प्र० भ० श्री जिनमहेंद्र सूरिभिः ।

[1673]

॥ सं० १९१० वर्षे शाके १७७५ प्रवर्त्तमाने माघ शुक्ल २ तिथौ श्री पार्श्वनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं भ० श्री जिनमहेंद्र सूरिभिः कारितं वमा (?) गोत्रीय श्री हुकुमचंद तत्पुत्र अगरमल्ल तद्भार्या बुध तया श्रेयोर्थमाणंदपुरे ।

धातु की मूर्त्ति पर ।

[1674]

सं० १९२० मि० फा० कृष्ण २ बुधे डूगड़ प्रतापसिंह भार्या महताब कुंवर का० विहर-मान अजित जिन २० बिंबं श्री अमृतचंद्र सूरि राज्ये वा० भानश्चंद्र गणिना ।

फैजाबाद ।

श्री शांतिनाथजी का मंदिर । महल्ला – पालखीखाना ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1675]

ॐ सं० १४६१ वर्षे जेठ सुदि १० शुक्रे प्रा० श्रेष्ठि लाषा भा० देवल पु० जेसा भ्रातृव्य पीचनाम्न्यां स्वश्रेयसे श्री पद्मप्रभ बिंबं का० प्रति० पिप्पल गच्छे श्री वीरप्रभ सूरिभिः ॥

[1676]

सं० १४९९ वर्षे फागुण वदि २ गुरौ श्रीमाल ज्ञातीय श्री एलहर गोत्रे शा० दया- संताने सा० पूनात्मज म० मिच्चाकेन भ्रातृ डोडाप्रभृतिपरिवारयुतेन श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं श्री बृहद् गच्छे श्री मुनीश्वर सूरि पट्टे प्र० रत्नप्रभ सूरिभिः।

धातु की मूर्त्ति पर।

[1677]

सं० १६६४ वर्षे राय पालक० मु० पा० प्र० तप ....।

पट्ट पर।

[1678]

सं १६७२ भाद्र सुदि ११ श्री चंद्रप्रभ जिन बिंबं॥ वीरदास प्रणमति। ठः ठः॥

पाषाण के चरणों पर।

[1679]

सं० १८७९ फाल्गुण शुदि ४ वार शनि अयोध्या नगरे बंगलावसति वास्तव्य ओस वंशे नखत गोत्रीय जोरामल तत्पुत्र बषतावरसिंघ तत्पुत्र कनईयालालादिसहितेन श्री जिन- कुशल सूरि पादुका कारितं। प्रतिष्ठितं बृहत् भट्टारक खरतर गच्छीय श्री जिनचंद्र सूरिभिः कारक पूजकानां भूयसि वृद्धितरां भूयात्॥

[1680]

सं० १८७९ मि। फा। सु० ४ श्री जिनकुशल पादौ। प्र। श्री जिनचंद्र सूरिभिः।

चंद्रावती ।

यह तीर्थ बनारस से ७ कोस पर गंगा के किनारे अवस्थित है। आठवें तीर्थंकर चंद्रप्रभस्वामी का इसी चंद्रावती नगरी में च्यवन, जन्म, दीक्षा और केवलज्ञान ये ४ कल्याणक हुए हैं।

पाषाण के चरण पर।

[1681]

श्री वाराणसी नगरीस्थित समस्त श्री संघेन श्री चंद्रावत्यां नगर्य्यां श्री चंद्रप्रभु सुनाम ८ म जगनाथानां चरण न्यासः समस्त सर्व सूरिभिः प्रतिष्ठितं। संवत् १८६० मिति आषाढ़ मासे शुक्क पक्षे ११ वार शुक्रवार शुभं।

पाषाण की यक्ष मूर्त्ति पर।

[1682] *

संवत् १९१३ फाल्गुण शुक्क सप्तम्यां विजय यक्ष मूर्त्ति प्रतिष्ठितं। भट्टारक। युगप्रधान श्री जिनमहेंद्र सूरिभिः कारिता च काशीस्थ श्री श्वेताम्बर श्री संघेन।

[1683]

सं०। १८८८ माघ शुदि ५ सोमे श्री जिनकुशल सूरि चरण कमलं कारितं श्री-मालान्वये फोफलिया गोत्रीय वषतमल्ल पुत्र दिलसुखरायेण प्र। बृ। भ। खरतर ग। श्रीजिन-चंद्र सूरिभिः श्री जिनोदय सूरि पदस्थैः।

शिलालेख।

[1684]

श्री दादाजी महाराज के मंदिरजी का जीरणउद्धार। लक्ष्मीचंद राखेचा की लड़की छोटी बिबि की तरफ से बनाया। भादो सुदि ४ शुक्रवार सम्वत् १९५२।

---

* ज्वाला देवी की मूर्ति पर भी इसी प्रकार का लेख है।

[1685]

श्री संवत् १८९१ शाके १७५७ माघ शुक्ल १५ सोमवार पुष्यनक्षत्रे आयुष्यमाण योगे चोरडिया गोत्रोत्पन्न लाला मन्नुलालजी बुधसिंहेन निर्मिता विश्रामस्थान।

[1686]

॥ सं। १८९४ वर्षे शा १७५९ माघ शुक्ला ४ चतुर्थ्यां चंद्रवासरे श्रीमालान्वये फोफलिया गोत्रे सा। श्री षुसवषतरायजी तत्सुतौ दिलसुखराय .... चाभिधानौ श्री चंद्रप्रभ कल्याणकभूम्यां चंद्रावती पूर्यां धर्मशाला कारापिता संघार्थं।
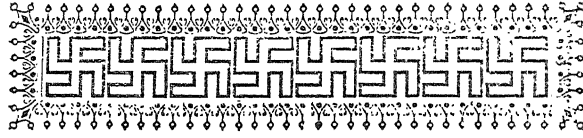
श्री सम्मेदशिखर तीर्थ।

मधुबन – जैन श्वेताम्बर मन्दिर।

पंचतीर्थियों पर।

[1687]

सं० १२१० आषाढ़ सुदि ९ सोमे श्री पंडेरक गच्छे .... प्रतिमा कारिता वसु ....।

[1688]

संवत् १२३५ वैशाख सुदि ३ बुधे तंगकीय सोहि सुत पीत श्रावकेण स्वश्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ प्रतिमा कारिता। .... श्री पूर्णचन्द्र सूरिणा।

[1689]

संवत् १२४२ वैशाख सुदि ४ श्री थारापद्रीय गच्छे श्री जीवदेव सूरि पितृश्रेयोर्थं सूरि श्रेयोर्थं श्री० टाणाकेन कारितं।

[1691]

संवत् १४९६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० बुधे श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० कर्मसी जार्या मटकू सुत गुणीआकेन स्वकुलश्रेयसे श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं। श्री बृहत्तपापक्षे श्री ज्ञानकलश सूरि पट्टे श्री विजय तिलक सूरिजिः।

[1692]

सं० १५५३ वर्षे वैशाष वदि ११ शुक्रे उकेश वंशे सा० पनरबद जार्या मानू पुत्र साह वदा सुश्रावकेण जार्या धनाई पुत्र कुंरपाल सोनपाल प्रमुखसहितेन श्री वासुपूज्य बिंबं स्वश्रेयोर्थं कारितं। प्रतिष्ठितं श्री बृहत् खरतर गछनायक श्री जिनसमुद्र सूरिजि ।

[1693]

संवत् १५७० वर्षे माह वदि १३ बुध दिने सुराणा गोत्रे। सं० केसव पुत्र सं० समरथ जार्या सं० सोमलदे पु० सं० पृथीमल्ल महाराज कर्म्मसी धर्मसी युनेन श्री अजितनाथ बिंबं कारितं मातृपितृपुण्यार्थं आत्मश्रेयसे प्रतिष्ठितम्। श्री धर्मघोष गछे जट्टारक श्री श्री नंदिवर्द्धन सूरिजिः॥

चौवीसी पर।

[1694]

सं० १२२७ वैशाख शु० ३ गुरौ नंदाणि ग्रामेन्या श्राविकया आत्मीय पुत्र लूणदे श्रेयोर्थं चतुर्विंशति पट्टः कारिताः। श्री मोढ गछे बप्पजट्टि संताने जिनजद्राचार्यैः प्रतिष्ठितः।

[1695]

सं० १५०७ प्रा० सा० पाल्हणसी जा० जोटू सुत सा० राजाकेन जा० मंदोअरि सुत सीहा करुआदिकुटुम्बयुतेन श्री कुन्थुनाथ सपरिकर चतुर्विंशति पट्टः कारितः प्रतिष्ठितः श्री सोमसुन्दर सूरि शिष्य श्री रत्नशेखर सूरिजि॥ ७॥ श्री॥

जलमंदिर ।

पंचतीर्थि पर ।

[1696]

सं० १५११ पोष वदि ६ गु० मंत्रीश्वर गोत्रे श्री हुंबड़ ज्ञाति गारुडिया भा० पूजू सु० समेत भा० सहनल दे सु० समधर सोमा श्रेयोर्थं भा० पाल्हण नाल्हा एतैः श्री आदिनाथ बिंबं कारितं वृद्धतपा भ० श्री रत्नसिंह सूरिभिः प्रति० ॥

श्री पावापुरी तीर्थ ।

मंदिर प्रशस्ति ।

शिलालेख ।

[1697]

(१) ॥ ऍ ॥ स्वस्ति श्री संवति १६९८ वैशाख सुदि ५ सोमवासरे । पातिसाह श्री साहिजांह सकलनूर

(२) मंडलाधीश्वर विजयिराज्ये ॥ श्री चतुर्विंशतितमजिनाधिराज श्री वीरवर्द्धमान स्वामी

(३) निर्वाण कल्याणिक पवित्रित पावापुरी परिसरे श्री वीरजिनचैत्यनिवेशः । श्री

(४) ऋषभ जिनराज प्रथम पुत्र चक्रवर्ती श्री भरत महाराज सकलमंत्रिमंडलश्रेष्ठ मंत्रि श्रीदलसन्तानीय म०

PAWAPURI TEMPLE PRASHASTI
Dated V. S. 1698 (1641 A.D.)

(५) हतिश्राण ज्ञातिशृङ्गार चोपड़ा गोत्रीय संघनायक संघवी तुलसीदास भार्या निहा-
लो पुत्र सं० संग्राम ।

(६) लघुभ्रातृ गोवर्द्धन तेजपाल भोजराज । रोहदीय गोत्रीय मं० परमाणंद सपरिवार
महधा गोत्रीय विशेष धर्म्म ।

(७) कर्म्मोद्यम विधायक ठ० डुलीचंद काछड़ा गोत्रीय मं० मदनस्वामीदास मनोहर
कुशला सुंदरदास रोहदिया ।

(८) मथुरादास नारायणदासः गिरिधर सन्तादास प्रसादी । वार्त्तिदिया गो० गूजरमल्ल
बूदड़मल्ल मोहनदास ।

(९) माणिकचन्द बूदमल्ल जेठमल्ल ठ० जगन नूरीचन्द । नान्हरा गो० ठ० कल्याणमल्ल
मलूकचन्द सभा-

(१०) चन्द । संघेला गोत्रीय ठ० सिंभू कीर्त्तिपाल बाबूराय केसवराय सूरतिसिंघ ।
काछड़ा गो० दयाल-

(११) दास भोवालदास कृपालदास मीर मुरारीदास किलू । काणा गोत्रीय ठ० राजपाल
रामचन्द ॥

(१२) महधा गो० कीर्त्तिसिंघ रो० छबीचन्द । जाजीयाण गो० मं० नथमल्ल नंदलाल
नान्हड़ा गोत्रीय ।

(१३) ठ० सुन्दरदास नागरमल्ल कमलदास ॥ रो० सुन्दर सूरति मूरति सबल कृती प्रताप
पाहड़िया ।

(१४) गो० हेमराज भूपति । काणा गो० मोहन सुखमल्ल ठ० गढ़मल्ल जा० हरदास पुर-
सोत्तम । मीणवा-

(१५) ण गो० बिहारीदास बिंडु । मह० मेदनी भगवान गरीबदास साहरेणपुरीय जीवण
वजागरा गो० ।

(१६) मलूकचन्द जूऊ गो० सचल बन्दी संती । चो० गो० नरसिंघ हीरा घरमू उत्तम
वर्द्धमान प्रमुख श्री ।

(१७) विहार वास्तव्य महतीयाण श्री संघेन कारितः तत् प्रतिष्ठा च श्री बृहत् खरतर गच्छाधीश्वर युगप्रधान श्री ।

(१८) जिनसिंह सूरि पट्टप्रभाकर युगप्रधान श्री जिनराज सूरि विजयमान गुरुराजानामादेशेन कृत ।

(१९) पूर्वदेश विहारे युगप्रधान श्री जिनचन्द्र सूरि शिष्य श्री समयराजोपाध्याय शिष्य वा० अभयसुन्दर ग-

(२०) णि विनेय श्री कमललाभोपाध्यायैः शिष्य पं० लब्धकीर्त्ति गणि पं० राजहंस गणि देवविजय ग-

(२१) णि थिरकुमार चरणकुमार मेघकुमार जीवराज सांकर जसवन्त महाजलादि शिष्य सन्ततिः सपरिवार्यैः । श्रीः ।

क्षत्रियकुण्ड । *

पंचतीर्थी पर ।

[1698]

संवत् १५५३ वर्षे माह सुदि ५ दिने । बारडेचा गोत्रे सा० कोहा भा० सोनी पु० साह सीहा सहजा सीहा भा० हीरू श्रेयसे श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री कोरंट गच्छे श्री नन्न सूरिभिः ॥

* 'लछवाड़' ग्रामसे १ कोस दक्षिण में छोटे पहाड़ पर यह स्थान है। श्वेताम्बर सम्प्रदाय वाले २४ वें तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी के च्यवन, जन्म और दीक्षा ये ३ कल्याणक इसी स्थान में मानते हैं। वहां के लोग इसको 'जलम थान' कहकर पुकारते हैं। पहाड़ के तलहटी में २ छोटे मन्दिर हैं। उन में श्री वीर प्रभु की श्याम वर्ण के पाषाण की मूर्तियां हैं। पहाड़ पर मन्दिर में भी श्याम पाषाण की मूर्ति है और मन्दिर के पास ही एक प्राचीन कुण्ड का चिह्न वर्तमान है।

लछवाड़ ।

धातु की मूर्ति पर ।

[1699]

॥ सं० १९२० मि० फाल्गुन कृ० २ बुधे मारू गो० केसरीचंद भार्या किसन बिबि वीर जिन बिंबं का । जं । यु । भ । श्री जिनहंस सूरि राज्ये उ । सं । ग । च । प्रति० ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1700]

सं० १५१३ । वै० सुदि ५ गुरौ श्री हुंबड़ ज्ञातीय फडो शिवराज सुत महीया श्रेयसे भ्रातृ हीयकेन भ्रातृज कुहूया युतेन श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्रति० बृहत्तपा पक्षे श्री श्री रत्नसिंह सूरिभिः ॥

[1701]

सं० १९२० फा० कृ० २ बुधे प्रतापसिंह दूगड़ गोत्रे भार्या महताब कुंवर श्री सुमति जिन पंचतीर्थी का० प्र० । सदालाभ गणिना श्री जिनहंस सूरि राज्ये ।

यंत्र पर ।

[1702]

सं० १९३२ ज्येष्ठ शुक्ल १२ शनिवासरे श्री नवपद यंत्र कारितं ओस वंशे दूगड गोत्रे श्री प्रतापसिंह तत्पुत्र रायबहादुर धनपत्सिंहेन कारितं प्रतिष्ठितं विजयगच्छे भ० श्री शांति-सागर सूरिभिः ।

[1703]

सं० १९३२ का ज्येष्ठ शुक्ल १२ द्वादश्यां शनिवासरे नवपद यंत्र........का० मकसूदा-बाद वास्तव्य ओस वंशे दूगड गोत्रे बाबू प्रताप सिंह तत्पुत्र राय बहादुर लछमीपतसिंह रायबहादुर धनपतसिंह ने कारितं विजय गच्छे श्री शांतिसागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

चन्दनचौक ।

मन्दिर का शिला लेख ।

[1704]

१ । ॐ ॥ संवत् १३४४ वर्षे आ-
२ । षाढ़ सुदि पूर्णिमायां देव श्री ने-
३ । मिनाथ चैत्ये श्री कल्याण ....
४ । यस्य पूजार्थं श्रे० सिरधर । त-
५ । त्पुत्र श्रे० गांगदेवेन वीस....
६ । ल प्रीय द्रमाणं ९२० श्री नेमि
७ । नाथ देवस्य भांडागारे निक्षि-
८ । सं वृद्ध फल भोगेन सम्प्रति द्र-
९ । ....३३ प्रदत्तं पूजार्थं आचंद्र-
१० । कालं यावत् शुभं भवतु श्री ॥

मूर्त्ति के चरण चौकी पर ।

[1705]

१ । गुणदेव भार्या जइतसिरि साल्हू-
२ । पुत्र दशरा पूना लूणावी ... कम-
३ । रेवता हरपति कर्मंद राणा क-
४ । मंट पुत्र खीमसीह तथा धीर-
५ । देव सुत अरसीह तत्पुत्र वस्तु-
६ । पाल तेजःपाल प्रभृति सकल-
७ । कुटुंब सामस्त्येन श्रे० गांग-
८ । देवेन कारितानि ।

रत्नपुर - मारवाड़ ।

जैन मंदिर ।

शिला लेख ।

[1706]

१। सं० १३४३ वर्षे माह सुदि १० शनौ रत्नपु–
२। रे श्री पार्श्वनाथ चैत्ये श्री उसिवाल ज्ञातीय व्यवसीं–
३। ह गठ सुतयासी पुत्रादि सरोराज हसिकया व्यव महि–
४। चण जार्यया महणदेव्या स्वात्म श्रेयसे कारितं श्री श्रा–
५। दिनाथ बिंबस्य नेत्रक निमित्तं श्री पार्श्वनाथ देव जांडा–
६। गारे क्षिप्त वीसल प्रिय द्रम्म २० तथा सं० १३४६ माह सुदि
७। १५ पूर्णिमायां कल्याणिक पंचकनिमित्तं क्षिप्तं द्र १० उ
८। जयं द्र ३० अमीषां द्रम्माणां व्याजे शतं मासं प्रति द्र २०
९। विशति द्रम्मा पूर्म्वाणां व्याजेन नवकं करणीयं दश द्रम्मा–
१०। णां व्याजेन कल्याणिकानि करणीयानि शुभं जवतु ।

मूर्तियों पर ।

[1707]

१ देव श्री शान्तिनाथ
२। दीसावाल न्याती सुरमा–
३। णपुर वास्त (व्य) साधु रतन
४। सुत सा० हापु जलगे

[1708]

१। ॐ ॥ सं० ॥ १३३० फागुण सुदि १० गुरौ । अद्येह रत्नपुर श्री षंडेर गछ श्री
२। ....महं मदन पुत्रमहं डूंगरसीहेन
३। ....श्रे

४। योर्थं श्री जिनेन्द्रस्य बिंबं--कारितं ॥ प्र०

५। श्री यशोभद्र सूरि संताने श्री सुमति सूरिभिः ॥ शुभं भवतु ॥

गांधाणी (मारवाड़)।

प्राचीन जैन मंदिर।

धातु की मूर्त्ति पर

[1709] *

(१) ॐ ॥ नवसु शतेष्वब्दानां । सप्त(त्रिं)शदधिकेष्वतीतेषु । श्रीवच्छलांगभीभ्यां । ज्येष्ठार्यभ्यां

(२) परमभक्तया ॥ नाभेय जिनस्यैषा ॥ प्रतिमा ऽषाढ़ार्द्धवास निष्पन्ना श्रीम-

(३) तोरण कलिता । मोक्षार्थं कारिता ताभ्यां ॥ ज्येष्ठार्यपदं प्राप्तौ । द्वावपि

(४) जिनधर्म्मवच्छलौ ख्यातौ । उद्योतन सूरेस्तौ । शिष्यौ श्रीवच्छवलदेवौ ॥

(५) सं० ९३७ अषाढ़ार्द्धे ॥

---
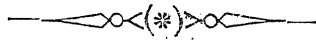
* गांव 'गांधाणी' जोधपुर से उत्तर दिशा में ९ कोस पर है। वहां तालाब पर एक प्राचीन जैन मन्दिर में यह सर्वधातु की श्री आदिनाथजी को मूर्ति है और उसके पृष्ठ पर यह लेख खुदा हुआ है। जोधपुर निवासी पण्डित रामकर्णजी की कृपा से मुझे यह लेख का छापा और अक्षरान्तर प्राप्त हुआ है। उन्होंने इस लेख पर निम्न लिखित नोटस् लिखे हैं।

पंक्ति— १। "ज्येष्ठार्य" यह पदवी वाचक शब्द ज्ञात होता है; जो पंक्ति ३ में के "ज्येष्ठार्य पदं प्राप्तौ" इस वाक्य से स्पष्ट है।

" — २। "आषाढ़ार्द्ध" पद से आषाढ़ सुदि १ और बदि १५ का भी ज्ञान हो सकता है; परन्तु यहां प्रतिपदा का सम्भव अधिक है, क्योंकि शुभ कार्य में अमावस्या वर्जित है।

" — ४। "उद्योतन सूरेः" —पट्टावली में इनके स्वर्गवास का संवत् ९९४ मिलता है परन्तु उन के पट्टाधिकारी होनेका संवत् देखने में नहीं आया। लेख से जाना जाता है कि उद्योतन सूरि संवत् ९३७ में आचार्य पद पा चुके थे। इनके समय पर्यंत गच्छ भेद नहीं था इसी लिये लेखमें गच्छ का उल्लेख नहीं है। ऐतिहासिक दृष्टिसे यह लेख बड़े महत्व का है।

सूरपुरा – नागौर ।

मालाजी के मंदिर के स्तम्भ पर ।

शिला लेख ।

[1710]

(१) संवत् १२१५ पोस व-
(२) दि १ श्री नेमिनाथचैत्ये
(३) .... पुत्र्या धाहरु ना-
(४) र्थया देवधरमात्रा सू
(५) हवाभिधानया आत्म श्रे-
(६) योर्थं स्तंभद्वयं दत्तं ॥

[1711]

(१) संवत् १२३९ पोस व-
(२) दि १ श्री नेमिनाथचैत्ये
(३) ...... पुत्र्या धाहरु ना-
(४) र्थया देवधरमात्रा सू-
(५) हडाभिधानया आत्म श्रे-
(६) योर्थं स्तंभद्वयं दत्तं ॥
(७) मूल्ये द्र १० ॥ सर्व शु-
(८) द्धं ॥

उसतरां – नागौर ।

शिला लेख ।

[1712]

(१) संवत् १६४४ वर्षे फागुण वदि १५ उपकेश ज्ञातीय बाहणा गोत्रे ।
(२) ......
(३) संभवनाथ ..... तपागछ श्री श्री हीरविजय सूरि ।

नगर - मारवाड ।

मूर्त्तियों के चरणचाकी पर ।

दाहिने तर्फ ।

[1713] *

१। ॥ ॐ ॥ संवत् १२७२ वर्षे आषाढ़ सुदि ७ रवौ श्री नारदमुनि विनिवेशोते श्री नगर-
वरमहास्थाने सं० ७०

२। ७२ वर्षे अतिवर्षाकालवशादतिपुराणतया च आकस्मिक श्री जयादित्य देवीय
महाप्रसाद विनष्टायां ।

३। श्रीराजुलदेवी मूर्त्ते पश्चात् श्रीमत् पत्तन वास्तव्य प्राग्वाट ठ० चंडपात्मज ठ० श्रीचंड-
प्रसादांगज ठ० श्री सो- ।

४। मतनुज ठ० श्री आसाराजनन्दनेन ठ० श्री कुमारदेवीकुक्षिसंभूतेन महामात्य श्री
वस्तुपालेन स्वभार्या म-

५। हं श्री स ..... पुण्यार्थमिहैव श्री जयानित्य देवपत्न्या श्री राजलदेव्या मूर्त्तिरियं कारिता
॥ शुभमस्तु ॥

बायें तर्फ ।

[1714]

१। ॥ ॐ ॥ संवत् १२७२ वर्षे आषाढ़ सुदि ७ रवौ श्री नारद मुनि विनिवेशीते श्री नगर
वर महास्थाने सं० ७०७२ वर्षे अ-

२। तिवर्षाकालवशादतिपुराणं तया च आकस्मिक श्री जयादित्य देवीय महाप्रसाद
पतन विनष्टायां श्री रत्नादेवी मूर्त्तौ

३। पश्चात् श्री मत् पत्तन वास्तव्य प्राग्वाट ठ० श्री चण्डपात्मज ठ० श्री चण्डप्रसादाङ्गज
ठ० श्री सोमतनुज ठ० श्री आसाराजनन्द-

---

* श्री भीड़भंजन महादेव के मंदिर में सूर्य के मूर्ति के दोनों तर्फ स्त्री मूर्तियों के चरणचौकी पर यह लेख है ।

४। नेन ठ० श्री कुमारदेवीकुक्षिसम्भूतेन महामात्य श्री वस्तुपालेन स्वभार्या मध्याः ठ० कन्हड पुत्र्याः ठ० संपू कुक्षिभवा

५। याः महं श्री ललिता देव्या पुण्यार्थमिहैव श्री जयादित्य देवपत्न्या श्री रत्ना देवी मूर्त्तिरियं कारिता ॥ शुभमस्तु ॥ ७ ॥

नगर - खेडगढ़ ।

श्री शान्तिनाथजी का मन्दिर । *

[1715]

१। ॐ संं० १६६६ वर्षे । भाद्रपद शुक्लपक्षे । श्री द्वितीया दिने । शुक्रवारे । वीरमपुर वरे । श्री शान्तिनाथ प्रासाद

२। भूमि यह । श्री खरतर गच्छे । युगप्रधान श्री जिनचन्द्र सूरि विजयराज्ये । आचार्य श्री जिनसिंह सूरि यौवराज्ये । श्री

३। राउल श्री तेजसिजी विजयिराज्ये । कारितं श्री संघेन ॥ लिखितं वा० श्री गुणरत्न गणिना विनेयेन रत्नविशालगणिना

४। सूत्रधार । चांपा पुत्र । रत्ना । पुत्र । जोधा दामा । पुत्र मन्ना । धन्ना । वर योगेन कृतं । भार्या सोमा किल पाणा । बच्छी । मेघ । श्री रस्तु ।

घाणेराव मारवाड़ ।

महावीर स्वामीका मन्दि । †

[1716]

सं० १२१३ भाद्रपद सुदि ४ मङ्गल दिने श्री दण्डनायक तैजल देव राज्ये श्रीवंश

---

* यह लेख मन्दरि के भूमिग्रह का है।

† यह मन्दिर "घाणेराव" से १॥ कोस पहाड़ पर है।

ज्ञातीय राउत महणसिंह त्रक्तिवसहत्र वाटमध्यात् । श्री महावीर देव बिंबं प्रति द्राम ४ पालसुधे दत्ताः यस्य भूमि तदा फलं ॥ से० रायपाल सुत रावनिकु महाजन कुरुपाल विना णिय सारिवाहिं ॥

अमार ।
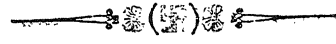
श्री पार्श्वनाथजी का मन्दिर ।

प्रशस्ति ।

[1717]

१ । ॐ नमः श्री पार्श्वनाथाय । ५ श्री ह ···· र्षे गणेशाय ····

२ । श्री मेह मुनीन्द्र गुरुभ्यो नमः ॥ स्वस्ति श्री पार्श्वनाथांघ्रिं तुष्टि

३ । हेतु स्मृतौ सतां । यौ विश्वत्रय विख्यातौ तावभिष्टप्रदौ मम ॥ १ ॥

४ । श्री मद्विक्रमतः संवत् । मुनिवाजीरसेन्दुके । १६७७ । वर्षे वैशाष मा

५ । सेंदुवृद्धिपक्षेऽर्कभूदिने ॥ २ ॥ अक्षयायां तृतीयायां रोहिणीस्थे ···· वां

६ । भवे एवं सर्व शुभेषस्ते । जीर्णः प्रसाद उद्धृतः ॥ ३ ॥ श्री मत्पार्श्वजिनेन्द्रस्य कल्या

७ । ण फलहेतवे । श्रीमत्यातमज पुर्य्यां च धुर्यायां तीर्थ संसदि ॥ ४ ॥ श्री श्री-

८ । मालीकुलांभोधि । चान्द्रेण सितकीर्त्तिना । दोसी श्री श्री जीवराजाह्व सुते-

९ । न गुणशालिना ॥ ५ ॥ सद्धर्मचारिणा हर्षादुन्नतपुरवासिना । श्रीम-

१० । रकुंअरजी नाम्ना सद्द्रव्यस्य व्ययेन च ॥ ६ ॥ साहाय्यद्वीपसंघस्य

११ । गुरुदेव प्रसादतः । जाता कार्यस्य संसिद्धिः । पुण्यैः किं किं न सि:

१२ । द्धति ॥ ७ ॥ श्रीमत्तपागणाधीश श्री हीरविजय प्रभोः । पट्टे श्री विजय

१३ । : सेन । सूरि परमभाग्यवान् ॥ ८ ॥ तत्पट्टेऽभिविराजति । सुगुणै श्री

१४ । विजयदेव सूरीन्द्रे । निष्पन्नोयं पुण्यः । प्रासादवरश्चिरंजीयात् ॥ ९ ॥ तस्य द्

१५। क्षिप दिग्नागे। सद्वंगरचनान्विते। स्तूपे श्री ऋषभस्वामी पादुकेऽत्र महाद्भु-
१६। ते ॥ १०॥ पूजनीयाः शुनाः श्लाघ्याः। गुरूणां तत्र पादुकाः कारिता मदनाख्येन। दो-
१७। सीना वालयान्विता ॥ ११॥ धर्म्मशाला विशाला च शाजारकेन निर्म्मिता। साहाय्या-
१८। दूरसंघस्य दोसीसंज्ञस्य तुष्टयेः ॥ १२ ॥ पण्डितगणमोलीमणेः। तार्क्किकसिद्धान्त-
१९। शब्दशास्त्रार्थः। श्रीमत्कल्याणकुशलं। सुगुरोश्चरणप्रसादेन ॥ १३ ॥ तच्छिष्यस्य सुबु-
२०। द्धेर्विदुषः सुयतेर्दयाकुशलनाम्नः। महतोद्यमेन कृत्यं। सिद्धं श्री नगवतः कृ-
२१। पया ॥ १४॥ रम्यो जीर्णोद्धारो। श्रीपार्श्वनाथान्वितोऽर्थ्यमानश्च। आचंद्रार्कं राजत् जी-
२२। याज्जनसुखकरो नित्यं ॥ १५ ॥ संवत् १६७७ वर्षे वैशाष सुदि ३ शनौ श्री अजपु-
२३। रे महातीर्थे जीर्णोद्धारो जातः श्रीमत्तपागछेश नट्टारक प्रनु न० श्री ५
२४। श्री विजयदेव सूरि विजयराज्ये। पं० श्री मेहमुनीन्द्र गणि शिष्य पं० श्री
२५। कल्याणकुशल गणि पं०। श्री दयाकुशल गणि शिष्येन। प्र-
२६। शस्तिरियं लिखिता गणि नक्तिकुशलेन ॥ श्री रस्तु ॥ श्रीः ॥

पाषाण की मूर्त्तियों पर। *

[1718.]

१। सं० १३४२ वर्षे माघ वदि २ शनौ श्रीमालीय हरिपालेन
२। .... सूरिनिः।

[1719]

१। सं० १३४६ वर्षे वै० सुदि २ बुधे दीशावाल ज्ञातीय मह० लाषण सुत धी-
२। रमन सुत। वासल श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ कारितं प्रतिष्ठितं श्री महेन्द्र सूरिनिः।

पंचतीर्थियों पर।

[1720]

सं० १५०० वर्षे वैशाष सुदि १५ शनौ श्री .... पदेशेन हुंबड़ ज्ञातीय ठ० अर्जुन

* ये मूर्त्तियां खण्डित है, लेख चरणचौकी पर है।

मारुतयो युत धीधा जुट्टा सुत नेमिनाथ प्रणमति ।

[1721]

सं० १५१ए वर्षे वैशाष सुदि ३ गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय मं० वाठा जार्या गोमती तया आत्मश्रेयसे श्री पद्मप्रज स्वाम्यादि पञ्चतीर्थी श्री आगम गछे श्री हेमरत्न सूरीणामुपदेशेन कारिता प्रतिष्ठिता च विधिना ।

पिंडवाड़ा-सीरोही ।

श्री महावीरजीका मन्दिर ।

शिला लेख

[1722]

(१) नीरागगन्धादिजावेन सर्वज्ञानविनायकं । ज्ञात्वा जगवतां जापं जिनानमिव पावनं ॥

(२) डोएयेयक यशोदेव देव ···· । ···· रिदं जैनं कारितं युग्ममुत्तमं ॥

(३) जयशतपरम्परार्जित गुरुकर्मराजो ···· कारापितां परदर्शनाय शुरूं सज्ज्ञानचरणलाजाय ॥

संवत् ए(७?)४४ ।

ॐ साक्षात्पिता महन व विश्वरूपविनायिना । शिल्पिना गोपगार्गेन कृतमेतज्जिनरूयम् ॥

खीमत-पालणपुर।

जैन मंदिर।

मूर्त्तिकी चरणचौकी पर।

[1723]

१। ॐ० ॥ सं० १२१५ वैशाष वदि ४ शुक्रे खीमंत स्थाने प्राग्वाट वं-
२। शीय श्रे० आसदेव भार्यया दमति श्राविकया स्वपुत्र जसचन्द्र देवय
३। तत् पुत्र पूना अजयडषह प्रति समस्तमानुषसमेतया आ-
४। त्मश्रेयसे श्री महावीर जिनयुगलं कारितं सूरिभिः प्रति(ष्ठितं)।

श्री तारंगा तीर्थ।

श्रीअजितनाथ स्वामीजी का मंदिर।

सहस्त्रकूट के चरण पर।

[1724]

श्री शाश्वता परमेश्वर ४ श्री चौवीस तीर्थंकर २४ श्री वीस विहरमाण २० श्री गणधरना १४५२ सर्वमलिने संख्या पनरसो जोड़ाथि थई सहि। सं० १७७२ वर्षे माघ सुदि ७ शुक्रे श्री तारंगाजी दुर्गे। श्री श्री विजयजिनेन्द्र सूरि प्रतिष्ठितं तपा गच्छे। सा० करमचन्द मोतीचन्द सुत पनाचन्द करापितं। वीसनगर वास्तव्य।

पंचतीर्थियों पर।

[1725]

सं० १५०९ वर्षे माघ सुदि १० शनौ उकेस वंशे साहु गोत्रे सा० तुंषा भा० भूपादे

पु० सा० सातलकेन भा० संसारदे पुत्र सा० हेमादियुतेन श्री कुंथु बिंबं का० प्र० खरतर गछे श्री जिनसागर सूरिभिः ।

[1726]

सं० १५१७ वर्षे ज्यैष्ठ शुदि ६ बुधे श्री कोरंट गछे । उपकेश मड़ाहड वा० सा० श्रवण भा० राऊं पु० साल्हा भा० सांपू पु० भाऊण सहितेन स्वमातृपितृश्रेयोर्थं श्री चंद्रप्रभ बिंबं कारितं । प्रति० श्री सांवदेव सूरिभिः

[1727]

सं० १५२४ वर्षे वै० । सु० ३ त्रिघापुर वासि श्री श्रीमालि ज्ञा० म० लषमीधर भा० जासू पु० मं० जूठाकेन भा० डीरू द्वि० जसमादे प्रमु० पुत्रादि कुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्री धर्म्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं । श्री विवंदनीय गछे श्री कक्क सूरिभिः ।

[1728]

सं० १५३२ वर्षे मार्गशिर सुदि ५ दिने श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० अर्जन भा० हबकू पु० सहिजाकेन भा० मांनू सु० जूठा जावा स्वस्वपुर्वनिमित्तं कुटुंब० श्री सुमति नाथ बिंबं का० प्र० पूर्णिमापक्षे भट्टा० श्री गुणतिलक सूरि प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

[1729]

॥ सं० १५७० वर्षे माघ वदि १ श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० चुंडा भा० चांपलदे सुत वीसा धरणा वीसा भा० माणिकदे पितृमातृश्रेयसे श्री शीतलनाथ बिंबं कारितं पिप्पल गछे भ० श्री गुणप्रभ सूरि पं० श्री तिलकप्रभ सूरि प्रतिष्ठितं ॥ साचुरा ॥ छ ॥

[1730]

सं० १५८० वर्षे वैशाष सुदि १२ शुक्रे प्राग्वाट ज्ञातीय महं धना सुत महं जीवा भार्या जसमादे सुत गोगा भार्या रूपाई श्रेयोर्थं श्री धर्म्मनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री तपा गछे हेमविमल सूरिभिः पेथापुर ।

चौविशी पर।

[1731]

सं० १४८९ वर्षे आषा० शुक्ल ५ दिने प्रग्वाट ज्ञातीय मंत्रि बाहड़ सुत सिंघा भा० पूजल सुत भरुआकेन भा० कपूरीयुतेन निजश्रेयोर्थं श्री शांतिनाथ मूलनायक चतुर्विंशति पट्टः का० प्र० श्री तपागच्छाधिप श्री सोमसुन्दर सूरिभिः।

[1732]

॥ सं० १५०४ वर्षे फागुण सुदि ९ सोमे प्राग्वाट ज्ञातीय श्रेष्ठि राणा संताने श्रे० रत्ना भा० धरणू सुत पूर्णसिंहेन भार्या देमाई सहितेन तथा भ्रातृ हरिदास स्वपुत्र पासवीर युतेन श्री अजितनाथ बिंबं चतुर्विंशति पट्टः कारितः प्र० श्री साधुपूर्णिमापक्षे भ० श्री रामचन्द्र सूरि पट्टे शिष्य पूज्य श्री श्री पूर्णचन्द्र सूरीणामुपदेशेन विधिना नारु श्रावकैः॥

[1733]

सं० १५०८ वर्षे वैशाष वदि ११ दिने उपकेश ज्ञा० डागलिक गोत्रे। सा० धिना भा० वारू पुत्र संघवी पासवीरेण भा० संपूरदे सहितेन स्वश्रेयसे श्री संभवादि तीर्थकृच्चतुर्विंशति पट्टः का० प्र० श्री कोरंटगच्छे श्रीनन्नाचार्यसंताने श्री कक्कसूरि पट्टे श्री सावदेव सूरिभिः॥ श्रीः॥

नन्दीश्वरद्वीप की देहरी पर।

[1734]

सं० १८८८ महा सुदि ५ शुक्रे श्री विजयजिनेन्द्र सूरिजी नन्दीश्वरद्वीप बिंबप्रवेश प्रतिष्ठित श्रीमत्तपागच्छे श्री गाम वड़नगर दो० पानचन्द जयचन्द स्थापित।

सिहोर-काठियावाड़ ।

श्री कुन्थुनाथजी का मंदिर ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[1735]

सं० १४८० वर्षे वैशाख सुदि १२ शुक्रे प्राग्वाट ज्ञा० श्रे० रत्ना भा० रजाई पु० सं० सहस्रकिरण भार्या धरणू सुत तजदे कुटुंबयुतेन श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री हेमविमल सूरिभिः । पद्माकर वास्तव्य ॥

[1736]

सं० १५१३ वर्षे चैत्र वदि १ रवौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्र० लखरा भा० बाहू सुत नाथा वड़ीय गोत्र भा० हांसू सु० वीरा भा० वांऊलदे सुत शालु कालु वानर पत्नै जिनपितृमातृ श्रेयोर्थं श्री श्रेयांसनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं मधुकर गच्छे भ० ···· ।

[1737]

सं० १५३६ वर्षे पोष वदि ···· गुरू श्री श्रीमाल ज्ञा० श्रे० टोइया भा० लखा सुत पर्वत भ्रातृ कमि श्रेयार्थं जीविताजी श्री नमिनाथ बिंबं कारितं श्री आगमगच्छे श्री श्री सिंहदत्त सूरिभिः प्रतिष्ठितं विधिना कारितानि ।
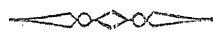
पालिताना ।

श्री सुमतिनाथजी का मन्दिर—माधोलालजी की धर्म्मशाला ।

धातु की मूर्त्तियों पर ।

[1738]

संवत् १५७५ वर्षे माह सुदि १२ शुक्रे आणंदविमल सूरि वा० चन्द्रा भाव साहबजी श्रीमजदेव (?) ···· ॥

[1739]

संवत् १६०० [पो]स वदि ५ सोम० श्रीमालज्ञातीय सा० हेमा श्रेयसे सा० नाथुजी-केन धर्म्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ॥

[1740]

संवत् १६२६ वर्षे फाल्गुण सुदि ७ सोम ऊस० शा० ठय० .... श्री सुमतिनाथ बिंबं .... हीरविजय सूरिः .... ।

[1741]

संवत् १६३० वर्षे माघ सुदि ६ दिने ह। इन्द्राणीता (?) श्री श्री आदि बिंबं का० प्र० तपागच्छे श्री विजयसेन सूरिभिः ॥

[1742]

संवत् १६७३ वै० शु० ५ शु० स .... ।

[1743]

संवत् १७०२ वर्षे मार्गशिर सुदि ६ शुक्रे श्री अंचलगच्छाधिराज पूज्य भट्टारक श्री कल्याणसागर सूरीश्वराणामुपदेशेन श्री दीव बंदिर वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय नाग गोत्रे मंत्रि विमल सन्ताने सं० कमलसी पुत्र सं० जीवा पुत्र सं० प्रेमजी सं० प्रागजी सं० आणंदजी पुत्र केशवजी प्रमुखपरिवारयुतेन स्वपितृ सं० जीवा श्रेयोऽर्थं श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं चतुर्विध श्रीसंघेन ।

[1744]

संवत् १७१२ वर्षे वैशाख सुदि ७ दिने शा० मनजी भार्या बाई मनरंगदेकेन मुनि-सुव्रत बिंबं का० प्र० श्री विजयसेन सूरि ।

[1745]

सं० १७८७ वर्षे वै० शु० १ सो[म] शा० लिमचंद भार्या विम श्री अनन्त बिंबं प्र० त० श्री विजयऋद्धि सूरि ।

[1746]

संवत् १८४... ॥ फाल्गुण सुदि २... वासरे ढदिने श्री पार्श्वनाथ बिंबं प्र० बाई खीमी जरावती ॥

[1747]

दो० बाघा श्री जीराउलाउ श्री पार्श्वनाथ ।

[1748]

बा० हीराई श्री शान्तिनाथ .. श्री हीरविजयसूरि प्र० ॥

[1749]

संवत् १९०३ वर्षे माघ विदि ५ शुक्रे श्री चन्द्रप्रज बिंबं करापितं श्रीमालि वंशे शा० अनोपचन्द तस्य जार्या बाई नाथो अंचल गछे ॥

श्री सिद्धचक्र यन्त्र पर।

[1750]

संवत् १९५४ ना वर्षे माघ विदि ५ चन्द्रे श्री तपागछे बाई फूली तस्या पुत्री वाई जवल श्री सिद्धचक्र करापितं पं० पद्माविजैः (?) प्रतिष्ठितं श्री राजनगर मध्ये।

चौबीसी पर।

[1751]

संवत् १५२३ वर्षे वैशाख विदि ७ रवौ श्री सीरूंज वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० वाला जा० मानूं सुत श्रेष्ठि समधरेण जा० जासी जा० धर्म्मादे सुता लाली प्रमुखकुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री सुमतिनाथ चतुर्विंशति पट्टः कारितः प्रतिष्ठितः श्री तपागछे श्री रत्नशेखर सूरि पट्टे गछनायक श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः।

पञ्चतीर्थियों पर।

[1752]

सं० १४३९ (?)... प्राग्वाट ज्ञातीय शा० हाला जार्या दानू सुत शा० डुंगिरेख

श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्री देवचन्द्र सूरिभिः ।

[1753]

सं० १५०३ वर्षे आषाढ़ सुदि १० शुक्रे श्री प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० पींचा भार्या लाखणदे तयोः पुत्रैः श्रे० वीरम धीटा चीगाख्यैः मातृपितृश्रेयोऽर्थं श्री मुनिसुव्रतस्वामी बिंबं कारितं प्र० तपागच्छे वृद्धशाखायां श्री जिनरत्नसूरिभिः । श्री सहूआला वास्तव्य ।

[1754]

सं० १५१२ वर्षे प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० आसपाल भा० पचू पुत्र धना भा० चमकू पुत्र माधवेन भा० वाल्ही भ्रातृ देवराज भा० रामकी देपालादियुतेन श्री सुमति बिंबं कारितं प्र० तपागच्छेश श्री सोमसुंदर सूरि श्री मुनिसुंदर सूरि श्री जयचन्द्र सूरिशिष्य श्री श्री रत्नशेखर सूरिभिः ॥ श्री ॥

[1755]

सं० १५१७ वर्षे आषाढ़ सुदि १० बुधे ऊकेश वंशे लुंकड गोत्रे शा० गुजर पु० शा० देवराज पु० आसा पु० शा० समधरेण स्वमातृ चांई पुण्यार्थं श्री कुन्थुनाथ बिंबं कारितं प्रति० श्री खरतरगच्छे श्री विवेकरत्न सूरिभिः ।

[1756]

सं० १५१७ वर्षे वैशाख सुदि १३ सखारि वासि प्रा० सा० जावड़ भा० वारू सुत हरदासेन भा० गोमती भ्रातृ देवा भा० धर्मिणियुतेन श्रेयोऽर्थं श्री सुमति बिंबं का० प्र० तपा श्री रत्नशेखर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ।

[1757]

सं० १५१७ वर्षे माघ सुदि १५ गुरु श्री श्रीमाल ज्ञातीय व्यव० गहगा भार्या वाल्ही आत्मश्रेयोऽर्थं जीवतस्वामी श्री अजितनाथ मुख्य पंचतीर्थी बिंबं कारितं श्री पूर्णिमा पक्षे श्री मुनितिलक सूरि पट्टे श्री राजतिलक सूरिणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं ॥ जाबू वास्तव्य ।

[1758]

सं० १५२१ वर्षे वैशाख सुदि ६ बुधे श्री श्रीमाल ज्ञातीय दो० गोपाल भा० सखी सु० पोमाकेन भा० जमकू श्रेयोऽर्थं श्रीसुमतिनाथ बिंबं कारितं श्री पूर्णिमापक्षे भ० श्री सागरतिलक सूरि पट्टे भ० श्री गुणतिलक सूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं ।

[1759]

सं० १५३१ वर्षे माघ वदि ७ सोमे श्रीमाल ज्ञातीय शा० राजा भा० राजलदे सु० स० शाह गिकूया भार्या राजाई तथा सु० पासा जीवायुतया स्वश्रेयसे श्री सुविधिनाथ बिंबं श्री आगम गच्छे श्री जयानन्द सूरि पट्टे श्री देवरत्न सूरि गुरुभ्यपदेशेन कारितं प्रतिष्ठापितं च ॥ शुभं भवतु ॥ श्री स्तम्भतीर्थ ॥ ७४ ॥

[1760]

सं० १५४७ वर्षे वैशाख सुदि ३ रवौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय म० देवसी भा० देल्हणदे पुत्र सहिजाकेन भा० धनी पुत्र गंगदास सचू हांसा भ्रातृ कीपा प्रमुखकुटुम्बयुतेन पितृनिमित्तं स्वश्रेयसे च श्री कुन्थुनाथ बिंबं श्री पूर्णिमापक्षे श्री सौभाग्यरत्न सूरिणामुपदेशेन का० प्र० विधिना श्री लीवाली ग्रामे ॥

[1761]

सं० १५५२ वर्षे माघ वदि १२ बुधे प्राग्वाट ज्ञातीय प० सधा भा० अमकू सु० प० मूलाकेन भा० हांसी सु० हर्षा लषा सहितेन स्वश्रेयोऽर्थं श्री सम्भवनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री वृहत्तपापक्षे भ० श्री उदयसागर सूरिभिः ॥ श्री पत्तने ॥

[1762]

सं० १६३७ वर्षे माघ वदि ९ शनौ श्री दीव वास्तव्य श्री श्रीमाल ज्ञातीय लघुशाखामण्डन श्रे० कावा भा० कामलदे सुत कक्की भार्या हर्षादे सुत सचवीर भार्या सहिजलदे सुत हीरजी भार्या हीरादे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं तपागच्छे श्री हीरविजयसूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥ ७ ॥

[1763]

सं० १६५१ वर्षे मार्गशीर्ष वदि ४ गुरौ दो० वेधराजकेन निजश्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं च तपापक्षे श्री हीरविजयसूरिश्वरैः भार्या मोलादे सुत धनजी प्रमुखकुटुम्बयुतेन श्री दीवबन्दिर वास्तव्येन ॥ श्री रस्तु ॥

[1764]

सं० १६५६ वर्षे फाल्गुण वदि २ गुरौ दीवबन्दिर वास्तव्य ओसवाल ज्ञातीय बाई मनाईकया निजश्रेयसे श्री सम्भवनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं च तपागछाधिराज परम-गुरु श्री ६ विजयसेन सूरिभिः परिकरसहितैः ।

शत्रुंजय तीर्थ ।

दिगम्बर मन्दिर ।

श्री शान्तिनाथजी की मूर्त्ति पर ।

[1765] *

सं० १६८६ वर्षे वैशाष सुदि ५ बुधे शाके १५५१ वर्त्तमाने श्री मूलसंघे सरस्वतीगछे बलात्कारकगणे श्री कुंदकुंदान्वये भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति देवास्तत्पट्टे भ० श्री भुवन-कीर्त्ति देवास्तत् पट्टे भ० श्री ज्ञानभूषण देवास्तत्पट्टे भ० श्री विजयकीर्त्ति देवास्तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्र देवास्तत्पट्टे भ० श्री सुमतिकीर्त्ति देवास्तत्पट्टे भ० श्री गुणकीर्त्ति देवास्तत्पट्टे भ० श्री वादिभूषण देवास्तत्पट्टे भ० श्री रामकीर्त्ति देवास्तत्पट्टे भ० श्री पद्मनन्दि गुरूपदे-शात् पादशाह श्री साहजांह विजयराज्ये श्री गुर्जरदेशे श्री अहमदाबाद वास्तव्य हुंबड़ ज्ञातीय बृहछाखीय वाग्वर देश स्यातरीय नगर नौतनभद्रप्रसादोद्धरणधारजाज (?) सं० भोजा भा० सं० लक्कु सं० संवस्ता भा० सं० रनादे तयोः सुत ब्रह्मचर्यव्रतप्रतिपालनेन

* यह लेख "जैन मित्र" माघ वदी २ वीर सं० २४४७ के अङ्क से मिला है।

पवित्रीकृतनिजांग सप्तक्षेत्रारोपितस्वकीयवित्त सं० लटकणा भा० सं० ललतादे तयोः सुत जिनकुलकमलविकाशनैकसूर्यावतारः दातृगुणेन नृपतिश्रेयांससमः श्री जिनबिंबप्रतिष्ठातीर्थयात्रादिधर्म्मैकर्म्मकरणौत्सुकचित्त संघपति श्री रत्नसी भा० सि० रुपादे द्वि० भा० सं० मोहणदे तृतीय भा० सं० नवरंगदे द्वितीय सुत संघवी श्री रामजी भा० सं० केशरदे तयोः सुत संघवी डूंगरसी भा० सं० झाझसदे द्वितीय सुत संघवी शुद्धमती भा० सं० मसतादे एतेषां महासिद्धक्षेत्र श्री सेत्रुंजय रत्नगिरौ श्री जिनप्रासाद श्री शांतिनाथ बिंबं कारयित्वा नित्यं प्रणमति। शुभं भवतु।

चोरवाड़-जुनागढ।

जैन मन्दिर।

शिला लेख।

[1766]

१। सुरमण्डलविशाल नगर श्री चोरवाटके रुचिरचिंतामणि पार्श्वनाथ विभोश्च पद-
रजस्य तत् सुत व-

२। सी। सायर तनयौ। आंबाख्यस्तत्र चादिमो गुणवान्। द्वितीयो मनाभिधानो जिन-
धर्म रतः कृपावासः॥ २॥ आं

३। बाख्यस्य तनुजः सुविवेकः समरसिंह इत्याह्वः। देवगुरुभक्तिपरमः तत् सूनु चैत्र-
पालाख्यः॥ ३॥ श्री

४। सं० १५२ए वर्षे वैशाख सुदि तृतीया गुरौ। श्री मंगलपुर वास्तव्य। श्री उसवाल
ज्ञातीय सोनी साय-

५। रजनदे सुत सोनी आंबा भार्या बाई सहित सुत सोनी समरसी भार्या मनाई अपर
भार्या सलबाई

६। त० सोनी जयपाल जार्या मृगाई ॥ ततः ॥ सोनी सायर जार्या बाई बाकू सुत सोनी
मना जार्या बाई
७। बरजू सुत सोनी श्रीवंत सोनी जयवंतौ। सपरिजनसहितेन ॥ सोनी समरसिंह
जार्या बाई पाह्री-
८। सहितेन ॥ एतै श्री चारवाड पुरे चर (?) ॥ निजजुजोपार्जितधनकृतार्थहेतोः ॥ श्री
चिंतामणि पार्श्वना-
९। थ चैत्यं कारापितं ॥ श्री वृद्धतपागछे जट्टारक श्री जयचन्द्र सूरि पट्टावतंस ॥ जट्टा०
श्री जिन-
१०। सूरि शिष्य महोपाध्याय श्री जयसुन्दर गणि शिष्य महोपाध्याय श्री संवेगसुन्दर
गुरूपदेशेन ॥ प्र-
११। तिष्ठितं चेति कल्याणमस्तु ॥ शुनं जवतु ॥

घोघा-काठियावाड़।

श्री सुविधिनाथजी का मन्दिर।

पंचतीर्थियों पर।

[1767]

॥ ॐ सं० ११६१ माघ ११ श्री नागेंद्रकुले श्री विजय तुंगसूरि....।

[1768]

सं० १५०३ धर्म्मप्रज सूरि त० पट्टे श्री धर्म्मशेखर सूरिजिः शुनं जवतु आराधकस्य।

[1769]

सं० १५१७ वर्षे महा सुदि ५ शुक्रे श्रेष्ठि नरपाल जा० करुई तेषां सुता सामल हेमा

रोका षीमा स्वजार्या पितृमातृश्रेयोर्थं श्री कुंथुनाथ बिंबं का० प्र० श्री आगम गछे श्री आनन्दप्रज सूरिजिः आबरणि वास्तव्य ।

[1870]

सं० १५३६ वर्षे आषाढ़ सुदि ६ श्री ओसवाल ज्ञाती सा० पाला जार्या वरुघू सुत गोविन्द जा० गंगादे नाम्ना आत्मश्रेयसे श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं प्र० बृहत्तपा पक्षे ज० जिनरत्न सूरिजिः

[1771]

सं० १५५५ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ घनौघ वास्तव्य श्री उसवाल ज्ञा० सा० गोगन जा० गुरदे सुत हांसाकेन जा० कस्तुराई सहितेन स्वश्रेयसे श्री अजितनाथ बिंबं का० श्री बृहत्तपा गछे ज० श्री धर्म्मरत्न सूरिजिः ।

[1772]

सं० १५५५ वर्षे वै० सु० ३ शनौ श्री श्रीमाल ज्ञा० मनोरद जा० मांकी सु० वाहराज जा० जीविनी सु० देवदासेन जा० दगा सु० पासा करन धर्मदास सूरदास युतेन श्री विमलनाथ बिंबं कारितं श्री अंचलगछे श्री सिद्धांतसागर सूरि गुरूपदेशात् ।

[1773]

सं० १५५७ वर्षे पोष वदि ६ रवौ घनौघ वासी श्री श्रीमाल ज्ञा० सा० माईया जा० जीवी सुत कानाकेन स्वश्रेयसे श्री नमिनाथ बिंबं का० प्र० श्री बृहत्तपा पक्षे श्री लक्ष्मी-सागर सूरिजिः । श्रेयो जवतु पूजकस्य ।

[1774]

सं० १५५३ वर्षे वै० सु० ११ शुक्रे श्री श्रीवंशे मं० माईया सुत मं० मूला जा० रमा सुश्राविकया सुत मं० धना मेघा रामा सहितया निजश्रेयार्थं श्री सुमतिनाथ बिंबं का० प्र० धर्मवल्लज सूरिजिः श्री जांबू ग्रामे ।

चौविशी पर ।

[1775]

सं० १५१२ वर्षे फा० शु० शनौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय मं० कहा भार्या राजुल सुत सिंह-राज मं० विरुपाकेन पितृमातृभ्रातृश्रेयोर्थं श्री कुंथुनाथ चतुर्विंशति जिनपट्टः का० श्री भ० गुणसुंदर सूरिभिः ।

[1776]

सं० १५२४ वर्षे आ० सुदि १० शुक्रे श्री श्रीवंशे मं० सांगन भा० सोहागदे पुत्र मं० वीरधवल भा० गुरी पु० खेतसी जन्मनाम्ना जूठाकेन मं० भार्या जयतलदे भ्रातृ काला वडघा भारपुत्र भोजा देवसी धीरा प्रमुखसमस्तकुटुम्बसहितेन तत्पितृश्रेयोर्थं श्री अंचल-गच्छेश्वर श्री जयकेसरी सूरीणामुपदेशेन श्री नमिनाथ चतुर्विंशति पट्टः का० प्र० श्री श्री-संघेन श्री सिहुंडड़ा ग्रामे ।

शीयालबेट-काठियावाड़ ।

जैन मंदिर ।

पाषाण की मूर्त्तियों पर ।

[1777]

१। ॐ संवत् १२३२ वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ रवौ अद्येह

२। टिंबानके मिहरराज श्री रणसिंह प्रतिपत्तौ समस्तसंघेन श्री महावी-

३। र बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री चन्द्रगच्छीय श्री शान्तिप्रभ सूरि शिष्यैः श्री हरिप्रभ सूरिभिः ॥

[1778]*

ए० ॥ सं० १३०० वर्षे वैशाष वदि ११ बुधे श्री सहजिगपुर वास्तव्य पल्ली० ज्ञातीय ठ० देदा भार्या कर्पूदेवी कुक्षिसंभूत परी० महीपाल महीचन्द्र तत् सुत रतनपाल त्रिजयपालैर्निजपूर्वज ठ० शंकर भार्या लक्ष्मी कुक्षिसंभूतस्य संघपति मूंधिगदेवस्य निजपरिवार सहितस्य योग्यं देवकुलिकासहितं श्री मल्लिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री चन्द्र. गच्छीय श्री हरिप्रभ सूरिशिष्यैः श्री यशोचन्द्र सूरिभिः ॥ छ ॥ मंगलमस्तु ॥ छ ॥

[1779]*

सं० १३१५ फाल्गुण वदि ७ शनौ अनुराधा नक्षत्रे अद्येह श्री मधुमत्यां श्री महावीर देवचैत्ये प्राग्वाट ज्ञातीय श्रेष्ठि आमदेव सुत श्री सपाल सुत गंधि छिबाकेन आत्मनः श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ देव बिंबं कारितं चन्द्रगच्छे श्री यशोचन्द्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं।

[1780]*

सं० १३२० माघ सुदि .... गुरौ प्राग्वाट ज्ञात .... प्र व्य० वीरदत्त सुत व्य० जाला भार्या माणिकया स्वश्रेयोर्थं रांकागच्छीय श्री महीचन्द्र सूरिभिः महावीर चैत्ये श्री ऋषभदेव बिंबं कारितं।

---

* वहां के गोरखमण्डी में भोयरे के पास पड़े हुए मूर्त्तियों पर ये लेख हैं।

JAMNAGAR TEMPLE PRASHASTI - Dated, V. S. 1697 (A. D. 1640)
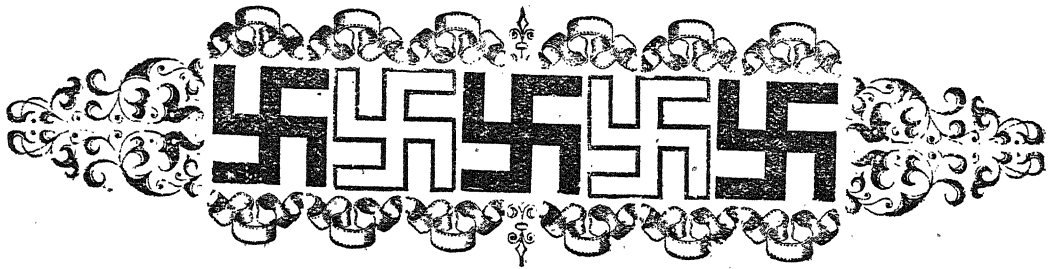
जामनगर-काठियावाड़ ।

श्री शांतिनाथजी का मन्दिर—वर्द्धमान सेठवाला ।

शिला लेख

[1781]

(शिरोभाग) जाम श्री लक्षराजराज्ये ॥

१। ॥ ए८० ॥ श्री मत्पार्श्वजिनः प्रमोदकरणः कल्याणकंदांबुदो । वि.
२। घ्नध्याधिहरः सुरासुरनरैः संस्तूयमानक्रमः ॥ सप्पीको भविनां म.
३। नोरथतरुव्यूहे वसंतोपमः । कारुण्यावसथः कलाधरमुखो नी-
४। लछविः पातु वः ॥ १ ॥ क्रीड़ां करोत्यविरतं । कमलाविलास । स्थानं
५। विचार्य कमनीयमनंतशोभं । श्री उज्जयंतनिकटे विकटाधिना.
६। थे । हालारदेश अवनि प्रमदाललामे ॥ २ ॥ उत्तुंगतोरणमनोहर-
७। वीतराग । प्रासादपंक्तिरचनारुचिरीकृतोर्वी । नंद्यान्नवीनग-
८। री क्षितिसुन्दरीणां वक्ष(:)स्थले ललति साहि ललंनिकेव ॥ ३ ॥ सौराष्ट्रना-
९। थः प्रणतिं विधत्ते । कच्छाधिपो यस्य जयाद्बिभेति । अर्द्धासनं यछति मालवेशो
१०। जीव्याद्यशोजितस्वकुलावतंसः ॥ ४ ॥ श्रीवीरपट्टक्रमसंगतोऽभूत् भाग्या-
११। धिकः श्रीविजयेंदुसूरिः । श्रीमंधरैः प्रस्तुतसाधुमार्ग्गश्चक्रेश्वरीदत्तवरप्रसा-
१२। दः ॥ ५ ॥ सम्यक्त्वमार्ग्गो हि यशोधनाह्वो । दृढीकृतो यत् सपरिछदोऽपि ।
१३। संस्थापित श्रीविधिपक्षगछः । संघैश्चतुर्धा परिसेव्यमानः ॥ ६ ॥ पट्टे तदीये ज-
१४। यसिंहसूरिः । श्री धर्म्मघोषोऽथ महेंद्रसिंहः । सिंहप्रभश्चाजितसिंहसूरि ।
१५। देवेंद्रसिंहः कविचक्रवर्त्ती ॥ ७ ॥ धर्म्मप्रभः सिंहविशेषकाह्वः । श्री मा-

---

* जामनगर का सेठ वर्द्धमान शाहका बनाया हुआ प्रसिद्ध मन्दिर का यह लेख वहां के पण्डित हीरालालजी हंसराजजी ने अपने "जैनधर्म नो प्राचीन इतिहास" नामक पुस्तक के २ य भाग के पृष्ठ १७७-१७९ में अक्षरान्तर छपवाया था, आचार्य महाराज मुनि जिनविजयजी ने अपने "प्राचीन जैन लेख संग्रह" के २ य भागमें पृष्ठ २९६ से २९८ में प्रकाशित किया है, परन्तु मूल शिलालेख की प्रत्येक पंक्तियां दोनोंमें स्पष्ट नहीं है इस कारण यहां पुनः प्रकाशित किया गया।

१६। न् महेंद्रप्रभसूरिरार्य्यः ॥ श्रीमेरुतुंगोऽमितशक्तिमांश्च । कीर्त्यद्भुतः श्री ज-
१७। यकीर्त्ति सूरिः ॥ ८ ॥ वादिद्विपौघे जयकेसरीशः । सिद्धांतसिंधुर्भुवि भा-
१८। वसिंधुः । सूरीश्वरश्रीगुणशेवधिश्च । श्री धर्म्ममूर्त्तिर्मधुदीपमूर्त्तिः ॥ ए ॥
१९। यस्यांघ्रिपंकजनिरंतरसुप्रसन्नात् । सम्यक्फलंतिभगनोरथवृक्षमालाः ॥ श्री-
२०। धर्म्ममूर्त्तिपदपद्ममनोज्ञहंसः । कल्याणसागरगुरुर्जयताद्धरित्र्यां ॥ १० ॥
२१। पंचाणुव्रतपालकः स करुणः कल्पद्रुमाभः सतां । गंभीरादिगुणोज्वलः शु-
२२। भवतां श्रीजैनधर्म्मे मतिः । द्वे काव्ये समतादरः क्षितितले श्री ऊसवंशे विभुः
२३। श्रीमल्लालणगोत्रजो वरतरोऽभूत् साहि सींहानिधः ॥ ११ ॥ तदीय पुत्रो हरपालना-
२४। मा देवाच्चनंदोऽथ स पर्वतोऽभूत् । वभुस्ततः श्रीअमरात्तु सिंहो । भाग्याधिकः कोटि-
२५। कलाप्रवीणः ॥ १२ ॥ श्रीमतोऽमरसिंहस्य । पुत्रामुक्ताफलोपमाः । वर्द्धमानचांपसिंह
२६। पद्मसिंहा अमीत्रयः ॥ १३ ॥ साहि श्री वर्द्धमानस्य । नंदनाश्चंदनोपमाः । वीराह्वो
२७। विजपालाख्यो भामो हि जगडूस्तथा ॥ १४ ॥ मंत्रीश पद्मसिंहस्य । पुत्रारत्नोपमा
त्रयः ।
२८। श्रीश्रीपालकुंरपाल । रणमल्ला वरा इमे ॥ १५ ॥ श्रीश्रीपालांगजो जीया । न्नारायणो
मनो-
२९। हरः । तदंगजः कामरूमः कृष्णदासो महोदयः ॥ १६ ॥ साहि श्रीकुंरपालस्य । वर्त्तंते
ऽन्व-
३०। यदीपकौ । सुशीलस्थावराख्यश्च । वाघजिद्भाग्यसुन्दरः ॥ १७ ॥ स्वपरिकरयुताभ्याम-
मात्य-
३१। शिरोरत्नाभ्यां साहि श्रीवर्द्धमानपद्मसिंहाभ्यां हल्लारदेशे नव्यनगरे जाम श्रीशत्रु-
शल्यात्मज
३२। श्री जसवन्तजी विजयिराज्ये श्री अंचलगच्छेश श्री कल्याणसागर सूरीश्वराणामुप-
देशेनात्र श्री शां-
३३। तिनाथप्रासादादिपुण्यकृत्यं श्रीशांतिनाथप्रभृत्येकाधिकपंचशतप्रतिमाप्रतिष्ठायुगं कारा-

३४। पितं चाचा सं० १६७६ वैशाख शुक्ल ३ बुधवासरे द्वितीया सं० १६७० वैशाख शुक्ल ५ शुक्रवासरे

३५। सं० १६०७ मार्गशीर्ष शुक्ल ३ गुरुवासरे उपाध्याय श्रीविनयसागरगणेः शिष्य सौभाग्यसागरैः

(अधो भाग)

३६। रखेखीयं प्रशस्तिः ॥ मनमोहनसागरप्रासाद

(वाम भाग)

३७। मंत्रीश्वर श्रीवर्द्धमान पद्मसिंहाभ्यां सप्तलक्षरूप्यमुद्रिकाव्ययीकृतानवक्षेत्रेषु साहि श्रीचांपसिंहस्य पुत्रैः श्रीअमियाभिधः। तदंगजौ शुद्धमती। रामभीमाबुभावपि १० ॥

श्री आदीश्वरजी का मन्दिर।

[1782]

१। ॐ श्री गौतमस्वामीनि लब्धि ॥ भ-

२। ट्टारक चक्रवर्त्ति भट्टारक श्री

३। हीरविजय सूरीश्वर चरण पादु

४। काभ्यो नमः ॥ सं० १६३३ वर्षे परम

५। गुरु श्रीमत्तपागच्छाधिराज सकल-

६। भट्टारकपुरंदर भट्टारक श्री हीरवि-

७। जय सूरिराज्ये तथा जाम श्री शत्रुशल्ल

८। राज्ये प।श्रीरविसागर गणि विशिष्यो

९। पदेशेन नवीननगर सकल संघ मु-

१०। ख्यसंघेन स्वश्रेयसे नवीनशिख-

११। रं बध्वा प्रासादः कारितः ॥ ततो अक-

१२। वर सुरत्राण प्रेषित मुग्गलैरुप-

१३। द्रवकरणान्तरं भट्टारक श्री श्री

१४। हीरविजय सूरि पट्टोदयाद्रिदिन-

१५। कर भट्टारक श्री ५ श्री विजय से-

१६। न सूरिराज्ये ॥ सं० १६५१ वर्षे

१७। श्री श्रीमाली ज्ञातीय। भणसाली

१८। आणन्द भणसाली अबजीभ्यां

१९। भणसाली आणन्द सुत जीवरा-

२०। ज मेघराज प्रमुखसकलकुटुं-

२१। बयुताभ्यामेक त्रिंशत् सहस्र

२२। ३१००० रोप्य मुद्राव्ययेन पुनर-

२३। पि तथैव कारितं। सांप्रतं विज-

२४। यमान आचार्य श्री श्री श्री ३ श्री

२५। विजयदेव सूरीश्वर प्रसादात् । २६। चिरं तिष्टतु । शिवमस्तु सकल सं-
२७। घस्य ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ आदिनाथ २८। भावां कृतः । प्रासादनामविजयभूषणः
प्रासादः

तालाजा–काठियावाड ।

पाषाण के चरणचौकी पर ।

[1783]*

ॐ सं० १३०२ वैशाख सु० ३ धवल्लकक्का वास्तव्य ठ० पदमसीह सुत ठ० जाला ठ० मदन जयता तेन ॥ ठ० मदन भार्यां ठ० लक्ष्मा देवी श्रेयोर्थं सुत ठ० पाल्हणेन श्री महा-वीर बिंबं पट्टकं च प्रतिष्ठितं आचार्य श्री माणिक्य सूरिभिः ।

[1784]

१। सं० १३१९ वर्षे दण्ड श्री धांध प्रभृति पञ्चकुलेन श्री मुनिसुव्रतस्वामी देवा
२। .... णि .... पा विशेषपूजाप्रत्ययमण्डपिकायां प्रतिवर्षां हो
३। .... द्र (२) ४ चतुर्विंशतिद्रम्मा: । द्र० खवमादेश. । बहुभिर्वसु
४। [धा भुक्ता] राजभिः सगरादिभिः । यस्य यस्य यदा भूमि तस्य तस्य
५। तदा फलं ॥ १ ॥ तथा समस्तप्रमदाकुलाय अ .... पूर्णिमादि
६। .... (रके) ४ चत्वारि द्रमाश्च ॥ पञ्चकुलसमक्षे देवद....
७। .... द्र ४ पींजाम—द्र ३४ रक्तपटा
८। —मगाय

* यह लेख तलाजा से पूर्व में हजूरापीर की कबर से मिली हुई मूर्त्तिरहित पाषाण की चरण चौकी पर है और भावनगर बार्टुन लाइब्रेरी के म्युज़ियम में सुरक्षित है ।

मांगरोल-काठियावाड ।

पाषाण की मूर्त्ति पर ।

[1785] *

१। ॐ ॥ सं० १२५३ वर्षे आषाढ़ सुदि ४ शनौ ठ० चाविगड महं वछराजे(न आ)त्म-
श्रेयोर्थं श्री मुनिसुव्रतस्वामि प्रतिमा
२। कारिता प्रतिष्ठिता च श्री देवचन्द्र सूरि शिष्यैः श्री जिनचन्द्र सूरिभिः ॥
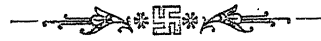
वेरावल-काठियावाड ।

शिला लेख ।

[1786] †

१। .... ह्निवन्नाति नित्यमद्यापि वारिधौ ॥ श्रे(?) प्रपा(सा) दजीष्ट संसिद्धयै
मुखं चन्द्रप्रभं ....
२। ...... ह्व पाटकाख्यं पत्तनं तद्विराजते ॥ ३ ॥ मन्ये वेधा विधायैतद्विविधिस्सुः
पुनरीह .... दे
३। .... रेन्द्रैस्त्रनयमंत्रैर्जयंत्रलक्ष्मीः स्थिरीकृता ॥ ५ ॥ तस्मिंशेषमहीपालमौलीः
घृष्टांह्रि
४। सौ नृपः। तेनोत्खातासुन्मूलो मूलराजः स उच्यते ॥ ७ ॥ एकैकाधिकभूपाला
सम ....
५। .... सव्रजखुराहतं। अतुलत्युयं पर्वभ्रममजीजनत् ॥ ए ॥ पौरुषेण प्रज्ञापेन
पुण्येन ...

---

* यह लेख रावली मसजीद के पास खुदाई में निकली हुई मूर्त्ति के चरणचौकी पर है।
† यह लेख वहां के फौजदारी उतारे में रखा हुआ है।

६। ········ र न्यून विक्रमः। श्री भीमभूपतिस्तेषां राज्यं प्राज्यं करोत्ययं ॥ ११ ॥ भावाङ्कुराण्यनम्राणि यो वसङ्गम(वभजम)

७। ···· भ्रंदि संघे गणेश्वराः। बभूबुः कुंदकुंदाख्या साक्षात्कृतजगत्त्रयाः ॥ १३ ॥ येषामाकाशगामित्वं त्य।

८। ······ शत(पं)चकमुज्वलं। रमयित्वाथ जन्मांतियेऽन्यन्नियमपुर्वकं ॥ १४ ॥ कालेऽस्मिन् भारते क्षेत्रे जाता

९। ···· रीणा तत्व वर्त्मनि तेषां चारित्रिणो बंशे भूरयः सूरयोऽभवन् ॥ १७ ॥ सद्दूषाद्यपि निर्दूषाः सकलापंकः

१०। प्रभा यस्या रुरोह तत्। श्रीकीर्त्ति प्राप्य सत्कीर्त्ति सूरिं भूरिगुणं ततः ॥ १९ ॥ यदीयं देशनावारिं सम्यग् वि(भ्रो)

११। ········ कश्चित्रकूटाच्च चालसः श्रीमन्नेमिजिनाधिशः तीर्थयात्रानिमित्ततः ॥ २१ ॥ अणहिल्लपुरं रम्यमाजगा

१२। ···· नींद्राय ददौ नृपः। विरुदं मण्डलाचार्यः सब्त्रं ससुखासनं ॥ २३ ॥ श्रीमुलवसंतिकारुयं जिनभवनं तत्र

१३। ···· संज्ञयैव यतीश्वरः। उच्यतेऽजितचन्दोयस्ततो भूत् स गणीश्वरः ॥ २४ ॥ चारु कीर्त्तियशः कीर्त्तिश्च

१४। ········ युक्तो को रत्नत्रयवानपि। यथावद्विदितात्मां साभूत् क्षेमकीर्त्तिस्ततो गणि ॥ २७ ॥ उदेतिस्म लसद्ज्योति

१५। ····· लैंपिवासिते हेमसूरिणा वस्तू प्रायरणं येन वशे ···· लेयिनं ॥ २९ ॥ ····· पू ····

१६। ············· कीर्त्तिर्यत्कीर्त्तिर्न्नर्त्तको व ·····। त्रिभुवनरा ···· वासुकिं नूपुरशशितिलकनिपठ्या ॥ ३१ ॥ ते

१७। ····ति ॥ ३२। समुध्दृतसमुत्पन्नश्रीर्णजीर्णजिनालयः। यः कृता रत्ननिर्वाहेसमुत्साह शिरोमणि

१८। .... शयैरवगण्यते ॥ ३४ ॥ वादिनो यत्पद द्वन्द्वनखचन्द्रेषु बिंबिताः । कुर्वंते विगत श्रीकाः कलंक

१९। ... दं तीर्थभूतमनादिकं ॥ ३६ ॥ सीतायाः स्थापना यत्र सामेशः पक्षपातकृत् । प्रभो- स्त्रैलोक्य

२०। .... तदुद्धृततेन जातोद्धारमनेकशः ॥ ३८ ॥ चैत्यमिदं ध्वजमिषतो निजभुजमुद्धृत्य सक

२१। .... षतो मंडलगणि ललितकीर्त्ति सुकीर्त्तिः । चतुरधिकविंशति जसध्वजपटपट्टहंसूक॥

२२। ..... मेतदीय सज्जोष्ठिकानामपि गच्छकानां ॥ ४१ ॥ यस्य स्तानपयोनुलिप्तमखिलं जुष्टं द्वी

२३। .... चन्द्रप्रभः स प्रभुस्तीरे पश्चिमसागरस्य जयताद्दिग्व्यससां शासनं ॥ ४२ ॥ जिन पतिगृह

२४। .... चाणवर्णिवर्यो व्रतविनयसमेतैः शिष्यवर्गैरुपेतैः ॥ ४३ ॥ श्रीमद्विक्रम भूपस्य वर्षाणां द्वादशे

२५। .... क कीर्त्ति लघुबंधुः । चक्रे प्रशस्तिः मनघो गणि .... प्रवरकीर्त्तिरिमां ॥ ४५ ॥ सं० १२ ....

जैन मंदिर ।

शिला लेख ।

[1787]

१। ॥ ऐं ९० ॥ संवत् १८७६ वर्षे शाके १७४१ प्रवर्त-

२। माने माघ मासे शुक्लपक्षे अष्टमी तिथौ शनिवा-

३। सरे श्री देवका पाटण नगरे श्री चन्द्रप्रभ जि-

४। न जीर्णोद्धार समस्त संघेन कारापितं भट्टार-

५। क श्री श्री विजयजिणेन्द्र सूरि उपदेशात् श्री

६। मांगलोर वास्तव्य शा० नानजी जयकरण

७। सुत मकनजी ॥ ८ ॥ सुन्दरजीकेन जीर्णोद्धा-

८। र प्रतिष्ठा कारापितं भट्टारकं श्री श्री विजय.
९। जिणेन्द्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्री मत्तपागच्छे
१०। जब लग मेरु अडग है तब लग शशि औ-
११। र सूर। जिहां लग ए पट्टक सदा रहजो स्थि-
१२। र भरपूर १ लि। वजीर ज्योति लोकविजयेन।

गाणेसर-गुजरात।

जैन मन्दिर।

शिला लेख।

[1788]

१। ॥ ए० ॥ स्वस्ति सं० १२११ वर्षे वैशाख सुदि १४ गुरौ श्रीमदणहिलपुर वास्तव्य प्राग्वाट ठ० श्री चण्डपात्मज ठ० (चं)
२। डप्रसादांगज ठ० श्री सोमतनुज ठ० श्री आशाराज तनुजन्म ठ० श्री कुमारदेवी-कुक्षिसमुद्भूत ठ० लूणि(ग)
३। मह० श्रीमालदेवयोरनुजमह० श्री तेजःपालाग्रज महामात्य श्री वस्तुपालात्मज मह० श्री जयतसिंह (स्तम्न)
४। तीर्थमुद्राव्यापारं सं ३९ वर्ष पूर्व व्यापृण्वति महामात्य श्री वस्तुपाल मह० श्री तेजःपालाभ्यां समस्तमहातीर्थेषु
५। तथा अन्यसमस्तस्थानेष्वपि कोटिशोऽभिनवधर्मस्थानानि जीर्णोद्धारश्च कारिताः तथा सचिवेश्वर श्री वस्तु-
६। पालेन आत्मनः पुण्यार्थमिह गाणउलि ग्रामे प्रपा श्रीगाणेश्वरदेवमण्डपः पुरतस्तोरणं (अपर)तः प्रतोलीद्वारालं(कृ)

७। त प्राकारश्च कारितः ॥ ६९ ॥ गांजीर्ये जलधिर्बलिर्वितरणे पूषा प्रतापे स्मरः सौन्दर्ये पुरुषव्रते रघुपति र्वाचस्पतिर्वा ....

८। ये। लोकेऽस्मिन्नुपमानतामुपगताः सर्वे पुनः सम्प्रति प्राप्तास्तेऽप्युपमेयतां तदधिके श्री वस्तुपाले सति ॥ १ ॥ विद(धति)

९। विदग्धमतयस्तुल्यौ कौटिल्यवस्तुपालौ ये। ते कुर्वते न कस्मात्कूगकूगरयोः समतां ॥ २ ॥ वदनं वस्तुपाल(स्य)

१०। कमलं को न मन्यते। यत् सूर्यालोकने स्मेरं जवति प्रतिवासरं ॥ ३ ॥ श्री वस्तुपाल सम्प्रति परं महति कर्म(कुर्व)

११। ता जवता। निर्वृतिरर्थिजने च प्रत्यर्थिजने च संघटिता ॥ ४ ॥ तस्मै स्वस्ति चिरं चुलुक्यतिलकामात्याय ....

१२। क्रान्तक्रतुकर्म्मनिर्म्मलमतिः सौवस्तिकः शंसति। राधे येन विना विना च शिविना [.... य ना [....

१३। ह्वासित मम्मटाः स्वसदनं गछंति सन्तः सदा ॥ ५ ॥ महामात्य श्री वस्तुपालस्य प्र(शस्तिरियं) ....
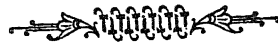
प्रभास पाटण - गुजरात।

बावनजिनालय मन्दिर।

मूर्त्तियों पर।

[1789]

१। ठ० हीरा देवि पितृ० वीरदेव मातृ सक्त संघ० पेथरू संघ० कूशुरा संघ० पदमल महं० वि(कम)सी वयजलदेवि महं० आल्हणसीह महं० महणसीह ठ्यव० लाषष सो० महिपाल मातृ सक्त

८। मान् सोमनामा द्वितीयः ॥ ४ ॥ निर्माप्यादि जिनेन्द्रबिंबमसमं शेषत्रयोविंशति श्री जैनप्रतिमा विराजि-

९। तमसावभ्यर्चितुं वेश्मनि ॥ पूज्यः श्री हरिभद्रसूरिसुगुरोः । पार्श्वात् प्रतिष्ठाप्य च स्वस्यात्मीय कुलस्य चाक्ष-

१०। यमयं श्रेयो निधानं व्यधात् ॥ ५ ॥ असावत् सावाशाराजं तनुजसमं सोमसचिवः प्रियायां सीतायां शुचि च

११। रितनत्यामजनयत् ॥ यशोभिर्यस्यैभिर्जगति विशदे क्षीरजलधौ निवासैकप्रीतिं मुदस-भजाद्दि-

१२। दुःदुःप्रतिपदं ॥ ६ ॥ श्री रैवते निर्म्मितसत्यपात्रः केनोपमानस्त्विह सोऽश्वराजः ॥ कलंकशंकामुपमान-

१३। मेव पुष्णात्यहो यस्य यशः शशांके ॥ ७ ॥ अनुजोऽस्यापि सुमनुजस्त्रिभुवनपालस्तथा स्वसाकेली

१४। आशा राजस्याजनि जाया च कुमारदेवीति ॥ ८ ॥ तस्याऽजूत्तनयो जयो प्रथमकः श्री मल्लदेवोऽपरश्चं

१५। चच्चंद्रमरीचिमण्डलमहाः श्री वस्तुपालस्ततः । तेजःपालइति प्रसिद्धमहिमा विश्वेऽत्र तुर्यः स्फुरच्चा-

१६। तुर्यः समजायतायतमतिः पुत्रोऽश्वराजादसौ ॥ ९ ॥ श्री मल्लदेव पौत्रौ लीलू सुत पुण्यसिंह तनुज-

१७। न्मा ॥ आल्हणदेव्या जातः पृथ्वीसिंहाख्ययाऽस्ति विख्यातः ॥ १० ॥ श्री वस्तुपाल सचिवस्य गेहिनी देहिनीव गृ-

१८। हलक्ष्मीः ॥ विशदतरचित्तवृत्तिः श्री ललितादेवी संज्ञास्ति ॥ ११ ॥ शीतांशुप्रतिवीर पीवर यशा विश्वेऽत्र

१९। पुत्रस्तयो र्विख्यातः प्रसरद्गुणो विजयते श्री जैत्रसिंहः कृती ॥ लक्ष्मीर्यत्करपंकज प्रणयिनी हीनाश्रयोत्थेन

२। ठ० रत्न ठ० लूणी ॥ ठ० ॥ षीमसीह श्रे० डोकर ठ० धडलसीह ठ० धांध श्रे० आमुल नागल श्रे० नागसूर राजल सा० वस्तुपाल धांधलदेवि ठ० बरदेव ठ० महतू
३। फो० रिणसीह ठ० महणा बड़हरा अरसीह राजपाल श्रे० रतना भा० रामसीह मातृ लक्ष्मी करमसी दो० लूणा ठ० पाता श्रीयादेवी सूहव ठ० षतसीह ठ० सिरी
४। ठ० सीहा ॥ मातृ० वालिणि ठ० वयरसीह फो० धरणिग धांधलदेवि राजल ॥ बा० ई बा० तेजी ठ० तिहुणपाल ठ० लाडि फो० मूणा सुपल प छा० सोवल कामलदेवि ठ० लषमीधर।

चरणचौकी पर।

[1790] *

१। ॥ ए० ॥ सं० १६९९ वर्षे फाल्गुन सित द्वादशी सोमवासे श्री द्वीप बन्दिर वास्तव्य वृद्धशाखीय उकेश ज्ञातीय सा० सुहुणसी भार्या संपूराई सुत सा० सिवराज नाम्ना श्री कुंकुमरोल पार्श्व बिंबं सपरिकरं कारितं प्रतिष्ठितं च स्वप्रतिष्ठायां। प्रति-
२। ष्ठितं च तपागच्छाधिराज भट्टारक श्री १९ श्री हीरविजय सूरीश्वर पट्टालंकार भ० श्री १९ श्री विजयसेन सूरीश्वरपट्टप्रभाकर भट्टारक प्रभु श्री १९ श्री विजयदेव सूरिभिः। स्वपट्टप्रतिष्ठिताचार्य श्री ५ श्री विजयसिंह सूरिभिः साथा(?)स्वशिष्योपाध्याय श्री ५ श्री लावण्यगणिप्रमुखपरिकरितैः ॥ शुभं भवतु ॥ श्री ॥

[1791] †

१। सं० १३३० वैशाख सुदि(२) शनौ पल्लीवाल ज्ञातीय ठ० आसाढ़ ठ० आसापल्लाभ्यां भा० जाल्ह श्रेयार्थ
२। श्री मल्लिनाथ बिंबं ठ० आसपालेन कारितं प्रतिष्ठितं श्री पूर्णभद्र सूरिभिः।

[1792] †

१। ॥ ॐ सं० १३४० ज्येष्ठ वदि १० शुक्रे पल्लीवाल··· भा० वीरपाल भ्रा० पूर्णसिंह भा० वय-

---

* यह लेख जमीन से निकली हुई मूर्ति के चरणचौकी पर है।

† मल्लिनाथ महादेव के मन्दिर के पास पड़ी हुई खण्डित मूर्तियों पर ये लेख हैं।

२। जयदेव पु० कुमरसिंह केलिसिंह ना० ठ०....आत्मश्रेयोर्थं ॥ श्री पार्श्वनाथ बिंबं का·
३। रितं प्रतिष्ठितं श्री कोरंटकीय ..... सूरिभिः शुभं ॥

खंभात-गुजरात।

श्री आदीश्वर भगवान का मन्दिर।

शिला लेख

[1793]

१। ॥ ए० ॥ ॐ नमः श्री सर्वज्ञाय ॥ धीराः सत्वमुशंति यत्रिभुवने (यन्नेति) नेति श्रुत साहित्योपनिषन्नि
२। षण्णमनसो यत् प्रतिभं मन्वते सार्वज्ञं च यदा मनंति मुनयस्तत्किंचिदत्यद्भुतं ज्योति· र्द्योतितवि-
३। श्वरूपं वितनुतां भुक्तिं च मुक्तिं च वः ॥ १ ॥ श्री मद्गुर्जरचक्रवर्त्तिनगरप्राप्त प्रतिष्ठोऽजनि प्राग्वाटाह्वयर-
४। म्य वंशविलसन्मुक्तामणिश्चंडपः ॥ यः संप्राप्य समुद्धतां किल दधौ राजप्रसादोल्लसद्दि- क्कूलंकष-
५। कीर्त्तिशुभ्रलहरीः श्रीमंतमंतर्जिनं ॥ २ ॥ अजनिरजनिजानिज्योतिरुद्योतकीर्त्तिस्त्रिज· गति तनुज-
६। न्मातस्य चण्डप्रसादः ॥ नखमणिसख(शार्ङ)सुन्दरः पाणिपद्मः कमकृत न कृतार्थं यस्य कल्पद्रुकल्पः
७। ॥ ३ ॥ पत्नी तस्या जायतात्पायताक्षी मूर्त्तेन्द्र श्रीः पुण्यपात्रं जयश्रीः ॥ जज्ञेताभ्याम ग्रिमः सूरसंज्ञः पुत्रः श्री

२० । सा प्रायश्चित्तमिवाचरत्यहरहः स्नानेन दानंनसा ॥ १२ ॥ अनुपमदेव्यां पत्न्यां श्री
तेजःपाल सचिवतिलकस्या ।

२१ । लावण्यसिंह नामा धाम्नांधामायमात्मजो जज्ञे ॥ १३ ॥ नाभूवन्कति नाम संति
कतिनो नो वा भविष्यंति के किं-

२२ । तु क्वापि न कापि संघपुरुषः श्री वस्तुपालोपमः ॥ पुण्येषु प्रहरन्नहर्निशामहो सर्वा-
भिसारोद्धुरो येनायं वि-

२३ । जितः कलिर्विदधता तीर्थेशयात्रोत्सवं ॥ १४ ॥ लक्ष्मीधर्माङ्गयोगेन स्थेयसीतेन न-
न्वता ॥ पौषधालयमालायं(लेय्यं)

२४ । निर्म्ममेन विनिर्म्ममे ॥ १५ ॥ श्री नागेन्द्रमुनीन्द्रगछतरणिर्जज्ञे महेन्द्रप्रभोः पट्टे
पूर्वमपूर्ववाङ्मयनि-

२५ । धिः श्री शांति सूरिर्गुरुः ॥ आनन्दामरचन्दसूरियुगलं । तस्मादभूत्तत्पदे पूज्य श्री
हरिभद्र सूरि गुरवोऽभूवन् भु-

२६ । वो भूषणं ॥ १६ ॥ तत्पदे विजयसेन सूरयस्ते जयंति भुवनैकभूषणं ये तपोज्वलन
भूविभूतिभिस्तेजयंति

२७ । निजकीर्त्तिदर्पणं ॥ १७ ॥ स्वकुलगुरुर्गणिरेषः पौषधशालामिमाममात्येन्द्रः ॥ पित्रोः
पवित्रहृदयः पुण्यार्थं

२८ । कल्पयामास ॥ १८ ॥ वाग्देवतावदनवारिज (मित्र) लामहैराज्यदानकलितोरुयशः
पताकां चक्रे गुरोर्विज-

२९ । यसेन मुनीश्वरस्य शिष्यः प्रशस्तिमुदयप्रभ सूरिरेनां ॥ १९ ॥ सं० १२८१ वर्षे महं
श्री वस्तुपालेन कारित पौषध-

३० । शालाख्य धर्म्मस्थानेऽस्मिन् श्रेष्ठि० रावदेव सुत श्रे० मयधर । भा० सोभाउ भा०
धारा । व्यव० वेल्लाउ विकल श्रे० पूना

३१ । सुत वीजावेड़ी उदयपाल । उ आसपाल । भा० आल्हण उ गुणपाल एतैर्गोष्ठिकत्वमं-
गीकृतं ॥ एभिर्गोष्ठिकैरस्य धर्म्मस्थानस्य

३२। ....स्तम्भतीर्थे — कायस्थवंशेनाह् .... उट्टंकितः .... सिपा ..... लिख .... मिहच
ठ० सु० .... सूत्रधार कुमरसिंहेनोत्कीर्णा ॥

शिला लेख—भोंयरे के द्वार पर।

[1794]

१। ॥ ए० ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री विक्रम नृपात् संवत् १६६१ वर्षे वैशाख सुदि ७ सोमे श्री

२। स्तंभतीर्थनगर वास्तव्य ॥ ऊकेश ज्ञातीय ॥ आबूहरा गोत्रविभूषण ॥ सौवर्णिक ॥ कलासु-

३। त ॥ सौवर्णिक ॥ वाघा भार्या रजाई ॥ पुत्र ॥ सौवर्णिक वछिआ ॥ भार्या सुहासिणि ॥ पुत्र । सौव-

४। र्णिक ॥ तेजपाल भार्या ॥ तेजलदे नाम्न्या ॥ निजपति सौवर्णिक तेजपाल प्रदत्ताज्ञ-

५। या ॥ प्रभूतद्रव्यव्ययेन सुभूमिगृहश्रीजिनप्रासादः कारितः ॥ कारितं च तत्र मूल-

६। नायकतया स्थापनकृते श्रीविजयचिंतामणि पार्श्वनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं च श्रीमत्त-

७। पागच्छाधिराज भट्टारक श्री आणंदविमल सूरि पट्टालंकार ॥ भट्टारक श्री विजयदा-

८। न सूरि तत्पट्टप्रभावक सुविहितसाधुजनध्येय सुगृहितनामधेय ॥ पात ॥

९। साह श्री अकब्बरप्रदत्तजगद्गुरुविरुदधारक भट्टारक श्री हीरविजय सूरि

१०। तत्पट्टोदयशैलसहस्रपाद ॥ पातसाह । श्री अकब्बरसभासमक्षविजितवा-

११। दिवृंदसमुद्भूतयशः कर्पूरपूरसुरभीकृतदिग्वधूवदनारविंद भट्टारक श्री विजय-

१२। सेन सूरिभिः ॥ क्रीडायातसुपर्वराशिरुचिरो यावत् सुवर्णाचलो ॥ मेदिन्यां प्र-

१३। हमण्डलं च वियति भ्राजिष्णुरुर्व्यंलशत् ॥ तावत्तत्रगताघूसेवितपद श्री पार्श्वना-

१४। थप्रभो ॥ मूर्त्ति श्री कलितोऽयमत्र जयतु श्रीमज्जिनेन्द्रालयः ॥ १ ॥ छः ॥ : ॥
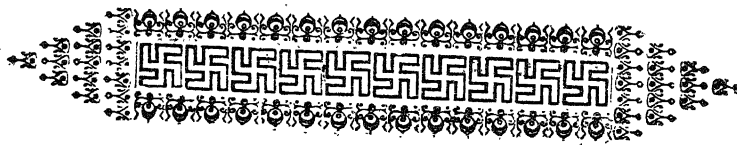
पोसिना-भरुअछ।

शिला लेख

[1795] *

१। प्राग्वाटवंशे श्रे० ठहड येन श्री जिन-
२। भद्र सूरि सदुपदेशेन पादपरा ग्रामे उं-
३। दिरवसहिका चैत्यं श्रीमहावीर प्रनिमा
४। युतं कारितं। तत्पुत्रौ ब्रह्मदेव शरणदे-
५। वौ। ब्रह्मदेवेन सं० १३७५ अत्रैव श्रीने-
६। मि मंदिर रंगमंडपे दाढ़ाधरः कारितः
७। श्रीरत्नप्रभसूरि सदुपदेशेन तदनुज श्रे०
८। शरणदेव भार्या सूहवदेवि तत्पुत्राः श्रे०
९। वीरचंद्र पासड। आंबड रावण। यैः श्री पर-
१०। मानन्द सूरीणामुपदेशेन सप्ततिशततीर्थं का-
११। रितं॥ सं० १३१० वर्षे। वीरचंद्र भार्या सुषमिणि
१२। पुत्र पूना भार्या सोहग पुत्र लूणा झांझण आं-
१३। बड़ पुत्र बीजा खेता। रावण भार्या हीरू पुत्र बो-
१४। डा भार्या कामल पुत्र कडुआ॥ द्वि० जयता भार्या मूं-
१५। धा पुत्र देवपाल। कुमरपाल। तृ० अरिसिंह भा०
१६। गउरदेवि प्रभृतिकुटुम्बसमन्वितैः श्री परमा-
१७। नन्द सूरिणामुपदेशेन सं० १३३८ श्री वासुपूज्य
१८। देवकुलिका। सं० १३४५ श्री संमेतशिषर-
१९। तीर्थं मुख्यप्रतिष्ठा महातीर्थयात्रां विधाप्या-
२०। त्मजन्म एवं पुण्यपरंपरया सफली कृतः
२१। तदद्यापि पोसिना ग्रामे श्री संघेन पूज्यमान-
२२। मस्ति॥ शुभमस्तु श्री श्रमणसंघप्रसादतः॥

---

* भरुअछ से ६ मैल दूर पर 'पोसिना' ग्राम में जैन मन्दिर के भैरवजी की मूर्ति के निचे पत्थर पर यह लेख है।

उना-काठियावाड़ ।

जैन मन्दिर-शाहशाला बाग ।

शिला लेख ।

[1700] *

१। ॐ स्वस्ति श्री सं० १६५२ वर्षे कार्त्तिक वदि ५ बुध

२। येषां जगद्गुरूणां संवेगवैराग्यसौभाग्यादिगुणगण-

३। श्रवणात् चमत्कृतैर्महाराजाधिराज पातिसाहि श्री अकब्बराभि-

४। धानैः गूर्जरदेशात् दिल्लीमण्डले सबहुमानमाकार्य धर्म्मोपदेशा-

५। कर्णनपूर्व्वकं पुस्तककोशसमर्पणं डावराभिधानमहासरोमत्स्यब-

६। धनिवारणं प्रतिवर्षं षाण्मासिकामारिप्रवर्त्तनं सर्वदा श्री शत्रुंजयतीर्थे मुं-

७। डकाभिधानकरनिवर्त्तनं जीजियाभिधानकरकर्त्तनं निजसकलदेशे दा-

८। णमृतं स्वमोचनं सदैव बूंद(?)ग्रहणनिवारणं सत्यादिधर्म्मकृत्यानि सकल-

९। लोकप्रतीतानि कृतानि प्रवर्त्ते तेषां श्री शत्रुंजये सकलदेशसंघयुतकृत-

१०। यात्राणां भाद्रपदशुक्लैकादशीदिने जातनिर्वाणं शरीरसंस्कारस्थानासन्न-

११। कलितसहकाराणां श्री हीरविजय सूरीश्वराणां प्रतिदिनं दिव्यनाथनाद-

१२। श्रवण दीपदर्शनादिकैर्जाग्रत्स्वभावाः स्तूपसहिताः पादुकाः कारिताः पं०

१३। मेघेन भार्या लाडकी प्रमुखकुटुम्बयुतेन प्रतिष्ठिताश्च तपागच्छाधिराजैः भ-

१४। ट्टारक श्री विजयसेन सूरिभिः उ० श्री विमलहर्षगणि उ० श्री कल्याण-

१५। विजय गणि उ० श्री सोमविजय गणिभिः प्रणताभव्यजनैः पूज्यमानाश्चि-

१६। रं नंदंतु ॥ लिखिता प्रशस्तिः पद्मानन्दगणिना । श्री उन्नतनगरे शुभं भवतु ॥

---

* 'उना' का प्राचीन नाम 'उन्नत नगर' था । यह शिलालेख मन्दिर के ७ देहरी में पश्चिम तर्फ से पहली देहरी का है ।

[1797]

(१) ॥ ऐं० ॥ स्वस्ति श्री प्रणयाश्रयः शिवमयः श्री वर्द्धमानाह्वयस्तीर्थेशश्चरमो बजूव
भुव-

(२) न सौभाग्यजोग्यैकजूः । नंदीश प्रथमोपि पंचमगतिः ख्यातः सुधर्म्माग्रणी । जज्ञे
पंचमपंचमः शमव-

(३) तां निग्रथं १ गोत्रेग्रणी ॥ १ ॥ श्री कौटिक २ वनवासिक ३ चन्द्र ४ वृहद्गच्छ ५ सत्तपा
६ क्रमतः । तदा

(४) गच्छानां संज्ञाजातात्तपगच्छस्तथाऽजूत् ॥ २ ॥ प्राणजूक्षितिपालजाल विलसत्कोटीर-
हीरस्फुरज्यो-

(५) तिर्जालजलाभिषेकविधिना (जा)तांबुपंकेरुहः ॥ चि(द्रु)पावलिहीरहीरविजयाह्वानः
प्रधान प्र-

(६) जुः श्रामण्यैकनिकेतनतनुभृताम् कल्याणकल्पद्रुमः ॥ ३ ॥ तदादेशवाक्यैः सुधा-
सारसारै । मुदा

(७) कब्बरः पातिसाहिः प्रबुद्धः । स्वदेशेऽखिले जीवहिंसा न्यवारीदमुंचत्करंचापिशत्रुं-
जयाद्रेः ॥ ४ ॥

(८) तच्चध्योदपिशैलमौलिमहिमावर्षैसहस्रत्विबि । जातः श्रीविजयादिसेनसुगुरुः प्रज्ञाल-
वालारुणः ।

(९) येन श्रीमदकब्बरक्षितिपतिः पर्षद्यनेकद्विजान् ॥ निर्जित्यैव जयश्रिया सह महां-
श्चक्रे विवाहो

(१०) नवः ॥ ५ ॥ (त)त्पट्टे (सा)रगजमूर्द्धनि देवराज (सू)रिर्बजूव जगवान् वि(जया-
(दिदे)वः । य(स्या)त्रसत्यवचना-

(११) दनले तपोर्कः साक्षाद्नौ कुमतकुस्तमसां वि(ना)शी ॥ ६ ॥ सम्यग् निशम्य च
यदीय यशःप्रशस्तिमा-

(१२) ह्वतद्गुणगणस्य दिदृक्षयैव । सूरेर्महातपइतिप्रथितं विरुदं श्रीपातिसाहिरकरोत्स-
सलेमसाहि

(१३) ॥ ७ ॥ यस्याव्याप्युपदेशपेशलरसङ्गोणंजगात्सिंहजीः संबुद्धः सरसोर्थिसारविसरे मारीन्यावारीत्ततः ॥

(१४) [सं]व्यूढां गुणरागरंगललितैः कीर्त्तिस्त्रिलोकोद्भ्रमश्रांतां स्थानविधानतोऽनुरंमते किंकिरपिंडिध्वलात् ॥

(१५) ॥ ७ ॥ श्री विद्यापुर पाति[साहि]मुचितैर्वाचाप्रपंचैर्यकः । स्वर्नोज्यप्रतिमः प्रबोध्य सूरत्नीरारंजतो मोचयन्

(१६) तद्वत श्रीमनुजादिमर्दनपतेः श्री पातिसाहेश्वरः । स्थानेऽस्यापयेद्मिपातनपरो धर्मं सपक्षंगतः ॥

(१७) ॥ ए ॥ एवं विहृत्यनगरानवनीतमस्मिन् राजन्य ···· । श्रीमज्जिन-

(१८) ···· र्दता ···· चय मूर्त्तिति ···· मूर्त्तिः सकलराज्ञोध्वजरूपमूच्चैः ॥ १० ॥ पूज श्री मालि कुलोपु-

(१९) रा त्तरण ···· यो ··· नामतिनामा । ··· र्मनाः ॥ ११ ॥ तस्यांगजोगजइन्द्रो पवि-

(२०) ···· श्रीमालि विमलकुलांबुज ···· माली । विश्वातिशायियशसा जिनपूर्णचन्द्रः श्री राजवं-

(२१) ···तिस···रि · त् प्रतापं ॥ १२ ॥ अथ तेनमंशे किमहाग्र···पूर्वंस्वद्रव्यस्यसफ-लीकरणाय श्री विजया-

(२२) दि सूरीश्वराः श्री गूर्जरदेशात्सौराष्ट्रके पादानांसस्याः कारिताः श्री सिद्धाद्रियस्या-पिप्रजूणांमहामहसां

(२३) ···· कारिता ॥ ततश्च सं० १७१३ वर्षे आषाढ़ शुद्धैकादशी तिथौ । जट्टारक श्री विजयदेवसूरी-

(२४) श्वराणा स्व ····मुषापादुकास्तूपोयं ······· श्रीवासणात्मजेन वाई पातली जन्मना श्रीरायचन्द्

(२५) नाम्ना कारितः प्रतिष्ठापितश्च सं० १७१३ वर्षे माघमास सितपञ्चमी तिथौ महा महोत्सवेन ।

(२६) सूरेः श्री विजयादिदेवसुगुरोः पट्टाब्जसूर्याश्रयः सूरि श्री विजयप्रभाव्यदधत श्रेष्ठा प्रतिष्ठा·

(२७) मिमां श्रीमद्वाचकरान् विनीतविजयैः शांत्याह्वयैः पाठकैर्युक्ताश्चारुयशोभराः प्रतिम·

(२८) या वाचस्पतेः सन्निभाः ॥ १३ ॥ तथा साधु श्री नेमिदासेन तथा साधु वाघजीकेन त्रिभोप्रमेन का

(२९) रितः । कृतश्चायं हरजीनाम्ना शिल्पिना । मुहूर्त्तदातातु अत्र उन्नतपुरवास्तव्य भट्ट·गुसांई

(३०) पुत्र भट्ट रणछोड़ नामा ॥ श्रीद्वीपबंदिरवास्तव्यसंघजातिव्याजे जीयतां श्रीदेव·विहारभा

(३१) गः स्तूपरूपः ॥ श्रीमत् श्रीविजयादिदेवगणभृत्पट्टोदयोत्सकृतेः । सूरेः श्री विजय·प्रभस्य क·

(३२) रुणादृष्ट्या प्रकृष्टोदयः ॥ विद्वद्रूपमणीकृपादिविजयां तेवासिमेणाह्वयो । लेस्यदेव·विहार ····

(३३) विदिते स्तूपप्रशस्ति श्रिये ॥ १४ ॥ इति प्रशस्ति संपूर्ण ॥ श्रीरस्तु ॥ छः ॥ छः ॥

बम्बई ।

श्री आदिनाथजी का मन्दिर—बालकेश्वर ।

पञ्चतीर्थी पर ।

[1798]

सं० १४८८ वर्षे श्री श्रीमाल ज्ञा० पं० राणा भा० रूपादे सुत आसाकेन स्वमातृश्रेयसे आगमगच्छे श्री जयानन्दसूरीनामुपदेशेन श्री पार्श्वनाथ पञ्चतीर्थी कारितं श्री सूरिभिः । शुभं भवतु ॥

चौविशी पर।

[1799]

सं० १७६४ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ५ गुरौ स्तम्भतीर्थ बंदिर वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय वृद्ध-शाषीय वे। मेघराज भा० वैजकुआर सुत सूरगलेन स्वद्रव्येण श्री शांतिनाथ चौविशी पट्ट कारापितं प्रतिष्ठितं तपागछे भ० श्री विजयप्रभ सूरि पट्टे संविज्ञपक्षीय भ० श्री ज्ञान-विमलसूरिभिः।

घरदेरासर — गामदेवी, वाचागांधी रोड।

चौविशी पर।

[1800]

संवत १५२५ वर्षे माघ सुदि १३ बुधे मोढ ज्ञातीय ठकुर वरसिंह भार्या चांपू सुत ठकुर मूलू भार्या कीबाई सुत ठकुर मधुरेण भार्या संपूरी प्रमुखकुटुम्बयुतेन स्वश्रेयार्थं श्री अभिनन्दननाथादि चतुर्विंशतिपट्टः श्री आगमगछे श्री जयचन्द्रसूरिपट्टे श्री देवरत्न गुरूपदेशेनकारितः प्रतिष्ठापितश्च ॥ श्री स्तम्भतीर्थवास्तव्य ॥ शुभं भवतु ॥ श्रीः ॥

सिरपुर-सागर (सी. पी.)।

शिला लेख।

[1801]

१। ॐ ॥ स्वस्ति श्री सं० १३३४ वर्षे वेशाख सुदि २ बुधदिने श्रीवृहद्गछे सा० प्रह्लादन पुत्र सा० रत्नसिंह कारितः श्री शांतिनाथ चैत्ये सा० समधा पुत्र महण भार्या सोहिणी पुत्री कुम-

२। रल श्राविकया पितामह सा० पूना श्रेयसे देवकुलिका कारिता ॥

श्री सम्मेत शिखर ।

टोंक पर के चरणों पर ।

[1802]

॥ श्री ऋषभानन जिन चरण प्रतिष्ठितं श्री जैन श्वेताम्बर संघेन ॥

[1803]

॥ श्री चंद्रानन जिन चरण प्रतिष्ठितं श्री जैन श्वेताम्बर संघेन ॥

[1804]

॥ श्री वारिषेण जिन चरण प्रतिष्ठितं श्री जैन श्वेताम्बर संघेन ॥

[1805]

॥ श्री वर्द्धमान जिन चरण प्रतिष्ठितं श्री जैन श्वेताम्बर संघेन ॥

[1806]

(१) संवत् १९३१ माघे । शु । १० । चंद्र श्री चंद्रप्र
(२) भु जिनेन्द्रस्य चरण पादुका । मलधार पूर्णिमा ।
(३) श्री मद्विजयगच्छे । भ । श्री जिन शांति सागर सू ।
(४) रिभिः । प्रतिष्ठितं । स्थापितं । श्रेयसेस्तु ।
(५) श्री संघेन कारापिता ।

[1807]

(१) संवत् १८४९ मिति माघ मासे शुक्ल पक्षे पंचमी तिथौ ।
(२) बुधवारे श्री पार्श्वनाथ जिनस्य चरण न्यासः श्री संघाग्रहेण ।
(३) श्री बृहत् खरतर गच्छीय । जंगम । युग प्रधा
(४) न भट्टारक । श्री जिनचंद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितः श्रीरस्तु ॥

[1808]

(१) संवत् १९४२ का मि। पोष शुक्ल त्रयोदश्यां वर सोमवारे श्री चतुर्विंशति जिन साधु संख्या पादुकाः श्री पार्श्व जिन गणधर पादुका

(२) खरतर गच्छे महो श्री दानसागरजी गणिः तत् शिष्य पं। हित वल्लभ मुनिना प्रतिष्ठितं गुज्जर देशान्तरगत मांडल वास्तव्य········

(३) वीर सोनागवर लक्ष्मीचंदेन श्री समेत शिखरि प

(४) रि स्थापितं ॥

१। श्री ऋषभ १०००० साधुसुं अष्टापद उपर २। श्री अजित १००० साधु सुं ३। श्री संभव १००० साधुसुं ४। श्री अभिनंदन १००० साधुसुं ५। श्री सुमति १००० साधुसुं ६। श्री पद्मप्रभ ३०८ साधुसुं ७। श्री सुपार्श्वनाथ ५०० साधुसुं ८। श्री चंद्रप्रभ १००० साधुसुं ९। श्री सुविधि १००० साधुसुं १०। श्री शीतल १००० साधुसुं ११। श्री श्रेयांस १००० साधुसुं १२। वासुपूज्य ६०० साधु चंपापुर १३। श्री विमल ६००० साधुसुं १४। श्री अनंत ७००० साधुसुं १५। श्री धर्म्म १०८ साधुसुं १६। श्री शांति ९०० साधुसुं १७। श्री कुंथु १००० साधुसुं १८। श्री अरि १००० साधुसुं १९। श्री मल्लि ५०० साधुसुं २०। श्री मु[illegible]व्रत १००० साधु २१। श्री नमि १००० साधुसुं २२। श्री नेमि ५३६ [illegible] गिरनार २३। श्री पार्श्व ३३ साधुसुं २४। श्री महावीर एकाकी [illegible]ी ॥

[1809]

॥ [illegible]९ माघ शुक्रवार श्री समेत शैलस्य पर्वतोपरि भव्य जीवस्य दर्शनार्थ श्रीमत् [illegible]थस्य चरण पादुका स्थापिता राय धनपतिसिंह बाहादूरेण का० प्र० श्री वि[illegible] सूरि तपागच्छे ॥

[1810]

(१) [illegible]५ फा० कृष्ण ५ बुधवासरे श्री चंपापुरे तीर्थे श्री वासपूज्य जी
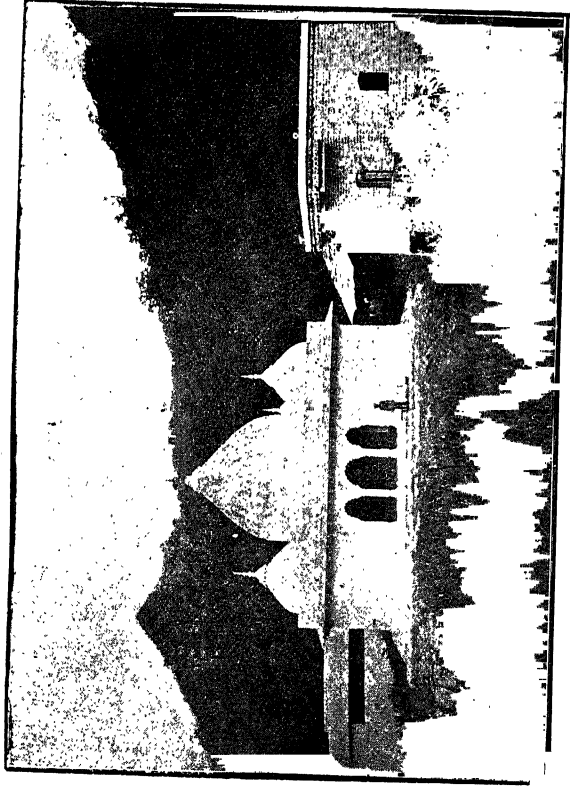
TIRTHA SAMMET SIKHAR—Jalmandira.

(२) पंच कल्याणक चरण न्यास मकसुदाबाद वास्तव्य डुगड़ साः प्रतापसिंह

(३) राजा महताब कुमर ज्येष्ट सुत लक्ष्मीपतस्य कनिष्ट भ्रात धनपत सिंह

(४) कारापितं प्रतिष्ठितं च श्री जिनहंस सूरिभिः बृहत्खरतरगच्छे ॥

[1811]

(१) ॥ संवत् १९३४ माघ वदि ५ बुधवार श्री नेमनाथ जिन तीन कल्यानक रेवत ··

(२) गवतो तस्य चरण न्यासः समेत शिखरे स्थापिता मकसूदाबाद अजीमगंज

(३) वास्तव्य डुगड प्रतापसिंह राजा महताब कुमर सुत लक्ष्मीपत कनिष्ट भ्राता

(४) धनपत सिंह कारापितं प्रतिष्ठितं श्री पूज्यजी भः श्री जिनहंस सूरीतः खरतर गच्छे

(५) बृहत् खरतर गच्छे ॥

[1812]

(१) ॥ सं १९३४ श्री फाल्गुण वदि ५ श्री वीर वर्धमानजी का चरण पादुका मकसुदा

(२) बाद वासी राय धनपत सिंह डुगडने स्थापित किया था सो उसको छत्री बिजली

(३) उपद्रव सु गिरगइ उसपर सं १९६५ के फाल्गुण सुदी ६ को कच्छ मांडवी वासी

(४) साः जगजीवन वालजी ने जीरण उधार कराइ।

जल मंदिर।

पाषाण की मूर्तियोंपर।

[1813]

(१) ॥ संवत् १८२२ वर्षे वैशाख सुदि १३ गुरौ श्री मगसुदाबाद वास्तव्य साउसुखा गोत्रीय ओसवंस ज्ञाती

(२) य वृद्धशाखायाम् ॥ लालचंद सुत सुगालचंदेन श्री मद्गुरुणा उपदेशात् आत्म सं श्रेयार्थं च श्री समेत शैल

(३) श्री जैन विहारे श्री सहस्र फणा पार्श्व जिन बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं च सुविहितागणाभिः लक्ष्म सूरिवरैः ॥ मंगलं ॥

[1814]

(१) ॥ सं १८२२ वर्षे वैशाख सुदि १३ गुरौ श्री मगसुदाबाद वास्तव्य साठेंदुखा गोत्रीय ओसवंस ज्ञातीय

(२) बृहद्‌शाखायां सा सुगालचंद भार्यया कसरकया आत्म संश्रेयार्थं श्री समेत गिरौ श्री जैन विहार श्री सं-

(३) भवनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं च सुविहिताग्रणीभिः । सकल सूरिभिः ॥ इति मंगलं ॥

मधुवन ।

जगतसेठजी का मंदिर ।

मूर्त्तियों पर ।

[1815]

॥ सं १८२२ वर्षे वैशाख सुदि १३ गुरौ सा सुगालचंदेन श्रीपार्श्व बिंबं कारापितं । प्र॰ सकल सूरिभिः ।

[1816]

(१) संवत् १८२२ वर्षे वैशाख सुदि १३ गुरौ मग ...... ज्ञातीय बृद्ध शाखायां सा रूपचंदजी सुत लखमीचंदजी

(२) सुत लालचंदजी माता मद कपूरचंदजी ...... देत स्वश्रेयोर्थं श्री सम्मेत गिरौ श्रीजिन वि

(३) हारे श्री पार्श्व जिन बिंबं कारापितं ......

[1817]

॥ संवत् १८२२ वैशाख सुदि १३ गुरौ श्री खरतर गछ आचार्य्यीय सा भीमजी सुत सा निहालचंदेन पं ... कारापितं ॥

[1818]

॥ सं० १८२७ शाके १६९३ । प्रवर्त्तमाने वैसाख सुदि द्वादशी तिथौ । भृगुवारे ओसवाल ज्ञाती वृद्धशाखायां ॥ आदि गोत्रे। सा० रुषनदास तद्भार्या गुलाबकुअर सहितेन श्रेयोर्थं । कायोत्सर्ग्ग मुद्रास्थित सहस्रफणालंकृत श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं ॥

[1819]

॥ सं० १८२२ [?] वैशाख सु० १३ गुरौ श्री गहिलडा गोत्रीय साह कस्तुरचंद ॥

धरणेन्द्र पद्मावती की मूर्ति पर।

[1820]

॥ संवत् १८२५ माह सुदि ३ सा। सुगालचंदेन श्री धरणेन्द्र पद्मावत्या कारापिता प्र० तपागच्छे ॥

प्रतापसिंहजी का मंदिर।

शिलालेख।

[1821]

(१) ॥ संवत् १८८९ मिति माघ शुक्ल १० दशम्यां तिथौ श्री गो-
(२) डी पार्श्वनाथस्य द्विभूमि युक्त चैत्यं। श्री बालूचर वास्त-
(३) व्य डुगरू गोत्रीय। श्री प्रतापसिंघेन कारित। प्रतिष्ठि-
(४) तं च श्री खरतर गच्छेशाःजं। यु। ब। श्री जिन हर्ष सूरी-
(५) णामुपदेशात्। उ। श्री क्षमाकल्याण गणीनां शिष्येणेति

पाषाण की मूर्तियोंपर।

[1822]

(१) ॥ सं० १८८८ माघ सुदि ५ सोमे श्री गवडी पार्श्वनाथ जिन बिं-

(२) बं कारितं ओसवंशे डुगड गो। प्रतापसिंहेन। प्र। वृ। ज। खरतर ग-
(३) छाधिराज श्री जिनचंद्र सूरि ··|······ स्थितैः।

[1823]

॥ श्री गोडी पार्श्व जिन बिंबं ॥ (ॐ) ॥ संवत् १९३२ बर्षे ज्येष्ट शुक्ल ११। चंद्रे जीर्णोद्धाररूपा। विजय गछे। भट्टारक श्री पूज्य श्री जिन शांतिसागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं स्थापितं च ॥

पाषाण के चरणों पर।

[1824]

(१) संवत् १८८९ मिति माघ शुक्ल १० दशम्यां तिथौ श्री गौडी पार्श्वनाथ चैत्ये बिंशति जिनेश्वराणां चरण न्यासाः श्री बालूचर नगर वास्त
(२) व्य डुगड गौत्रीय साह श्री प्रताप सिंघेन कारिताः प्रतिष्ठिताश्च। श्री मद्बृहत्खरतर गछेशाः जंग-
(३) म युग प्रधान भट्टारकाः श्री जिन हर्ष सूरीश्वराणामुपदेशात् उपाध्याय पद शो- भिता। श्री क्षमाकल्याण गणीनां शि-
(४) ष्य प्राज्ञ ज्ञानानंदेन पं। आनंदबिमल पं। सुमति शेखर सहितेनेति। श्रेयोर्थं। सम्यक्त बृद्ध्यर्थं च ॥
॥ श्री अजितनाथजी २ ॥ श्री संभवनाथजी ३ ॥ श्री अभिनंदन नाथ जी ४ ॥ श्री सुमति नाथ जी ५ ॥ श्री पद्मप्रभ जी ६ ॥ श्री सुपार्श्वनाथ जी ७ ॥ श्री चंद्रप्रभजी ८ ॥ श्री सुविधिनाथ जी ९ ॥ श्री शीतल नाथ जी १० ॥ श्री श्रेयांस नाथ जी ११ ॥ श्री विमल नाथ जी १३ ॥ श्री अनंत नाथ जी १४ ॥ श्री धर्म नाथ जी १५ ॥ श्री शांति नाथ जी १६ ॥ श्री कुंथुनाथ जी १७ ॥ श्री अरनाथ जी १८ ॥ श्री मल्लिनाथ जी १९ ॥ श्री मुनिसुव्रत नाथ जी २० ॥ श्री नमिनाथ जी २१ ॥ श्री पार्श्वनाथ जी २३ ॥

पाषाण के चरणों पर।

[1825]

(१) ॥ संबत् १९३१ ॥ माघे ॥ शुक्ला ९। चंद्रे। गोतम स्वामी ॥
(२) चरण पादुका कारापिता ॥
(३) मुनि गोकल चंद्रेण
(४) भट्टारक श्री जिन शांति सागर सूरिभिः। प्रतिष्ठितं ॥ श्री विजय गच्छे ॥

[1826]

(१) ॥ संबत् १९३३ मिति माघ शुक्ल ११ अभिनंदन जिन पादुकामिदं मक्
(२) सूदावाद् वास्तव्य ओशवंशीय लुंपक गणेमानाक् डुगड गोत्रीय बाबु
(३) प्रतापसिंहस्य भार्या महताब कुमारिकस्य बृद्ध पुत्र राय बहादुर
(४) लक्ष्मीपत सिंघस्य लघु भ्रातृ रा। धनपत सिंघेन करापितं प्रतिष्ठितं सर्व सूरिणा ॥

कानपुरवालों का मंदिर।

शिलालेख।

[1827]

॥ सं १९४३ का वर्षे शाके १८०८ प्रवर्तमाने माघ मासे कृष्ण पक्षे एकादश्यां बुधे श्रेष्ठी श्री सिखरूप मल तादात्मज भंडारी श्री रघुनाथ प्रसाद तद्भार्या श्री बदामो बीबी तथा कारितं श्री पार्श्वजिन मंदिरं महोत्सवेन स्थापना कारापिता श्री शिखर गिरि मधुवने बृहद्विजयगच्छे सार्वभौम भट्टारक श्री जं. यु. प्र. श्री पूज्य श्री जिन शांति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्रेयसे। (इसके बाई ओर एक पंक्ति में) श्री मत्तपागच्छाधिराज भट्टारक श्री १०८ श्री विजयराज सूरि राज्ये शुभं भवतु।

मूर्तियों पर।

[1828]

॥ सं० १८५४ वर्षे माघ वदि ५ चंद्रे श्री मरवरतर पीपल्या गच्छे श्री जिनदेव

सूरीश्वर राज्ये ओसवंस वृद्ध शाखायां सा पानाचंद श्री पार्श्वजिन बिंबं ······· घेन प्रति ····

[1829]

॥ सं. १९०५ शाके १७६० वदि ५ भृगौ सीवोर वास्तव्य सा. र (त) न चंद तद्भार्या जीजा बाइ तत्पुत्री बेन नवल स्वश्रेयोर्थं श्री चंद्रप्रभ बिंबं ॥ कारापितं तपागछे भट्टारक श्री शांतिसागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

लाला कालीकादासजी का मंदिर।

मूर्त्तियों पर।

[1830]

॥ १९१० वर्षे शाके १७७५ माघ शुक्ल २ तिथौ श्री सुपार्श्वनाथ जिन बिंबं प्रतिष्ठितं खरतर गछे श्री जिनहर्ष सूरीणां पट्ट प्रभावक ·······

[1831]

॥ सं. १९१० वर्षे शाके १७७५ माघ शुक्ल द्वितीयायां श्री वासुपूज्य जि बिंबं प्रतिष्ठितं च। श्री जिन महेन्द्र सूरिभिः कारितं च श्री ········

[1832]

॥ सं० १९१० वर्षे शाके १७७५ माघ शुक्ल २ तिथौ श्री धर्मनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं खरतर गछे श्री जिन हर्ष सूरीणां पट्ट प्रभावक ········

पाषाण की पंचतीर्थी पर।

[1833]

॥ सं० १९३१ वर्षे माघ मासे शुक्ल पक्षे १२ बुधे श्री पंचतीर्थीय जिन बिंबं वेहुयुतो गोत्रे लाला कालीकादास तद्भार्या चन्नी बीबो तया कारितं मलधार पूर्णिमा श्री मद्विजय गछे च। श्री पूज्य श्री शांति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

चंद्रप्रभुजी का मंदिर

मूर्त्तियों पर।

[1834]

॥ सं १८०८ माघ सुदि ५ सोमे श्री चंद्रप्रभ जिन बिंबं कारितं ओसवंसे नवलखा गोत्रे मोटामल पुत्र यश रूपेन प्र। बृहत् खरतर ग। श्री जिनाक्षे सूरि चरणकज चंचरीक श्री जिनचंद्र सूरिभिः॥

पार्श्वनाथ जी का मंदिर।

मूर्तियों पर।

[1835]

॥ सं. १६७६ मिति फालगुण शुक्ल १३ ········

[1836]

॥ सं. १८७७ वै। शु। १५ श्री पार्श्व बिंबं प्र। श्री जिनहर्ष सूरीणा गोलवछा महता बोजानी मूलचंदेन धर्मचंदेन कारितं कास्यां बृहत् खरतर गणे

[1837]

॥ सं. १८७७ वै। शु। १५ श्री चंद्रप्रभ बिंबं प्र। श्री जिन हर्ष सूरीणा कारितं....

[1838]

॥ सं. १८७७। वै। शु। १५ श्री चंद्रप्रभ बिंबं प्र। श्री जिनहर्ष सूरिणा कारितं माल- घस चेनसुखज कुंदन लालेन श्री ······

पट्ट पर।

[1839]

॥ सं. १८८५ मि। फालगुण सुदि १३ रवौ शिखर गिरौ श्री सिद्धचक्रमिदं प्रतिष्ठितं

न। श्री जिनहर्ष सूरिभिः श्री बृहत् खरतर गच्छे कारितं डु० पुरणचंदेन सभार्यया स पुत्रेण श्रेयोर्थं।

[1840]

॥ संवत् १८५४ वैशाख शुक्ल पक्ष चतुर्थी चंद्रवासरे अमृत सिद्धि योगे राजनगर निवासि वायचाणा शा··· जेचंदेन श्री तपागच्छ सूरीश्वर विजयसिंह सूरीणा·····

सुव्रत स्वामीजी का मंदिर।

चरणों पर।

[1841]

(१) सं. १८७५ मि। मार्गशीर्ष ५ तिथौ रविवासरे

(२) श्रीमच्छ्री जिनदत्त सूरीणां चरणपंकजानि

(३) बृ। ख। जं। यु। प्र। भ। जिनहर्ष। सू। प्रतिष्ठितानि॥

[1842]

(१) ॥ सं. १८७५। मिति मार्गशीर्ष शुक्ल ५ तिथौ रविवासरे

(२) श्री सद्गुरूणां पादौ बृहत् खरतर ग

(३) च्छे। जं। यु। प्र। भ। श्री जिनहर्ष सूरिभिः प्रतिष्ठितं॥ श्री॥

(४) ॥ दादाजी श्री जिनकुशल सूरिः
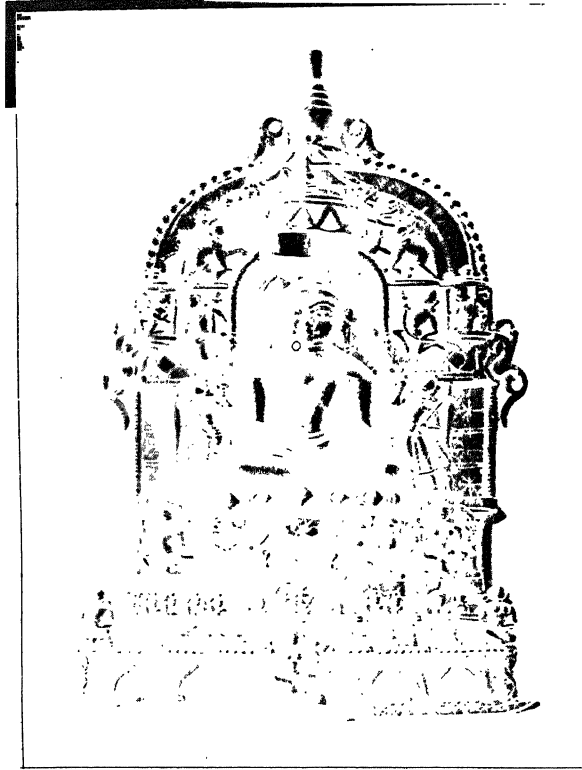
METAL IMAGE OF SHRI SUMATINATH.
Jain Swetambara Temple—Tirtha Rajgriha.
Dated V. S. 1512 (A.D. 1455)

श्री राजगृह ।

गांव मंदिर।

पंचतीर्थी पर।

[1843]

संवत् १५१२ वर्षे वैशाष सुदि १३ ऊकेश सा० भादा भार्या भरमादे पुत्र सा० नायक भार्या नायक दे फदेकू पुत्र सा० अदाकेन भा० सोनाई भ्रातृ सा० जोगादि कुटुंबयुतेन श्री सुमति नाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ॥ वढली वास्तव्यः ॥ श्री ॥

धातु की मूर्ति पर।

[1844]

सं० १९२० । म । का । कृष्ण २ बुधे डुगड प्रतापसिंह भार्या महताब कंवर श्री संती नाथ जिन बिंबं का० ॥

सफण मूर्ति पर।

[1845]

संबत् १६२० आषाड वदि २। मित्रवाल वंशी षी (वी) सेरवार गोत्रीय सं० गनपति पु० स० तारात पुत्र हेमराज पार्श्वनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं खरतर गच्छे जिनचन्द्र सूरिभिः ॥ शुभमस्तु ॥

श्याम पाषाण की मूर्ति पर।

[1846]

(१) ॥ संवत् १५०४ वर्षे फागण सुदि ९ महतीयाण वंशे ठ० देवसी पुत्र सं० भेलू बहनी लखाई भार्या बेणी । श्री शांति

(२) नाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री जिनसागर सूरीणां निदेशेन वा० शुनशील गणिनिः

चरण पर ।

[1847]

॥ ॐ नमः ॥ संवत् १८१९ वर्षे माघमासे शुक्लपक्षे ६ तिथौ श्री चंद्रप्रन जिनवर चरणकमले शुने स्थापिते ॥ हुगली वास्तव्य ओसवंशे गांधी गोत्रे बुलाकिदास तत्पुत्र साह माणिक चंदेन षत्रीकुंडे कुंडघाटे जीर्णोद्धार करापितं ॥ १ ॥

वैनार गिरि ।

चौथे मंदिर में ।

चरणों पर ।

[1848]

(१) संवत् १९३० वर्षे शाके १८०२ प्रवर्तमाने मासोत्तममासे
(२) शुने ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे द्वादशी गुरूवासरे ··· श्री व्यवहार
(३) गिरि शिखरे श्री जिनचैत्यालये मूलनायक श्री
(४) महावीर जिन चरणन्यासः प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छे बृद्धवि
(५) जय थापीतं (द्भ) साह बाहादरसंह प्रताप-
(६) सिंह तत् पुत्र राय लछमीपत धनपतसिंग
(७) बाहाद (र) जिरणोद्धार करापितं श्री रस्तु
(८) ॥ प्रथम प्रतिष्ठा संवत १८७४ शा० १७३९ मासो
(९) त्तमासे शुने ज्येष्टमासे कृष्णपक्षे पं-
(१०) चम्यां तिथौ सोमवासरे श्री जिनचन्द्र
(११) सूरिजी महाराज का० श्री ।

[1852]

(१) संवत् १९३८ वर्षे शाके १८०३ प्रवर्त्तमाने मासोत्तममासे
(२) ज्येष्टमासे शुक्लपक्षे द्वादशम्यां तिथौ गुरूवासेर
(३) श्री व्यवहार गिरिशिखरे
(४) श्री पार्श्वनाथ चरणयनसः प्रतिष्ठितं वृद्धविज-
(५) य गणि राय छत्रपित सिंह धन-
(६) पत संग जिरणोद्धार करापीतं

ब्रडे मंदिर में।
चरण पर

[1853]

(१) संवत् १९३८ वर्षे ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे
(२) द्वादशम्यां तिथि गुरूवासरे आदिनाथ जिन चरण-
(३) न्यास प्रतिष्ठितं वृद्धविजय गणि प्रथ-
(४) म जीरणोद्धार बूलाकिचंद् तत् पुत्र माणिक
(५) चंद जिरणोद्धार करापीतं द्रुति-
(६) य जिरणोद्धार राय छत्रपति सं-
(७) घ धनपतसंघ करापितं। श्रीरस्तु   ८। व्यवहारगिरी

बड़ी मूर्त्ति पर

[1854]

॥ संवत् १५०४ वर्षे फागुण सुदि ९ दिने महतियाण..........श्री पार्श्वनाथ बिंबं श्री खरतर गच्छे..............श्री जिनसागरसूरीणां निदेशेन श्री शुभशील गुणिभिः॥

खंडहर ।

पाषाण की मूर्तियों पर

[1855]

॥ ओँ संवत् १५०४ वर्षे फागुण सुदि ए दिने महतीयाण वंशे जाटड गोत्रे सं० देवराज पुत्र सं० षीमराज पुत्र सं० जिणदासेन श्री महावीर बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्रीजिनचंद्रसूरि पट्टे श्री जिनसागर सूरीणां निदेशेन वाचनाचार्य शुभशील गणिभिः ॥

[1856]

(१) संवत् १५०४ फागुण सुदि ए दिने महतीयाण वंशे वार्त्तिदिया (?) गोत्रे ठ० हरिपा
(२) लेन भार्या लाडो पु० ठ० हरिसि । श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं । श्री
(३) खरतर गच्छे श्री जिनसागर सूरीणां निदेशेन वाच
(४) नाचार्य शुभशील गणिभिः॥

सोन भंडार ।

[1857] *

निर्वाणलाभाय तपस्वियोग्ये, शुभे गुहेऽर्हत् प्रतिमा प्रतिष्ठे ।
आचार्यरत्नं मुनि वैरदेवः, विमुक्तये ऽकारयद्दीर्घतेजः ॥

मणियार मठ ।

चरण पर

[1858] †

सं. १७३७ वर्षे मासे माह सुदी ५ तद्दिने श्रीओसवाल वंशे विराणी गोत्रे केशोदास तस्य मोतुलालकस्य भार्या बीबी सताबो राजगृहे नागस्य शालिभद्रजीकस्य चरण स्थापितः ।

---

* देखो—आर्किओलजिकल सर्वे रिपोर्टस्—१९०५-०६ पृ० ९८
† „ — „ — „ — „ — पृ० १०३

[242]

'खुस्यालचंदस्य पत्नी' के स्थान में 'खुस्यालचंदस्य पीपाड़ा गोत्रस्य पत्नी' होना चाहिये। यह लेख विपुल गिरि के मंदिर में है।

[244]

'सा श्री हकु—' के स्थान में 'सा। श्री हकुमतराय—' होना चाहिये।

[256]

'देवराज सं० षीमराज' के स्थानमें 'देवराज पुत्र सं० षीमराज' होना चाहिये।

संशोधित पाठ।

[257]

॥ ॐ सं० १५२४ आषाढ सुदि १३ खरतर गणेश श्री जिनचंद्रसूरि विजयराज्ये-तदादेश .... श्री कमलसंयमोपाध्यायैः स्वगुरु श्री जिनचन्द्र सूरि पादुके प्र० का० श्रीमाल वं० नीषू पुत्र ठ० ढीतमल श्रावकेण श्री वैभार गिरौ मुनि मेरुणा लि० ॥

यह चरण गांव के मंदिरमें है।

[258]

॥ सं० १५२४ आषाढ सुदि १३ श्री जिनचंद्र सूरीणामादेशेन श्री कमलसंयमोपाध्यायैः धनाशालिभद्रमूर्त्ति ॥ प्र० का० ठ० ढीतमल श्रावकेण।

[268]

"पत्नी महाकुमा–तस्या" के स्थान में "पत्नी महाकुमार्या तस्या" होना चाहिये।

पटना।

शहर मंदिर।

संशोधित पाठ।

[323]
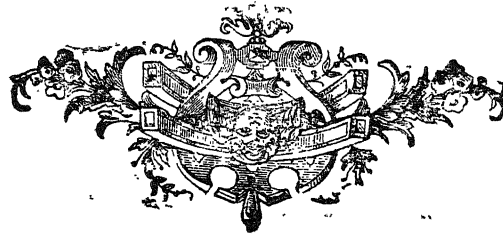
॥ संवत १५४७ वर्षे वैसाष शुदि ३ मुलसंघे भट्टारक जो श्री जिनचन्द्र देवा साह जीव राज पापडिवाल नित्य प्रणमति सर मंमासा श्री राजा सिवसिंघ जी रावल....।

[324]

संवत १५४७ वर्षे वैसाष सुदि ३ मुलसंघे भट्टारक श्री जिनचंद्र देवा सा० जिवराज पापडिवाल सहर मंमासा श्री राजा सिवसघंजी रावल....।

दिगंबरी मंदिर—घीया तमोली गली, सिटी।

श्वेत पाषाण की मूर्त्ति पर।

[1859]

॥ सं० १४९९ वर्षे फाल्गुण वदि २ श्री संडेर गच्छे उ० साह केल्हा भार्या कस्तुरी पुत्र श्री देपाल भा० देवल दे पुत्र मोकल सहितेन श्री शीतल बिंबं का० प्र० श्री शांति सूरिभिः॥

पटना—म्युजियम।

संशोधित पाठ।

[555]

सम्वत्। १८७४। वर्षे शाके १७३९। प्रवर्त्तमाने। शुभ ज्येष्ठमासे कृष्णपक्षे पंचम्यां तिथौ। सोमदिने श्री व्यवहार गिरि शिखरे श्रो॥ शांति जिन चरणान्प्रतिष्ठितं भ। श्री जिनहर्ष सूरिभिः।

[734]

॥ सं. । १९११ व । सा । १७७५....शुचिः । शु । १० ति । श्री शांति जिन पादन्यासो प्र । खरतर गछ भट्टारक श्री महेन्द्र सूरिभिः का । से । श्री उदेचंद भार्या माहा कुमार्य्य श्रे०॥
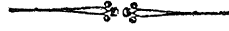
बनारस ।

पाषाण की मूर्त्तियों पर ।

[1860] *

(१) श्रीँ संवत् १५११ वर्षे ज्येष्ठ सु० ३ गुरौ (२) श्रीमाल वंशे [ढोर] गोत्रे व०
(३) सं० उढरव अजीतमल्ल भार्याया (४) पुत्र.........
(५) श्री सुमति नाथ बिंबं का० (६) प्रति० श्री जिनचंद्र सूरि...
(७) श्री जिनतिलक सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

[1861] *

(१) श्रीँ स्वस्ति संवत् १५११ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ३ पुष्यनक्षत्रे गुरौ श्रीमालवंशे ढोर गोत्रे सोवनपाल भार्या......
(२) ....आदिनाथ................
(३) खरतर ग० श्री जिनहर्षसूरि संताने श्री जिनतिलक सूरि प्रतिष्ठितं

[1862] *

(१) [नर] पाल भार्या । महुरी पुत्र ठ० भरतपाल....
(२) सं० उड़रव अजितमल्ल....

श्याम पाषाण की छोटी मूर्त्ति पर ।

[1863] *

सं० १३७२ वैसाख वदि......

काले पाषाण की टूटी परकर के बांये तर्फ

[1864] *

(१) ....ज्येष्ठ सुदि १३ शुक्र वासरे। ब० दो....

(२) ....। बिंबं कारितं।

[1865] *

(१) ॥ ओँ ॥ सं० १५०३ वर्षे माघ वदि ६ दिने श्रीमाल वंशे नांदी गोत्रे सं० नरपाल भार्या मह्ु-

(२) री कारितं श्रीमहावीर बिंबं। श्री खरतर गछे प्रतिष्ठितं श्री जिनसागर सूरिभिः॥

मूलनायकजी पर।

[1866]

सं० १९१० शाके १७७३ मिती आषाढ कृष्ण २ श्री गौड़ी पार्श्वनाथ जिन बिंबं प्रतिष्ठिता कृता बृहत् खरतर भट्टारक गणेश जङ्गम यु० प्रधान भट्टारक श्री जिनमुक्ति सूरिभिः कारिता च नाहटा गोत्रीय लक्ष्मीचन्द्रात्मज दीपचन्द्रेन स्वश्रेयोर्थ सोम वासरे॥

पाषाण की मूर्त्तियों पर।

[1867]

सं० १९१० शाके १७७३ मिती आषाढ कृष्ण २ सोमे श्रीवर्धमान जिन बिंबं प्रतिष्ठा कृता बृहत् खरतर भट्टारक गणेश जं० यु० प्रधान श्री जिनमुक्ति सूरिभिः कारित च नाहटा गोत्रीय लक्ष्मीचन्द्र पौत्र मनोरथचन्द्र श्रेयोर्थमिति।

[1868]

सं० १९१० शाके १७७३ मिती आषाढ कृष्ण २ सोमे श्री ऋषभ देव जिन बिंबं प्रतिष्ठा

---

* ये मूर्त्तियां हाल में जौनपुर से डेढ कोस पर गोमती के किनारे खेत से मिली हैं। बाबू शिखरचंद जी जौहरी ने लाकर अपने बनारस के मंदिर में रखी हैं।

कृता बृहत् खरतर भट्टारक गणेश जं० यु० प्रधान श्री जिनमुक्ति सूरिभिः कारिता च नाहटा गोत्रीय लक्ष्मीचन्द्रात्मज फूलचन्द्र श्रेयोर्थमिति ।

धातु की प्रतिमा पर ।

[1869]

सं० १८९७ फा० सु० ५ श्री पार्श्वनाथ बिंबं प्र० श्री जिनमहेन्द्रसूरिणा कारिता नाहटा लक्ष्मीचन्द्र तत् भार्या लक्ष्मी बीबी विधत्ते ।

[1870]

सं० १८९७ फा० सु० ५ श्री सुपार्श्व बिंबं प्र० श्री जिनमहेन्द्र सूरिना का० बा० लक्ष्मी- चन्द्र पुत्री नानको नाम्ना बुद्धोत्तम श्री कुशलचन्द्र गण्युपदेशतो बृहत् खरतर गच्छे ।

[1871]

सं० १०२० फा० सु० २ बुधे प्रतापसिंहजी भार्या महताब कुंवर कारितं श्री चन्द्रप्रभ श्री सागरचन्द्र गणि प्रतिष्ठितं ।

सिद्धचक्र पर ।

[1872]

सं० १९१० आषाढ कृष्ण २ सोमे श्री सिद्धचक्र प्रतिष्ठितं ज० यु० प्र० भ० श्री जिन मुक्ति सूरिभिः कारितं च नाहटा गोत्रीय लक्ष्मीचन्द्रात्मज दीपचन्देन स्वहितार्थं ।

देहली।

लाला हजारीमलजी का घरदेरासर।

देवी की मूर्त्ति पर।

[1873] *

(१) संवत् ११२५ श्री
(२) पचासरीय (!) गच्छे
(३) श्रीमल्लवादि संताने
(४) चेल्लकेन विरोट्या कारिता ॥

चीरेखाने का मंदिर।

धातु की मूर्त्तियों पर।

[1874]

सं० ११९९........।

[1875]

सं० १२३४ आश्वलू वदि २ सनौ ज्ञातृ लीवूंदेव श्रेयोर्थ नागदेवेन प्रतिमा कारिता प्रतिष्ठिता मल्लवादि श्री पूर्णचंद्र सूरिभिः।

[1876]

सं० १४६१ वर्षे माघ सुदि १० नाहर वंशे सा० षेता पु० सा० तोला भार्या तिहुणश्री पु० हेमा धर्म्माद्भ्यां पितृव्य श्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्रति० श्री धर्म्मघोष गच्छे श्री मलयचंद्र सूरिभिः ॥ गिर....ग।

[1877]

संवत् १७०३ वर्षे ज्येष्ठ सु० ३........।

[1878]

सं० १७७५.... वदि ७ श्री ऋषभानन........।

---

* यह लेख १३ वीं विद्यादेवी की धातु की मूर्त्ति के पृष्ठ पर खुदा हुवा है। देवी की मूर्त्ति सुखासन में बैठी हुई सर्प-वाहन चार हाथवाली प्राचीन है।

चौवीशी पर।

[1879]

संवत् १५५३ वर्षे वैशाष सु० ३ बुधे श्री हुंबड ज्ञातीय सा० देवा भा० रामति सु० जेईआकेन भा० माणिकदे सु० डाहीयानाथ पु० स्वश्रेयसे श्री मुनिसुव्रत स्वामि बिंबं कारितं प्र० श्री वृहत्तपा पक्षे भ० श्री उदयसागर सूरिभिः॥ गिर...ग।

जोधपुर

राजवैद्य भ० श्री उदयचंद्रजी का देरासर।

पंचतीर्थी पर।

[1880]

संवत् १५१६ बै० सु० ५ प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० मोषसी टमकू पु० जाणा हरखु पु० पुंजा रणसा० पाहु प० जिनदत्त युतेन श्री संभव बिं० कारितं प्र० श्री तपा रत्नशेखर सूरिभिः।

जसोल (मारवाड़)।

पीले पाषाण की मूर्ति पर।

[1881]

॥ सं० १५३३ वर्षे ज्येष्ठ सु० १०.....श्री महावीर बिंबं.....खरतर श्री जिनचंद्र सूरिभिः।

पंचतीर्थियों पर।

[1882]

संवत् १४७६ वैशाष वदि २ श्री ऊकेशवंशे बाजहड़ गोत्रे सा० षेता पु० आसधर पु० करमा भा० कूरमादे पु० भारमलेन भा० भरमादे पु० सहणा सादा यु० श्री आदिनाथ बिंबं कारितं आत्मश्रेयसे प्रति० श्री पल्लीवाल गच्छे श्री यशोदेव सूरि (भिः)।

[1883]

॥ संवत् १५१७ वर्षे माघ बदि ५ दिने श्री ऊकेश गच्छे श्री ककुदाचार्य संताने श्री उप-केश ज्ञातौ विंवट गोत्रे सं० दादू पु० सं० श्रीवत्स पु० सुललित भा० ललतादे पु० साहण-केन भा० संसार दे युतेन पितरौ श्रेयसे श्री अजितनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री कक्क सूरिभिः॥

[1884]

सं० १५१९ माघ सु० शुक्रे प्रा० व्य० मीचत भा० नासल दे पुत्र सूचाकेन भा० चांकू माल्ही पु० मेरा तोलादि युतेन स्वश्रेयसे श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं प्र० तपा श्री लक्ष्मी-सागर सूरिभिः॥
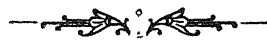
नाकोड़ा।

श्री शांतिनाथजी का मंदिर।

पीले पाषाण के चरण पर।

[1885]

संवत् १५२५ वर्षे वैशाष वदि ५ दिने श्री वीरमपुरे श्री खरतर गच्छे श्री कीर्तिरत्न सूरिणां स्वर्गः॥ तत्पादुके संखवालेचा गोत्रे सा। काजल पुत्र सा० त्रिलोकसिंह षेतसिंह जिणदास गवडीदास कुसलाकेन करापितं। सं० १६३१ वर्षे मगसर सुदि २ दिने प्रतिष्ठितं॥

पंचतीर्थियों पर ।

[1886]

सं० १४०५ वैशाष सुदि ३ ऊएस ज्ञातीय बाजहड़ गोत्रे सा० गणधर भार्या बल्हू पुत्र मोहण जयताकेन पित्रो श्रेयसे श्री आदिनाथः कारितं प्रति० श्री अभयदेव सूरिभिः ।

[1887]

सं० १५१३ वर्षे माघ मासे ऊकेश वंशे सा० बल्हा भा० सूल्ही पुत्र सा० बाहड़ भा० गउरी सुत डूंगर रणधीर सुरजनैः रणधीर श्रेयसे श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री यशोदेव सूरिभिः ॥ बाजहड़ गोत्रे ॥

[1888]

ओं संवत् १५३६ वर्षे श्री कीर्तिरत्न सूरि गुरुभ्यो नमः सा० जेठा पुत्र रोहिनी प्रणमंति॥
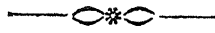
बाड़मेर–मारवाड ।

पार्श्वनाथजी का मंदिर ।

[1889]

सं० १६६५ वर्षे उकेश वंशे सा० ठाकुरसी कु० प्र० क ..... प्रमुख श्री संघेन उ० श्री विद्यासागर गणि शिष्येण श्री विद्याशील गणि शिष्य वा० श्री विवेकमेरु गणि शिष्य पं० श्री मुनिशील गणि नित्यं प्रणमति । श्री अंचल गच्छे ।

उदयपुर ।

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर–सेठों की बाड़ी में ।

पचतीर्थियों पर ।

[1890]

॥ सं० १५०८ वर्षे मा० वदि ५ दिने श्री संडर गच्छे उप० ज्ञा० सा० आसा पु० सात भा० षेठी पु० षितमा भा० धारू पु० भाषर भा० लाडी पु० पामा स्वश्रेयसे श्री सुविधिनाथ बिंबं का० प्र० श्री यशोभद्र सूरि संताने गच्छेशैः श्री शांति सूरिभिः ॥

[1891]

॥ संवत् १६२० वर्षे वैशाष सुदि ११ बुधे नारदपुरी वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय सा० टीला सुत सा० चूत्राख्येन जार्या बाई पानु सुत लाधा हीता प्रभृति कुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्री धर्म्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छाधिराज जट्टारक श्री हीरविजय सूरिजिश्चिरं नन्दतात् ॥

श्री ऋषजदेवजी का मंदिर—हाथीपोल ।

पंचतीर्थी पर ।

[1892]

॥ सं० १३४२ ज्येष्ठ शु० ए गुरौ गेपुत्रौवाल(?) ज्ञातीय व्यव० पुनाकेन जार्या ..श्रेयसे श्री पद्मप्रज बिंबं का० प्र० श्री सुमति सूरिजिः ॥

श्री ऋषजदेवजी का मंदिर—कसैरी गली ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1893]

॥ सं० १५०१ वर्षे आषाढ सुदि ५ उपकेश ज्ञातीय....श्री आदिनाथ बिंबं का०....

[1894]

॥ सं० १५३३ वर्षे वैशाष सु० ५ शुक्रे श्रीमाल ज्ञा० व्य० मेला जा० रूत्रकू सुत सुधा-केनपितृमातृभ्रातृ श्रेयोर्थं आत्मश्रेयसे श्री सुमति नाथ बिंबं का० प्र० श्री नागेंद्र गछे श्री गुणदेव सूरिजिः ॥ बडेचा सषवाराही ग्रामे वास्तव्य ॥

[1895]

॥ संवत् १५५ए वर्षे आषाढ सुदि ० दिने डूगड़ गोत्रे जार्या सिरिया पुत्र करमसी जार्या फुल्ला धरमाई पुत्र षीमपाल नरपाल नरपति मातृ श्रेयसे श्री शीतलनाथ बिंबं का रितं प्र० श्री वृहद्गच्छे ज० श्री श्री वल्लज सूरिजिः ॥

[1896]

॥ सं० १५७२ वर्षे चैत्र वदि ३ बुधे ऊकेश वंशे वईताला गोत्रे सा० तोला भा० डीडो पु० सा० आसाकेन भा० राना दे पु० जीवा द्वितीय भा० अचला दे पुत्र गोल्हा पदमादि परिवार युतेन स्वपुण्यार्थं श्री धर्म्मनाथ बिंबं का० प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिनहर्ष सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिभिः ॥ पं० कुशल....सुप....।

श्री गौतमस्वामी की धातु की मूर्त्ति पर।

[1897]

॥ सं० १६२ए व० का० सु० ३ गुरुवारे...सरताण...श्री गौतमस्वामि बिंबं का०..।

धातु के यंत्र पर।

[1898]

॥ सं० १ए१२ वर्षे मिती आसोज सुदि १५ शुक्रे मेदपाट देशे उदयपुर ओशवंशे वृद्धि-शाखायां गोत्र बोथ्यां साहाजी श्री एकलिंग दासजी तत्पुत्र साहाजी श्री भगवान दासजी तत्पुत्र कुंवरजी श्री......श्री सिद्धचक्र यंत्र कारापितं भट्टारक श्री आनन्द सागर सूरि कारापितं बृहत्तपा गच्छे।

श्री ऋषभदेवजी का मंदिर—सेठों की हवेली के पास।

मूलनायकजी पर।

[1899]

(१) ॥ ॐ ॥ स्वस्ति श्री ऋद्धिवृद्धि जयौ। मंगलाभ्युदय श्री ॥ अथ संवत्सरेस्मिन् श्री मन्नृपति विक्रमार्क्क समयातित संवत् १६एए वर्षे श्री शालिवाहन राज्यात् शाके १५६४

(२) ॥ प्रवर्त्तमाने उत्तरगोले माघ मासे शुक्लपक्षे दशम्यां तिथौ गुरुवासरे श्री रामगढ दूर्गे महाराजाधिराज महाराव श्री हरीसिंघ जी विजयराज्ये ऊपकेश वंशे वृद्धि शाखा

(३) यां घांघ गोत्रे साह श्री माल्हण तत्भार्या सरूप दे तत्पुत्र संघवि श्री कान्हजि तस्य वृद्धि भार्या दीपां लघु भार्या सूषम दे पुत्र चिरंजिवी पुन्यपाल सहितेन श्री प्रासाद बिं

(४) बं ॥ श्री ऋषभदेव बिंब स्थापितं प्रतिष्ठितं मलधार गच्छे भट्टारिक श्री महिमा सागर सूरी तत्पट्टे श्री कल्याणसागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं धर्माचार्य विजामति श्री उदय सागर सूरिः । शुभं ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1900]

॥ ओं ॥ सं० १४९९ वर्षे फा० सुदि २ दिने ओसवाल ज्ञातीय सा० भाभण पु० सा० भुदा सुश्रावक भार्या रतनु तत्सुतेन सा० सोमाकेन पुत्र देवदत्त जगमालादि सहितेन श्री कुंथुनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं खरतर गच्छे श्री जिनभद्र सूरिभिः ॥ श्री ॥

[1901]

॥ सं० १४९९ माह सुदि ६ सोमे उ० ज्ञा० गूंदोचा गोत्रे सा० लाषा भा० लाषण दे पु० मेहाकेन भा० मयणल दे पु० षित्रपाल रणपालादि सह भाई षेता भा० षेतल दे निमित्तं सुमतिनाथ का० प्र० चैत्र गच्छे श्री मुनितिलक सूरि गुणाकर सूरिभिः ॥

[1902]

॥ संवत् १५२९ वर्षे वै० व० ४ शुक्रे प्रा० ज्ञातीय प० चांपसी भा० पोमादे सु० सांगाकेन भा० दई सुत करण भ्रा० सहसादि कुटुंबयुतेन स्वमातृपितृश्रेयसे कुंथुनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः । भाड़उलि ग्राम वास्तव्यः ॥

चौवीशी पर ।

[1903]

॥ सं० १५११ व० आषा० व० ७ श० उपकेश ज्ञातौ आदित्यनाग गोत्रे धाधू शा० सा०

भाया नां० भाव श्री पु० सुवर्णपाल भार्या सोमश्री पुत्र सा० लाषा केन भा० अधकू पु० सदरष सूरचंद्र हरिचंद्र युतेन स्वश्रेयसे श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं उपकेश ग० ककुदाचार्य संताने प्रतिष्ठितं श्री कक्क सूरिभि ॥ श्रीः ॥

प्रतिमा पर ।

[1904]

॥ सं० १९१९ रा मिगसर सु० १० उसवाल भागा गोत्रे सा० लिषमीदास जी भाया अनरुप दे पुत्र नाथजी अनरुप दे जी पंच पर....प्रतिष्ठितं ।
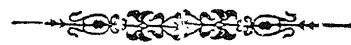
करेडा-मेवाड ।

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर ।

धातु की प्रतिमा पर ।

[1905] *

(१) ॐ देव धर्म्मोयं सुमति गुरोः मध्यम शाखस्य

(२) वसति का० देवसूरि संवतु........

(३) भिः

[1906]

सं० १६०४ व० ज्येष्ठ व०...बा कहानी (?) श्री कुंथुनाथ व जि...दान...सरपत्र खत सोनी सीदकरण

[1907]

॥ संवत् १६१९ वैशाख सुदि ६ श्री आदिनाथ.....श्री विजयदान सूरि प्र० बा० ....पु० ना० सुंदर......।

* संवत् के अंकों का स्थान टूट गया है, परन्तु लेख के अन्य अक्षरों से स्पष्ट है कि प्रतिमा बहुत प्राचीन है ।

[1908]

॥ सं० १६७२ व० वैशाख सुदि १२ वो श्री शीतलनाथ बिंबं गुरू श्री विजय सूरिभिः ॥

[1909]

॥ सं० १६४६ असा० सुदि ६ वाजसा श्री धर्म......

[1910]

॥ संवत् १७१० वर्षे ज्येष्ठ सित ६ गुरौ श्री सुविधि बिंबं श्रेयोर्थं का० प्र० भ० श्री विजयराज सूरिभिः श्रा० कनका भ० श्री विजय सेन सूरिभिः ॥

पंचतीर्थी पर।

[1911]

॥ सं० १५०७ वर्षे माघ सुदि ५ शुक्रे प्राग्वाट वंशे सं० कर्मट भा० माजू पु० उधरणेन भार्या सोहिणि पुत्र आल्हा वीसा नीसा सहितेन श्री अंचल गच्छेश श्री जयकेसरि सूरि उपदेशेन स्वश्रेयसे श्री वासुपूज्य स्वामी बिंबं कारितं प्र० श्रीसंघेन ॥

[1912]

॥ सं० १५१६ वीरम ग्रामे श्रे० वीठा सोनल पुत्र श्रे० गुडसिकेन भा० संपूटी पुत्र धन्ना वाघा भार्या फांफ प्रमुख कुटुंबयुतेन श्री नमिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छ नायक श्री रत्नशेखर सूरिभिः ॥

[1913]

॥ संवत् १५२७ वर्षे फागुण सुदि ३ शुक्रे श्री श्री (?) वंशे रत्नोडया गोत्रे श्रे० गुहा भार्या रंगाई पुत्र श्रे० वेधर सुश्रावकेण भा० कुंवरि भ्रातृ सीधा युतेन श्री अंचलगच्छेश्वर श्री जयकेसरि सूरीणामुपदेशेन स्वश्रेयोर्थं श्री शांति नाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसंघेन ॥ श्री पत्तन नगरे ॥

[1914]

॥ संवत् १५४१ वर्षे वैशाख मासे नागर ज्ञाती श्रे० केल्हा भा० मानूं सुत चांगा भाइयाकेन सुत हरखा भांगा बाला सहितेन आत्मश्रेयोर्थं श्री संभवनाथ बिंब का० प्र० बृद्ध तपापक्षे भ० श्री जिनरत्न सूरिभिः ॥

[1915]

॥ संवत् १५७७ वर्षे माघ सुदि ७ गुरौ उपकेश ज्ञा० सा० हापा पु० बिजा भा० बड़-जल दे पु० ठाकुर रीडा ठाकुर भा० अछवा दे पुत्र कुंरपाल युतेन आत्मश्रे० पित्रोः पु० श्री शीतलनाथ बिंबं का० प्र० श्री० बृ० बो० श्री मलयहंस सूरिभिः ॥ कईउलि वास्तव्य ॥

रंगमंडप के बांये तर्फ आले के नीचे का शिलालेख।

[1916]

(१) ॥ ॐ ॥ संवत् १३३४ वर्षे वैशाख सुदि ११ शुक्रे श्री आंचल गच्छे। प्राग्वाट ज्ञातीय महं साजण महं तेजा .... सा झांझणेन निज मातृ

(२) ...... कपूर देवी श्रेयोर्थं खनक (?) श्री शांतिनाथ बिंबं कारापितं ॥ संताने महं मंडलिक महं माला महं देवसीह महं प्रमत्तसीह .....

सभामंडप में दरवाजे के दाहिने स्तंभ पर।

[1917]

॥ ॐ ॥ संवत् १४६६ वर्षे चेत्र सुदि १३ सुविहित शिरोरत्न शेखर श्री रत्नशेखर सूरि पट्टांबुधि पूर्णचंद्र श्री पूर्णचंद्रसूरि गुरुक्रम कमलहंसाः श्री हेम हंससूरयः सपरिकरा कर:...

सभामंडप के ३ मकड़े के स्तंभ पर।

[1918]

श्री जिनसागर सूरि उदयशील गणि आज्ञासागर गणि हेमसुंदर गणि मेरुप्रभ मुनि श्री ......

बावन जिनायलमें पंचतीर्थीयों पर।

[1919]

॥ सं० १२४९......ऋषमिणी श्रेयोर्थं पुत्र उधरणेन जात्रि आसधर श्रेयोर्थं श्री पार्श्व-नाथ बिंबं कारितं ॥

[1920]

ॐ संवत् १२६२ ज्येष्ठ सुदि १० शनौ बायट ज्ञातीय स्वसुर नायक आसल श्रेयोर्थं ......श्री श्रेयांस बिंबं कारितं। श्री नागेन्द्र गच्छे श्री वर्द्धमान सूरिभिः प्रतिष्ठितं।

[1921]

संवत् १३२१ वर्षे फागुण सु०.... भा० घाटी पु० ऊदा भा० रुपिणि सुत आसपालेण माता पिता पूर्वज श्रेयोर्थं चतुर्विंशति पट्टः कारितः श्री चैत्रगच्छीय श्री आमदेव सूरिभिः श्री शांतिनाथ......।

[1922]

सं० १३५५ श्री ब्रह्माण गच्छे श्रीमाल ज्ञातीय रिज पूर्वज श्रेयसे सुत मालाकेन श्री आदि नाथ बिंबं प्र० श्री विमल सूरिभिः।

[1923]

सं० १३५६ श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं श्री कक्क सूरिभिः प्रतिष्ठितं।

[1924]

सं० १३७१ वर्षे ज्येष्ठ वदि ८ प्राग्वाट ज्ञातीय सा० धीना भार्या देवल पुत्र चकूजा केन मातृ पितृ श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ बिंबं श्री पूर्णिमा गच्छे श्री सोमतिलक सूरि उपदेशेन बिंबं का० प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः॥

[1925]

सं० १३७३ वैशाख वदि ११ श्रे० सिरकुंआर भा० सींगार देव्या प्र० सा लू ......
श्री महावीर कारितं।

[1926]

संवत् १३९१ मा० सु० १५ खरतर गच्छीय श्री जिन कुशल सूरि शिष्यैः श्री जिन पद्म सूरिभिः श्री पार्श्वनाथ प्रतिमा प्रतिष्ठिता कारिता च मत्र० बाहि सुतेन रह्लासिंहेन पुत्र आल्हादि परिवृतेन स्वपितृ सर्व पितृव्य पुन्यार्थं ।

[1927]

सं० १४०० व० सु० ५ प्रा० रोस्तरा पदम । साहरू साकल श्रे० देवसीहेन का० प्रति० सिद्धान्तिक श्री माणचन्द्र सूरि ।

[1928]

सं० १४२२ व० ज्येठ सु० ११ बुधे......मंडलिक भा० फाल्हण दे सुत धाणा श्रेयोर्थं व्य० षानाकेन श्री संभवनाथ बिंबं का०...तपा गच्छे श्री रत्नशेखर सूरीणामुपदेशेन.....

[1929]

सं० १४३९ माह वदि ७ श्रीमाल ज्ञा० व्यव० राणासीह भा० ललती पुत्र वजरा केन श्री सुमतिनाथ बिंबं का० श्री विजयसेन सूरि पट्टे....

[1930]

सं० १४७१ वर्षे माघ सुदि ......श्री मुनिसुव्रत बिंबं का० प्र० कठोलीवाल गच्छे श्री संघतिलक सूरि....

[1931]

सं० १४८२ वर्षे....साहलेचा गोत्रे सा हांपा....भा० गयणल दे पुत्र सा० लींबा भा० वीरणी पुत्र षरहयेन पितृ मातृ श्रेयसे श्री श्रेयांस बिंबं का० प्र० श्री पल्लीकीय गच्छ श्री यशोदेव सूरिभिः ।

[1932]

श्री सं० १४९१ वर्षे माघ सुदि ५ बुधे श्रीमाल वंशे वहगटा गोत्रे सा० ऊदा पुत्र सा० जगकेन आसा जूसा सहसादि पुत्रयुतेन पुन्यार्थं श्री नमिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनसागर सूरिभिः ।

[1933]

सं० १४९३ व० वै० सु० ५ श्री संडेर गच्छे पीपलउडेचा गोत्रे श्रे० ज्ञा० सा० कान्हा भा० वीमणि पु० रतनाकेन पित्रौ निमित्तं श्री शांतिनाथ बिंबं का० श्री जशोभद्र सूरि संताने श्री शालि .....।

[1934]

सं० १५०३ व० ज्ये० सु० ११ शु० श्री ऊप० ग० ककुदाचार्य सं० त्रिपड गो० सा० जीऊण पु० रामा भा० जीवदही पु० जिलाकेन पत्नीपुत्रस्वश्रे० श्री श्रेयांस बिं० का० ......।

[1935]

सं० १५०७ मा० व० १३ ऊकेश सं० मारंग सुत संभा भा० हेमा दाणा डुंगर नापा सं० रावा भा० पोबू सुत साहस जहाए भा० लक्ष्म्या श्री संभव बिंबं का० प्र० श्री उदयनंदि सूरिभिः।

[1936]

संवत् १५१२ वर्षे वैशाख सुदि २ सोमे उपकेश ज्ञा० कस्याट गोत्रे। सा० धाना भा० ससमादे पुत्र सा चडसीढाकेन पितर वालू निमित्तं श्री सुमतिनाथ बिंबं का० प्र० उपकेश० कुल श्रावक ......।

[1937]

सं० १५१७ वर्षे चैत्र वदि १ शुक्रे श्रीश्रीमाल ज्ञा० ......सु० बडूआस पुत्र पौत्र सहितेन श्री अजितनाथ मु० जिवितस्वामि प्र० श्री पूर्णिमा पक्षे श्री राजतिलक सूरीणा- मुपदेशेन।

[1938]

सं० १५३५ वर्षे मार्ग० सु० ९ आगर वासि प्राग्वाट सा० वाघा भा० गाऊ पुत्र सा० मालाकेन भा० आल्हू पुत्र पर्वत भा० नाई प्रमुख कुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्र० तपा श्री सोमसुंदर सूरि शिष्य श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः।

[1939]

सं० १५३....। व० वैशाख सुदि ३ शनौ श्री संडेर गच्छे उ० टप गोत्रे देल्हा भा० दल्हण दे गोरा भा० मल्हा दे पु० आल्हा भा० करमा भा० आनूण दे पु० तोला श्रे० पूर्वज पुन्यार्थं वासुपूज्य बिंबं का०...।

[1940]

॥ संवत् १५३२ वर्षे वैशाख सुदि ६ सोमे ऊकेश वंशे जाजा गोत्रे सा० धर्मा भा० धर्मा दे पुत्र सा० काजा सुश्रावकेण भा० भोजा प्रमुख परिवार सहितेन श्री श्रेयांस बिंबं का० प्र० खरतर गच्छे श्री जिनभद्र सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिभिः ॥

[1941]

संवत् १५३८ वर्षे ज्येष्ठ सु......माला भा० माला दे सुत केल्हा भा० सिवा सुत पोचकेन स्वश्रेयसे श्री पद्मप्रभ बिंबं कारितं प्र० तपा श्री सोमसुंदर शिष्य श्री जयचंद्र सूरि शिष्य श्री रत्नशेखर सूरिभिः ॥ श्री ॥

[1942]

संवत् १६३७ वर्षे वैशाख सुदि १२ रवौ श्री स्तम्भतीर्थ वास्तव्य श्री नागर ज्ञातीय सा० पना भार्या कीलादे सुत सा० हांसा भार्या वा। हांसलदे नाम्ना श्री आदिनाथ पंचतीर्थी करापितं। श्रीमत्तपा गच्छे भट्टारक प्रभु श्री हीर विजय सूरिभिः प्रतिष्ठितं। शुभं भवतु ॥

[1943]

॥ संवत् १६७५ वर्षे वैशाख सुदि ७ गुरुवासरे......वास्तव्य उकेश ज्ञातीय द० साह यांहसा भा० प्रभा सुता भोमा......सुत हेमा कुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्री मुनि.... तपा गच्छे भ० श्री हीरविजय सूरि भ० श्री विजयदेव सूरिश्वर.......।

[1944]

संवत् १७७७ माघ सु० ५ गुरुदिने आचार्य श्री देमकीर्तीः तत्पट्टे श्री हेमकीर्ति देवाः

श्रग्रोतकान्वये साधु मामा भा० हीनाही तयोः पुत्राः साधु कौला चूला कौला भार्या सुनुना तयो पुत्र कील्हा भार्या वंदो पुत्र दासू वस्तुपाल नित्यं प्रणमति ॥

चौवीशी पर।

[1945]

(१) ॐ संवत् ११४२ मार्ग सु० ७ सोमे श्री सांबदेवा धंमके (?) . . . जासल श्रावक पुत्रि

(२) कया श्रीमरधासिंकया श्रेयोर्थं चतुर्विंशति पट्टकः कारितः ॥

(३) (बिंबं) शं० बि० . . . . चालू । का० प्र० तपा गछे ॥

चौवीसी पर।

[1946]

॥ सं० १५६५ वै० शु० ८ शनौ श्री नटीपद्र वास्तव्य श्रीश्रीमाल ज्ञातीय सा० कान्हा भार्या फुतिगदे सुता सा० मेघा भा० बारधाई सुत रूपा षीमादि सकुटुंब युतया सा० राजा भार्या बीमाई सुता राकू नाम्न्या श्री अनंतनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा गछे श्री सोम सुंदरसूरि संताने श्री हेमविमल सूरिभिः ॥

ह्रींकार यंत्र पर।

[1947]

॥ संवत् १६७९ वर्षे पोस मासे १० दिने श्री बृहत् खरतर गछे श्री जिनराज सूरि विजय राज्ये चंदा पूर्ण्या ओसवाल ज्ञातीय नाहटा गोत्रे सा० सहसराज पुत्र सा० सिंघराज तत्पुत्राः सा० श्री चंद संवतु १ सा० सधारण सा० श्री हंस सा० करसण हासा सधारण भार्या सहयदे सुत तत्पुत्रा सहसकरण सुमति सहोदर शुभकर प्रतिष्ठितं श्रीमत् श्री परानयन सुहगुरुणा ॥ हितं कारापितं ॥

बावन जिनालय की देहरियों के पाट पर ।

[1948]

(१) संवत् १०३ए (व) र्षे श्री संडेरक गछे श्री यशोजद्र सूरि संताने श्री श्यामा (?) चार्या . . . . . .

(२) . . . . प्र० ज० श्री यशोजद्र सूरिजिः श्री पार्श्वनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं ॥ न ॥ पूर्ण चंद्रेण कारितं . . . .

[1949]

(१) ॐ संवत् १३०३ वर्षे चैत्र वदि ४ सोमदिने श्री चित्र गछे श्री जद्रेश्वर संताने राटजरीय वंशे

(२) श्रे० जीम अर्जुन करुवट श्रे० बूमा पुत्र श्रे० घयजा धांधल पासड जदादिजिः कुटुंब समेतैः . . . .

(३) थ प्रतिमा कारिता । प्रति० श्री जिनेश्वर सूरि शिष्यैः श्री जिनदेव सूरिजिः ॥

[1950]

(१) ॐ संवत् १३१७ वर्षे ज्येष्ठ वदि ११ बुधे श्री कोरंटक गछे श्री नन्नाचार्य संताने . . .

(२) सा० जीमा पुत्र जिसदेव रतन अरयमदन कुंता महणराव मातृ लाछी श्रेयोर्थं बिंबं (कारि)

(३) (ता) । प्रतिष्ठितं । श्री सर्वदेव सूरिजिः ॥

[1951]

(१) ॥ (संवत् १३१७) ज्येष्ठ वदि ११ बुधे श्री षंडेरक गछे प्रतिबद्ध चैत्यालये श्री यशोजद्र सूरि संताने श्रे० साढ देव पुत्र मह सामंत मह आसपालेन पु० धांधल सा० ..

(२) . . . . (श्रे) योर्थं श्री संजवनाथ बिंबं देवकुलिका सहितं कारितं प्रतिष्ठितं श्री शांति सूरि शिष्यैः ईश्वर सूरिजिः ॥ ठ ॥ ठ ॥ ठ ॥

[1952]

(१) ॥ ॐ ॥ संवत् १३३९ वर्षे फागुण सुदि ८ शनौ नां देवान्वये साधु पउमदेव सुत संघपति साधु श्री पासदेव भार्या षेढी पुत्राश्चत्वारः सा० देहड सा० काजल रतन

(२) गाहड पौत्र जिणदेव दिवधर प्रभृतिभिः देवकुलिका सहितं श्री सुमति नाथ बिंबं का० प्र० वादींद्र श्री धर्म्मघोष सूरि गछे श्री मुनिचंद्र सूरि शिष्यैः श्री गुणचंद्र सूरिभिः ॥ छ ॥

[1953]

(१) ॥ ॐ नमः ॥ संवत् १३३९ फागुण सुदि ८ शनौ श्री राज गछे साधु नेमा सुत धा[र] सत तनुज साधु नाहड तत्पुत्रास्त्रयो यथा सा० काकढ भार्या नान्ही पुत्र पाल्हा ॥

(२) भा० धर्मसिरि देपाल भार्या देवश्री तथा सा० नरपति पत्नी ललतू द्वि० पत्नी नायक देवी पुत्राः सा० सहदेव सा० हरिपाल भार्या हीरा देवी द्वि० हरिसिणि पुत्र महीपाल ॥

(३) देव तृ० हिमश्री सा० कुमरसिह तथा सा० तेजा भार्या लीलू पुत्र धरणिग पून सीह एतस्मिन्ननुक्रमे पितृ सा० नरपति श्रेयसे सा० हरिपालेन श्री षंडे ॥

(४) र गछे प्रतिवद्ध श्री पार्श्वनाथ चैत्य देवकुलिका सहितं श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्र० वादींद्र श्री धर्मघोष सूरि पट्टक्रमे श्री आनंद सूरि शिष्यैः श्री अमरप्रभ सूरिभिः ॥

[1954]

(१) ॥ ॐ ॥ सं० १३३९ वर्षे फा० सुदि ८ शनौ श्री राज गछे सा० नेमा सुत सा० धार सत सुत सा० गाहड़ तत्पुत्रास्त्रयो यथा सा० काकढ भार्या नान्ही पुत्र पाल्हा भा० ॥

(२) धर्मसिरि देपाल भार्या देवश्री पुत्र तथा सा० नरपति भार्या ललतू द्वि० नायक देवी पुत्राः सा० सहदेव सा० हरिपाल पत्नी हीरादेवी द्वि० हरिसिणि पुत्र महीपा-

(३) ल देव तृ० हेमश्री कुमारसीह तथा सा० तेजा भार्या लीलू पुत्र धरणिग पूनसीह

पुत्रादि धर्म्म कुटुंब समुदये पितृ सा० काकढ श्रेयसे सा० पाल्हाकेन श्री

(४) षंडेर गच्छे श्री पार्श्वनाथ चैत्ये देवकुलिका श्री आदिनाथश्च कारितं प्र० वादींद्र श्री धर्म्मघोष सूरि पट्टक्रमे श्री आनंद सूरि शिष्य अमलप्रभ सूरिभिः ॥

[1955]

(१) ॥ संवत् १३०९ वर्षे पौष सुदि ७ रवौ श्री चित्रकूट स्थाने महाराजाधिराज पृथ्वीचंद्र ......

(२) श्री मालदेव पुत्र श्री वणवीर सत्कं सिकहदार महमद देव सुहड सींह चउंडरा सत्कं पुत्र ....

(३) दिवं गतं तस्य सत्कं गोमट्ट कारापितं : ॥

[1956]

(१) ॥ ॐ ॥ स्वस्ति ॥ संवत् १४०१ वर्षे ॥ माघ मासे शुक्ल पक्षे पंचम्यां तिथौ बुधवारे श्रीमाल ज्ञातीय मभठिया गोत्रे सा० ठाहरू सा० धाना भा० इल्हा पुत्र सं० हेमराज सं० थिरराज सं० लाखू सं० ठाइपाल कु......

(२) ...दे पुत्र सा० हेमराज पुत्र समुद्रपाल भार्या .... श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनप्रभ सूरि अन्वये । श्री जिनसर्व सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिभिः ॥

[1957]

(१) ॥ ॐ ॥ सं० १४०६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ३ बुधवारे श्री ऊकेश वंशे नाहट शाखायां । सा० माजण पुत्र सा० व

(२) णवीर पुत्र सा० भीमा । वीसल रणपाल प्रमुख पौत्रादि परिवार सहितेन श्री करहेटक स्थाने श्री पार्श्व

(३) नाथ भुवने श्री विमलनाथ देवस्य देवकुलिका कारापिता ॥ प्रतिष्ठिता श्री खरतर गच्छे श्री जिनवर्द्धन सू-

(४) रीणामनुक्रमे श्री जिनचंद्र सूरि पट्टकमलमार्तंडमंडलैः श्री मज्जिनसागर सूरिभिः ॥ शिवमस्तु ॥

(५) वरसंग देवराज पुन्यार्थः ॥
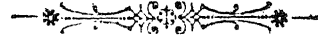
नागदा - मेवाड़।

श्री शांतिनाथ जी का मंदिर।

मूलनायक की श्वेत पषाण की विशाल मूर्ति की चरण चौकी पर।

[1958]*

(१) संवत् १४९४ वर्षे माघ सुदि ११ गुरुवारे श्री

(२) मेदपाट देशे श्री देवकुल पाटक पुरवरे नरेश्वर श्री मोकल पुत्र

(३) श्री कुंभकर्ण नृपति विजयराज्ये श्री ऊसवंसे श्री नवलक्ष शाष मंडन सा० लक्ष्मी

(४) धर सुत सा० साधू तत्पुत्र साधु श्री रामदेव तद्भार्या प्रथमा मेला दे द्वितीया माल्हण दे। मेला दे कुक्षि संभूत

(५) सा० श्री सहणपाल। माल्हण दे कुक्षिसरोजहंसोपम श्री जिनधर्मकर्पूरवातसद्धीनुक सा० सारंग तदंगना हीमा दे लखमा दे

(६) प्रमुख परिवार सहितेन सा० सारंगेन निजभुजापार्जितं लक्ष्मी सफली करणार्थं निरुपममद्भुतं श्रीमहत् श्री शांति जिनवर बिंबं सपरिकरं कारितं

(७) प्रतिष्ठितं श्री वर्द्धमानस्वाम्यन्वये श्री खरतर गछे श्री जिनराज सूरि पट्टे श्री जिनवर्द्धन सूरि त (स्त) त्पट्टे श्री जिनचंद्र सूरि त (स्त) त्पट्टपूर्वाचलचूलिका स-

---

* यह लेख "भावनगर इन्सक्रिपशन्स" पृ० ११२-१३-में और "देवकुलपाटक" पृ० १६ नं० १८ में प्रकाशित हुवा है।

हस्तकरावतारैः श्री मज्जिनसागर सूरिभिः ॥

(७) सदा वन्दंते श्रीमद् धर्ममूर्ति उपाध्यायाः घटितं सूत्रधार मदन पुत्र धरणा सोम-
पुराध सूत्रधारः रोमी चुंरो रुप्रोवीकाभ्यां ॥ आचंद्रार्क्कं नंद्यात् ॥ श्रोः ॥ ७ ॥

सभामंडप के बायें तर्फ स्तम्भ पर।

[1959]

(१) संवत् १७७९ वर्षे वैशाष सुदि ११ सोमे साहाजी श्री जेठमल जी ताराचंद जी
कोठारी जात श्री .... साहजी श्री उदेचंदजी ....

पाषाण की टूटी चौवीसी पर।

[1960]

(१) ॐ सं० १४२५ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १४ बुधवारे ऊकेश वंशे नवलक्षा गोत्रे साधु श्री
रामदेव पुत्रेण माल्हण देवि पुत्र ......

(२) कारकेण निजभार्या । जिनशासन प्रभाविकाया हेमा दे श्राविकाया पुण्यार्थं श्री
सप्ततिशतं जिनानां कारितं ......

(३) तत्पट्टे श्री जिनसागर सूरिभिः।

—✦卐✦—

देलवाड़ा-मेवाड़। *

श्री पार्श्वनाथजी का बड़ा मंदिर।

मूलनायकजी पर।

[1961]

सं० १४७८ श्री पार्श्वनाथ बिंबं सा० सहणा ......

---

* यह स्थान प्राचीन है। "देव कुलपाटक" नामकी पुस्तक में लेखों के साथ यहां का वर्णन है।

पुंडरिकजी के मूर्ति पर।

[1962]

संवत् १६७९ वर्षे आषाढ बहुल ४ शनौ देलवाड़ा वास्तव्य शवर गोत्रे ऊकेश ज्ञातीय वृद्धशाखीय सा० मानाकेन भा० हीरा रामा पुत्र भाया रांगा फया युतेन स्वश्रेयसे श्री पुंडरीक मूर्तिः कारापितं प्रतिष्ठितं संडेर गच्छे भ० श्री मानाजी केसजी प्र० ॥

आचार्यों के मूर्ति पर।

[1963]

. . . .

. . . जिनरतन सूरिगुरु मूर्तिः कारिता प्रतिष्ठिता . . . .

. . . .

[1964]

संवत् १४०६ वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ दिने नवलक्ष शाखीय सा० रामदेव भार्यया श्री मेला-देव्या श्री जिनवर्द्धन सूरि मूर्तिः कारिता प्र० श्री जिनचंद्र सूरिभिः।

[1965]

संवत् १४०६ वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ सा० रामदेव भार्या मेला देव्या श्री द्रोणाचार्य गुरुमूर्तिः कारिता प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिनचंद्र सूरिभिः।

श्वेत पाषाण की कायोत्सर्ग मूर्तियों पर।

[1966] *

(१) ॥ ए० ॥ संवत् १४९३ वर्षे वैशाख वदि ५ . . . . . धवल प्रासाद गौष्ठिक प्राग्वाट ज्ञातीय व्यव० झांझा भा०

* यह लेख घोरीवाव नामक स्थान में मिट्टी से निकली हुइ विशाल मूर्ति के चरण चौकी पर है

(२) लाछि पुत्र दपा भार्या देवल दे पुत्र ७ व्यव . . . . . . कुंरपाल सिरिपति नर दे धीणा पंडित लषमसी आ-

(३) त्मश्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ जिनयुगल कारापितः प्रतिष्ठितः कछोलीवाल गछे पूर्णिमा पक्षे द्वितीय शाखा-

(४) यां भट्टारक श्री भद्रेश्वर सूरि संताने तस्यान्वये भ० श्री रत्नप्रभ सूरि तत्पट्टे भट्टारक श्री सवाण-

(५) द सूरीणा शिष्य लषमसीहेन आत्मश्रेयोर्थं कारापितः प्रतिष्ठितः भ० श्री सर्वा-णद सूरी-

(६) णामुपदेशेन ॥ मंगलाभ्युदयं ॥

[1967]

(१) ॥ ॐ ॥ स्वस्ति श्री नृप विक्रमादित्य संवत् १५०८ वर्षे वैशाष शुदि ३ श्रीमाल-ज्ञातौ मांथलपुरा गोत्रे सा०

(२) देहड़ संताने सा० काला तत्पुत्र सा० मेला केला मेला पुत्र सा० सोमा स० सा-यरकेन पुत्र हुंफण पुत्र

(३) तोला सोमा पुत्र महिपति डुंगर भाषर सायर पुत्र बाबा पासा हुंफण पुत्र वस्त-पाल त . . . . . .

(४) ल रत्नपाल कुमरपाल तोला पुत्र नरपाल नरपति प्रभृति पुत्र पौत्रादि सहितेण

पट्टों पर ।

[1968]

सं० १५०५ वर्षे फाल्गुन वदि ५ प्राग्वाट सा० देपाल पुत्र सा० सुहडसी भार्या सुहडा दे पुत्र पीछउलिआ सा० करणा भार्या चनू पुत्र सा० धांधा हेमा धर्मा कर्मा हीरा काला भ्रातृ सा० हीसाकेन भार्या लाखू पुत्र आमदत्तादि कुटुंबयुतेन श्री द्वासप्तति जिनपट्टिका कारिता प्रतिष्ठिता श्री तपागछनायक श्री सोमसुंदर सूरिभिः ॥ श्रीः ॥

[1969]

सं० १५०३ वर्षे आषा० शु० ७ प्राग्वाट सा० देपाल पु० सा० सुहडसी ना० सुहडा दे सुत पीतलिआ सा० करणा नार्या वनू पुत्र सा० धांधा हेमा धर्मा कर्मा हीरा हांसा काला मा० धर्माकेन ना० धर्माणि सुत महसा सालिग सहजा सोना साजणादि कुटुंबयुतेन एद जिनपाट्टका कारिता ॥ प्रतिष्ठिता श्री तपागछाधिराज श्री सोम सुंदर सूरि शिष्य श्री जय चंद्र सूरिन्निः ॥

[1970]

सं० १५०६ फा० शुदि ए श० सा० सोमा ना० रूडी सुत सा० समधरेण न्रातृ फाफा सीधर तिहुणा गोविंदादि कुटुंबयुतेन तीर्थ श्री शत्रुंजयगिरिनारावतार पट्टिका का० प्र० श्री सोम सुंदर सूरि शिष्य श्री रत्नशेखर सूरिन्निः ॥

भौंयरे में ।

मूलनायकजी पर ।

[1971]

१४ए४ ऊकेश सा० वाछा राणी पुत्र वीसल खीमाई पुत्र धीरा पत्नी सा० राजा रत्ना दे पुत्री माल्हण देव का० आदि बिंबं प्र० तपा श्री सोमसुंदर सूरिन्निः ॥

पट्ट पर ।

[1972]

सं० १४७५ वै० शु० ३ ऊकेश वंश सा० वाछा नार्या राणा दे पुत्र सा० वीसल पत्या सा० रामदेव नार्या मेला दे पुत्रा सं० खीमाई नाम्न्या पुत्र सा० धीरा चयांपा हांसादि युतया श्री नन्दीश्वर पट्टः कारितः प्रतिष्ठितः तपागछे श्री देवसुंदर सूरि शिष्य श्री सोम-सुंदर सूरिन्निः स्थापितः तपा श्री युगादि देवप्रासादे ॥ सूत्रधार नरवद कृतः ॥

[1973]

सं० १५०३ वर्षे आषा० शु० ७ प्राग्वाट सा० आका भा० जसल दे चांपू पुत्र सा० देल्हा जूठा सोना षीमाद्यैः चतुर्विंशति जिन बिंबं पट्टः कारितः प्रतिष्ठितः श्री सोमसुंदर सूरि शिष्यैः श्री जयचंद्र सूरिभिः ॥

देहरी में ।

मूलनायकजी पर ।

[1974]

सं० १४९५ ज्येष्ठ सुदि १४ बुधे श्री विमलनाथ बिंबं कारितं भानसिरि श्राविकया। प्र । श्री जिनसागर सूरिभिः । श्रीमाल ज्ञातीय भांभिया गोत्रे ।

पट्टों पर ।

[1975]

सं० १४९५ वर्षे ज्येष्ठ सु० १४ बुधे श्री ऊकेश वंशे नवलक्षा शाषायां सा० राम भार्या नारिंग दे पुण्यार्थं श्री श्री सिद्धिशिलाकायां श्री जिनवर्द्धन सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरि पट्टे श्री जिनसागर सूरिभिः ।

[1976]

(१) ॥ संवत् १४६९ वर्षे माघ सुदि ६ रवौ ॥ ऊकेशवंशशृंगारो भुवन पाल इत्यभूत् । भुवनं पालयत् यः स्वुंनामनिन्ये (?) यथार्थतः ॥ १ ॥ तदन्वये ततो जात . . . तक . . . . . .

(२) त्यः पृथु प्रतापी ननु रोष तापी । जिनांघ्रिरक्तो गुरुपादलक्तो । गुणानुरागी हृदय-विरागी ॥ ४ ॥ युगलकं ॥ तस्यांगना . . . ग कुरंगनेत्रा सीतेव . . . . . .

(३) धार सहितेन सा० सहणा सुश्रावकेण जिनमातृ पुण्यार्थं श्री वासुपूज्य बिंबं चतुर्विंशति पट्टक विंशति विहरमानादि . . . . . .

[1977]

(१) संवत् १४९१ वर्षे माघ सुदि ५ बुधे नवलक्ष गोत्रे सा० रामदेव भार्या मेला
(२) दे पुत्र सहणपाल भार्या नारिंग देव्या श्री. . . . जिन मूर्ति बिंबानि प्र-
(३) तिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनचंद्र सूरि पट्टे श्री जिनसागर सूरिभिः ॥

दरवाजों पर ।

[1978]

(१) संवत् १४९७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ४ गुरुवासरे . . . . . .
(२) . . . .

[1979]

(१) श्री ॥ सं० १४७३ नागपुरे ऊकेश वंशे सा० हीरा भा० धर्मिणि पुत्र्या सरस्वती
पत्तनवासि सा० हीरा सुत सा० संग्राम सिंह भार्यया सम्यक्त्वदेशविरत्यादि गुण
(२) युक्तया श्रा० देऊ नाम्न्या न्यायोपा(र्जि)तं निजवित्त व्ययेन तपापक्षे श्रीआदिदे-
वप्रासादे श्रीपार्श्वनाथ देवकुलिका कारिता प्र० गच्छनायक श्रीसोमसुंदर सूरिभिः ।

[1980]

(१) सं० १४७४ वर्षे श्री अणहिल्लपुरवासि श्री श्रीमालज्ञाति सा० समरसी पुत्रेण सा०
सोमाकेन संप्रति अहमदावादपुरवासी सभार्या . . . . . .
(२) सुत सो० वाघादि कुटुंबयुतेन श्री तपापक्षे श्री आदिनाथ प्रासादे श्री अजित
देवकुलिका कारिता प्रतिष्ठिता श्री तपापक्षे श्री सोमसुंदर सूरिभिः ॥

[1981]

(१) ॥ ॐ ॥ संवत् १४७८ वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ शुक्रे नवलक्ष गोत्रे
(२) सा० रामदेव भार्या मेला दे श्राविकया निजपुण्यार्थं
(३) . . . . श्री आदिनाथ प्रासाद कारितं ॥ प्रतिष्ठितं

(४) श्री खरतर गच्छे श्री जिनवर्द्धन सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिभिः ॥

[1982]

(१) ॥ संवत् १४७६ वर्षे कार्तिक सुदि ११ सोमे ॥ ऊकेश ज्ञातीय सा० डाहड़ भार्या सुषुव दे पु० राना साना सखषाके(न) निज मातृपितृ श्रेयसे श्री आदिनाथ प्रासादे श्री सुमतिनाथ देव प्रतिमा

(२) कारिता ॥ ऊकेश गच्छे श्री सिद्धाचार्य संताने प्रतिष्ठितं । श्री देवगुप्त सूरिभिः ॥ छ ॥ श्री ॥ मल्लधारीयकैः ॥

[1983]

(१) सं० १४७७ फा० सु० ७ श्रीमाल ज्ञा० सा० . . . . . .

(२) देवकुलिका कारिता प्रतिष्ठिता तपागच्छनायक श्री सोमसुंदर सूरि श्री मुनि सूरिभिः ॥ श्री अणहिलपुरपत्तन वास्तव्य

[1984]

(१) ॥ ॐ ॥ संवत् १४९१ वर्षे माघ सुदि ५ बुधवार ऊकेश वंशे श्री नवलखा गोत्रे श्री रामदेव भार्या श्राविका मेला दे पुत्र साधु श्री सहणपाल भार्यया नारिंग दे श्राविकया पुत्र सा० रणमल्ल सा० रणधीर रणभ्रम सा० कर्मसी पौत्रादि सहितया निज पुण्यार्थं जिनानां

(२) . . . .
श्री जिनराज सूरि पट्टे श्री जिनवर्द्धन सूरि तत्पट्टे श्री जिनचंद्र सूरि तत्पट्टपूर्वांचल श्रीयुत श्री जिनसागर सूरिभिः ॥ शुभं भवतु ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥

नये मंदिर में ।

मूलनायकजी पर ।

[1985]

॥ सं० १४९२ वर्षे वैशाख सुदि २ श्री पार्श्वनाथ बिंबं ॥ सा० समुदय वच्छस्य ॥

कायोत्सर्ग मूर्तियों पर

[1986]

(१) ॥ ॐ ॥ सं० १४६४ वर्षे आषा० शु० १३ दिने गूर्जर ज्ञातीय न-

(२) णसाली लाषण सुत मं० जयतल सुत मं० सादा भार्या सूमल

(३) दे सुत मं० वरसिंह भ्रातृ मं० जेसाकेन भार्या श्रृंगार दे पुत्र

(४) हरिचंद्र प्रमुख सकल कुटुंबसहितेन स्वश्रेयसे प्रभु

(५) श्री पार्श्वनाथ प्रतिमा कारिता प्रतिष्ठिता श्री सूरिभिः ॥

[1987]

॥ ॐ ॥ संवत् १४७५ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ७ गुरुवारे श्रीमाल ज्ञातीय मंत्रि .... णू प्रा सुत नंदिगेस । सुत पुत्र सा० आसा सुश्रावकेण श्री पार्श्वनाथ बिंब स्वपुण्यार्थे कारितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनवर्द्धन सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

आचार्यों के मूर्तियों पर ।

[1988]

॥ ॐ ॥ सं० १३८१ वैशाष वदि ५ श्रीपत्तने श्री शांतिनाथ विधि चैत्ये श्री जिनचंद्र सूरि शिष्यैः श्री जिनकुशल सूरिभिः श्री जिनप्रबोध सूरि मूर्तिः प्रतिष्ठिता ॥ कारिता च सा० कुंमरपाल रत्नैः सा० महणसिंह सा० देपाल सा० जगसिंह सा० मेहा सुश्रावकैः सप-रिवारैः स्वश्रेयोर्थं ॥ छ ॥

[1989]

संवत् १४९१ वर्षे माह सुदि ५ बुधे नवलक्ष गोत्रे सा० सहणपालेण स्वपुण्यार्थे श्री जिनवर्द्धन सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरीणां मूर्तिः प्र० श्री जिनसागर सूरिभिः ॥

ऋषभदेवजी का मंदिर ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1990]

सं० १५१० पोष वदि १० घांघ गोत्रे सा० सारंग ज्ञा० सुहानिणि सु० सा० कालू सा० चाहड़ नामाज्यां पुण्यार्थं श्री सुमतिनाथ बिंबं का० प्र० श्री मलधारि गच्छे श्री विद्यासागरा सूरि पट्टे श्री गुणसुंदर सूरिजिः ॥

[1991]

॥ संवत् १५१५ वर्षे माह वदि ए शुक्रे श्री संडेर गच्छे ऊ० काश्यप गोत्रे सा० षेता पु० षीमा ज्ञा० षीमसिरि पु० चुडा ज्ञा० ज्ञरमी पु० पूजा नथमा वीढा रंगा सहितेन श्री नेमिनाथ बिं० कारितं प्रति० श्री ईश्वर सूरिजिः ॥

[1992]

॥ सं० १५३२ वर्षे वैशाष सुदि पंचमी सोमे । ज० ज्ञा० काठड़ गोत्रे । दो० ऊदा ज्ञार्या ऊमा दे पु० दो० रूपा दो० देपा अमर नाथा । रंगा देवा ज्ञार्या दाडिम दे पु। पहिराज साल्हा रायमल्ल युतेन सुपुण्यार्थं श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं श्री संडेर गच्छे श्री शांति सूरिजिः प्रतिष्ठितं ।

मूलनायकजी पर ।

[1993]

ॐ ॥ स्वस्ति सं० १४६ए वर्षे माघ .... ६ रवौ श्रीमाल वंशे नावर गोत्रे ठ० ऊहड़ संताने श्री पुत्र मंत्रि करम .... श्रेयोर्थं लघु ज्ञातृ ठ० देपालेन ज्ञातृव्य ठ० जोजराज ठ० नयणसिंह ज्ञार्या माल्ह दे सहितेन श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनचंद्र सूरिजिः देवकुलपाटके ।

श्याम पाषाण की पादुका पर।

[1994]

संवत् १४ए१ वर्षे माघ वदि ५ दिने बुधे उकेश वंशे नवलखा गोत्रे साधु श्री रामदेव भार्या मला दे तत्पुत्र साधु श्री सहणपालेन भार्या नारिंग दे पुत्र रणमल्लादि सहितेन देवकुलपाटके पूर्वाचलगिरा श्री शत्रुञ्जयावतारे मोरनाग कुटिका सहिता प्रति० श्री खरतर गछे श्री जिनवर्द्धन सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरि तत्पट्टे श्री जिनसागर सूरिभिः।

पट्ट पर।

[1995]

॥ ॐ ॥ संवत् १४७३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ४ गुरुवारे सा० आंबा पुत्र सा० वीराकेन स्वमातृ आंबा श्राविका स्वपुण्यार्थं ॥ श्री चतुर्विंशति जिन पट्टकः कारितः श्री खरतर गछे प्रतिष्ठितं श्री जिनवर्द्धन सूरिभिः ॥

आचार्यों के मूर्तियों पर।

[1996]

संवत् १४६ए वर्षे माघ शुदि ६ दिने ऊकेश वंशे सा० सोषा संताने सा० सुहडा पुत्रेण सा० नान्हाकेन पुत्र वीरमादि परिवारयुतेन श्री जिनराज सूरि मूर्त्तिः कारिता प्रतिष्ठिता श्री खरतर गछे श्री जिनवर्द्धन सूरिभिः।

[1997]

सं० १४६ए वर्षे सा० रामदेव भार्यया मेला दे श्राविकया स्वभ्रातृसहलया श्री जिनदेव सूरि शिष्याणां श्री मेरुनंदनोपाध्यायानां मूर्तिः कारिता प्रतिष्ठिता श्री जिनवर्द्धन सूरिभिः ॥

श्री पार्श्वनाथजी की बसी।

पंचतीर्थी पर।

[1998]

॥ सं० १२०१ वर्षे आषाढ सुदि १० रवौ श्री देवाभिदित गच्छे श्री शील सूरि संताने आमण पुत्रेण कनुदेवेन भ्रातृ सुंभदेव श्रेयोर्थं आत्मश्रेयोर्थं च प्रतिमा कारिता।

तपागच्छ का उपासरा।

पंचतीर्थियों पर।

[1999]

सं० १२७३। गोसा भ्रातृ जेजा भार्या हेमा.... श्रेयोर्थं प्रतिमा कारिता॥

[2000]

सं० १४७४ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ उपकेश वंशे नोसतिकि (?) शाखायां साहूवाल भा० माल्हण दे लाषाकेन भ्रातृ पुंजा भा० मेला दे.... पितृ श्रे० शांतिनाथ बिंब कारितं प्र० श्री जयप्रभ सूरिभिः।

[2001]

ॐ सं० १४९४ वैशाष वदि ७ बुधे...... बिंबं कारितं श्री......।

[2002]

॥ ॐ सं० १५२० वर्षे ज्येष्ठ सु० ५ शुक्रे ऊ० गूगलिया गोत्रे सा० सूरा भा० सुहमा दे पु० धणपाल भा० लाछल दे...... द्दा निमित्तं श्री शीतलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री संडेर गच्छे श्री यशोभद्र सूरि संताने प्रतिष्ठितं श्री शालिभद्र सूरिभिः॥

धातु की मूर्ति पर।

[2003]

सं० १७०२ आषाढ़ सुदि १० श्री ऋषभनाथ बिंबं का० हरषा लोत......।

DEVALVARHA (MEWAR) INSCRIPTION
Dated, V. S. 1491 (A. D. 1434)

पाषाण की मूर्तियों पर।

[2004]

सं० १४९१ वर्षे माह सुदि ५ बुधे खरतर गच्छे नाग.... मुनिचंद्र शिष्य ज०यराज गणि पार्श्वनाथ बिंबं......।

[2005]

सं० १३९९ वर्षे माह सु० १३ श्री प्र...लू ज्ञा०...कुंथुनाथ.......।

शिलालेख

[2006]

(१) ॥ ॥ श्रेयः श्रेणिविशुद्धसिद्धलहरीविस्तारहर्षप्रदः श्री मत्साधुमरालकेलिरणिभिः

(२) प्रस्तूयमानक्रमः। पुण्यागण्यवरेण्यकीर्तिकमलव्यालोलसीलाधरः सोयं मानससत्सरो

(३) वरसमः पार्श्वप्रभुः पातु वः ॥ १ ॥ गंभीरध्वनिसुंदरः क्षितिधरश्रेणिभिरासेवितः सारस्तोत्रप-

(४) वित्रनिर्ज्झरसरिद्वर्द्धिष्णुसज्जीवनः। चंचज्ज्ञानवितानभासुरमणिप्रस्तारमुक्तालयः सोयं

(५) नीरधिव...भाति नियतं श्री धर्मचिंतामणिः ॥ २ ॥ रंगद्भांगतरंग निर्मलयशः कर्पूर-पूरोद्धुरा-

(६) मोदक्षोदसुवासितत्रिभुवनः कृत्तप्रमादोदयः। भास्वन्मेचककज्जलद्युतिभरः शेषाहि-

(७) राजांकितः श्री वामेयजिनेश्वरो विजयते श्री धर्मचिंतामणिः ॥ ३ ॥ इष्टार्थसंपादन-कल्पवृक्षः

(८) प्रत्यूहपांशुप्रशमे पयोदः। श्री धर्मचिंतामणिपार्श्वनाथः समग्रसंघस्य ददातु भद्रं ॥ ४ ॥ संवत्

(९) १४९१ वर्षे कार्तिक सुदि २ सोमे राणा श्री कुंभकर्णविजयराज्ये उपकेश ज्ञातीय साह सह·

(१०) णा साह सारंगेन मांडवी ऊपरे लागू कीधु। सेलहथि साजणि कीधु अंके टंका चऊद १४ जको

(११) मांडवी लेस्यइ सु देस्यई। चिहु जणे बइसी ए रीति कीधी। श्री धर्मचिंतामणि पूजानिमित्ति। सा०

(१२) रणमल्ल महं डूंगर से० हाला साह साडा साह चांप बइसी विडु रीति कीधी एह बोल

(१३) लोपवा को न लहइं। टंका ५ देउलवाडानी मांडवी ऊपरि टंका ४ देउलवाडाना मापा उप

(१४) रि। टंका २ देउलवाडाना मण हुंड वटा उपरि। टंका २ देउलवाडाना पारी वटां ऊपरी।

(१५) टंकाउ १ देउलवाडाना पटसूत्रीय ऊपरी॥ एवं कारई टंका १४ श्री धर्मचिंतामणि पूजा

(१६) निमित्ति सा० सारंगि समस्त संघि लागु कीधउ॥ शुभं भवतु॥ मंगलाभ्युदयं॥ श्रीः॥

(१७) ए ग्रासु जिको लोपइ तहेरहिं राणा श्री हमीर राणा श्री षेता राणा श्री लाषा रा० मोकल

(१८) राणा श्रीकुंभकर्णनी आणछइ। श्रीसंघनी आण। श्रीजीराउला श्रीशत्रुंजयतणा सम॥

देवी मूर्ति पर।

[2007] *

॥ सं० १४७६ वर्षे मार्ग शु० १० दिने मोढ ज्ञातीय सा० वछहत्थ भार्या साजणि सुत सं० मानाकेन अंबिका मूर्तिः कारिता प्रतिष्ठिता श्री ...... रिभिः॥

* महात्मा श्रीलालजी नाणावाल के यहां मूर्ति है।

खंडहर उपासरा।

शिलालेख

[2008]

सूर्य चंद्र

(१) परमात्मने नमः

(२) ॥ ॐ ॥ प्रणम्य श्री सूर्यदेवाय सर्वसुखंकर प्रभो । सर्वलब्धिनिधानस्य तं

(३) सत्वं प्रणमाम्यहं ॥ १ ॥ मेदपाटे गिरो देसे गिरजागिरस्थानयो तां नगरो उ-

(४) त्तमा ज्ञेया देवको प्रमपट्टणौ २ तत्र राज्ञा श्रेयो ज्ञेयाः राघवो राज्य मा-

(५) नयोः षट्ढदर्शनसदामान्यः श्वेतांबरा अतिश्रियो ३ श्रीमदंचल ग-

(६) छेस्या श्री उदयसागर सूरिणा । तस्य आज्ञा कारेण चारित्र रत्न-

(७) गुर प्रभो ४ शिष्य लक्ष्मीरत्नस्य साधुमुद्रा सदा सुखी । राजधर्म स-

(८) नेहादि जिनमंदिर करापितं ५ कोटिवर्षचिरंजीवो बहुपुत्र-

(९) गजवाजिना अचलं मेरुऊर्णोयं राज्यं पालति राघवः ६ जे

(१०) अन्य राजा स्वईवः लोपतो परदत्तयो नरकं ते नरा जाति ज-

(११) स्य धर्मस्य अवृथा ७ सं० १७९८ वर्षे माघ सुदि ५ तिथौ गुरू

(१२) श्री चतुराजी शिष्य कुशलरतन लक्ष्मीरतन उपासरो करा

(१३) यौ श्री पुण्यार्थे । श्री राज श्री राघव देवजी वारके देलवाडा

(१४) नगरे श्रीसंघ समस्तां साध अर्थे पं लिखमीरतन चेला हेमरा-

(१५) ज ऊपासरो करायो बीजो को रहे जणीहे गाय

(१६) मान्यारो पाप है जनी आंचलगा टाल रहेवा पावे नहीं

दरवाजे की छतरी पर का लेख।

[2009]

श्री गणेश ... रतन चेला हेम ... कारापितं ॥ साह अषा साह नाराण साह ठाकुरसी साह हेमा साह हमीर साह लुना साह सिवा साह हर ... साह फत्ता साह मेघा साह जोपा साह विरधा कटारया चतुरा कीथा सगता ... समसथ श्रावका ... लषाणा श्री राघवदेवजी बारको मंदिर कारा ... लक्ष्मीरतन सं० १८०५ माघ सुदि १३ शुक्रे प्रतिष्ठा करावो ... लक्ष्मीरतन ...... ॥

कलकत्ता।

श्री आदिनाथजी का देरासर - कुमारसिंह हाल।

पंचतीर्थियों पर।

[2010]

सं० १४६८ वर्षे मागसिर वदि ११ शुक्रे श्री श्रीमाल ज्ञातीय संघ गोवल भार्या माल्हण दे तयोः सुतः महमाइयाकेन श्री सुमतिनाथ स्वामी बिंबं कारापितं श्री जिनहंस गणि श्रेयोर्थं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः उग्रईज वास्तव्यः।

[2011]

संवत् १५२७ वर्षे आषाढ सुदि १० बुधे श्री श्री (माल) वंशे ॥ सं० कर्मा भार्या जासू पुत्र सं० षीमा भार्या चमकू श्राविकया पुत्री कर्माई पुण्यार्थं श्री अंचल गच्छे श्री जयकेसरि सूरिणामुपदेशेन चंद्रप्रभ स्वामी बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन ॥ श्री पत्तन नगरे ॥
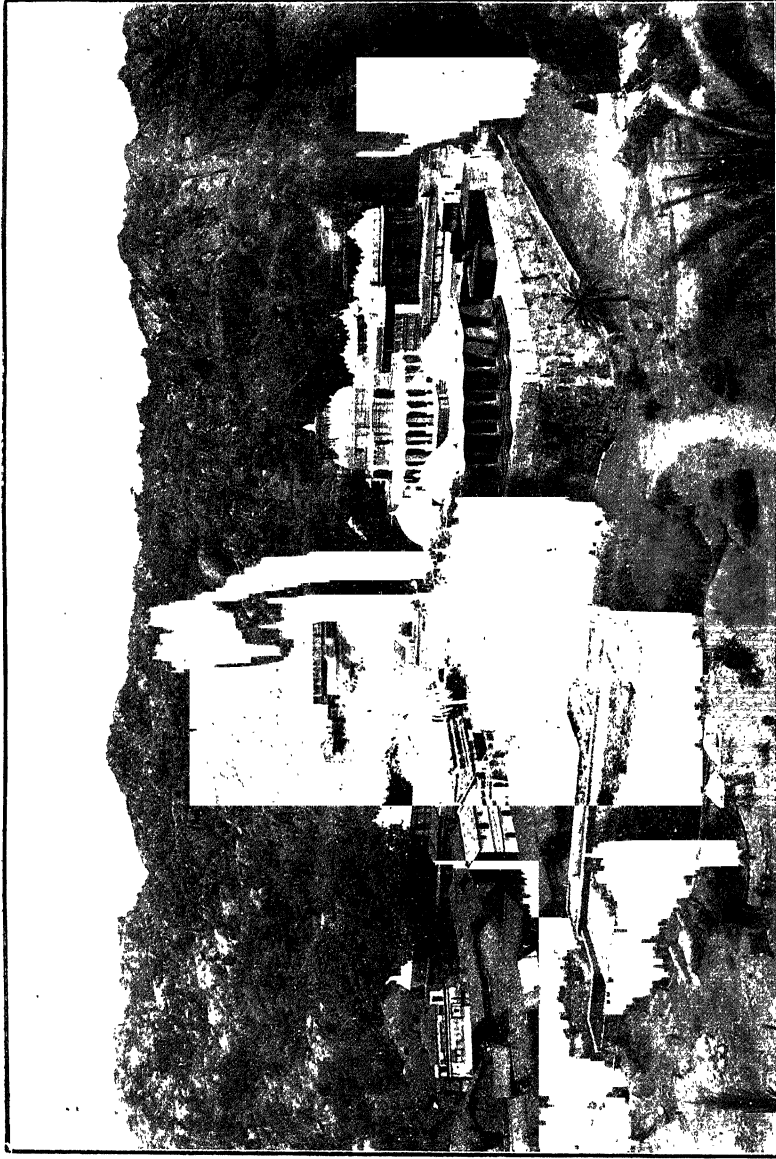
TIRTHA ABU — Dilwara Temples.

आबू-रोड।

श्री आदिनाथ जी का मंदिर—धर्मशाला।

पंचतीर्थी पर।

[2012]

सं० १५०९ वै० व० ११ शुक्रे श्री कोरंट गच्छे श्री नन्नाचार्य संताने। उवएस वंशे। शंखवालेचा गोत्रे श्रे० लषमसी भा० सांसल दे पु० रामा भा० राम दे पु० तेजा नाम्ना स्वमातापित्रोः श्रेयसे श्री वासुपूज्य बिं० का० प्र० श्री सांबदेव सूरिभिः।

चौवीशी पर।

[2013]

॥ सं० १५२८ वर्षे माघ सुदि १३ गुरौ श्री उदयसागरगुरूपदेशेन श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० मेघा भा० माणिकदे सुत श्रे० नाईयाकेन भा० बाल्हा सु० गहिगा राघव गईया तथा द्वि० भा० नामल दे प्रमुख कुटुंबयुतेन श्री संभवनाथ चतुर्विंशति पट्ट कारिताः प्र० श्री बृहत्तपा गच्छे ज्ञानसागर सूरिभिः।

आबू-तीर्थ।

श्री आदिनाथजी का मंदिर—देलवाड़ा।

पाषाणकी कायोत्सर्ग मूर्ति पर।

[2014]

(१) संवत् १४०९ वर्षे वैशाष मासे शुक्ल पक्षे ५ पंचम्यां तिथौ गु:

(२) रुदिने श्री कोरंट गच्छे श्री नन्नाचार्य संताने महं कउंरा
(३) भार्या महं कुंरदे पुत्र महं मदन नर पूर्णसिंह भा० पूर्णसि-
(४) रि सुत महं डुहा मं० धांधल मूल मं० जसपाल गेदा रुदा प्रभृति स-
(५) मस्त कुटुंब श्रेयसे श्री युगादि देव प्रसादे महं धांधुकेन श्री जिन-
(६) युगलद्वयं कारितं प्रतिष्ठितं श्री नन्न सूरि पट्टे श्री कक्क सूरिभिः ।

धातु की मूर्ति पर ।

[2015]

सं० १५२१ वर्षे वैशाष सुदि १० रवौ सं० रत्ना सं० पन्नाभ्यां श्रीशातिनाथ बिंबं का० ।

पंचतीर्थी पर ।

[2016]

सं० १४७१ वर्षे माघ सुदि १३ बुधे प्रा० व्य० लषमण भा० रूडी पु० भीलाकेन पित्रो आत्मश्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रति० ब्रह्माणीय गच्छे भ० श्री उदयाणंद सूरिभिः ।

चौवीशी पर ।

[2017]

सं० १४७५ प्राग्वाट व्य० डूंगर भार्या उम दे पुत्र व्य० माल्हाकेन भा० माल्हण दे पुत्र कीभा भीनादि शुतेन श्री सुपार्श्व चतुर्विंशतिका पट्टः कारितः प्रतिष्ठितस्तपा गच्छे श्री सोमसुंदर सूरिभिः ।

श्री शांतिनाथजी का मंदिर—अचलगढ़ ।

पाषाण की मूर्त्तियों पर ।

[2018]

ॐ सं० १३०२ वर्षे ज्येष्ठ सु० ९ शुक्रे . . . . ।
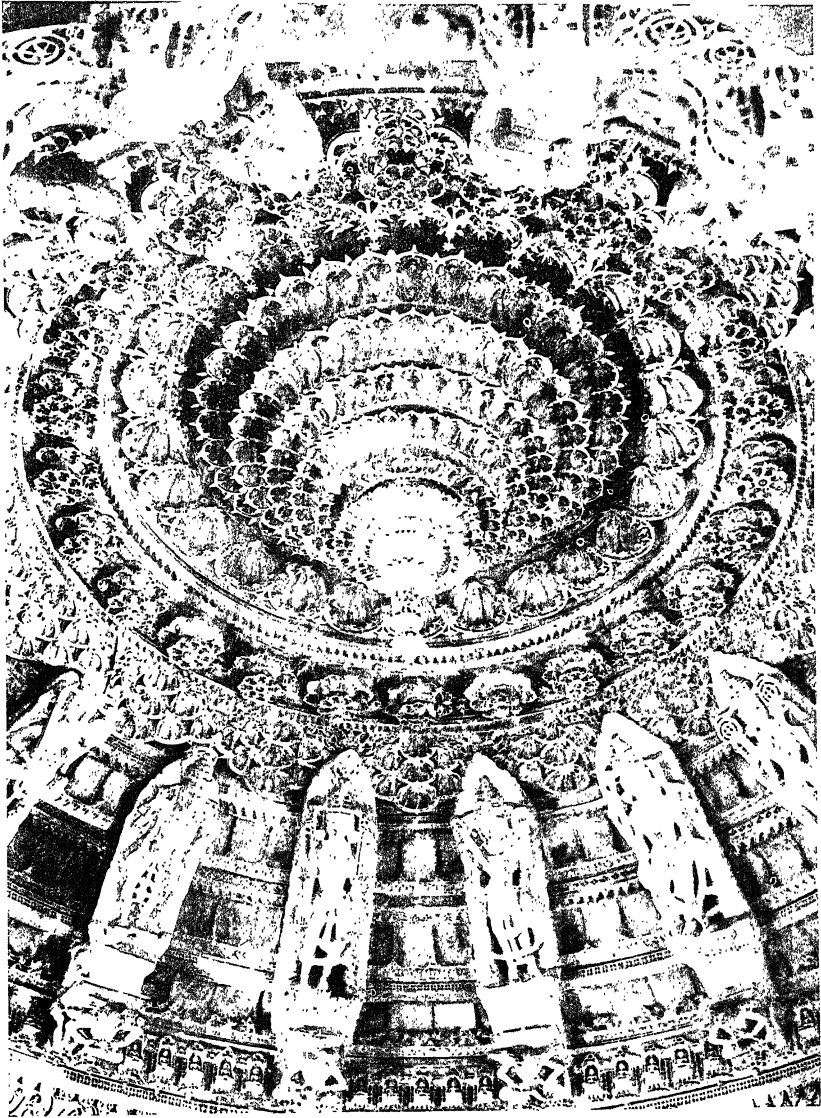
TIRTHA ABU.

Carving work on ceiling in Dilwara Temples.

[2019]

सा० धन्ना श्रावकेण श्री आदिनाथ बिंबं कारितं।

[2020]

पं० मांजू श्राविकया श्री सुमतिनाथ कारितं . . . . .।

[2021]

श्री खरतर गछे श्री पार्श्वदेवद्वितीयजन्मौ पार्श्वनाथ सा० माला भा० मांजू श्राविका कारितः।

देवी की मूर्ति पर।

[2022]

सं० १५१५ वर्षे आषाढ वदि १ शुक्रे श्रीः ऊकेश वंशे दरडा गोत्रे सा० आसा भा० सोखु पुत्रेण सं० मंडलिकेन भा० हीराई सु० साजण द्वि० भा० रोहिणि प्र० भ्रा० सा० पाल्हादि परिवार संयुतेन श्री चतुर्मुख प्रासादे श्री अंबिका मूर्ति का० श्री जिनचंद्र सूरिभिः।

श्री ऋषभदेव जी का मंदिर—अचलगढ़।

पाषाण की कायोत्सर्ग मूर्ति पर।

[2023]

सं० १३०२ वर्षे . . . . . . अमरचंद्र सूरि जयदेव सूरिभिः।

पंचतीर्थी पर।

[2024]

सं० १५२० वर्षे आ० सु० २ प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० सा . . . . . . भा० रूपिणि सुत सोमा दे भा० वीकमादि कुटुंबयुतेन श्री मुनिसुव्रतनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री तपागछनायक श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः।

धातु की मूर्तियों पर ।

[2025]

सं० १५२५ फा० सु० ७ शनि रोहिण्यां श्री अर्बुदगिरौ देवड़ा श्री रावधर सायर डूंगर- सिंह विजय राज्ये सा० ता भीमचैत्ये गूर्जर श्रीमाल राजमान्य मं० मंडन भार्या भोली पुत्र मं० शूद्र पु० मं० गदाभ्यां भार्या हासी पञ्चाई मं० मदा भा० आसू पुत्र श्रीरंग वाघादि कुटुंबयुताभ्यां १०८ मन प्रमाण सपरिकर प्रथमजिन बिंबं कारितं तपागच्छनायक श्री सोम- सुंदर सूरि पट्टे श्री मुनिसुंदर सूरि श्री जयचंद्र सूरि पट्टे श्री रत्नशेखर सूरि पट्ट प्रभाकर श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्री सुधानंदन सूरि श्री सोमजय सूरि महोपाध्याय श्री जिनसोमगणि प्रमुख । विज्ञानं सूत्रधार देवाकस्य श्री रस्तु । कृतं मेवाड़ ज्ञातीय सूत्र- धार मिहीपा भा० नागल सुत सूत्रधार देवा भार्या करमी सुत सू० हला गदा हांपा लाला हाना कलाः सहित व्यापाद्यताः ।

[2026]

संवत् १५२७ वर्षे वैशाख वदि ४ शुक्रे डूंगरपुर नगरे राउल श्री सोमदास वि० रा० तत्प्रधान प्रभावक पुरंदर सा० साभा प्रमुख श्री संघोपक्रमेन . . . . श्री आदिनाथ बिंबं प्र० तपागच्छनायक श्री सोमसुंदर सूरि पट्टे मुनिसुंदर सूरि श्री जयचंद्र सूरि पट्टे श्री रत्नशेखर सूरि तत्पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरि श्री सोमजय सूरि महोपाध्याय जिनहंसगणि प्रमुख सुदरादि शिष्यै परिवार परिवृतः

[2027]

संवत् १५६६ वर्षे फाल्गुन सुदि १० सोमे श्री अचलगढ़ महादूर्गे महाराजाधिराज श्री जगमालविजयराज्ये सं० सालिग सुत सं० सहसा कारित श्री चतुर्मुखविहारे भद्र- प्रासादे श्री सुपार्श्व बिंबं श्री संघेन कारित प्र० तपागच्छ श्री सोमसुंदर सूरि संताने श्री कमलकलस सूरि शिष्य श्री जयकल्याण सूरिभिः भ० श्री चरणसुंदर सूरि प्रमुख परि- वार परिवृतैः श्रीरस्तु श्री संघस्य सूत्रधार हरदास ॥
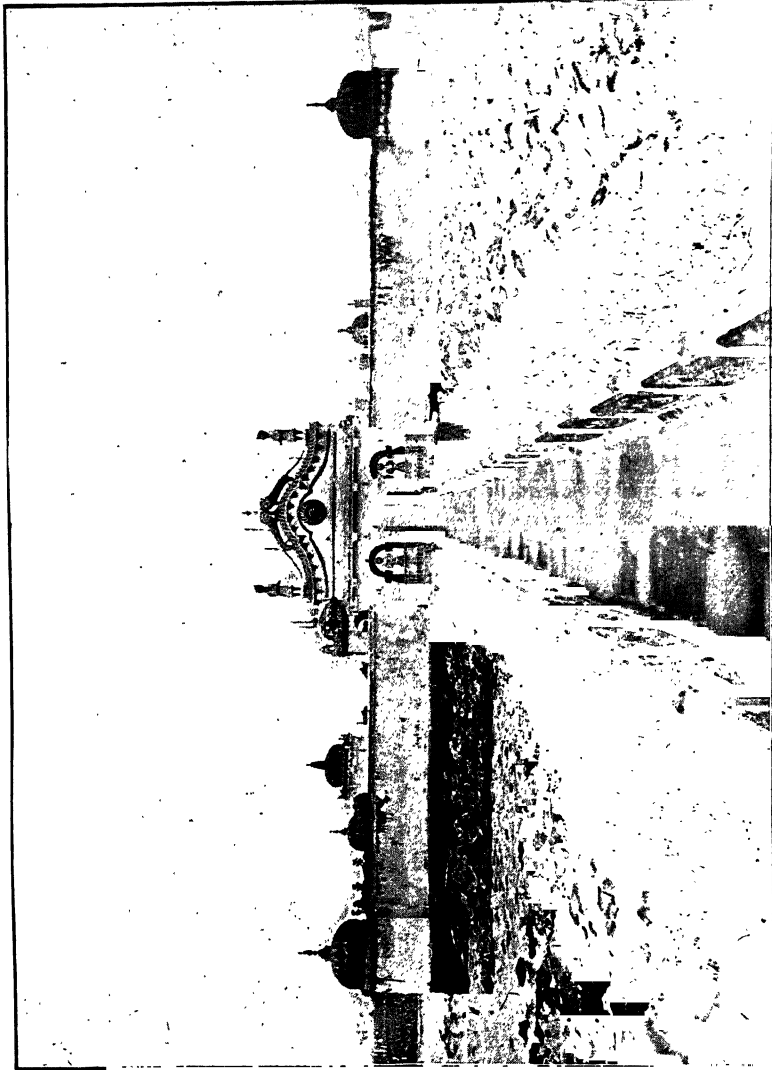
TIRTHA PAWAPURI—JALAMANDIR.
(Front View)

[2028]

संवत् १५६६ वर्षे फाल्गुन सुदि १० सोमे श्री अचलगढ़ महादूर्गे महाराजाधिराज श्री जगमालविजयराज्ये सं० सालिग सुत सं० सहसा कारित श्री चतुर्मुखविहारे ग्रह-प्रासादे श्री आदिनाथ बिंबं श्री संघेन कारित प्र० तपागच्छ श्री सोमसुंदर सूरि संताने श्री कमलकलस सूरि शिष्य श्री जयकल्याण सूरिभिः ग० श्री चरणसुंदर सूरि प्रमुख परिवार परिवृतैः श्री रस्तु श्री संघस्य । सूत्रधार हरदास ॥

卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐

श्री पावापुरी तीर्थ ।

जल मंदिर ।

पंचतीर्थी पर ।

[2029]

सं(व)त् १२६० ज्येष्ठ सुदि २ रेनुमा(?) पु० चोराकेनात्मश्रेयोर्थं श्री महावीर बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं च श्री अभयदेव सूरिभिः

मूलवेदी के दाहिने तर्फ का लेख ।

[2030]

(१) सं० १६७९ मिः आसिन सुदि २
(२) श्री मंदिरजी के बीच के फेरी में वः नी
(३) चे के फेरी में पत्थर बैठाया नानकचं-
(४) द जीवनदास जैन श्वेताम्बरी के तर
(५) फ से साः कलकत्ता शुभं

सोने के चरण पर।

[2031]

सं० १९२३ डूगड़ धनपतसिंह कारापितं सर्व सूरि प्रतिष्ठित (श्री)संघस्य श्रेयसे भवतु।

दादाजी के चरण पर।

[2032]

१९५८ साल मिति अघन वदि १२ सोमवार निहालचंद इंद्रचंद डुगड़ तस्य परिवार प्रतिष्ठा कारापितं मुर्शिदाबाद ॥ श्री जिन कु(श)ल सूरि महाराज का चरन ॥ शुभं भवतु ॥

समोसरन।

मंदिर का शिलालेख।

[2033]

(१) श्री शुभ संवत् १९५३ मिती कातिक वदी
(२) त्रयोदशी मंगलवार श्री महावीर स्वामी जी के समोस
(३) रनजी में मंदिर कराया श्री संघ ने श्वेताम्बरी आमनाये
(४) व: मनिजर गोविन्द चंद सचेती विहारवाले के
(५) हस्ते बना। इदं प्रतिष्ठितं मंगारीखी जति

महताब बिबि का मंदिर।

शिलालेख।

[2034]

(१) संवत् १९३२ का मिति माघ शुक्ल १० तिथौ
(२) चंद्रवारे श्री मन्महावीर स्वामी मंदिर श्री वंगदे-

(३) शे । मकसुदावादाजीमगंज वासिनी डुधेड़िया
(४) गोत्रे श्री नेमिचंद्र तस्य भार्या महताब कुमारि-
(५) णा कारापितं च श्री हर्षचंदजी तत् पुत्र बुधसीह
(६) विसनचंद्रेण प्रतिष्ठा कारापिता । श्री वृहल्लौंपक
(७) गौर्ज्जराधिपति श्री अक्षयराज सूरि तत्पट्टालंक
(८) त् श्री अजयराज सूरिणा प्रतिष्ठतं श्री शुभं भूयात् ।
(९) ॥ श्लोकः ॥ भवारण्यगोपालकं त्रैशलेयं । भवांबोधि-
(१०) संस्तारणे यानतुल्यं ॥ मुक्तिस्त्रिनाथं मयायं जिनेंद्रं
(११) प्रसंस्तौमि श्री वर्धमानं विभुं च ॥ १ ॥

गांव मंदिर ।

दक्षिण तर्फ के दिवार पर का लेख ।

[2035]

(१) श्री गांव मंदिर जि मे दक्ष
(२) ण पश्चिम उत्तर दालान
(३) तथा चारो कोठे मे पत्थल
(४) जैन श्वेताम्बर भंडार के तर
(५) फ से मैनेजर गोविंदचंद सुचं
(६) ति विहारवालो ने बैठाया सुत्र
(७) सं० १९६४ आसिन बदि ५

सभा मंडप के दाहिने तर्फ के आले का लेख ।

[2036]

(१) श्रीमदविर जीनेंद्र प्रणम्य श्री पावापुरी नगरी मधे आ श्री जिन
(२) बींब स्थानापन करोती स्वेतांबर आमनाय धारक शा० रूपचंद

(३) रंगीलदास देवचंद सा पाटन वाला हाल मुकाम येवला तथा मुंबई
(४) वालाये आगो खजार तथा सजा मंरूपमां जमती सहीत आरस कराव्यो
(५) संवत् १९६० लं० सेवक उत्तमचंद वालचंद मंत्री नगरवाला।

सजा मंडप के बांये तर्फ के आले का लेख।

[2037]

(१) श्रीमद विर जिनेंद्र प्रणम्य श्री पावापुरी नगरी मधे आ श्री जि
(२) न बींब स्थापन्नं शा० रूपचंद रंगीलदास सा पाटन वा
(३) ला हाल मुकाम येवला तथा मुंबई स्वेतांबर आमना धारक वा
(४) ला ओ कराव्या छे संवत् १९६०
(५) मीस्त्री भाईचंद जगजीवन सलाट पालीताणा वाला।

हैदराबाद–दक्षिण। *

श्री पार्श्वनाथ जी का मंदिर–बेगम बजार।

मूलनायक जी पर।

[2038]

सं० १५५७ वर्षे ॥ महा सुदि ५ सोमे श्री पार्श्वजिन बिंबं कारितं . . . . . ।

पाषाण की मूर्ति पर।

[2039]

संवत् १५४७ वैशाख सुदि ३ श्री संघे भट्टारक जी श्री जिन तपापति वाक जी प्रति०

---

* यहां के लेख स्वर्गीय पं० बालचंद्रजी यति से प्राप्त हुवे थे।

श्री राजा जशसिंघ राज्ये . . . . . . ।

[2040]

संबत् १५४० वर्षे वैशाख सुदि १ श्री चंद्रप्रभु बिंबं कारापितं ।

धातु की प्रतिमाओं पर ।

[2041]

संवत् १६६० फागुण सुदि १३ साह मनोरथ सदापगामे प्र० . . . . . . ।

[2042]

संबत् १७०० वर्षे मार्ग० सुदि २ शुक्रे राजनगर वास्तव्य ओसवंस ज्ञा० सा० वर्द्धमान तत्पुत्र सा० रायसिंघ केन स्वश्रेयोर्थं श्री पद्मावती बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा पं० श्री किर्ति-रत्नगणिभिः ॥

[2043]

सं० १७०७ व० फा० सु० ८ सोमे श्रीमाली ज्ञा० सा० कुंअरजा भा० रतनबाई नाम्न्या उ० श्री विवेकहर्षजी श्री शांतिनाथ बिं० का० प्र० श्री तपा० भ० श्री विजयदेव सूरिभिः ॥

पंचतीर्थियों पर ।

[2044]

सं० १५१२ माघ वदि . . . सोमे नागर ज्ञातीय श्रे० कर्मसी भा० फदू सुत जोगी नाम्ना भा० भटि सुत लखमादि कुटुंबयुतेन श्री धर्मनाथ बिंबं का० प्र० बृहत्तपा श्री रत्न-सिंह सूरिभि ॥

[2045]

सं० १५३० वर्षे वैशाख वदि १२ बुधे वडाउला गोत्रे ओस वंशे सा० षेटा भा० माल्ही सुत सा० धर्म्मा भा० मदू पुत्र नापा बाला हीरादि कुटुंबयुतेन आत्म श्रे० श्री शीतलनाथ बिंबं का० प्र० श्री संडेर गच्छे श्री यशचंद्र सूरिभिः ॥ श्री ॥

[2046]

संवत् १५६२ वर्षे माघ सुदि १५ दिने ऊकेश वंश घोरवाड गोत्रे सा० वाचा भा० वाहिण दे पुत्र सा० रंगाकेन भा० रत्ना दे पुत्र सा० माहा षेता वेता प्रमुख परिवारयुतेन श्री सुमतिनाथ बिंबं का० प्र० श्री खरतरगच्छे श्री जिनहंस सूरिभिः ॥

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर—कारबान साहुकारी।

धातु की प्रतिमाओं पर।

[2047]

संवत् १३२२ वर्षे वैशाख सुदि ११ गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय भा० जयतेन निजमातामह ठ० सोढ भा० ठ० श्रियादेवी श्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री पृथीचंद्र सूरि शिष्यैः श्री जयचंद्र सूरिभिः ॥

[2048]

संवत् १४५८ वर्षे फा० सुदि १ भौमे प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० धरणि सुत सिंघा श्रेयोर्थं तद् भ्रातृ श्रे० कान्हदेन श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छीय भट्टारक श्री देवसुंदर सूरिभिः ॥

[2049]

संवत् १४८१ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० सामत भा० सामल दे सु० धर्माकेन भ्रातृ हीरा सिवा सहदे सहितेन पितृ मातृ श्रेयसे श्री अभिनंदन बिंबं का० प्र० मडाहड गच्छे श्री उदयप्रभ सूरिभिः ॥

[2050]

सं० १६७७ व० फा० सु० ८ सोमे ओ० ज्ञा० सा० शिव सा० भा० सुजारादि पुत्र सा० राऊकेन भा० रतनबाई प्रमुख कुटुंबयुतेन श्री सुविधिनाथ बिंबं कारितं प्र० तपा गच्छे विवेकहर्षगणिभिः ॥

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर—रेसीडेन्सी बजार।

पंचतीर्थियों पर।

[2051]

संवत् १४९४ मा० सु० ११ ओस वंशे काल्हणसीह लाछणि सुत कोवापाकेन श्री अंचलगछे श्री जयकीर्ति सूरिणामु० श्री नमिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ॥ श्रीः ॥

[2052]

सं० १५३४ वर्षे आषाढ सुदि १ गुरौ उकेश ज्ञातौ श्रेष्ठी गोत्रे म० कमला म० सिंघा भा० लखमा दे पु० साजण युतेन स्वश्रेयसे श्री पद्मप्रभ बिंबं कारितं श्री ककुदाचार्य संताने प्रतिष्ठितं श्री देवगुप्त सूरिभिः ॥

[2053]

संवत् १५३७ वर्षे महावदि १३ शुक्रवारे सूराणा गोत्रे सा० नाथू पुत्र थिरा भार्या मुहडादे पुत्र सा० धेना भार्या हिमा दे पुण्यार्थं श्री विमलनाथ बिंबं कारितं श्री धर्मघोष गछे प्रतिष्ठितं भट्टारक श्री मानदेव सूरिभिः ॥

[2054]

सं० १५४१ माघ सुदि १२ प्राग्वाट ज्ञा० श्रे० झांटा भा० सूलेसिरि सु० जिणदासेन भा० लखी सुत हरदास सूरदासादि कुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्री धर्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा गछे श्री ३ लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ मोर। पोयाणा वासी।

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर—चार कवान।

पंचतीर्थियों पर।

[2055]

सं० ११९७ फा० सु० ४ श्रा० वाकूकया स्वश्रेयसे श्री महावीर प्रतिमा कारिता।

[2056]

सं० १४०१ व० मार्ग० सु० ५ बा० चतुर नाम्ना श्री संखेश्वरपार्श्व बिंबं का० प्र० तपा श्री विजयहर्ष सूरिभिः ॥

[2057]

सं० १६६७ वर्षे फागुण सुदि ७ सोमे श्रीमाल ज्ञातीय सा० सूरज कुटुंबयुतेन श्री शांति० बिं० कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपा गछे भट्टारक श्री विजयदेव सूरिभिः ॥

[2058]

सं० १६९० व० फा० सु० ५ गुरौ दौलत्तीबाद ऊ० ज्ञा० सा० श्रीमंत भा० षमांबाई नाम श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्र० तपा गछे . . . . . . ।

[2059]

सं० १६९७ फा० सु० ५ वृ० ऊकेश बा० धीरा नाम्नी श्री शांति बिं० का० प्र० श्री तपा गछे विजयदेव सूरिभिः ॥

[2060]

सं० १७०१ (?) व० मा० र्ग० सु० द० ५ वा० बृ० प्रा० बा० कानू नाम्ना श्री पार्श्व-नाथ बिं० का० प्र० तपा श्री विजयदेव सूरिभिः ॥

दादाजी के चरणों पर ।

[2061]

॥ संवत् १९६१ का वर्षे मिति माघ सुदि ५ गुरूवासरे श्री जं० युग प्रधान जगद् चूडामणि दादा साहिब १००८ श्री जिनदत्त सूरि गुरूराज चरणपादुका श्री चारकवांण का श्रीसंघेन कारापितं । पं० चारित्रसुखेन प्रतिष्ठापितम् श्रीसंघस्य कल्याण खेम कुशलम् समुपस्थिता ॥ हैदराबाद ॥

[2062]

॥ सं० १९६१ वर्षे मि । माघ सु । ५ दिने । जं । युग प्र० १००० दादा साहेब श्री जिन-कुशल सूरि पादुका । च्यारकबांण ।

[2063]

श्री जिनकुशल सूरि चरणकमल पादुकेभ्यो नमः ॥ शुभ संवत् १९६४ वैशाख धवल १० गुरुवासरे प्रतिष्ठितम् ॥

卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐

मद्रास । *

चंद्रप्रभस्वामी का मंदिर – शूला बजार ।

मूल मंदिर का लेख ।

[2064]

(१) ॥ संवत् १९५२ रा शाके १८१७ मासोत्तममासे ज्येष्ठ मासे शुक्ल पक्षे तिथि दशम्यां रविवारे शूलाग्रामस्थः मालू गोत्रे सा० । कालू-

(२) राम रतनचंद खरतरगणोपासकेन कारापित जिनभवने चंद्रप्रभु बिंबं स्थापितं खर-तर गच्छे क्षेमकीर्ति शाखायां विद्धद्रामचंद्रगणि

(३) तच्छिष्य पं प्र । उदयचंद्रगणिः तच्चरणांतेवासी उपाध्याय नेमिचंद्रेण प्रतिष्ठितं जिनभवनं स्थापितं बिंबं च पं० । श्यामलाल साकम्

मूलनायक जी पर ।

[2065]

॥ संवत् १९६० वैशाष सुदि ६ . . . कारितं श्री संघेन . . . . ।

---

* यहां के लेख स्वर्गीय पं० बालचंद्रजी यति से मिले थे ।

मूर्तियों पर ।

[2066]

॥ सं० । १९२१ माह सुदि ७ गुरु । श्री चंद्रजिन बिंबं कारितं । श्री बृहत्खरतरगच्छीय भ० श्री जिनहंस सूरिभिः प्रति . . . . . . ।

[2067]

॥ सं० १९२१ माह ॥ सु० । ७ । गु । श्री सुमतिजिन बिंबं कारितं । श्री बृहत्खरतरगच्छीय भ० श्री जिनहंस सूरिभिः प्रति . . . . . . ।

धातु की पंचतीर्थी पर ।

[2068]

॥ सं० १५०५ वर्षे पोस सुदि १५ आ० विणवट गोत्र पा० रतदा भा० मूदल दे पु । सहसा भा० सुहड़ दे पितृमातृ पु० श्री चंद्रप्रभो बिंबं कारितं प्र० श्री धर्मघोष गच्छे पूर्णचंद्र सूरि पट्टे श्री महेंद्र सूरिभिः ॥ श्री ॥

ताम्रपट्ट पर ।

[2069]

॥ संवत् १९७० रा शाके १८३५ रा ज्येष्ठ मासे कृष्ण पक्षे तिथौ त्रयोदश्यायां चंद्रवासरे ॥ भट्टारक श्री जिनफत्तेंद्र सूरि प्रतिष्ठितं श्री मद्रास शूलामध्ये ॥

चंद्रप्रभस्वामी का मंदिर – साहूकार पेठ ।

शिलालेख ।

[2070]

(१) ॐ (२) ॥ नमः श्री वीतरागाय ॥

(३) ॥ श्लोकः ॥ आसीत्सूरिपदप्रतिष्ठितरणेः श्री हेमसूरिप्रभुस्तत्पीठे प्रतिवादिवृन्द-

(४) जयदो विद्याकलानां निधिः ॥ श्री सूरीश्वरमूर्द्धवन्दितपदः श्री सिद्धसूरिगुरुर्ध-
(५) र्मोजोदयत्तारकत्येतिनिपुणो वर्वार्त्ति सर्वोपरि ॥ १ ॥ प्रासादस्य कृतास्य तेन
(६) विदुषा माघस्य शुक्ले बुधौ त्र्योदश्यां श्रुतिसप्तनन्दकुमिते श्री विक्रमाब्देऽधुना ।
(७) सौजन्यातमृतसागरेण जगतां धर्म्मोपकाराय वै श्रीमज्जैनधुरंधरेण कृतिना नूनं
(८) प्रतिष्ठानघाः ॥ २ ॥ श्री विक्रम संवत् १९७४ माघ शुक्ल १३ बुधवारके दि-
(९) न श्री मदरास पत्तन शाहूकार पेठमें श्री चन्द्रप्रभस्वामी बिम्ब प्रतिष्ठा श्री-
(१०) मज्जैनाचार्य बृहत्खरतरगच्छीय जं । यु । भट्टार्क श्री जिनसिद्ध सूरिजी ।
(११) महाराज के करकमलों से समस्त संघ सहित भैरुंबकसजी सुखलालजी ।
(१२) समदड़िया ने बड़े महोत्सव से कराई । हरषचंद रूपचंदजी ने बिम्ब स्थाप-
(१३) न किया बादरमलजी ने कलश चढ़ाया और हंसराजजी सागरमलजी
(१४) ने ध्वजा आरोपण करी यह मंगल कार्य श्री संघको सर्वदा श्रेयकारी हो ॥
(१५) ॥ हस्ताक्षराणि यति किशोरचन्द्रजी तच्छिष्य मनसाचन्द्रस्य ॥

श्री दादाजी के बंगले में ।

[2071]

ॐ नमः दत्तसूरिजी ॐ नमः कुशलसूरिजी

मिति माह सुदि ५ संवत् १९३६ का ।

जैन मंदिर—साहुकार पेठ ।

पंचतीर्थियों पर ।

[2072]

संवत् १४९७ वर्षे माघ सुदि ५ बुधौ श्रीमाल ज्ञातीय नान्दी गोत्रे सा० प्रल्हा पुत्र शा० प्रेताकेन पुत्र हरराज सहित ततू पिता पुण्यार्थं श्री अजितनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनसागर सूरिभिः ॥

[2073]

संवत् १५१७ वर्षे पौष वदि ५ गुरू श्री श्रीमाल ज्ञातीय मह॑ वित्रा भा० जासी सुत सोना भा० हीरू आत्मश्रेयोऽर्थं जीवितस्वामी श्री श्री श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं पिप्पल गच्छे त्रितविया श्री धर्म्मसागर सूरिभिः । भीलुटग्रामे ।

[2074]

संवत् १५१९ वर्षे माघ शुक्ल १३ पाल्हण पुर ऊकेश ज्ञातीय सा० पर्वत भा० जीविणी पुत्र शा० गेहाकेन भा० वीरू पुत्र वस्ता जावड प्रमुख कुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे पार्श्वबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा श्री रत्नशेखर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥

चौवीसी पर ।

[2075]

संवत् १४८७ वर्षे माघ . . . दि . . . वाइडा ज्ञातीय श्रे० खीमा भा० लहिकू सुत आथा भा० हीसु पुत्र हापा गोपा जीरादि कुटुंबयुतेन श्रेयोर्थं श्री श्रेयांसनाथ चतुर्विंशति पट्टकारितः प्रतिष्ठितं तपागच्छाधिराज भ० श्री सोमसुंदर सूरिभिः ॥ श्रीशुभं भवतु ॥

[2076]

संवत् १५२१ वर्षे ज्येष्ठ शुक्ल प्राग्वाट ज्ञातीय सं अर्जुन भा० टबकु सुत सं० वस्ता भा० रामी सुत सं० चान्दा भा० जीविणि सुत लींबा आका प्रमुख कुटुंबयुतेन ७२ चतुर्विंशतिपट्टान् कारयितस्थ श्रेयसे श्री पद्मप्रभः चतुर्विंशतिपट्टः कारितः प्रतिष्ठितः । श्री तपा पक्षे श्री सोमसुंदर सूरि संताने श्री रत्नशेखर सूरि तत् पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥
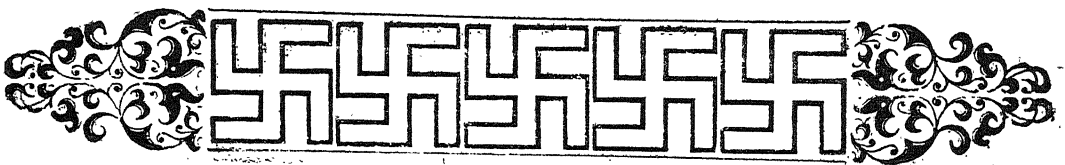
रायपुर—सी॰ पी॰। *

जैन मंदिर—सदर बजार।

शिलालेख।

[2077]

(१) ॥ श्री मदिष्टदेवेभ्यो नमः ॥ श्रीमच्छ्रीवीरविक्रमादित्य राज्यात् नभवर्ण-
(२) निधिइंद्वब्द (१९५०) शाके इंद्रिचंद्रसिद्धि नक्षत्रेश प्रमिते मासोत्तममासे द्वि-
(३) तीय आसाढ मासे शुक्लपक्षे अष्टम्यां तिथौ भार्गववासरे स्वाति नक्ष-
(४) त्रे साध्ययोगे बुधमार्गे एवं पंचांग शुद्धावत्र समये कर्कार्क गते रवौ शेषे-
(५) षु पूजनिरिक्षित वेलायां श्री मद्राजपुरवरे मालु गोत्रे साह तनसुखदा
(६) स(दास) तत्पुत्र साह आसकरणेनासौ श्री मचंद्रप्रभ जिनप्रभो प्रासा
(७) द कारितं स्वश्रेयोर्थं श्री बृहत्खरतर भट्टारक गच्छाधिपै भट्टारक श्री
(८) जिनचंद् सूरीश्वर प्रतिष्ठितश्चेति पं॰ सिवलाल मुनिरुपदेशात्।

ताम्रपत्र पर।

[2078]

(१) श्री जिनायनमः ॥ श्रीमत् वीर सं॰ २४२१ विक्र-
(२) म सं॰। १९५१ शाके १८१६ प्रवर्त्तमाने मासोत्तम मा-
(३) से आषाढ शुक्लपक्ष तृतिया तिथौ गुरूवारे पु-
(४) ष्यनक्षत्रे मिथुनार्कगते रवौ शेष शुभ निरिक्षि-
(५) त वेलायां श्री रतं(राज)वरे मालू गोत्र साह धन-
(६) रूपजी तत्पुत्र साह फूलचंदजी कस्या भार्या

---

* स्वर्गीय पं॰ बालचंदजी यति से प्राप्त।

(७) हीरादेवी तया श्री अजिनंदनजिनप्रनो प्रासाद
(८) कारित स्वश्रेयं श्रीवृहत् खरतर गछे श्री जिनचंद सूरीश्वर
(९) जी आदेशात् श्री शिवलाख मुनि प्रतिष्ठितम् ॥ श्री शुजम् ॥

卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐

उथमण - सिरोही ।

जैन मंदिर ।

पब्बासण के नीचे का लेख ।

[2079]

॥ सं० १२४३ वर्षे माहा सुदि १० बुधदिने नाणकीय गछे उथमण चैत्ये धणेसर जा० धारमती पु० देवधर जेसड आल्हा पाल्हादि कुटुंब संयुते मातृ निमित्तं जलवटु करापितं ॥

卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐

रोहेड़ा - सिरोही ।

जैन मंदिर ।

पंचतीर्थियों पर ।

[2080]

सं० १२९३ वर्षे फागण सुदि ८ कोरंट गछे . . . जोबा . . . धर्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं कक्क सूरिजिः ॥

[2081]

सं० १३४१ वर्षे नाणकिय गछे . . . . . . चतुर्विंशतिपट्ट कारितं प्रतिष्ठितं जट्टारक महेन्द्र सूरिजिः ॥

[2082]

सं० १४९१ फागण सुदि १२ गुरौ कोरंटवाल गच्छे उपकेश ज्ञातीय संखवालेचा गोत्रे नपसी पु० जाणाकेन श्रेयसे श्री धर्मनाथ बिंब कारितं प्रतिष्ठितं सांबदेव सूरिभिः ॥

[2083]

सं० १४९३ वर्षे माघ सुदि १३ उपकेश ज्ञातीय म० मांडण भा० सिरियादे पु० काजाकेन भार्या भल्ली सहितेन आत्मश्रेयसे श्री नमिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं भट्टारक श्री धनप्रभ सूरिभिः ॥

[2084]

संवत् १५१३ वर्षे फागुण वदि ११ नागेंद्र गच्छे उपकेश ज्ञातीय कोठारी . . . भा० लक्ष्मी पु० मेघा भा० हीरु पु० नेरा डुंगर तोल्हा युतेन श्री आत्मपुण्यार्थे श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं विनयप्रभ सूरिभिः ॥

[2085]

सं० १५१७ वर्षे वैशाष वदि ८ शुक्रे श्री श्रीमाल श्रेष्ठी भामा भा० साही पु० गोल्हा भा० आसि पु० पहिराज कुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं पूर्णिमापक्षे पुण्यरत्न सूरीणां प्रतिष्ठितं वाराही ग्रामे ॥

[2086]

सं० १५१८ वर्षे माघ वदि २ प्राग्वाट ज्ञातीय व्यव० कोल्हाकेन भार्या कामल दे पु० नाल्हा हीदा युतेन धर्मनाथ बिंबं कारितं कछोलीवाल गच्छे पूर्णिमापक्षे गुणसागर सूरिभिः ॥

[2087]

सं० १५७६ आसाढ सुदि ९ रवौ उपकेशज्ञातीय नाग गोत्रे साह भोजा भा० भावल दे पु० मांडण आल्हा जेसा सहितेन माडण भा० माणक दे पु० रंगा युतेन आत्मपुण्यार्थे संभवनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं नाणांवाल गच्छे भट्टारक श्री . . . . . . ।

भारज-सिरोही।

जैन मंदिर।

पंचतीर्थी पर।

[2088]

सं० १५२४ वर्षे वैशाख सुदि २ शनौ श्रीमाल ज्ञातीय पितृ धरकण भा० धल्ला सुत कालु भा० कुंथि करमी सुत सहिता युतेन श्री नमिनाथ बिंबं कारितं बृहच्छाया गच्छे प्रतिष्ठितं श्री विमल सूरिभिः वटपद्र वास्तव्य॥

—•卐•—

गुडा-सिरोही।

जैन मंदिर।

पंचतीर्थी पर।

[2089]

सं० १५३४ वर्षे वैशाख सुदि ३ गुरौ उसवाल वृहद् सज्जने ठाकुर गोत्रे सा० पोमादे पु० जावड़ भावड़ गीदा सा० माणाकेन भा० माणिक दे पु० मेघराज हांसादि कुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्री सुमतिनाथ चतुर्विंशति पट्ट कारापितं। नाणावाल गच्छे श्री धनेश्वर सूरिभिः प्रतिष्ठितं तपा श्री सोमसुंदर सूरिभिः सं.....॥

तिवरी-सिरोही।

जैन मंदिर।

काउसग्ग प्रतिमा पर।

[2090]

सं० १३३४ वर्षे वैशाख सुदि ५ गुरौ प्रा० ज्ञा० श्रे० ऊबा भादा भा० रूपल दे पु०... श्री नयगल कारितं प्रतिष्ठितं चित्रगच्छीय श्री देवचन्द्र सूरि संतानीय रा० पं० सोमचंद्रेण॥

पाडीव - सिरोही ।

जैन मंदिर ।

पंचतीर्थी पर ।

[2091]

सं० १५३६ वर्षे वैशाख सुदि ३ गुरौ श्रीमाली ज्ञातीय राउल भा० वाला पु० देवा भा० ललियता सुत तेजा श्री विमलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं आगम गच्छे अमररत्न सूरि गुरूपदेशेन करापितं प्र० विधिना पत्तन वास्तव्य ॥

मडिया - सिरोही ।

जैन मंदिर ।

पंचतीर्थी पर ।

[2092]

सं० १४७० वर्षे माघ सुदि २ गुरौ बाफणा गोत्रे साह लुना सुत देपाल भा० मेला दे पु० जोगराज भा० जसमादे श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं उपकेश गच्छे श्री ककुदाचार्याभिधान प्र० देवगुप्त सूरिभि ॥

निंबज - सिरोही ।

जैन मंदिर ।

पंचतीर्थी पर ।

[2093]

सं० १५०९ वर्षे वैशाख सुदि ३ गुरौ श्री भावहेड़ा गच्छे श्री कालिकाचार्य संताने उपकेश ज्ञातीय खांटेड़ गोत्रे साह लाला भा० . . . पु० सामंत भा० हांसल दे पु० गोपाल

उदा गोपाल भा० नतु दे पु० नाल्हा सीवा उदा भा० अमा दे पु० रतना समरथ कुटुंबेन सह स्वश्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं श्री विजयसिंह सूरि पट्टे प्रतिष्ठितं वीर सूरिभिः ॥

छुड़वाल-सिरोही।

जैन मंदिर।

पाषाण की प्रतिमा पर।

[2094]

सं० १६४४ वर्षे फागण वदि १३ बुधे हालीवाडा वास्तव्य श्री संघेन कारितं श्री शांतिनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं तपागच्छाधिराज श्री हीरविजय सूरिभिः ॥

卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐

डीसा।

श्री आदीश्वरजी का मंदिर।

पंचतीर्थियों पर।

[2095]

सं० १५२४ वर्षे का० व० २ शुक्रे श्री भावडार गच्छे श्रीमाल ज्ञातीय म० धिरखल भा० ब्रह्मादेवि पु० मना भा० माल्हण दे पु० सिंघा मेघा मेहा साणा जुगा सहितेन जीवितस्वामी श्री पद्मप्रभु प्रमुख चतुर्विंशति पट्ट का० प्र० कालिकाचार्य संताने श्री भावदेव सूरिभिः श्री वनरिया ग्रामे ॥

[2096]

सं० १५६३ वर्षे माघ सुदि १५ गुरौ उपकेश ज्ञातीय गा० कनुज सो० करणा भा० अरघु पु० विसाल पितृव्य नयणा निमित्त श्री विमलनाथ बिंबं कारितं प्र० जिन्नमाल गच्छे श्री कम्मतिलक सूरिभिः ॥

[2097]

सं० १६६३ वर्षे वैशाख वदि ११ दिने श्री श्रीमाल ज्ञातीय व्य० टाहापान भा० चोबु निमित्तं सुत लिंबा राणा भाजण सहितेन आत्मश्रेयोर्थं श्री श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं ब्रह्माण गच्छे भ० भाजीग सूरिभिः स्थिराद्र वास्तव्यः ॥

श्री महावीर स्वामी का मंदिर ।

पंचतीर्थियों पर ।

[2098]

सं० १३२० वर्षे फागण सुदि २ शुक्रे ब्रह्माण गच्छे श्री जज्जक सूरि गुरौ श्रीमाल ज्ञातीय पिण्नालक वास्तव्य आभा सुत देवधर श्रेयोर्थं आसधर सुत जाल्हणेन पितृव्य श्रेयोर्थं श्री महावीर बिंबं कारितं प्र० श्री वयरसेणोपाध्याय गणि ॥

[2099]

सं० १३४४ वर्षे जे० व० ४ शुक्रे ओसवाल ज्ञा० श्रे० वीरमस्य सुत बीजडेन निजमातु वयज देवि श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्र० मलधारि श्री रत्नदेव सूरिभिः ॥

[2100]

सं० १४७६ वर्षे चैत्र वदि १ शनौ उपकेश ज्ञा० वडालिया गोत्रे सा० जेता भा० जइती-श्री सुत भीमा भा० सनपतआत्म श्रेयोर्थं श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रति० मलधारि गच्छे श्री विद्यासागर सूरिभिः ॥

[2101]

सं० १४०३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ९ भौमे श्री श्रीमाल ज्ञातीय सिंघा भा० मेघा दे पितृमातृ श्रेयसे सुत लषमणेन श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्र० ब्रह्माण गच्छे श्री वीर सूरिभिः ॥

[2102]

सं० १४७४ वर्षे वैशाख सुदि १० रवौ श्री कोरंटकीय गच्छे श्री नन्नाचार्य संताने उपकेश ज्ञातीय मं० मलयसिंह भा० मावण देवि स० म० मदनेन पु० लुणा सहितेन भा० हेमा श्रेयोर्थं श्री संभवनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं कक्क सूरिभिः ॥

[2103]

सं० १५२० वर्षे वैशाष वदि ५ शुक्रे श्री श्रीमाल ज्ञातीय सदा भा० सहजू पु० धीराकेन भा० काली सहितेन पितृमातृ श्रेयोर्थं श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री नागेंद्र गच्छे श्री गुणसमुद्र सूरिभिः प्र० सर्व सूरिभिः ॥

[2104]

सं० १५२२ वर्षे कार्तिक वदि ५ गुरौ पाल्हाउत गोत्रे सा० शिवाराज भा० कर्मणि तत्पुत्र मेथा भार्या युतेन पु० सालिग मातृ श्रेयोर्थं श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं मलधारि गच्छे श्री गुणसुंदर सूरिभिः ॥

[2105]

सं० १५३७ वर्षे वैशाख सुद ३ उपकेश गच्छे श्री ककुदाचार्य संताने उपकेश ज्ञातीय बाफणा गोत्रे सा० . . . . वरु भा० जसमा दे पु० सोहड़ा दे पु० वस्ता आत्मश्रेयोर्थं श्री अजितनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री देवगुप्त सूरिभिः ॥

[2106]

सं० १५४७ वर्षे वैशाख सुदि ५ गुरौ वायडा ज्ञातीय व० साह नारिंग सुत व० राजाकेन भा० रई पु० रीड़ा मेघा रोड़ा भा० इंदु प्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्री वासुपूज्यादि पंचतीर्थी आगम गच्छे श्री अमररत्न सूरिभिः गुरूपदेशेन कारितं प्र० विधिना पत्तन वास्तव्यः ॥
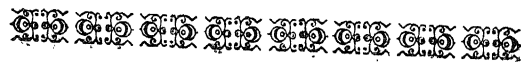
गुडली-मेवाड़।

जैन मंदिर।

पंचतीर्थियों पर।

[2107]

सं० १५४२ वर्षे वैशाख वदि ४ उपकेश ज्ञातीय सा० करमा भा० साहु पुत्र षीदा भा० लखमा दे पु० गोदा उजल भा० वडी पु० जेसा मेघा केमा हरमा सहितेन जिदरू निमित्तं श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं वृहद्गच्छे भट्टारक श्री धनप्रभ सूरिभिः॥

[2108]

सं० १५५९ वर्षे वैशाख सुदि १५ शनौ उपकेश ज्ञातीय मानींग भा० नंदि पु० देपाकेन पितृयुतेन श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं ब्रह्माण गच्छे बुमतिलक सूरि पट्टे श्री उदयाणंद सूरिभिः॥

खारची-मारवाड़।

जैन मंदिर।

पंचतीर्थी पर।

[2109]

सं० १५३७ वर्षे ज्येष्ठ वदि ७ . . . . . . धर्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं षंडेर गच्छे श्री शांति सूरिभिः हाविल ग्रामे॥

खंडप-मारवाड ।

धातु की प्रतिमा पर ।

[2110]

सं० १५२७ वर्षे वैशाखु सुदि ३ ओसवाल ज्ञातीय साह हंसा पु० उधरण देदा वेला भा० वाहनु मोदरेचा गोत्रे साह लाधु भा० नामल दे पुत्रिका नानुं आत्मपुण्यार्थे श्री चंद्र प्रभु बिंबं कारितं श्री नाणकीय गछे धनेश्वर सूरिभिः ॥

[2111]

सं० १५२८ वर्षे . . . उपकेश ज्ञातीय ठाजेड़ गोत्रे पना भा० सुहवि दे पु० नरसिंग त्रिभणा सहितेन श्री मुनिसुव्रत बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं पल्लीवाल गछे श्री यशोदेव सूरि पट्टे श्रीश्री नन्न सूरिभिः ॥

मांकलेश्वर-मारवाड ।

जैन मंदिर ।

धातु की प्रतिमा पर ।

[1187]

सं० १५३० वर्षे फागुण सुदी १० श्री ज्ञानकीय गछे उ० उसभ गोत्रे सं० भांका भा० पदमिनी पु० साहा पीथा स्था० प्रतिष्ठितं श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्र० सिद्धसेन सूरि पट्टे श्री धनेश्वर सूरिभिः ॥

॥ श्री जैन लेख संग्रह द्वितीय खण्ड समाप्तः ॥

आचार्यों के गच्छ और संवत् की सूची ।
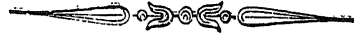
संवत्	नाम	लेखांक
	अंचल गच्छ ।	
१४६९	मेरुतुंग सूरि	१३५९
१४८३	जयकीर्ति सूरि	१०७१
१४९०	,, ,, ...	१२४२
१४९४	,, ,, ...	२०५१
१५०५	जयकेसरी सूरि	१५६६
१५०९	,, ,, ...	१४९३, १९११
१५१३	,, ,, ...	१४७३
१५१५	,, ,, ...	१५८७
१५२३	,, ,, ...	१०१६
१५२४	,, ,, ...	११२९, १२७३, १७७६
१५२७	,, ,, ...	१३१६, १६०९, २०११
१५२८	,, ,, ...	१६१९
१५२९	,, ,, ...	१९१३
१५३०	,, ,,	१२८४
१५४५	सिद्धान्तसागर सूरि ...	११६६
१५५४	,, ,,	१४१२, १५७३
१५५५	,, ,, ...	१७७२
१५७९	गुणनिधान सूरि	१४३९
१६२१	धर्ममूर्ति सूरि	१४५२
१६६५	मुनिशील गणि	१८८९
१६७१	कल्याणसागर सूरि	१४५६, १५२०, १५७८—१५८४
१६७६	,, ,, ...	१७८१
१६७८	,, ,, ...	१७८१
१७०२	,, ,, ...	१७४३
१६९७	उपाध्याय विनयसागर ...	१७८१
१६९७	सोभाग्यसागर ...	१७८१
१७९८	पं० लक्ष्मी रतन ...	२००८
१८०५	,, ,, ...	२००९
१७९८	पं० हेमराज	२००८
१८०५	,, ,, ...	२००९
१९२१	रत्नशेखर सूरि ...	१४८६
	आगम गच्छ ।	
१४८८	जयानंद सूरि ...	१७९८
१५०६	हेमरत्न सूरि ...	१००४
१५१७	,, ,, ...	१५०५
१५१९	,, ,, ...	१७२१
१५१७	आनन्दप्रभ सूरि ...	१७६९
१५२५	देवरत्न सूरि ...	१८००
१५३१	,, ,, ...	१७५९
१५३२	अमररत्न सूरि ...	१३२३
१५३६	,, ,, ...	२०९१

संवत्	नाम	लेखांक
१५४७	अमररत्न सूरि	२१०६
१५३६	सिंघदत्त सूरि	१७३७
१५६९	सोमरत्न सूरि	१२१६
१५७१	,, ,, ...	१५७७

उपकेश गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१३(२)५६	कक्क सूरि	१९२३
१३२५	,, ,, ...	१०३८
१३८७	,, ,, ...	१३५८
१३८५	,, ,, ...	१०४३
१४५७	रामदेव सूरि	१४९०
१४६८	देवगुप्त सूरि	१०६२
१४७०	,, ,, ...	२०९२
१४८४	,, , ...	१०७२
१४८६	,, ,, (मल्लधारीयक) ...	१९८२
१४८२	सिद्ध सूरि	१०७०
१४९१	,, ,, ...	१५४६
१४९३	सिद्ध सूरि	११८२
१४९५	सर्व सूरि	१६४१
१५०३	ककुदाचार्य (कक्क सूरि) ...	१९३४
१५०५	कक्क सूरि	११४८, १४७९
१५०६	,, ,, ...	११४९
१५०७	,, ,, ...	१०८३, १२५०
१५०८	,, ,, ...	१३३२
१५०९	,, ,, ...	१२५६
१५१२	,, ,,	११५३, १२६१, १२६३, १३७३, १५०४
१५१७	,, ,, ...	१८८३
१५२०	,, ,, ...	११२८, १२७१
१५२१	,, ,, ...	१३८९
१५२४	,, ,, ...	१२७४, १४४३
१५२८	देवगुप्त सूरि	१५७१
१५३४	,, ,, ...	२०१२
१५३५	,, ,, ...	१२९२
१५३७	,, ,, ...	२१०५
१५४४	,, ,, ...	१६०३
१५४६	,, ,, ...	१२९३
१५५८	,, ,, ...	१६३४
१५५९	,, ,, ...	११०१, ११८९
१५६६	सिद्ध सूरि	१३००
१५६७	,, ,, ...	१६५९
१५७१	,, ,, ...	१५७४
१५७२	,, ,, ...	१५७६
१५७४	,, ,, ...	१४५०
१५८८	,, ,, ...	१४६४
१५९२	,, ,, ...	१३०५
१५९६	,, ,, ...	१३४७
१५२७(?)	सिद्ध सूरि	१३२२
१७८१	कर्पूरप्रियगणि ...	१०२४
१९४०	सिद्धसूरि (कमलागच्छ) ...	१४७८

कठोलीवाल गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१४७१	संघतिलक सूरि	१९३०
१४९३	सर्वाणंद सूरि (पूर्णिमापक्ष) ...	१९६६
१४९३	लषमसीह (,, ,,) ...	१९६६

संवत्	नाम	लेखांक
१५१८	गुणसागर सूरि (पूर्णिमापक्ष) ...	२०८६
१५३०	विद्यासागर सूरि	१३६१
१५३४	विजयप्रभ सूरि	१३८२

कोरंट गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१२६३	कक्क सूरि	२०८०
१३१७	सर्वदेव सूरि	१९५०
१३४०	... सूरि	१७९२
१४०९	कक्क सूरि	२०१४
१४३७	सांवदेव सूरि	१०५७
१४८४	कक्क सूरि	२१०२
१४९१	सांवदेव सूरि	२०८२
१४९६	,, ,, ...	१३३०
१५०६	,, ,, ...	११८३
१५०८	,, ,, ...	१७३३
१५०९	,, ,, ...	२०१२
१५१७	श्री पाद...	१४०४
१५१८	सांवदेव सूरि	१७२६
१५३२	,, ,, ...	१३८०
१५५३	नन्न सूरि	१६९८
१५६७	नन्न सूरि	१६४२

खरतर गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
......	वर्द्धमान सूरि	१११०
१३८१	जिन कुशल सूरि	१९८८
१३८७	,, ,, ...	१३५०
१३९९	,, ,, ...	१५४५
१३९१	जिनपद्म सूरि	१९२६
१४८२	जिनभद्र सूरि	१५०३
१४९३	,, ,, ...	१२४४
१४९९	,, ,, ...	१६००
१५०३	,, ,, ...	१३२५
१५०७	,, ,, ...	११५१, १४००
१५०९	,, ,, ...	१२५५, १३३३
१५११	,, ,, ...	१५५०
१५१७	,, ,, ...	१०१०
१४९१	भव्यराज गणि	२००४
१५०९	जिनतिलक सूरि	१२५७
१५११	,, ,, ...	१८६०-६१
१५२८	,, ,, ...	११५८
१५१५	जिनचंद्र सूरि	२०२२
१५१६	,, ,, ...	१३३५
१५१९	,, ,, ...	१२७०
१५२६	,, ,, ...	१३७९
१५२९	,, ,, ...	१०९५
१५३१	,, ,, ...	१२०९
१५३२	,, ,, ...	१९४७
१५३३	,, ,, ...	१८८१
१५३४	,, ,, ...	१२८७, १२८९, १३१७
१५३६	,, ,, ...	१०५६, १३४१
१५१७	विवेकरत्न सूरि	१७५५
१५२५	कीर्तिरत्न सूरि	१८८५
१५२८	जिनप्रभ सूरि	११५८
१५५३	जिनसमुद्र सूरि	१६९२

संवत्	नाम	लेखाक
१५५५	जिनसमुद्र सूरि	१२२४
१५५६	जिनहंस सूरि	१२६८, १४६३
१५६२	" "	२०४६
१६०६	जिनमाणिक्य सूरि	१३५१
१६२८	जिनभद्र सूरि	१४४८, १८४५
१६५३	जिनचंद्र सूरि	११६६
१६२७(?)	जिनसिंह सूरि	१३८८
१६६६	" "	१७१५
"	गुणरत्न गणि	"
"	रत्नविशाल गणि	"
१६६८	जिनचंद्र सूरि	१४५७
१६६८	" "	१५८५
१६६८	लब्धिवर्द्धन	१४५१
१६७५	जिनराज सूरि	१६७०
१६८६	" "	१६४७
१६६८	" "	१६६७
१६८६	परानयन (?)	१६४७
१६६८	समयराज उपध्याय	१६६७
"	अभयसुन्दर गणि (वाचनाचार्य)	"
"	कमललाभ उपाध्याय	"
"	लब्धकीर्त्ति गणि	"
"	पं० राजहंस गणि	"
"	पं० देवविजय गणि	"
१६६०	जिनकीर्ति सूरि	११०७
"	जिनसिंह सूरि	"
१७२७	म० राम विनय गणि	१००६
१८४६	जिनचंद्र सूरि	१८०७

संवत्	नाम	लेखांक
१८५२	लालचंद्र गणि	१२०५, १२१६
१८५४	जिनदेव सूरि	१८२८
१८६३	जिनहर्ष सूरि	१५२५
१८६४	" "	१५२६–२८
१८७१	" "	१६३८
१८७३	" "	१०१६
१८७५	" "	१८८१·४२
१८७७	" "	१०२७, १६४७-५६, १६६२,–६६, १८३६–३८
१८८५	" "	१८३६
१८८६	" "	१८२१, १८२४
१६३८	" "	१८५०
१८७७	उ० रत्नसुन्दर गणि	१०२७
१८७७	हारधर्म (पाठक)	१६४७–५६, १६६२--६६
१८६३	जिन महेन्द्र सूरि	१६७१–७२
१८६६	" "	१६४३
१८६७	" "	१८७०
१६०६	" "	१६४५
१६१०	" "	१५२६--३२, १६४६, १६६७–६८, १६७३, १८३०--३२
१६१३	" "	१६८२
१६१४	" "	१६२२
१८६३	जिन सौभाग्य सूरि	१०१७, १०२०--२१
१६०५	" "	१३५२
१८६३	आनन्द वल्लभ गणि	१०१७
१६३६	" "	१०२०--२१
१८६७	कुशलचंद्र गणि	१८७०
१६१८	जिन मुक्ति सूरि	१८६६–६८, १८७२

संवत्	नाम	लेखांक
१६२०	जिनहंस सूरि	१६६६, १७०१
१६२१	„ „	२०६६–६७
१६२५	„ „	१८१०
१६३२	„ „	१०१८
१६३४	„ „	१८११
१६२०	सदालाभ गणि	१७०१
१६३२	कनकनिधान मुनि	१०१८
१६३६	विवेककीर्ति गणि	१६५७
१६४२	हितवल्लभ मुनि	१८०८
१६५०	जिनचंद्र सूरि	२०७७
१६५१	„ „	२०७८
१६५६	„ „	१६३६–४०
१६५२	उ० नेमिचंद्र	२०६४
१६७०	जिन फत्तेन्द्र सूरि	२०६६
१६७२	जिन सिद्ध सूरि	२०७०
१६७६	हीराचंद यति	१००८

खरतर गच्छ।

जिनवर्द्धन सूरि शाखा।

संवत्	नाम	लेखांक
१४६६	जिनवर्द्धन सूरि	१६६६, १६६७
१४७३	„ „	१२३८, १६६५
१४७५	„ „	१६८७
१४६६	जिनचंद्र सूरि	११३६, १६६३
१४७६	„ „	१२०६
१४८६	„ „	१६६४–६५, १६८१
१४६१	जिनसागर सूरि	१०७५, १३६६, १६१८, १६३२, १६७७, १६८४, १६६४
१४६४	„ „	१६५८
१४६५	„ „	१२४५, १६७४, १६७५
१४६६	„ „	१६५७
१४६७	„ „	२०७२
१५०१	„ „	१२४८
१५०३	„ „	१८६५
१५०७	„ „	११५१
१५०६	„ „	१३७२, १७२५
१५१०	„ „	१२३२
१५०४	शुभशील गणि	१८४६, १८५४–५६
१५२३	जिनहर्ष सूरि	११५७
१५२८	„ „	१४३८
१५६७	जिनचंद्र सूरि	१४१५
१५७२	„ „	१८६६
१६६८	लब्धिवर्द्धन	१४५१

रंगविजय शाखा।

संवत्	नाम	लेखांक
१६२३ (?)	जिनरंग सूरि	१००५
१८५६	जिनचंद्र सूरि	११७६, १२२७
१८७४	„ „	१८४८
१८७७	„ „	१००७, १२२६, १५६५
१८७६	„ „	१६७६–८०
१८८८	„ „	१५८६, १६२६, १६८३, १८२२, १८३४
१६०२	जिन नंदिवर्द्धन सूरि	१२२८
१६१७	„ „	१६३०
१६१३	जिन जयशेखर सूरि	१५३३, १६३७
१६२१	जिन कल्याण सूरि	१४२५

चंद्र गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१०७२	सोलगल सूरि	३८६
१२३५	पूर्णभद्र सूरि	१६८८
१२५८	देवभद्र सूरि	१०३४
१२७२	हरिप्रभ सूरि	१७७७
१३००	यशोभद्र सूरि	१६७८
१३१५	,, ,,	१७७६

चाणांचाल गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१५२६	वज्रेश्वर सूरि	११५६

चित्रवाल (चैत्र) गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१३०३	जिनदेव सूरि	१६४६
१३२१	आमदेव सूरि	१६२१
१३३४	पं० सोमचंद्र	२०६०
१३४०	अजितदेव सूरि	११३४
१३५२	गुणचंद्र सूरि	१०४१
१४६६	मुनितिलक सूरि	१६०१
१५०१	,, ,,	११४५
१४६६	गुणाकर सूरि	१६०१
१५१३	,, ,,	१२६४
१५१५	रामदेव सूरि	१०६०
१५२७	चारुचंद्र सूरि	१०६४
१५३१	नारचंद्र सूरि	१०६६
१५३४	लक्ष्मीसागर सूरि	११६३
१५३६	,, ,,	१४१०

छहितेरा गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१६१२	धर्म्ममूर्त्ति सूरि	११६४
,,	भावसागर सूरि	,,

जापडाण गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१५३४	कमलचंद्र सूरि	१२८८

जीरापल्लीय गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१४०६	रामचंद्र सूरि	१०४१
१५२७	उदयचंद्र सूरि	१५०६

तप गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१४०१	विजयहर्ष सूरि	२०५६
१४२२	रत्नशेखर सूरि	१६२८
१४३६(?)	देवचंद्र सूरि	१७५२
१४५३	हेमहंस सूरि	१४८६
१४६६	,, ,,	११६७
१४७५	,, ,,	१२४०
१४६०	,, ,,	१३२६
१४६६	,, ,,	१४८१
१४६८	,, ,,	१३६७
१५०१	,, ,,	१४८२
१५०४	,, ,,	११४७
१५१०	,, ,,	११५२
१५११	,, ,,	१४०१
१५१३	,, ,,	१०८६, १२६६, १३७४
१४५८	देवसुंदर सूरि	२०४८

संवत्	नाम	लेखांक	संवत्	नाम	लेखांक
१४८२	सोमसुंदर सूरि	१४२१	१५१३	,, ,,	११८४, १४०३
१४८४	,, ,,	१९८०	१५१६	,, ,,	१८८०, १९१२
१४८५	,, ,,	१९७२, २०१७	१५१७	,, ,,	१०३०, ११८५
१४८७	,, ,,	२०७५	१५३८	,, ,,	१९४१
१४८८	,, ,,	१९८३	१५०३	जिनरत्न सूरि	१७५३
१४८९	,, ,,	१०२९, १०६७, १७३१	१५३६	,, ,,	१७७०
१४९१	,, ,,	१०७४, ११८१	१५४१	,, ,,	१९१४
१४९२	,, ,,	१०७६	१५०३	जयचंद्र सूरि	१९६९, १९७३
१४९४	,, ,,	१९६८, १९७१	१५०५	,, ,,	१३७०
१४८८	मुनिसुंदर सूरि	१९८३	१५०८	उदयनंदि सूरि	१९३५
१५००	,, ,,	१४६१	१५१०	रत्नसागर सूरि	१२५८
१५०१	,, ,,	११२६	१५१७	कमलवज्र सूरि	१५८८
१४८९	रत्नसिंह सूरि	११४०	,,	लक्ष्मीसागर सूरि	१०९१
१५१०	,, ,,	१०८६	१५१८	,, ,,	१७५६
१५११	,, ,,	१६९६	१५१९	,, ,,	१२६८, १८८४, २०७४
१५१२	,, ,,	२०४४	१५२०	,, ,,	२०२४
१५१३	,, ,,	१७००	१५२१	,, ,,	१२७२, १३१४, २०७६
१४९६	विजयतिलक सूरि	१६९१	१५२२	,, ,,	१११७
१५०२	रत्नशेखर सूरि	११४६	१५२३	,, ,,	१०९२, १४३७, १६३३, १७५१
१५०४	,, ,,	१२४९	१५२४	,, ,,	१२०८, १५६०, १५६९
१५०६	,, ,,	१११२, १९७०	१५२५	,, ,,	१४८५, १५७०, १९३८
१५०७	,, ,,	१६९५	१५२७	,, ,,	१२७९
१५०८	,, ,,	१०८४	१५२९	,, ,,	१५७२, १९०२, २०२६
१५०९	,, ,,	१०८५	१५३०	,, ,,	११६०-६१, १२८२--८३
१५१०	,, ,,	१५३९, १५४९	१५३४	,, ,,	११६४, १२९१, १३१९
१५११	,, ,,	१४०२	१५३५	,, ,,	१५८९
१५१२	,, ,,	१२६०, १२६२, १७५४	१५३६	,, ,,	१४६५

संवत्	नाम	लेखांक
१५४१	लक्ष्मीसागर सूरि	२०५४
१५४२	,, ,,	११००
१५५७	,, ,,	१७७३
१५१८	हेमविमल सूरि	१५४४
१५५२	,, ,,	१३४४, १६०४
१५५४	,, ,,	१४७७
१५५७	,, ,,	१०२६
१५६०	,, ,,	१३२०
१५६१	,, ,,	१३४५
१५६५	,, ,,	१९४६
१५६६	,, ,,	११०२, ११७०
१५८०	,, ,,	१७३०, १७३५
१५१८	सुरसुंदर सूरि	१४०५
१५२१	उदयवल्लभ सूरि	१४०७
१५२२	सोमदेव सूरि	१११७
१५२५	सोमजय सूरि	२०२५
,,	सुधानंदन सूरि	,,
,,	म० जिनसोम गणि	,,
,,	ज्ञानसागर सूरि	१०९३
१५२८	,, ,,	१५९०, २०१३
१५२९	संवेगसुंदर	१७६६
१५३३	उदयसागर सूरि	१४४४
१५३६	,, ,,	१४४५
१५५२	,, ,,	१७६१
१५५३	,, ,,	१८७९
१५३४	पुण्यवर्द्धन सूरि	१२९०
१५३७	हेमरत्न सूरि	१३५३

संवत्	नाम	लेखांक
१५४८	भ० वाकजी	२०३९
१५५२	जिनसुंदर सूरि	१२९४
१५५५	धर्मरत्न सूरि	१७७१
१५६३	इंद्रनंदि सूरि	१६१०
१५७९	,, ,,	१३५४
१५६६	चरणसुंदर सूरि	११०३, २०२७-२८
१५६६	नन्दकल्याण सूरि	११०३
१५६६	जयकल्याण सूरि	२०२७-२८
१५७५	,, ,,	१६४३
१५७९	सौभाग्यसागर सूरि	१३८७
१५९५	आणंद विमल सूरि	१७३८
१५९६	विजयदान सूरि	११०४, १५०७
१६०१	,, ,,	११७६
१६१६	,, ,,	१५०८, १५०९, १५४०
१६१७	,, ,,	१५५३, १६६०
१६१९	,, ,,	१९०७
१६२२	,, ,,	१९०८
१५९७	सुमतिसाधु सूरि	१४७२
१६१५	तेजरत्न सूरि	१३०७
१६१७	हीरविजय सूरि	१५५३
१६२४	,, ,,	११९५, १२२५
१६२६	,, ,,	१७४०
१६२७	,, ,,	१३४८
१६२८	,, ,,	१२१४, १८९१
१६३३	,, ,,	१७८२
१६३७	,, ,,	१७६२, १९४२
१६३८	,, ,,	१२१५

संवत्	नाम	लेखाक
१६४१	हीरविजय सूरि	१४५९
१६४२	,, ,,	१००२
१६४४	,, ,,	१६६१, १७१२, २०१४
१६५१	,, ,,	१७६३
१६८५	,, ,,	१९४३
	,, ,,	१७४८
	,, ,,	१५००
१६३३	रविसागर गणि	१७८२
,,	शत्रशल्ल	,,
,,	विजयसेन सूरि	,,
१६४३	,, ,,	१३०८
१६५२	,, ,,	१७९६
१६५६	,, ,,	१७६४
१६६१	,, ,,	१७९४
१६६७	,, ,,	११०५
१६७०	,, ,,	१६२८, १७४१
१६५१	विजयदेव सूरि	१७८२
१६६७	,, ,,	२०५७
१६७४	,, ,,	१४६०
१६७७	,, ,,	१७१७
१६८५	,, ,,	१३९१, १९४३
१६८६	,, ,,	११०६
१६८७	,, ,,	११७३
१६९४	,, ,,	११०८
१६९७	,, ,,	२०५९
१६९९	,, ,,	१७९०
१७०१	,, ,,	२०६०
१७०५	,, ,,	१६१३
१७०७	,, ,,	२०४३
१[illegible]७२	सोमविजय गणि	१७९६
१६६७	,, ,,	११०५
१६५२	विमलहर्ष गणि	१७९६
,,	कल्याणविजय गणि	,,
,,	पद्मानंद गणि	,,
१६७७	विवेक हर्ष गणि	२०५०
,,	कल्याण कुशल	१७१७
,,	दया कुशल	,,
,,	भक्ति कुशल	,,
१६८२	म० मुनि सागर गणि	१६३५
१६८६	विजय सिंह सूरि	११०६
१६९३	,, ,,	१०२८
१६९९	,, ,,	१३१०-११, १७९०
१७०१	,, ,,	१५७५
१७०३	,, ,,	११९७
१६९३	मतिचंद्र गणि	१०२८
१६९४	उ० लावण्यविजय गणि	११०८
१६९९	,, ,,	१७९०
१७००	पं० कीर्त्तिरत्न गणि	२०४२
१७०६	विजयानंद सूरि	१०१४
,,	विजयराज सूरि	,,
१७१०	,, ,,	१६१४, १९१०
,,	विजयसेन सूरि	१९१०
१७१२	,, ,,	१७४४
१७१३	विजयप्रभ सूरि	१७९७

संवत्	नाम			लेखांक
१७४४	विजयप्रभ सूरि	...	...	११७७
,,	मुक्तिचंद्र गणि	...	...	,,
१७६४	ज्ञानविमल सूरि	...	...	१७६६
१८०५	पं० कुशलविजय गणि		...	१४६७
१८०६	,, ,, ,,	...	...	१४६८
१८१८	,, ,, ,,	...	...	१४५५
१८०८	विजयधर्म सूरि	...	...	१११६
१८४८	विजयजिनेंद्र सूरि	...	...	१२०४
१८७३	,, ,,	...	...	१७२४
१८७६	,, ,,	...	...	१७८७
१८८०	,, ,,	...	...	१७३४
१८४८	पं० पुण्यविजय गणि		...	१२०४
१९०५	शांतिसागर सूरि	...	...	१८२६
१९१२	आनन्दसागर सूरि	...	...	१८६८
१९३१	धरणेन्द्रविजय सूरि	...	...	१४६६
१९३८	वृद्धविजय गणि	...		१८४८-५३
१९४३	विजयराज सूरि	...	...	१८२७
१९४९	,, ,,	...	...	१८०६
१९५४	पं० पवा विजै (?)	...	...	१७५०
,,	विजयसिंह सूरि	...	...	१८४०
१९६४	उ० वीर विजय	...		१४६६, १५०१
	कृष्णर्षि गच्छ—(तपगच्छ शाखा)।			
१५२५	कमलचंद्र सूरि	...	...	१२७५
	देवात्रिदित गच्छ।			
१२०१	कनुदेव	...	...	११६८
	धर्म्मघोष गच्छ।			
१३३६	गुणचंद्र सूरि	...	...	१६५२
१४३८	पद्मशेखर सूरि	...	...	१२३५
१४७४	,, ,,	...	...	१२३६
१४८५	,, ,,	...	...	१४६१
१४५५	सर्वाणंद सूरि	...	...	१०६०
१४६१	मलयचंद्र सूरि	...	...	१८७६
१४६५	,, ,,	...	...	१२२०
१४७३	पद्मसिंह सूरि	...	...	१०६४
१४८६	महीतिलक सूरि	...	...	११८०
१५०१	,, ,,	...	...	११४४
१५०३	,, ,,	...	...	१४१२
१५११	,, ,,	...	...	१५३८
१४६५	विजयचंद्र सूरि	...	...	१०७७
१४६८	,, ,,	...	...	१२४७
१५०१	,, ,,	...	...	१०७६
१५०३	,, ,,	...	...	१५४७
१५०४	,, ,,	...	...	१३६६
१५०१	विजयप्रभ सूरि	...	...	११४४
१५०५	महेन्द्र सूरि	...	...	२०६८
१५०७	— —	...	...	१३६०
१५०७	पद्माणंद सूरि	...	...	१२५१
१५२६	,, ,,	...	...	१३२६
१५३५	,, ,,	...	...	१०६८
१५१३	साधुरत्न सूरि	...	...	१०८८
१५२०	,, ,,	...	...	१३७७
१५१३	पद्माणक सूरि	...	...	१४७४
१५२२	साधु — —	...	...	१०१३
१५३४	लक्ष्मीसागर सूरि	...	...	१३१८
१५६३	,, ,,	...	...	१२६६
१५३७	मानदेव सूरि	...	...	२०५३

संवत्	नाम	लेखांक
१५६३	श्रुतसागर सूरि	१३८४
१५६६	नंदिवर्द्धन सूरि	११६१
१५७०	” ”	१६२०, १६६३
१५७६	” ”	१३०३
१५७७	” ”	१३२१

नमदाल गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१५३६	देवगुप्त सूरि	१३४०

नागपुरीय गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
--	हेमरत्न सूरि	१६०६

नागेन्द्र गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
११६१	विजयतुंग सूरि	१७६७
१२६२	वर्द्धमान सूरि	१६२०
१२८१	उदयप्रभ सूरि	१७६३
१४०५	रतनागर सूरि	१०४८
१४२२	रत्नप्रभ सूरि	१०५३
१४३७	” ”	११३६
१४४६	उदयदेव सूरि	११२४
१४५०	देवगुप्त सूरि	१०५८
१४७४	सिंहदत्त सूरि	१०६५
१४८४	पद्मानंद सूरि	१०७३
१४६६	गुणसमुद्र सूरि	१३६८
१५२०	” ”	२१०३
१५३३	गुणदेव सूरि	१८६४
१५५८	हेमरत्न सूरि	१६०५
१५७०	हेमसिंघ सूरि	१२१३
१५७२	— —	१३०१
१७१५	रत्नाकर सूरि	१३१२

नाणकीय (ज्ञानकीय, नाणावाल) गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१२४३	— —	२०७६
१३४१	महेन्द्र सूरि	२०-१
१३४६	” ”	१७१६
१४०५	शांति सूरि	१४८७
१४६३	— —	११११
१५०१	शांति सूरि	११४३
१५६४	” ”	१५५६
१५६६	” ”	१३२८
१५७६	” ”	२०८७
१५१६	धनेश्वर सूरि	१५५२
१५२७	” ”	२११०
१५३०	” ”	(पृ० २८३) ११८७
१५३४	” ”	२०८६
१५३६	” ”	१३३६
१५४२	” ”	१२३१
१५५७	महेन्द्र सूरि	१०३१

निछति गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१४६६	श्री सूरि	१०३८

निवृत्त गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१५०६(?)	महणं गणि	१००३

पंचासरीय गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
११२५	चेल्लक	१८७२

पल्लीवाल गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१४५८	शांति सूरि	१२३७

संवत्	नाम	लेखांक
१४७६	यशोदेव सूरि	१८८२
१४८२	,, ,, ...	१९३१
१५१३	,, ,, ...	१८८७
१५२८	नन्न सूरि	२१११
१५३९	उद्योतन सूरि ...	१४६२ १५५५

पार्श्वचन्द्र गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१५७७	पार्श्वचन्द्र सूरि	१५६१

पिप्पल गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१४९१	वीरप्रभ सूरि	१९७५
१५१९	शालिभद्र सूरि	११५५
१५१७	धर्म्मसागर सूरि	२०७२
१५३०	चंद्रप्रभ सूरि	१२२२
१५७०	तिलकप्रभ सूरि	१७२९
,,	गुणप्रभ सूरि	,,

पूर्णिमा(पक्ष) गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१३८१	सोमतिलक सूरि	१९२४
,,	श्रीसूरि	,,
१४८५	सर्वानन्द सूरि	१२४१
१४८९	विद्याशेखर सूरि	१३९७
१५०१	गुणसमुद्र सूरि	१५९५
१५११	राजतिलक सूरि	१४८०
१५१७	,, ,, ...	१९३७
१५१९	,, ,, ...	१७५७
१५१७	पुण्यरत्न सूरि	२०८५
१५१९	,, ,, ...	१५९७
१५३२	,, ,, ...	११९८
१५२१	गुणतिलक सूरि	१७५८
१५३२	,, ,, ...	१७२८
१५२३	साधुसुंदर सूरि	११५६
१५२९	,, ,, ...	१२८१
१५४७	जयरत्न सूरि	१११९
१५४८	सौभाग्यरत्न सूरि	१७६०
१५५९	मनसिंह सूरि	१२१२

पूर्णिमा गच्छ ।

भीमपल्लीय शाखा ।

संवत्	नाम	लेखांक
१४८२	जयचंद सूरि	१५६४
१५१५	,, ,, ...	१३७६
१५७६	मुनिचंद्र सूरि	१३०२

प्राया गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१३७४	शीलभद्र सूरि	१०४२

बापदीय गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१२४२	जीवदेव सूरि	१६८९

बोकड़िया गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१४५७	धर्म्मतिलक सूरि	१०९१
१४९६	,, ,, ...	१२४६
१५४९	मणिचंद्र सूरि	११९७
१५५९	,, ,, ...	१४१४
१५९२	,, ,, ...	११९९
१५८७	मलयहंस सूरि	१९१५

ब्रह्माण गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१३२०	वयरसेण उपाध्याय	२०९८
,,	जज्जक सूरि	,,

भावडार(भावड़,भावहेड़ा) गच्छ ।

भिन्नमाल गच्छ ।

मध्यम शाखा ।

मड्डाहड़(मड्डारुडिय,मडूहड़) गच्छ ।

मधुकर गच्छ ।

मल्लधारि(मल्लवादि) गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक

सिद्धान्तिक गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१४०८	माणचंद्र सूरि	१४२७

हर्षपुरीय गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१५५५	गुणसुंदर सूरि	१२६५

हुंबड़ गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक
१४५३	सिंहदत्त सूरि	१०५९

जिनमें गच्छों के नाम नहीं हैं ।

संवत्	नाम	लेखांक
९३७	उद्योतन सूरि	१७०९
,,	वच्छवल देव	,,
११९६	आमदेव सूरि	१०३३
१२५३	जिनचंद्र सूरि	१७८५
१२६२	भावदेव सूरि	१०३५
१२--	सर्वगुप्त सूरि	१०३६
१३०२	माणिक्य सूरि	१७८३
,,	जयदेव सूरि	२०२३
१३१०	परमानंद सूरि	१७९५
१३३८	,, ,, ...	,,
१३२२	जयचंद्र सूरि	२०४७
१३२३	उद्योतन सूरि	१०३७
१३३८	श्री सूरि	११२१
,,	पूर्णभद्र सूरि	१७९१
१३४०	प्रद्युम्न सूरि	१३६४
१३६१	विबुधप्रभ सूरि	११२२
१३७५	जिनभद्र सूरि	१७९५
,,	रत्नप्रभ सूरि	१७९५
१४२२	,, ,, ...	१०५३
१३८०	पद्मानंद सूरि	१४३५
,,	जगतिलक सूरि	,,
१३८६	धर्म्मप्रभ सूरि	१५०२
१३९९	भावदेव सूरि	१०४७
१४०५	अभयदेव सूरि	१८८६
१४०७	गुणप्रभ सूरि	१०५०
१४०९	सर्वानंद सूरि	१०५१
,,	सर्वदेव सूरि	,,
१४२३	शालिभद्र सूरि	१०५४
,,	अभयचंद्र सूरि	१०५५
१४३९	— — —	१९२९
१४६८	श्री सूरि	२०१०
१४७८	,, ,, ...	१०६६
१४७०	देव सूरि	१३९६
१४८४	जयप्रभ सूरि	२०००
--	जिनरतन सूरि	१९६३
१४९३	अमरचन्द्र सूरि	१२४३
,,	धनप्रभ सूरि	२०८३
१४९६	शीलरत्न सूरि	१४२२
१४९७	मुनिप्रभ सूरि	१३३१
१५०१	मंगलचंद्र सूरि	१३६९
१५०३	धर्मशेखर सूरि	१७६८
१५०६	सर्व सूरि	१०८२
१५०९	साधु सूरि	१२५४
१५१६	श्री सूरि	११२७
१५३३	,, ,, ...	१४७०
१५२१	सुविहित सूरि	११७५
१५२३	कनकरत्न सूरि	१५६८

संवत्	नाम			लेखांक
१५५३	धर्मवल्लभ सूरि	...	...	१७७४
१५६७	सर्वदेव सूरि	...	...	१६२७
१५७१	देवरत्न सूरि	...	...	११७१
१५७३	नंदिवर्द्धन सूरि	...	...	१३५६
१५८७	श्री सूरि	...	...	११७२
१५९७	जिनसाधु सूरि	...	...	११९३
१६०४	हर्षरत्न सूरि	...	...	१४६६
१६२२	विजय सूरि	...	...	१९०८
१६६६	रत्नविशाल गणि	...	...	१७१५
१६९३	मतिचंद्र गणि	...	...	१०२८
१७७७	उ० क्षेत्रराम गणि	...	...	१५५७
१७९८	विजयऋद्धि सूरि	...	...	१७४५
१८३१	विद्याविजय गणि	...	...	१२०१
,,	ऋद्धिविजय गणि	...	...	,,
१८५२	लालचंद्र गणि	...		११७८, १४४१
१८५५	लावण्य कमल गणि	...	...	१४१७
१८५९	हेमगणि	...	...	१३४९
१९२०	अमृतचंद्र सूरि	...		१६०७, १६७४
,,	सागरचंद्र गणि	...	...	१८७१
१९३१	विजय सूरि	...	...	१४४९
१९४४	सं० रणधीरविजय	...	...	१४९८
१९६१	चारित्र सुख	...	...	२०६१

जिनमें सम्वत् नही है।

	नाम			लेखांक
...	देव सूरि	...	...	१४१८
...	महप्प गणि	...	...	,,
...	जिनसागर सूरि	...	...	,,
...	उदयशील गणि	...	...	१९१८
...	आज्ञासागर गणि	...	...	,,
...	क्षेमसुंदर गणि	...	...	,,
...	मेरुप्रभ मुनि	...	...	,,

दिगम्बर संघ ।

काष्ठा संघ ।

संवत्	नाम			लेखांक
१३६०	तिहुण कीर्त्ति	...	...	११३५
,,	— —	...	...	१२२६
१४६७	जिनचंद्र	...	...	१४८३
१५०६	मलयकीर्त्ति	...	...	१२५२
१५४६	— —	...	...	१३४३

काञ्ची संघ ।

संवत्	नाम			लेखांक
१४६७	कीर्त्तिदेवा	...	...	१४२७
१५१०	विमलकीर्त्ति	...	...	१४२८

नंदि संघ ।

संवत्	नाम			लेखांक
— —	क्षेमकीर्त्ति	...	...	१७८६

मूल संघ ।

संवत्	नाम			लेखांक
१४४३	— —	...	...	१४२०
१४५७	पद्मनंदि	...	...	१००६
१४७२	,,	...	...	१०६३
१५३४	भ० ज्ञानभूषण	...	...	११२०
,,	भ० भूवनकीर्त्ति	...	...	,,
,,	रत्नकीर्त्ति	...	...	१४५८
१५४६	जिनचंद्र	...	...	१०१५
१५६२	,, ,,	...	...	१४४७
१५५२	— —	...	...	१४२६
१६१६	सुमतिकीर्त्ति	...	...	१६३६
१६५२	चंद्रकीर्त्ति	...	...	११३२
१६८६	पद्मनंदि	...	...	१०६५

जिनमें संघ के नाम नहीं है ।

संवत्	नाम			लेखांक
१६०८	क्षेमकीर्त्ति	...	...	१४४०

श्रावकों की ज्ञाति–गोत्रादि की सूची।

ज्ञाति – गोत्र	लेखांक

नेवड़िया वंश [साधुशाखा] ।

---	... ... १५३६

नेणी वंश ।

---	... ... १४२६

महतियाण [मंत्रिदलीय] ।

---	... ... १०५६, १८४६, १८५४

गोत्र ।

गोत्र	लेखांक
करणा	१६६७
काद्रड़ा	"
चापड़ा	"
जाजोयाण	"
जाटड़	१८५५
झूम्फ	१६६७
नान्हड़ा	"
पाहड़िया	"
महधा	"
माणवाण	"
मुंड	११५७
रोहदाय	१६६७
बजागरा	"
वार्त्तिंदिया	१८५६
संघेला	"

मित्रवाल ।

गोत्र ।

गोत्र	लेखांक
बोसेरवार	१८४५

ज्ञाति – गोत्र	लेखांक

मेवाड़ ।

---	... ... २०२५

मोढ ।

---	... ... ११९८, १३१३, १६१०, ... १६२४, १८००, २००७

राटउरीय ।

---	... ... १९४९

वीर वंश ।

---	... ... १६०९

श्रीमाल ।

---	... १००४, १०११, १०४२, १०४४, १०४८, १०५०, १०५५, ११२४, ११३७, ११५५, ११६२, ११७५–७६, ११८१, ११८८, १२१२, १२१५, १२२१–२२, १२६२, १२६९, १२८१, १२८४, १३०२, १३१२, १३६४, १३६८–६९, १३९४, १३९७–९८, १४०५, १४१०, १४२१–२२, १४४२, १४४५, १४६६, १४७२, १४७५, १४८०, १४९०, १५०४–०५, १५०८, १५३९, १५५१, १५६५–६७, १५९०, १६०५, १६२७, १६९१, १७१७–१८, १७२१, १७२७-२८, १७३६–३७, १७३९, १७४९, १७५७–६०, १७७२–७३, १७७५, १७९७–९८, १८९४, १९२२, १९२९, १९३७, १९४६, १९८०, १९८३, १९८७, २०१०–११, २०१३, २०४३, २०४७, २०५७, २०७३, २०८५, २०८८, २०९१, २०९५, २०९७–९८, २१०१, २१०३

गोत्र	लेखांक	गोत्र	लेखांक
चंडेजरिया	१३६७	वज्रजातीय	१६११
चंदवाड़	११३२	विणवट	१०६०
छाहखा	१४८१	विपड़	१६३४
तइट	१३४०	वेलुयुतो	१८३३
दहदहड़ा	१०८०	षटपड़	१२५१
फाफटिया	१२४७	सापुठा	१२२०
भाईलेवा	१५५५	सामलिया	१५३७
मुठिया	१२५७	हिंगड़	११५२

शुद्धि पत्र।

पृ०	ले०	अशुद्ध	शुद्ध
१२	१०५६	१४३६	१५३६
„	१०५७	कारंट	कोरंट
२०	११०३	नंदकल्याण	जयकल्याण
३०	११६२	जिनचंद्र	जिनभद्र
„	„	जिनभद्र	जिनचंद्र
३६	११९५	द्वाराविजय	हीरविजय
५४	१२८७	जिनचंद्र (१)	जिनभद्र
६०	१३१७	„	„
८२	१४१५	जिनराज	जिनहर्ष
११६	१५१२	१८२४	१९२४
१५१	१६६५	१९७७	१८७७
२१३	१८३४	१८०८	१८८८
२२४	१८७१	१०२०	१९२०
२३५	१९२३	१३५६	१३७६
२४३	१९६०	१४२५	१४९५
२६५	२०३६	पावापुपी	पावापुरी
प्रतिष्ठा स्थान (उथमण)		२०७०	२०७९
„ (घारकबांण)		२०५२	२०६१
„ (च्यारकबांण)		२०५३	२०६२
„ (दौलत्तीवाद)		२०४८	२०५८